गांधीजी

श्रद्धाञ्जलियाँ

१

सूची

❀

चित्र-सूची

❀

प्रकाशकका वक्तव्य

जिस समय भारतमें नवीन जागरणका उदय हुआ और देशको स्वतंत्र करनेका स्वप्न साकार करनेका प्रयत्न देशके कर्णधारोंने आरम्भ किया उस समय बापूकी प्रेरणासे काशी विद्यापीठकी स्थापना हुई । समय समयपर वह इसे संजीवनी शक्ति प्रदान करते रहे। उनके आशीर्वादके फलस्वरूप विद्यापीठने देशके स्वातंत्र्य संग्राममें पूर्ण सहयोग किया। यहांके अध्यापक तथा विद्यार्थी इस महान यज्ञमें योगदान करते रहे। आज इसके अनेक अध्यापक तथा स्नातक विभिन्न रूपसे राष्ट्रके निर्माण कार्यमें संलग्न हैं।

बापूके अनाशंकित निधनके पश्चात् विद्यापीठने अपना कर्त्तव्य समझा कि बापूके चरणोंमें श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर अपनेको गौरवान्वित करे। सोच विचार करनेके पश्चात् यह निश्चय किया गया कि श्रद्धाञ्जलिका समुचित स्वरूप बापूके विचारोंको कमसे कम व्ययमें भारतके कोने कोनेमें पहुंचा दिया जाय। आज जब वे हमारे सम्मुख नहीं हैं, उनका संदेश देशकी प्रत्येक झोपड़ीतक पहुंचा देना उनका सबसे बड़ा समादर है। इस हेतु यह आयोजन किया गया कि इस अवसरपर श्रद्धाञ्जलि स्वरूप पचीस खण्डोंमें एक ग्रंथमाला प्रकाशित किया जाय जिसके प्रथम कुछ खण्डोंमें देश विदेशके महान व्यक्तियों तथा संस्थाओंकी श्रद्धांजलियां हों तथा अन्य खण्डोंमें बापूके लेख, प्रवचन, भाषण इत्यादिका समावेश किया जाय। प्रत्येक खण्ड बापूके विभिन्न चित्रोंसे सुसज्जित रहे।

इस आयोजनमें व्यापारिक दृष्टिकोण स्वभावतः नहीं हो सकता था। कमसे कम मूल्यमें, सुंदर रूपमें, जो सामग्री प्रस्तुत की जा सकती है, वही प्रयत्न किया गया है। प्रकाशनके लिए काशी विद्यापीठ तथा भार्गव भूषण प्रेसका सहयोग है।

इस मालाके लिए देशके सभी भागोंसे सामग्री एकत्र की गयी है और महात्माजीसे संपर्क रखनेवाले अनेक सज्जन सहायता दे रहे हैं और अनेकने

सहायता देनेका वचन दिया है। सबका आभार अंतिम खंडमें स्वीकार किया जायगा। प्रांतीय तथा केन्द्रीय सरकारने कागजकी व्यवस्था की तथा अन्य सामग्रियोंसे सहायता की है, उसके भी हम आभारी हैं।

इस ग्रंथमालाका संपादन प्रसिद्ध पत्रकार तथा राजनीतिक कार्यकर्त्ता और गांधीवादी पंडित कमलापति त्रिपाठीने करना स्वीकार कर लिया है। आप विद्यापीठके स्नातक हैं, इसलिए आपने यह भार सहर्ष स्वीकार कर लिया है। इनके साथ संपादन कार्यमें श्री कृष्णदेवप्रसाद गौड़, श्री काशीनाथ उपाध्याय 'भ्रमर' तथा श्री करुणापति त्रिपाठी संलग्न हैं। इस खंडके प्रकाशनमें श्री विद्यारण्य शर्मा; श्री कृष्णदेव उपाध्याय, श्री चन्द्रशेखर अस्थाना, श्री लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय' तथा श्री निरंजनकुमारने सहयोग प्रदान किया है। यह प्रयास बापूके विचारोंका प्रसार तथा मानव जातिकी सेवा करनेमें सफल हो, यही हमारी कामना है। हमें विश्वास है कि हमारे इस कार्यमें देशकी, जनताकी सहायता तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

❀

राष्ट्रपिता

चिर-निद्रामें लीन अमर बापू ! वक्षपर गोलियोंके व्रण स्पष्ट देखे जा सकते हैं

आभार प्रदर्शन

आल-इंडिया रेडियो, नयी दिल्ली; बम्बई तथा लखनऊ—श्रद्धांजलियोंके लिये

मिनिस्ट्री आफ इनफारमेशन एण्ड ब्राडकास्टिंग, गवर्मेण्ट आफ इण्डिया, नयी दिल्ली – चित्र तथा श्रद्धांजलियोंके प्रकाशनकी अनुमतिके लिये

सूचना विभाग युक्तप्रांतीय सरकार, लखनऊ – चित्रों तथा श्रद्धांजलियोंके संकलनके लिये

माननीय श्री श्रीप्रकाश, पाकिस्तान-स्थित हिन्दके हाई कमिश्नर — मुख-पृष्ठके चित्रके लिये

श्री कमल कुमार, चित्रकार, दिल्ली – चित्रोंके लिये

श्री कांजीलाल, चित्रकार, 'संसार', काशी, – चित्रकारिताके लिये

माननीय श्री रफी अहमद किदवई, माननीय डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी, श्री श्रीपत, श्री एम० एल० मेढ़, श्री उमाशंकर—कागजकी व्यवस्थाके लिये

श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी, डिप्टी-डाइरेक्टर जनरल, आल-इण्डिया रेडियो, नयी दिल्ली; श्री आर० एल० हांडा, सूचना अफसर, नयी दिल्ली; श्री विद्याभास्कर, सूचना अफसर, हिन्दी विभाग, लखनऊ – संकलनमें सहायताके लिये

श्री रामनाथ अग्रवाल, मालिक, लक्ष्मी फोटो एनग्रेविंग कम्पनी, इलाहाबाद – सुन्दर ब्लाकोंके लिये

श्री ईगल प्रिंटिंग वर्क्स, कलकत्ता – सुन्दर मुखपृष्ठकी छपाईके लिये

❀

आमुख

'गांधीजी' ग्रन्थमालाके संपादनका पावन कार्य हम लोगोंको सौंपा गया, यह हम अपना सौभाग्य समझते हैं। भारतीय राष्ट्रके जीवनाकाशमें जो तीस साल तक अखंड मार्तंडकी भांति चमका उसके सहसा निधनसे देश धराशायी हो गया। इस समय देश निष्प्राण सा हो गया है। जिस व्यक्तिने पतित भारतके मुर्दोंमें प्राण फूँक दिया, जिसके तपसे हमारी मातृभूमि स्वतंत्र हुई, जिसकी उज्ज्वलताने समस्त मानवताको उद्दीप्त कर दिया, उस विभूतिकी रक्षा अपनी स्वतंत्रताके उदयके साथ हम न कर सके। अभागा भारत बापूको खोकर आज सब खो चुका है। जिस व्यक्तिने सदा शरीरकी उपेक्षाकी, आत्माकी महत्तापर विश्वास किया, उसकी आत्मा शरीरकी शृंखलासे मुक्त हो गयी, पर मानवताके इस दीपकके बुझ जानेसे दुनिया आज अन्धेरी हो गयी है।

देश रोया, विदेश रोया। मानवके हृदयोंमें लहरें उठीं और शांत हो गयीं। अब हमारा कर्त्तव्य हो गया कि उस देवदूतकी अमर वाणी सुलभ, सुन्दर और सत्य रूपमें संसारके अतंस्तल तक पहुंचानेका प्रयत्न करें। महात्माजीका व्यक्तित्व इतना व्यापक था कि सैकड़ों लेखक उनके गौरवका गान करके अपनी लेखनीको पवित्र बनायेंगे और सहस्रों प्रकाशक उसे प्रकाशित कर अपनेको धन्य समझेंगे।

हम लोगोंने यह भार इसलिए अपने ऊपर लिया कि बापूने जो कुछ जिस रूपमें जिस भावनासे, जिस दृष्टिकोणसे कहा, वही सबके सामने उपस्थित किया जाय। बापूने जो कुछ कहा वह एकदेशीय नहीं रहा। विश्वके मनीषी, विचारक और विद्वान यह स्वीकार करते हैं कि बापूकी विचारधारा भारत नहीं प्रत्युत आधुनिक जगतके सन्मुख प्रस्तुत महान् सांस्कृतिक संकटके निराकरणका उपाय उपस्थित करती है। बापूका आदर्श और व्यवहार,

उनकी दृष्टि और कल्पना, उनका प्रयोग और पथ महती जागतिक संस्कृतिको वह उज्ज्वल देन है जिसके लिए मानव समाज उनका चिर-ऋणी रहेगा।

जहाँतक हम भारतीयोंका सम्बन्ध है, महात्माजीके पार्थिव शरीरके अभावमें उनका सन्देश, उनका उपदेश, उनका आदेश ही हमारा संबल है। हम इस विश्वाससे इस ग्रंथको जनताके समक्ष रख रहे हैं कि उनके विचारोंका इसके द्वारा प्रसार होगा और जो जड़ता हममें क्षणिक आ गयी है, उसका विनाश होगा।

इस ग्रंथमें जहाँ महात्माजीने जो भाषा प्रयोग की है, वही रखी गयी है। अंग्रेजी भाषा में जो कहा, लिखा या बोला गया है, उसका हिन्दीमें अनुवाद कर दिया गया है। श्रद्धाञ्जलियोंमें जिसकी जैसी भाषा रही है, वही रहने दी गयी है। जिन्होंने अंग्रेजी अथवा किसी विदेशी भाषामें कुछ कहा है उसका अनुवाद हिन्दीमें कर दिया गया है। जो उत्तरदायित्व हमने अपने ऊपर ले लिया है उसका अनुभव हम कर रहे हैं। हमें आशा है बापूकी आत्मा हमें अपने प्रयत्नमें सफलता प्रदान करेगी। चेष्टा करनेपर भी मुद्रणकी कुछ भूलें रह गयीं, जिसके लिए हमें खेद है।

सम्पादक मण्डल

❀

साम्प्रदायिकताकी वेदीपर

३० जनवरीका संध्या समय था। पांच बज चुके थे। सदाकी भांति प्रार्थनाके लिए बिड़ला भवनसे बापूने प्रस्थान किया। उस समय कोई नहीं जानता था कि यही उनका महाप्रस्थान होगा। साथमें उनकी पौत्री आभा गांधी तथा मनु गांधी थीं। प्रार्थनाके मैदानमें नित्यकी भांति जनता प्रवचन सुननेके लिए एकत्र थी। वहां पहुचते ही एक युवक बापूके चरण छूनेके लिए झुका। उनके साथकी बालिकाओंका ध्यान उधर गया कि पिस्तौलसे धड़ाधड़ तीन गोलियां बापूके वक्षस्थलको लक्ष्य बनाकर निकटसे चलायी गयीं। गोलियां पेटमें लगीं। गोलियां लगते ही बापू आगेकी ओर झुके। आक्रमणकारीकी ओर उनके कर-बद्ध हो गये, मानों प्रार्थना कर रहें हों और उनके मुखसे "राम" शब्द निकला। इसके बाद फिर कभी न उठनेके लिए वे गिर पड़े। इस संबंधमें जो युवक पकड़ा गया वह महाराष्ट्रीय है और उसकी अवस्था छत्तीस सालकी है। राष्ट्रीय-स्वयं-सेवक संघका कार्यकर्त्ता और एक साधारण पत्रका संपादक है। महात्माजीको लोग बिड़ला भवनमें उठा लाये। कुछ क्षणतक उनका प्राण था। पांच बजकर चालीस मिनटपर केवल उनका पार्थिव शरीर रह गया।

देशकी प्रतिक्रिया

मरनेके कुछ ही क्षण पश्चात् पं० जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, लार्ड माउण्टबेटन, दीवान चमनलाल, देवदास गांधी तथा उनके लड़के, केन्द्रीय मंत्रिमंडलके सदस्य बिड़ला भवन पहुंच गये। बापूके मुखपर प्रसन्नताके चिन्ह थे। गीताका पाठ हो रहा था और उनका प्रिय गीत 'वैष्णव जन तो तेने कहिये' गाया जा रहा था। वह उसी कमरेमें चारपाईपर लिटा दिये गये थे जिसमें कुछ ही दिन पहले हिन्दू-मुसलमानोंकी एकताके लिए उन्होंने उपवास किया था।

६ बजते बजते सारे देशमें राष्ट्रपिताके निधनका शोकपूर्ण समाचार फैल गया। प्रति क्षण रेडियोसे समाचार विक्षेप होने लगा। देशके प्रत्येक प्राणीके हृदयमें महात्माजीके प्रति कितना प्रेम, कितनी श्रद्धा, कितनी भक्ति थी इसीसे आंकी जा सकती है कि शोकका सागर लोगोंके हृदयमें उमड़ आया। प्रत्येक व्यक्तिको जान पड़ा कि मेरे ही परिवारका अतिप्रिय प्राणी चला गया। लोग किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये।

पंडित जवाहरलाल नेहरूने रेडियोसे भारतीय जनताको इस संबंधमें वक्तव्य दिया। उनके स्वर लड़खड़ा रहे थे, वाणी कांप रही थी। ऐसा जान पड़ता था कि हृदय टूट गया। फिर सरदार पटेलने दुःख और दर्दसे भरी भाषामें बापूके प्रति अपनी भावना प्रकट की। मृत्युके कुछ ही समय पहले सरदार पटेल बापूसे बात करके लौटे थे। गोलीकाण्डके कुछ दिन पहले बापूपर बम फेकनेका प्रयत्न किया गया था। उन्होंने मना कर दिया था कि मेरे साथ कोई रक्षक न रहे और न प्रार्थना सभामें किसीकी तलाशी ली जाय।

मरनेके कुछ ही दिन पहले बापूने कहा था कि हिन्दू और मुसलमानोंके परस्पर विद्वेषपूर्ण भावोंसे मेरा हृदय दुःखी है और अब मेरी इच्छा नहीं होती कि अधिक जीऊँ।

मरनेके बाद देशके हिंदू-मुसलमान, हिन्दुस्तान-पाकिस्तान, राव-रंक, देश तथा विदेशके लोगोंने बापूके प्रति अपनी मनोभावना प्रकट की। अमेरीकामें सुरक्षा समितिने तीन दिनों तक काम बंद रखा। संसार की सभी राजधानियोंके झण्डे झुक गये। तेरह दिनोंतक भारत सरकारकी ओरसे शोक मनाया गया। जबसे इतिहासकी रचना हुई संसारमें किसी व्यक्तिकी मृत्युके अवसरपर कभी इतना व्यापक, इतना हार्दिक तथा इतना मार्मिक शोक नहीं मनाया गया।

महाप्रयाण

मृत्युकी रातभर महात्माजीके निकट लोग जागरण कर रहे थे। "रघुपति राघव राजाराम" का कीर्तन होता रहा। कुछ लोगोंकी सम्मति थी कि महात्माजीका शरीर औषधि लगाकर कुछ दिनोंतक रखा जाय किंतु उनके संपर्कवालोंने बताया कि उनकी स्वयं यह इच्छा न थी। ३१ जनवरीको यमुनाके तट, राजघाटपर उनके शरीरका दाह-संस्कार करना निश्चय किया गया। दिल्ली तीर्थ हो गया, देश भरसे लोग वायुयानसे, रेलसे, कारसे, जिस भांति पहुंच सकते थे,

गये। प्रातःकालसे ही बिड़ला भवनके निकट, राहमें दोनों ओर तथा राजघाटपर भक्तोंकी भीड़ एकत्र होने लगी।

बिड़ला भवनमें महात्माजीका शरीर चारपाईपर लिटाया हुआ था। पांवसे पेटतक उनका शरीर धवल खादीसे ढका था। नेत्र बंद थे। गोली लगे व्रण दिखाई देते थे। उनकी ग्रीवामें खादीकी माला पहना दी गई थी। धूप जल रहा था और धरतीपर गुलाबकी पंखुरियाँ बिछा दी गयी थीं। उनके परिवारके लोग तथा देवदास गांधी रातभर जागते रहे। अर्थी निकलनेके समय अन्य लोगोंके अतिरिक्त सरदार पटेल, पंडित गोविंदबल्लभ पन्त आदिके साथ राजकुमारी अमृतकौर उनके चरणोंके समीप बैठी थीं।

ग्यारह बजनेके कुछ पहले पण्डित जवाहरलाल नेहरू वहाँ पहुंचे। उनका मुख पीड़ासे उद्विग्न था। उन्होंने शव ले जानेके सम्बन्धमें आवश्यक बातें बतायीं। महात्माजीकी पौत्री, उनके परिवारके लोग तथा प्यारेलाल महात्माजीके शरीरको बाहर लाये। शवके पीछे नेहरूजी, सरदार पटेल तथा मंत्रिमंडलके सदस्य थे। बापूके शरीरपर प्रायः संसारके सब देशोंके प्रतिनिधियोंकी ओरसे मालाएं चढ़ायी गयी थीं; इनकी संख्या सौ से अधिक थी। गवर्नर-जनरल लार्ड माउंटबेटन अपनी दो पुत्रियों सहित बिड़ला भवन पधारे। वह बाहुपर काला वस्त्र लगाये हुए थे।

सेनाकी ओरसे मोटर गाड़ी थी जिसपर ऊँचा मंच बनाकर बापूका शव रखा गया। गाड़ी उज्ज्वल खादी तथा पुष्पोंसे सजी थी। चरणोंके पास सरदार पटेल बैठे थे, पार्श्वमें रामदास गांधी और उन्हींके निकट सरदार बलदेव सिंह रक्षा मंत्री थे।

११-४५ बजे बिड़ला भवनसे गाड़ी बाहर निकाली गयी। उस समय शंख ध्वनि तथा 'महात्मा गांधीकी जय' की ध्वनिसे आकाश गूंज उठा। गवर्नर-जनरल उपस्थित थे और उसी समय पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा युक्तप्रांतकी गवर्नर सरोजिनी नायडू भी पहुंच गयीं।

जिस मोटर गाड़ीपर अर्थी रखी गयी थी उसे स्थल, जल तथा वायुसेनाके सिपाही खींच रहे थे। महात्माजी जीवनपर्यन्त यंत्रके विरोधी थे इसलिये यंत्र द्वारा गाड़ी नहीं चलायी गयी। अर्थीके नीचेकी ओर रक्षा मंत्री श्री बलदेव सिंह, दाईं ओर प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू, और बाईं ओर उप-प्रधान मंत्री सरदार पटेल तथा पं० नेहरूके पीछे देवदास गांधी सामने बैठे थे। गांधीजीके

परिवारके लोग आगे-आगे चल रहे थे। गुरखा तथा पैदल-सेनाके लोग आगे-आगे राह ठीक करते थे।

बिड़ला भवनसे राजघाटतक पांच मीलकी दूरी है। सारी राह, पथ, पटरियाँ, वृक्ष, घरोंकी छतें जनसमूहसे परिपूर्ण थीं। मनुष्यका सागर उमड़ पड़ा था। राह भर लोग पुष्प वर्षण कर रहे थे। इतनी महती भीड़ होनेपर भी चारों ओर शांति थी। केवल थोड़ी थोड़ी देरपर 'महात्मा गांधीकी जय' की ध्वनि ही सुनायी पड़ती थी। हिंदू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, एंग्लो-इंडियन तथा यूरोपियन सभी इस भीड़में थे। स्त्रियोंकी आंखोंसे आंसू निकल रहे थे। डाक्टर राजेंद्रप्रसाद भी वर्धासे पहुँच गये थे और आचार्य कृपालानी भी।

दिल्ली दरवाजेके पास शाही वायुसेनाके वायुयानने नीचे आकर पुष्प वृष्टि की और इसी प्रकार थोड़ी-थोड़ी देरपर ऐसा ही होता रहा। सारा वायुमंडल पुष्पोंकी पंखुरियोंसे भर गया था।

चार बजकर बीस मिनटपर शव राजघाटपर पहुंचा। लाल किलेके पीछे जमुना पुलके पूरब सरकारी निर्माण-विभागने बारह फुट लंबा, बारह फुट चौड़ा तीन फुट ऊँचा मंच बनाया था, उसीपर साढ़े चार बजे अर्थी रखी गयी। यमुना जलसे शवको स्नान कराया गया। पंद्रह मन चन्दनकी लकड़ी, चार मन घी, एक मन नारियलकी गरी और पंद्रह सेर कपूरसे अन्त्येष्टि क्रिया की गयी। वैदिक मंत्रोंसे पंडित रामधन शर्माने संस्कार आरम्भ किया। अगणित पुष्प मालाएँ अर्थीपर रखी हुई थीं। सबसे पहले चीनी राजदूतने अर्थीपर माला रखी, इसके पश्चात् और राजदूतोंने तथा अन्य लोगोंने। ४-५५ मिनटपर देवदास गांधीने दाह-संस्कार किया। लेडी माउण्टबेटन मद्राससे वायुयानसे आ गयीं थीं।

शव जल जानेके बाद उसकी राख, लकड़ीका टुकड़ा तथा और शेष वस्तुका कुछ चिन्ह लेनेके लिए जनता प्रयत्न करती रही। सूर्यास्त होते होते महात्माजीका शरीर भी जलकर राख हो गया। सैनिक रक्षाके लिए नियुक्त कर दिये गये थे। रविवार, पहली फरवरीके प्रातःकाल अनेक सज्जन तथा नेता राजघाट गये। जहां महात्माजी जलाये गये थे वहां पंडित जवाहरलालने माला अर्पित की। रविवारके दिनभर दर्शनके हेतु लोगोंका तांता बंधा हुआ था। सोमवारको वैदिक मंत्रोंके साथ विधिपूर्वक डेढ़ घंटे पूजाके पश्चात् महात्माजीका फूल एकत्र किया

गये। प्रातःकालसे ही बिड़ला भवनके निकट, राहमें दोनों ओर तथा राजघाटपर भक्तोंकी भीड़ एकत्र होने लगी।

बिड़ला भवनमें महात्माजीका शरीर चारपाईपर लिटाया हुआ था। पांवसे पेटतक उनका शरीर धवल खादीसे ढका था। नेत्र बंद थे। गोली लगे व्रण दिखाई देते थे। उनकी ग्रीवामें खादीकी माला पहना दी गई थी। धूप जल रहा था और धरतीपर गुलाबकी पंखुरियाँ बिछा दी गयी थीं। उनके परिवारके लोग तथा देवदास गांधी रातभर जागते रहे। अर्थी निकलनेके समय अन्य लोगोंके अतिरिक्त सरदार पटेल, पंडित गोविंदवल्लभ पन्त आदिके साथ राजकुमारी अमृतकौर उनके चरणोंके समीप बैठी थीं।

ग्यारह बजनेके कुछ पहले पण्डित जवाहरलाल नेहरू वहाँ पहुंचे। उनका मुख पीड़ासे उद्विग्न था। उन्होंने शव ले जानेके सम्बन्धमें आवश्यक बातें बतायीं। महात्माजीकी पौत्री, उनके परिवारके लोग तथा प्यारेलाल महात्माजीके शरीरको बाहर लाये। शवके पीछे नेहरूजी, सरदार पटेल तथा मंत्रिमंडलके सदस्य थे। बापूके शरीरपर प्रायः संसारके सब देशोंके प्रतिनिधियोंकी ओरसे मालाएं चढ़ायी गयी थीं; इनकी संख्या सौ से अधिक थी। गवर्नर-जनरल लार्ड माउंटबेटन अपनी दो पुत्रियों सहित बिड़ला भवन पधारे। वह बाहुपर काला वस्त्र लगाये हुए थे।

सेनाकी ओरसे मोटर गाड़ी थी जिसपर ऊँचा मंच बनाकर बापूका शव रखा गया। गाड़ी उज्ज्वल खादी तथा पुष्पोंसे सजी थी। चरणोंके पास सरदार पटेल बैठे थे, पार्श्वमें रामदास गांधी और उन्हींके निकट सरदार बलदेव सिंह रक्षा मंत्री थे।

११-४५ बजे बिड़ला भवनसे गाड़ी बाहर निकाली गयी। उस समय शंख ध्वनि तथा 'महात्मा गांधीकी जय' की ध्वनिसे आकाश गूंज उठा। गवर्नर-जनरल उपस्थित थे और उसी समय पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा युक्तप्रांतकी गवर्नर सरोजिनी नायडू भी पहुंच गयीं।

जिस मोटर गाड़ीपर अर्थी रखी गयी थी उसे स्थल, जल तथा वायुसेनाके सिपाही खींच रहे थे। महात्माजी जीवनपर्यन्त यंत्रके विरोधी थे इसलिये यंत्र द्वारा गाड़ी नहीं चलायी गयी। अर्थीके नीचेकी ओर रक्षा मंत्री श्री बलदेव सिंह, दाईं ओर प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू, और बाईं ओर उप-प्रधान मंत्री सरदार पटेल तथा पं० नेहरूके पीछे देवदास गांधी सामने बैठे थे। गांधीजीके

परिवारके लोग आगे-आगे चल रहे थे। गुरखा तथा पैदल-सेनाके लोग आगे-आगे राह ठीक करते थे।

बिड़ला भवनसे राजघाटतक पांच मीलकी दूरी है। सारी राह, पथ, पटरियाँ, वृक्ष, घरोंकी छतें जनसमूहसे परिपूर्ण थीं। मनुष्यका सागर उमड़ पड़ा था। राह भर लोग पुष्प वर्षण कर रहे थे। इतनी महती भीड़ होनेपर भी चारों ओर शांति थी। केवल थोड़ी थोड़ी देरपर 'महात्मा गांधीकी जय' की ध्वनि ही सुनायी पड़ती थी। हिंदू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, एंग्लो-इंडियन तथा यूरोपियन सभी इस भीड़में थे। स्त्रियोंकी आंखोंसे आंसू निकल रहे थे। डाक्टर राजेंद्रप्रसाद भी वर्धासे पहुँच गये थे और आचार्य कृपालानी भी।

दिल्ली दरवाजेके पास शाही वायुसेनाके वायुयानने नीचे आकर पुष्प वृष्टि की और इसी प्रकार थोड़ी-थोड़ी देरपर ऐसा ही होता रहा। सारा वायुमंडल पुष्पोंकी पंखुरियोंसे भर गया था।

चार बजकर बीस मिनटपर शव राजघाटपर पहुंचा। लाल किलेके पीछे जमुना पुलके पूरब सरकारी निर्माण-विभागने बारह फुट लंबा, बारह फुट चौड़ा तीन फुट ऊँचा मंच बनाया था, उसीपर साढ़े चार बजे अर्थी रखी गयी। यमुना जलसे शवको स्नान कराया गया। पंद्रह मन चन्दनकी लकड़ी, चार मन घी, एक मन नारियलकी गरी और पंद्रह सेर कपूरसे अन्त्येष्टि क्रिया की गयी। वैदिक मंत्रोंसे पंडित रामधन शर्माने संस्कार आरम्भ किया। अगणित पुष्प मालाएँ अर्थीपर रखी हुई थीं। सबसे पहले चीनी राजदूतने अर्थीपर माला रखी, इसके पश्चात् और राजदूतोंने तथा अन्य लोगोंने। ४-५५ मिनटपर देवदास गांधीने दाह-संस्कार किया। लेडी माउण्टबेटन मद्रासले वायुयानसे आ गयीं थीं।

शव जल जानेके बाद उसकी राख, लकड़ीका टुकड़ा तथा और शेष वस्तुका कुछ चिन्ह लेनेके लिए जनता प्रयत्न करती रही। सूर्यास्त होते होते महात्माजीका शरीर भी जलकर राख हो गया। सैनिक रक्षाके लिए नियुक्त कर दिये गये थे। रविवार, पहली फरवरीके प्रातःकाल अनेक सज्जन तथा नेता राजघाट गये। जहां महात्माजी जलाये गये थे वहां पंडित जवाहरलालने माला अर्पित की। रविवारके दिनभर दर्शनके हेतु लोगोंका तांता बंधा हुआ था। सोमवारको वैदिक मंत्रोंके साथ विधिपूर्वक डेढ़ घंटे पूजाके पश्चात् महात्माजीका फूल एकत्र किया

गया। उसे गंगाजलसे अभिसिक्त किया गया और तांबेके पात्रमें रखा गया। तीर्थ-राज प्रयागके संगममें विसर्जन करनेके लिए पात्रको सुरक्षित रखा गया। फूल एकत्र करनेके अवसरपर राजनीतिक हिन्दू-मुसलिम नेता, विदेशी राजदूत, अनेक प्रांतोंके गवर्नर तथा देशी विदेशी पत्रकार आदि एकत्र थे।

दिल्लीमें विसर्जनका प्रबंध केन्द्रीय सरकारके विद्युत तथा खान-विभागके मन्त्री माननीय नरहरि विष्णु गाडगिलकी देख रेखमें हुआ। नगरके विभिन्न भागोंसे गुरुवार बारह फरवरीको जुलूस निकले जो रामलीलाके मैदानमें एकत्र हुआ। राजघाटसे फूल सुन्दर तांबेके पात्रमें रखकर रथपर रखा गया। रथ कांग्रेस सेवा-दलके स्वयंसेवक खींच रहे थे। यमुनाके पुलके तीन खंभे सजाये गये थे और पुलपर बैठनेका भी प्रबंध किया गया था। पुलके पास ही अस्थि विसर्जन किया गया। इस अवसरपर भी विदेशी राजदूत, देशी विदेशी पत्रकार, राजनीतिक नेता एकत्र थे। दिल्लीका जनसमूह यह अन्तिम दृश्य देखनेके लिए एकत्र खड़ा था। विस-र्जनके पश्चात् सार्वजनिक सभा हुई।

भारतके विभिन्न नगरों तथा भारतके बाहर भी उन देशोंसे जहां भारतवासी रहते हैं, फूलकी मांग थी। सभी लोग अपनी श्रद्धाभक्ति प्रदर्शित करना चाहते थे। तीर्थराज प्रयागमें फूल लानेके लिए स्पेशल ट्रेनकी व्यवस्था की गयी। यह गाड़ी हरे रंगकी थी जो साढ़े छः बजे प्रातःकाल ११ फरवरीको दिल्लीसे चली। दिल्ली स्टेशनपर दृश्य देखनेके लिए कई लाख जनता एकत्र थी। चार सौ यात्री इस गाड़ीमें थे जिनमें महात्मा गांधीके परिवारके लोग, भारत सरकारके विभागीय अध्यक्ष तथा कर्मचारी, पत्रकार, सैनिक तथा पुलिस विभागके कुछ उच्च पदाधिकारी थे। पंडित जवाहरलालने दिल्लीमें ही सब प्रबंध देख लिया था। वह वायुयानसे प्रयाग गये। रेलवेके सदस्य डाक्टर जान मथाईने स्पेशलका सब प्रबंध किया था। गाड़ी खद्दरके तिरंगे झंडोंसे सुशोभित थी, जो झुके हुए थे। गाड़ीपर अशोक-चक्र तथा सिंह-मुद्रा अंकितकी गयी थी। गाड़ीके बीच ऊँची चौकीपर मेज रखी थी। चौकीपर खद्दर बिछा था और खद्दरका ही ऊपर छत्र था। मेज तिरंगी रस्सीसे घिरा था। इसी मेजपर ताम्रपात्र रखा था। जिसमें महात्माजीका फूल था। पात्रकी रक्षाके लिए चार सनिक नियुक्त किये गये थे और जहां-जहां गाड़ी खड़ी होती थी, छः सैनिक रक्षाके लिए खड़े हो जाते थे।

राहमें जहां-जहां गाड़ी खड़ी हुई अपार जनसमूह अस्थिके दर्शनके लिए एकत्र हुआ। गाजियाबाद, अलीगढ़, टूंडला, कानपुर आदि स्टेशनोंपर लाखोंकी भीड़ एकत्र हुई। प्रयागमें दूर दूरसे लोग पहुंच गये थे। स्टेशनसे लेकर संगमतक किनारे किनारे लोग पुष्प लिये अस्थिके अंतिम प्रणामके लिए खड़े थे। संगम तथा स्टेशनपर बहुत अधिक जनता थी। कुंभ मेलाके कारण भीड़ और बढ़ गयी थी। तीन सहस्र पुलिस, सैनिक, नाविक तथा वायुयान चालकोंके हाथोंमें प्रबंध था। पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल तथा मौलाना अबुल कलाम आजाद संध्याको ही आ गये थे तथा सारे प्रबंध और व्यवस्थाका निरीक्षण प्रधान मंत्री तथा उप-प्रधान मंत्रीने किया।

दिल्लीसे जब स्पेशल चली और जबतक वह प्रयाग पहुंची तबतक बराबर जागरण होता रहा, लोग चरखा चलाते रहे तथा 'रामधुन' गाते रहे। इलाहाबादसे गाड़ी जब सत्तर मीलकी दूरीपर थी, वहीं खड़ी कर दी गयी और नौ बजे प्रातःकाल इलाहाबाद पहुंची। सारे कार्यक्रमकी व्यवस्था ऐसी की गयी थी कि सब कार्य ठीक समयपर संपादित हुआ। जब गाड़ी खड़ी हुई तब पंडित नेहरू तथा सरदार पटेल अस्थिघटको गाड़ीमेंसे बाहर लाये तथा सुसज्जित रथपर रखे।

अस्थि ले जानेके लिए विशाल रथका निर्माण किया गया था। उसपर ऊंचा मंच बनाकर अस्थिका घट रखा गया था। मंच तिरंगे झण्डे तथा पुष्पोंसे सुसज्जित था। उसपर सुन्दर महराब बना था। राहभर पुष्पोंकी वर्षा हो रही थी। रथपर पंडित जवाहरलाल नेहरू, पंडित गोविन्द वल्लभ पंत, सरदार पटेल, मौलाना आजाद, रफी अहमद किदवई थे। इतना जनसमूह होनेपर भी कहीं किसी प्रकारकी दुर्व्यवस्था और गड़बड़ी नहीं हुई। लोगोंमें गंभीरता अधिक थी राहभर रेडियोसे जिस प्रकार दिल्लीसे शवयात्राके अवसरपर घटनाओंका विक्षेप होता रहा, यहां भी हो रहा था।

जुलूसके आगे आगे एक मोटरकार चल रही थी जिसमें लाउडस्पीकर द्वारा प्रार्थनाके गीत गाये जा रहे थे। इसके पश्चात् बहुत सी जीप गाड़ियां थी और उनके पीछे अश्वारोही सेना, फिर गोरखा तथा अन्य सेनाओंके सैनिक थे। देवदास गांधी नंगे पांव आगे आगे चल रहे थे। मैदानमें पहुंचनेके पश्चात् अस्थि-

घटका मोटर एक विशेष नौका (डॅक) पर रखा गया। संगमपर जब डॅक पहुंचा तो वही प्रार्थना की गयी जो महात्माजीने अंतिम उपवास आरंभ करनेके पूर्व की थी। हिन्दु, बौद्ध, मुसलिम तथा ईसाई धर्मग्रन्थोमेंसे पाठ किया गया, फिर पंडितोंने वेद मंत्रोंका उच्चारण किया। संगमपर जब मोटरकी नौका पहुंच गयी, श्री रामदास गांधीने अस्थिका जल-प्रवाह किया। इसके पश्चात् कई घड़े दूध चढ़ाये गये। निकट ही जहां जल गहरा नहीं था, गांधीजीके परिवारके लोग तथा आश्रमवाले जलमें उतर गये और उन्होंने गीताके बारहवें अध्यायका पाठ किया। इसके पश्चात् नेहरूजीका बड़ा मार्मिक भाषण हुआ। इसी समय देशके विभिन्न भागों तथा विदेशोंमें भी अस्थि-प्रवाह किया गया। विशेष प्रबंध द्वारा इन स्थानोंमें अस्थियां मंगायी गयी थीं।

❀

महायात्राका एक दृश्य। अर्थी बिड़ला-भवनसे बाहर निकाली जा रही है। अर्थीके पास सरदार पटेल, पंतजी, राजेन्द्र बाबू, कृपालानी, नेहरूजी, सरदार बलदेवसिंह आदि खड़े हैं
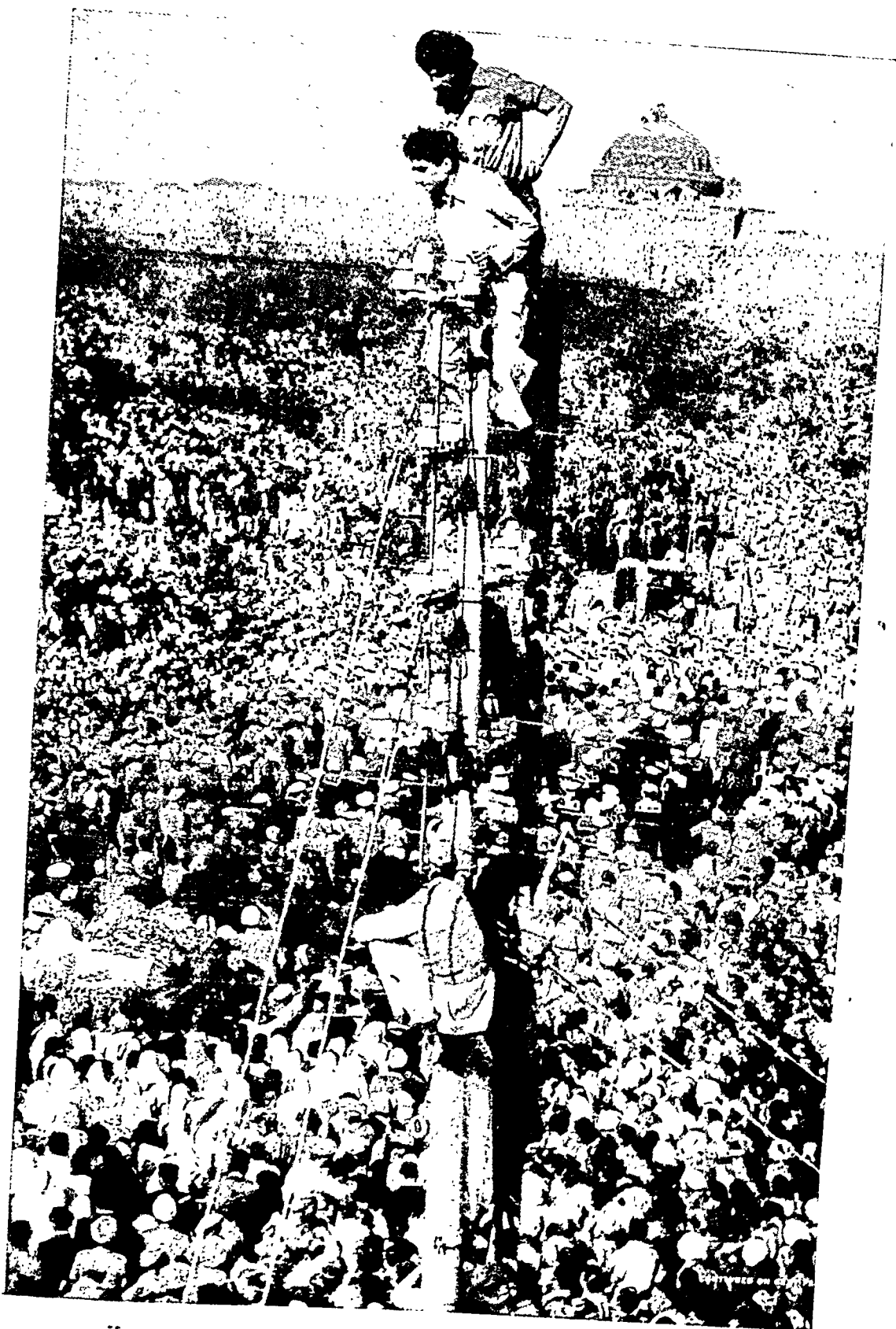
शवयात्राके साथ अपार जनसमूह। अंतिम दर्शनके लिए
बिजलीके खंभोंपर भी लोग बैठे हैं

कांग्रेस कार्यकारिणी समितिका प्रस्ताव

महात्मा गांधीकी अमर शिक्षाएँ और उनके काम देशवासियों और संसारके लोगोंके मनमें सुरक्षित हैं। आगे आनेवाली पीढ़ियाँ उनकी तरफ आशासे देखेंगी और उनसे प्रेरणा पायेंगी। इससे ज्यादा अच्छा उनका स्मारक दूसरा कोई नहीं हो सकता, जिसका कभी नाश नहीं हो सकता। फिर भी उनके देशवासियों और दूसरे लोगोंपर भी एक कर्जका भार आ पड़ा है। वह यह है कि वे रचनात्मक कामके क्षेत्रमें असली काम करके उनके ऊँचे आदर्शोंको आगे बढ़ायें। रचनात्मक काम उन्हें बहुत प्रिय था और उसके लिए उन्होंने जीवन भर लगातार मेहनत की थी।

इसलिये वर्किंग कमेटीकी यह राय है कि रचनात्मक कामोंको देशव्यापी आधारपर करनेके मकसदसे 'एक राष्ट्रीय स्मारक फंड' शुरू किया जाय। यह फंड अलग अलग भाषाओंमें लिखे गये गांधीजीके लेखों और उनकी शिक्षाओंको इकट्ठा करने, सुरक्षित रखने और प्रकाशित करनेके काममें भी इस्तेमाल किया जा सकता है। उसकी मददसे गांधीजीसे सम्बन्ध रखनेवाली चीजोंका एक म्यूजियम भी बनाया जा सकता है। फिर भी स्मारक-फंडका खास मकसद यह होगा कि अलग अलग रचनात्मक कामोंको आगे बढ़ाया जाय जिन्हें गांधीजी पसंद करते थे और इसी तरहके दूसरे कामोंको भी आगे बढ़ाया जाय जो गांधीजीके विचारोंको ठोस रूप देते हैं।

कमेटी हिन्दुस्तानके लोगोंसे अपील करती है कि वे राष्ट्रीय स्मारक फंडमें पैसा दें और सुझाती है कि हर आदमी अपनी दस दिनकी आमदनी फंडमें दे। इस फंडको खर्च करनेका तरीका इसमें दिलचस्पी रखनेवाले लोगोंकी प्रतिनिधि सभा बादमें तय करेगी। वे ही लोग फंडके ट्रस्टी और प्रबंध-समिति भी चुनेंगे। फंडका अधिकतर हिस्सा उस सूबे या रियासतमें इस्तेमाल किये जानेके लिए अलग रखा जायगा जहाँ वह इकट्ठा किया जायगा। दानी लोग अपनी रकम किसी खास रचनात्मक कामके लिए भी निर्धारित कर सकते हैं। फंडके इस्तेमाल और प्रबन्धके बारेमें तफसीलें बादमें प्रबंध-समिति तय करेगी।

इस बीच वर्किंग कमेटी कांग्रेस प्रेसिडेंटको शुरूकी सारी कार्यवाही करने और फंड इकट्ठा करनेके लिए आरजी कमेटी बनानेका अधिकार देती है। प्रेसिडेंट फंडका अस्थायी सेक्रेटरी भी नियुक्त करेंगे और चन्दा लेनेवाले बैंकोंका नाम भी प्रकाशित करेंगे।

[६ फरवरी, १९४८

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके प्रस्ताव

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी यह बैठक महात्मा गांधीजीकी हत्यापर हार्दिक खेद प्रकट करती है और भारी लज्जाका अनुभव करती है।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी यह बैठक आम जनता और खासकर कांग्रेस-जनोंसे अनुरोध करती है कि वे साम्प्रदायिकता रूपी पिशाचसे लड़नेमें अपनी अधिकसे अधिक शक्ति लगावें। यदि उस पिशाचको तत्काल न रोका गया तो वह हमारी आजादी और ध्येयको मटियामेट कर सकता है।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी कभी इस बातको नहीं भूल सकती कि अपनी हत्यासे कुछ ही पहले महात्माजीने साम्प्रदायिकताको नष्ट करने और विभिन्न सम्प्रदायोंके बीच शांति और मेल-मिलाप स्थापित करनेकी दृष्टिसे अनिश्चित समयके लिए उपवास शुरू करके अपने प्राणोंकी बाजी लगा दी थी। वह उपवास छठे दिन समाप्त हुआ था जब उन्हें आश्वासन देनेके लिए प्रतिज्ञा की गयी थी कि भारतमें मुसलमान मान-सहित सुरक्षित रूपमें रह सकते हैं।

हत्याका यह दुष्कृत्य और भी जघन्य और निन्दनीय इसलिये है कि यह ऐसे समयपर किया गया जब साम्प्रदायिकताके जहरको दूर करने, प्रेमभावना, शांति और एकता स्थापित करने तथा साम्प्रदायिक संघर्षको दूर करनेके लिए गम्भीरतापूर्वक प्रयत्न किया जा रहा था।

हमारे कर्तव्योंकी याद दिलाने और अपनी निष्ठा द्वारा हमारे मिशनमें हमें प्रेरणा देनेके लिए जब राष्ट्रपिता शरीरसे हमारे बीच नहीं हैं, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी पुनः अपना निश्चय दोहराती है कि वह उसी मार्गका अनुसरण करती रहेगी जिसे उन्होंने हमारे लिए प्रकाशमान किया है और जिस महान कार्यको वे अधूरा छोड़ गये हैं उसे पूरा करनेमें अपनी पूर्ण शक्ति लगा देगी।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी यह बैठक कांग्रेस कार्यकारिणीके उस प्रस्तावको स्वीकार करती है जिसे उसने ६ फरवरीकी बैठकमें पास किया है और जिसमें जनता और सरकारसे अनुरोध किया गया है कि वे विद्वेष और हिंसाकी उन शक्तियोंकी ओर ध्यान दें जो सामाजिक जीवनकी जड़ें उखाड़नेके लिए खुले आम या छिपकर काम कर रही हैं। उन्हें समाप्त करनेके लिए कुछ सक्रिय कार्यवाही की जाय।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी उन साम्प्रदायिक संस्थाओंको गैरकानूनी घोषित करनेके लिए केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारोंको बधाई देती है जो जान-बूझकर इस जहरको फैलानेका प्रयत्न कर रही थीं और जिनके विद्वेष-प्रचारके कारण ही हमारे कुछ पथभ्रष्ट देशवासियोंके दिमाग बिगड़ गये और उसके फलस्वरूप ऐसे दुष्कृत्य हुए।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी सरकारको आश्वासन देती है कि वह उन तत्वोंको दूर करनेमें सक्रिय सहयोग देगी जो साम्प्रदायिक विद्वेष पैदा करने और साम्प्रदायिक झगड़ों और विनाशकारी प्रवृत्तियोंको प्रोत्साहन देनेके लिए जिम्मेदार हैं।

कांग्रेसपर जो भारी दायित्व आ गया है उसे शक्तिशाली ढंगसे वहन करनेके लिए उसे स्वयं अपने घरको व्यवस्थित करना होगा। अ० भा० कां० कमेटी कांग्रेस-जनोंसे अनुरोध करती है कि वे इस संस्थाको दोषमुक्त करें, भले ही उसमें कांग्रेसके सदस्योंकी संख्या कम हो जानेका खतरा क्यों न हो। ध्यान रहे अपने पिछले दिनों गांधीजी कांग्रेसजनोंके नैतिक मानदंडकी गिरावटसे, जिसका उल्लेख स्पष्ट शब्दोंमें उन्होंने अपने पिछले उपवासके समय किया था, बड़े दुःखी थे। प्रत्येक कांग्रेस-जनका कर्तव्य है कि वह अन्तरावलोकन करे और इस महान संस्थाकी सहायता करे जिसका बरसोंके जबरदस्त बलिदानके बाद निर्माण हुआ है और उस मानदंडको पुनः प्राप्त और स्थापित करे जो गांधीजीने उसके सामने रखा है। शक्ति हाथमें आ जानेसे कांग्रेसजनोंको गम्भीर और विनम्र बनना चाहिये और अपनी जिम्मेदारीको अनुभव करके जनताका उपयुक्त सेवक बनना चाहिये।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी यह बैठक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्यायपर आधारित ऐहिक एवं जनतंत्रात्मक राज्यके आदर्शमें अपनी निष्ठा व्यक्त करती है, जिसमें हरएक नागरिकको भले, ही उसका धार्मिक विश्वास कुछ भी क्यों न हो, नागरिकताके समान अधिकारोंका आश्वासन होगा। कमेटी अपने इस निश्चयको फिर दोहराती है कि वह ऐसी ऐहिक लोकतंत्रात्मक सरकार-की जड़ोंको मजबूत बनावेगी।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी यह बैठक कार्यकारिणीके 'गान्धी राष्ट्रीय स्मारक निधि' को प्रारम्भ करनेके कार्यको पसन्द करती है जो उन रचनात्मक, शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आदर्शोंको आगे बढ़ानेकी दृष्टिसे उठाया गया है जिनसे महात्मा गांधीजीका उनके जीवनकालमें घनिष्ठ सम्बन्ध था और जिनके द्वारा वे भारतको एक सच्चा, स्वस्थ और आत्मनिर्भर, सुसंगठित एवं लोकतंत्रीय देश बनाना चाहते थे। यह कार्य विश्वशान्ति और बन्धुत्वको बढ़ावा देगा और इसके द्वारा विभिन्न भाषाओंमें गान्धीजीकी रचनाओं और उनके उपदेशोंका संग्रह संरक्षण और प्रकाशन होगा।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी यह बैठक कार्यकारिणीके 'गान्धी राष्ट्रीय स्मारक निधि' के प्रस्तावको स्वीकार करती है और सभापति द्वारा दस दिनकी आमदनी उस निधिमें देनेके लिये जनतासे जो अपील की गयी है उसका समर्थन करती है।

[२१ फरवरी, १९४८

भारत सरकारका प्रस्ताव

भारत और संसारपर अकस्मात् एक अत्यन्त दुःखद विपदा आपड़ी है। ३० जनवरीको शामके ५ बजेके कुछ ही बाद एक निर्दय हत्यारेने मानवजातिके सर्वोपरि मूल्यवान जीवनको जो लगभग आधी शताब्दीतक भारतका भाग्य-विधायक था, समाप्त कर दिया। महात्मा गांधी, राष्ट्रपिता और सब लोगोंका प्यारा, अहिंसाका पुजारी, संत, शांतिका दूत, स्वतंत्रताके युद्धका महान सैनिक, नीचेसे नीचे और उत्पीडित लोगोंका प्रेमी जब प्रार्थनाके लिए जा रहा था, जहाँ उसके देशवासी प्रत्येक सायंकाल उसका संदेश सुननेके लिए एकत्र हुआ करते थे, तब मार्गमें उसका जीवन समाप्त हो गया। राष्ट्रकी महान दुःखद घटनापर शोक व्यक्त करता हुआ सूर्य अस्त हो गया।

भारतके लोगोंमें शान्ति और परस्पर मैत्री स्थापित करनेके उद्देश्यसे अपना जीवन बलिदान करनेका निर्णय, गांधीजीका अंतिम महान कार्य था। जनता द्वारा पवित्र प्रतिज्ञा करनेपर गत रविवार १८ जनवरीको उन्होंने अपना उपवास समाप्त किया था और उस समय भारतने चैनकी साँस ली थी।

भारत और मानवताके प्रति घोर और निरन्तर सेवाका जीवन अपने उद्देश्यकी पूर्तिके प्रयासमें समाप्त हो गया। उस प्रतिज्ञाको अक्षरशः पूरा करना अब भारत सरकार और भारतके लोगोंका काम है।

भारतका महान पुरुष और सन्त इस संसारसे चला गया है। संसार इस निधनपर शोक प्रकट कर रहा है और उसकी तेजोमय आत्मा और उसके महान कार्योंके प्रति संसारके लोग श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। शोकसे आच्छा-दित भारत सरकार अब भी गर्व और कृतज्ञतासे अपने उस महान नेताका स्मरण करती है जो करोड़ों व्यक्तियोंके लिए प्रेरणाका स्रोत था और जिसने उन्हें उच्च प्रयास और सत्कार्यका मार्ग दिखाया था। सदाकी तरह मृत्युमें भी वह मुस्करा रहा था। सत्य और अहिंसाके उनके संदेशका वह प्रतीक था। उसके हृदयमें सबके लिए प्रेम भरा था। न्याय और परस्पर सहिष्णुताके लिए एक दीर्घ-कालीन संघर्ष ही उसका जीवन था।

महात्मा गांधीकी गौरवपूर्ण स्मृतिमें सम्मानपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करती हुई भारत सरकार यह घोषणा करती है कि इस दिवंगत आत्माके महान आदेशको पूरा करनेकी वह भरसक चेष्टा करेगी। उनके लिए कर्तव्यकी पुकार सर्वोपरि थी। अब वह कर्तव्य भारतकी जनतासे उत्साह, सूझबूझ, विश्वास, सत्य

मार्गका अनुसरण और सहिष्णुता चाहता है। भारत सरकार देशके लोगोंको इस राष्ट्रीय शोकके समय भी इस कर्तव्यका स्मरण कराती है और उनसे अनुरोध करती है कि दृढ़ता और विवेकसे भविष्यका मुकाबला करें। इस समय हमारे बीच जो हिंसात्मक और कुत्सित वृत्तियाँ काम कर रही हैं और जिन्होंने भारतसे एक अमूल्य रत्न छीन लिया है उनका मुकाबला करनेमें भारत सरकारकी जनताको सहायता करनी चाहिये। इस कुत्सित कार्यने भी उस आत्माकी प्रभाको अधिक समुज्ज्वल कर दिया है जो आज प्रकाश दे रही है और जो भारतको तथा समस्त संसारको भविष्यमें भी प्रकाश देती रहेगी। सदाकी भाँति यह महान आत्मा इस भारतकी जिससे वह इतना प्रेम करती थी और जिसकी उसने इतनी तत्परतासे निरन्तर सेवा की, रक्षा करती रहेगी और उनका मार्ग-निर्देशन करती रहेगी। यह आत्मा भारतकी और भारतके सन्देशकी प्रतीक थी। इसलिए हमें गांधीजी और भारतके प्रति सत्यनिष्ठ होना चाहिये और भारतके लिए उनके स्वप्नको सच्चा बनाना चाहिये।

[२ फरवरी १९४८

'मैं मृत्युसे कभी नहीं डरता। मेरा जीवन तो भगवानके हाथमें है, वह जब तक उसका उपयोग चाहेगा करेगा। मैं चोटसे भी भय नहीं करता। धार्मिक सहिष्णुता और हिंदू-मुस्लिम एकतासे मेरे जीवनकी इच्छा बढ़ेगी। मुझे यदि अपने बीच देखना चाहते हो, तो मेरी यह शर्त है कि भारतकी सभी जातियाँ एक दूसरेसे मिल-जुलकर शांतिसे रहें—शस्त्र-प्रदर्शन, बल-प्रयोगसे नहीं वरन् प्रेमसे; ताकि यही सम्बन्ध हमें विश्वसे बाँध सके। जबतक भारत और पाकिस्तानमें शांति नहीं होती, तबतक मुझे जीनेकी इच्छा नहीं होती।'

—महात्मा गांधी

डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद

[सभापतिः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा विधान परिषद्]

महात्मा गान्धीका पार्थिव शरीर हमारे साथ अब नहीं रहा। उनके चरण अब स्पर्श करनेको हमें नहीं मिलेंगे। उनका वरद हस्त हमारे कन्धोंपर अब थपकियाँ नहीं दे सकेगा। उनकी मधुर वाणी अब हमें सुननेको नहीं मिलेगी। उनकी आँखें अब अपनी दयासे हमें सराबोर नहीं कर सकेंगी। पर उन्होंने मरते-मरते भी हमें बताया है कि शरीर नश्वर है, आत्मा अमर है। वह शरीरसे नहीं हैं पर उनकी आत्मा हमारे सब कर्मों और कुकर्मोंको देख रही है। जो काम उन्होंने अधूरा छोड़ा है हमें उसको पूरा करना है और यही एकमात्र रास्ता है, जिससे हम उनकी स्मृति कायम रख सकते हैं। यों तो जो कुछ उन्होंने किया वह उनको अमर बनानेके लिए संसारके सामने हमेशा बना रहेगा। और किसी दूसरे प्रकारके स्मृति-चिन्हकी आवश्यकता नहीं है, पर तो भी मनुष्य अपनी सान्त्वनाके लिए कुछ न कुछ करता है। इसलिए सोचा गया है कि गान्धीजीकी स्मृतिको कायम रखनेके लिए जो रचनात्मक काम उन्हें प्रिय थे उनको बहुत जोरोंसे चलाना चाहिये और फैलाना चाहिये। महात्मा गान्धी रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा ही अपने सत्य और अहिंसाके सिद्धान्तोंका कार्यरूपमें फूलना-फलना देखना चाहते थे और उनको मानकर ही हम उनके सिद्धान्तोंको सच्चे रूपमें संसारमें रख सकेंगे। इसलिए उसी कार्यक्रमका चलाना, बढ़ाना, प्रसार एवं प्रचार करना, उनके सिद्धांतोंको कार्यरूपमें परिणत करना है। कांग्रेसकी कार्यसमितिने देशके लोगोंसे निवेदन किया है कि सब लोग अपनी कम-से-कम दस दिनोंकी कमाई इस स्मारक कोषमें दें। इस कोषका खर्च इसी रचनात्मक कामको फैलाने और महात्माजीके लेखों और प्रवचनोंके संग्रह और प्रकाशन तथा उनसे सम्बन्ध रखनेवाली सभी वस्तुओंको एकत्र करके रखनेमें किया जायगा। इसके लिए जो अधिकारी लोग नियुक्त किये जायेंगे उनके नाम पीछे प्रकाशित किये जायेंगे।

पर आज मैं इस कोषके सम्बन्धमें अपील करनेके लिए नहीं बोल रहा हूँ। उसके लिए अपीलकी जरूरत नहीं है। लोग स्वयं पैसे भेजेंगे। आज तो मैं इस भयंकर दुर्घटनापर विचार करना चाहता हूँ कि यह हत्या क्यों हुई, किस कारण की गयी। अहिंसाके एकमात्र अनन्य पुजारी हिंसाका शिकार क्यों बनाये गये। भारतवर्षमें इधर कई वर्षोंसे साम्प्रदायिक झगड़े इतने चले आ रहे हैं और साम्प्रदायिक भेदभावका इतने जोरोंसे प्रचार किया गया कि उसीके फलस्वरूप आज यह दुर्घटना हुई। गान्धीजीने अपनी सारी शक्ति इस साम्प्रदायिक भेदभावके विरुद्ध लगा दी थी। और आज जो काम वह अपने जीवनमें पूरा नहीं कर गये उनके स्वर्गारोहणके बाद इस हत्याकांड द्वारा वह पूरा होना चाहिये। क्या किसीके दिलमें ऐसा विचार पैदा हुआ कि गान्धीजी हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज-

का अहित चाहते हैं। क्या कभी यह सम्भव था कि उस आदमीका अहित, जिसने हिन्दू धर्म, हिन्दू समाज और हिन्दुस्तानको अपनी गिरी हुई अवस्थासे उठाकर इस शिखरतक पहुँचाया था, कोई कभी स्वप्नमें भी सोच सकता था। नहीं। पर जो लोग संकुचित विचारके हैं, दूरतक देख नहीं सकते, धर्मके ममको समझ नहीं सकते उन्होंने ऐसा समझा और उसीका यह फल हुआ। क्या इस हत्यासे हिन्दू-धर्म और हिन्दू-समाजकी रक्षा हुई ? हिन्दू समाजके इतिहासमें कोई ऐसी दुर्घटना नहीं मिलती। हिन्दू इतिहासमें लड़ाइयोंका उल्लेख है पर जितने भी युद्ध हुए वे सब धर्मयुद्ध हुए। धर्मयुद्धका नियम था किसीको कभी इस तरह धोखा देकर किसीने न मारा। किसी महात्माकी हत्याका तो कहीं उल्लेख ही नहीं मिलेगा। यह पहला अवसर है। हिन्दू समाजके इतिहासमें भी किसी हिन्दू पर ऐसे पापका लांछन लगा है और इसमें सन्देह नहीं कि यह ऐसा धब्बा है जिसको कोई मिटा नहीं सकता। और हत्या किसकी की गयी ? गांधीजीका पार्थिव शरीर, वह खुद कहा करते थे, कोई चीज नहीं। जो गोली लगी वह गान्धीजीके हृदयमें नहीं लगी, वह तो हिन्दू धर्म और हिन्दू समाजके मर्मस्थलमें लगी। इसलिए आज प्रत्येक भारतवासीका यह कर्तव्य है कि वह अपना नेत्र खोले और देखे कि क्या यह साम्प्रदायिक पाप उसके दिलमें भी कोई स्थान रखता है। और यदि रखता हो तो उसे निकाल दे,अपना हृदय साफ कर ले और तभी वह दूसरेके हृदयको समझ और देख सकेगा। हमारा बड़ा भारी दोष है कि हम अपने पापों, बुरे रास्तों और कुभावनाओंको जिनको हमीं सबसे अधिक जान और देख सकते हैं, नहीं देखते और न समझनेकी कोशिश करते हैं और दूसरोंके दोषकी खोजमें अपनी आँखें और अपने विचार दौड़ाया करते हैं। आवश्यकता है कि हम अपनी आँखोंको अन्तर्मुखी बनाकर अपनी ओर देखें। यदि हममेंसे प्रत्येक मनुष्य अपनेको सुधार ले तो सारा संसार सुधर सकता है। गांधीजीने यही सिखाया है और आज यदि भारतको जीवित रहना है तो उन्हींके सत्य और अहिंसाके रास्तेपर चलकर वह जीवित रह सकता है। उसी रास्तेपर चलकर वह स्वराज्य तक पहुँचा है; पर स्वराज्य अभी तक सुराज नहीं हो सका क्योंकि हम उस रास्तेपर दृढ़ निश्चयके साथ नहीं चल रहे हैं।

कांग्रेसजन जो गांधीजीके पीछे चलनेका दम भरा करते थे, जिन्होंने बहुत कुछ त्याग भी किया, आज समझ रखें कि उनकी परीक्षा हो रही है। उनमें-से प्रत्येकके सामने यह प्रश्न है कि क्या सचमुच वह इस हत्याका कुछ अंशमें भागी नहीं है। यदि हममेंसे हरएक गान्धीजीके पथपर चला होता, गान्धीजीकी बातों को हरएकने माना होता तो यह दुर्घटना असम्भव थी। हमारी कमजोरियोंका, उनके बताये पथपर हमारे न चलनेका ही यह दुष्परिणाम देखना पड़ा और अभी स्वराज्यको सुराज्य बनानेमें जो कुछ बाकी है अगर उसको पूरा करना है तो हम व्यक्तिगत भेदभाव छोड़ दें, साम्प्रदायिक भेदभाव उठा दें और सच्चे त्यागके साथ

फिर भी देशकी सेवामें लगें। हमें यह भूल जाना चाहिये कि त्यागका समय चला गया और भोगका समय आ गया। जब हथकड़ियों, जेलखानों, लाठियों और गोलियोंके सिवाय हमें कुछ दूसरा मिल ही नहीं सकता था तो हम त्याग क्या कर सकते थे। हाँ, अकर्मण्य बनकर कायरतापूर्वक हम भाग सकते थे। जब हमारे हाथोंमें कुछ न कुछ अधिकार हो, जब हमको इसका अवसर हो कि हम अपने हाथोंको गरमा सकें, अपनी प्रतिष्ठाको संसारकी आँखोंमें बहुत बढ़ा सकें और अपनेको एक बड़ा अधिकारी दिखला सकें और फिर भी उस अधिकारकी परवाह न कर सेवाका ही ख्याल रखें, धनके लोभमें न पड़ें और अपनी सादगीमें बड़प्पन देखें, तभी हम कुछ त्याग दिखला सकते हैं। आज सांसारिक वस्तुओंको हम कुछ प्राप्त कर सकते हैं; उनके त्यागनेको ही त्याग कहा जा सकता है। जब वह प्राप्य नहीं थीं उस वक्त त्याग क्या हो सकता था? गान्धीजीकी मृत्यु हममें यह भावना एक बार और जागरित कर दे, यही ईश्वरसे प्रार्थना है और इसीमें देशका कल्याण है।

o o o

यद्यपि आज बापूका शरीर नहीं रहा तथापि उनके शब्द और उपदेश अमर हैं। हमें निःसंशय होकर उनका अनुसरण करना चाहिये। गांधीजीका बिहारसे विशेष सम्पर्क रहा है और वे बहुधा कहा करते थे कि बिहार ही वह स्थान है जहाँ मुझे अपने सत्यके सविस्तर प्रयोगके लिए प्रथम अवसर मिला था। बिहारकी जनताने उनकी बातें उस समय सुनीं जब भारतमें उन्हें विशेष ख्याति नहीं मिली थी।

अतः निश्चित है कि गांधीजीको बिहारसे विशेष प्रेम था। किन्तु जब सन् ४६ के अक्तूबर-नवम्बरमें बिहारमें हिन्दू-मुसलिम दंगा हुआ, तब उन्हें अतिशय पीड़ा हुई। उन्हें ऐसा लगा कि किसी निकट सम्बन्धीने हमें चोट पहुँचायी है। उस समय वे बंगालमें थे। वहाँसे उन्होंने यह संदेश भेजा कि यदि इस प्रकार उपद्रव होते रहे तो मैं अनशन करूँगा। ज्यों ही यह संवाद बिहारमें पहुँचा दंगे बंद हो गये और उस समय जो शान्ति स्थापित हुई वह अबतक बनी हुई है। इसके बाद वे पुनर्वासन-कार्यके सम्बन्धमें बिहार आये और वह कार्य चल ही रहा था कि उन्हें दिल्ली चले जाना पड़ा। अतः बिहारके लोगोंपर विशेष उत्तरदायित्व है। उनका कर्त्तव्य है कि जिसके लिए गांधीजीको प्राणार्पण करना पड़ा है उस शान्ति और साम्प्रदायिक सद्भावनाको वे बनाये रखें तथा साम्प्रदायिकताका विष दूर करें।

[बिहारवासियोंको दिये गये सन्देशसे

o o o

हमसे बोलने, हमें धीरज बँधाने, हमें बढ़ावा देने और हमारी रहनुमाई करनेके लिए महात्मा गांधी आज हमारे बीच जिंदा नहीं हैं। मगर क्या उन्होंने

अक्सर हमसे यह नहीं कहा कि शरीर अस्थायी है और एक न एक दिन उसका नाश अवश्य होता है, और सिर्फ आत्मा ही अमर है और उसका कभी नाश नहीं होता? क्या उन्होंने हमसे यह नहीं कहा था कि जबतक भगवान्‌को मेरे इस शरीरसे काम लेना होगा, तबतक यह इसे बनाये रखेगा? हो सकता है कि उनकी आत्मा शरीरके बंधनोंसे छूटकर ज्यादा आजादीसे काम करे और ऐसे साधन पैदा करे जो उनके अधूरे कामको पूरा कर सकें। हो सकता है कि यमुनाके किनारे पड़ी हुई उनकी राखमेंसे ऐसी ताकतें उठ खड़ी हों, गलतफहमी और अविश्वासके सारे कुहरे और बादलको उड़ा दें और ऐसी शांति और मेल कायम करें, जिसके लिए वे जिये, उन्होंने काम किया और हाय, अंतमें हत्यारेकी गोलीके शिकार बने।

हिंदू धर्ममें या सच पूछिये तो इंसानियतमें जो महान् और श्रेष्ठ है, क्या वे उस सबके सार और साकार रूप नहीं थे? और तिसपर क्या वह एक हिंदूका ही हाथ नहीं था, जिसने उस हृदयको अपनी गोलीका निशाना बनाया, जो जाति, धर्म और देशकी सीमाओंसे परे था? इस पापका मकसद क्या हो सकता है? क्या यह हिंदू धर्मको बचानेके लिए किया गया है? क्या इससे हिंदू-समाजकी सेवा होगी? क्या ऐसा करने से हिंदू धर्म बचा लिया गया? क्या इस तरह हिंदू-समाजकी सेवा हो गयी? हिंदू धर्म और हिंदू समाजके विविधताभरे इतिहासके अगणित पन्नोंको देख जाइये, आपको ऐसे बुरे और धोखेसे भरे हुए कामका दूसरा उदाहरण नहीं मिलेगा। यह उस इतिहासपर ऐसा अमिट कलंक है जो किसी तरह नहीं धुलेगा।

हम दुःखी हैं। हम भौंचक्केसे हैं। तो क्या हम निराश हो जायँ? गांधीजीका शरीर अब हमें देखनेको नहीं मिलेगा। अब हम उनकी आवाज नहीं सुन सकेंगे। मगर क्या वे एक बेशकीमती मीरास हमारे लिए नहीं छोड़ गये हैं। अपने मार्गमें आगे बढ़ाने और सहारा देनेके लिए क्या उन्होंने हमारी काफी रहनुमाई नहीं की और हमें काफी प्रेरणा नहीं दी है? इस संकटके समय उनकी ललकार हममें फिरसे कर्त्तव्यकी भावना जागरित करे। उन्होंने मिट्टीमेंसे योद्धा पैदा किये। गैरइंसाफी, दमन और गुलामीके खिलाफ अपनी जीवनभरकी लड़ाईमें उन्होंने अपूर्ण हथियारोंका कुशलतासे उपयोग किया। अच्छाईको कायम करने के लिए हिंदुस्तानको वैसी ही बहादुरीकी, वैसी ही खतरोंकी उपेक्षा करने की और उसी तरह नतीजोंकी तरफसे बेफिक्र रहनेकी जरूरत है। गांधीजीने उसे कायम करनेके लिए अपनी जान दे दी। क्या हम गांधीजीका उनके अवसानके बाद उसी तरह अनुसरण नहीं करेंगे, जिस तरह हम उनके जीते-जी करते थे।

यह क्रोध करने या बदला लेनेका वक्त नहीं है। गांधीजीके उपदेशमें इनमेंसे किसीके लिए भी कोई अवकाश या जगह नहीं है। जरूरत इस बातकी है कि हम आत्माका हनन करनेवाली उस संकुचित सांप्रदायिकताको जड़-मूलसे

उखाड़ फेंकनेका पक्का निश्चय कर लें, जिसकी वजहसे यह पाप संभव हुआ है। गांधीजीके सियासी, सामाजिक या आर्थिक कामोंके हमेशा दो पहलू रहे हैं—नकारात्मक और स्वीकारात्मक। बुरी इच्छाओंका अवश्य ही खात्मा कर देना चाहिये, ताकि अच्छी भावनाएँ उनकी जगह ले सकें। फिरकेवाराना अविश्वास और झगड़े खत्म होने चाहिये और आपसी मेल-मिलाप और भाईचारा कायम किया जाना चाहिये। यह गांधीजीकी अंतिम इच्छा थी। हमें उनकी यह इच्छा अवश्य पूरी करनी चाहिये और हम उसे पूरी करके रहेंगे।

❀

ब्रिटेनके नरेश : छठे जार्ज

[भारतके गवर्नर जेनरलको तार]

महात्मा गांधीकी मृत्युके समाचारसे मैं और सम्राज्ञी बहुत दुःखी हुईं। कृपया भारतकी जनताको मेरी हार्दिक समवेदना दें। उनकी ही नहीं वरन् समस्त मानव जातिकी ऐसी क्षति हुई है जिसे कभी पूरा नहीं किया जा सकता।

० ० ०

[ब्रिटेन नरेशको भारतके गवर्नर जनरलका उत्तर]

गांधीजीका निधन वस्तुतः मानव-मात्रकी हानि है। उसे इस समय ऐसे प्रेम और सहिष्णुताके आदर्शोंके प्रकाशकी आवश्यकता है जिसके लिए गांधीजी आजीवन प्रयत्नशील थे और उसी प्रयत्नमें जान दी। इस दुःखपूर्ण स्थितिमें भी भारतको इस बातका गर्व है कि उसने उन सरीखा एक अमर व्यक्ति संसारको प्रदान किया। भारतको विश्वास है कि उनका उदाहरण उसको अपने भाग्य-निर्माणमें प्रेरणा और शक्ति देता रहेगा।

यमुना नदीके तटसे, जहाँ कि आज तीसरे पहर उनका दाहसंस्कार किया गया मैं अभी अभी लौटा हूँ। इस महापुरुषकी अन्त्येष्टिके अवसर जो विशाल जनसमूह एकत्र हुआ था वह उनकी अति व्यापक लोकप्रियताका प्रतीक है। इस जनसमुदायके शोकसे प्रकट होता है कि इस देशकी जनतामें उनका कितना सम्मान था। प्रायः यह सत्य ही है कि सम्भवतः अब शताब्दियों तक भारत ही नहीं वरन् समस्त संसारको ऐसी महान विभूतिके पुनः दर्शन न होंगे। शोक एवं संतापकी इस अभूतपूर्व घड़ीमें हमें एकमात्र यही संतोष है कि सत्यता, सहिष्णुता एवं प्रेमसे परिपूर्ण उनका जीवन हमारे इस संकटापन्न संसारको, उनके अनुगमनसे, विनाशसे बचनेके लिए प्रेरित कर सकेगा।

० ० ०

चिताकी लपटें, जिन्होंने बापूका नश्वर शरीर आत्मसात कर लिया

यमुनाके किनारे बापूकी पवित्र चिताके समीप अमृतकौर, लेडी माउण्टबैटन, लार्ड माउण्टबैटन और उनकी पुत्री पमिला, मौलाना अबुल कलाम आजाद, चीनके भारत-स्थित राजदूत भूमिपर शोकमग्न बैठे हैं

लार्ड लूई माउण्टबेटन

[भारतके गवर्नर-जेनरल]

सभ्य संसारके प्रत्येक भागमें महात्मा गान्धीकी मृत्युसे करोड़ों व्यक्तियों-को ऐसा शोक हुआ है, जैसे उनके किसी अपने व्यक्तिका ही देहावसान हुआ हो। केवल वही नहीं जो जीवन भर उनके साथ रहे या वे जिन्हें मेरी तरह उन्हें थोड़े समय तक जाननेका अवसर मिला, वरन् उन लोगोंने भी, जो उनसे न कभी मिले, जिन्होंने न कभी उन्हें देखा और जिन्होंने उनके प्रकाशित ग्रंथोंका एक अक्षर भी नहीं पढ़ा, यह अनुभव किया जैसे उनके किसी निजी मित्रका निधन हुआ है।

"प्रिय मित्र"—शब्दों द्वारा वे अपने पत्रमें मुझे सम्बोधन किया करते थे और मैं भी इसी प्रकार उन्हें उत्तर दिया करता था, क्योंकि उन्हें संबोधन करनेका यही उचित तरीका था। और मैं और मेरा परिवार सदा उन्हें इसी रूपमें याद रखेगा।

मैं गांधीजीसे पहली बार विगत मार्चमें मिला था। भारत पहुँचनेपर मेरा सबसे पहला कार्य गांधीजीको पत्र लिखकर यह सुझाव पेश करना था कि हम दोनों जल्दीसे जल्दी मिलें। और प्रथम मिलनके अवसर पर ही हमने फैसला किया कि एक दूसरेकी सहायता करने तथा उपस्थित समस्याओंको हल करनेका सर्वोत्तम तरीका निजी सम्पर्क कायम रखना है। वे अंतिम बार मुझसे मिलने लगभग एक महीना पहले प्रार्थना-सभाके कुछ मिनट बाद आये थे, जिसमें उन्होंने साम्प्रदायिक सद्भावना स्थापित होनेके अभावमें आमरण अनशन करने की घोषणा की थी। मैंने उन्हें जीवितावस्थामें अन्तिम बार उस समय देखा जब मैं अपनी पत्नीके साथ अनशनके चौथे दिन उनसे मिलने गया था। अपने परिचयके पिछले दस महीनोंमें हमारी मुलाकातें कायदेकी कार्रवाई नहीं थी बल्कि उन्हें दो मित्रोंकी भेंट ही कहा जा सकता है। हमारे मध्य इतना विश्वास और सद्-भावना पैदा हो गयी थी कि वह चिरकालतक स्मृति-पटलपर अंकित रहेगी।

शान्तिके देवता और अहिंसाके अवतार गांधीजीकी मृत्यु हिंसासे हुई। वे धर्मोन्मादकी बलिवेदी पर शहीद हो गये—उसी धर्मोन्मादकी जिसके कारण भारतकी नव-प्राप्त स्वाधीनताके लिए संकट उत्पन्न हो गया है। गांधीजीने सोचा कि आगे आनेवाले राष्ट्रनिर्माणकारी कार्यका श्रीगणेश करनेसे पूर्व इस विषैले फोड़े-को अच्छा करना ही पड़ेगा।

हमारे महान प्रधान-मंत्री पंडित नेहरूने अपने आगे एक ऐसा लोक-तंत्रीय तथा असाम्प्रदायिक राज्य स्थापित करनेका उद्देश्य रखा है, जिसमें सभी उपयोगी तथा रचनात्मक जीवन व्यतीत कर सकें और जिसमें साम्प्रदायिक तथा

आर्थिक न्यायपर आधारित समाजका विकास किया जा सके। गांधीजीके लिए हम सबसे बड़ी श्रद्धांजलि यही अर्पित कर सकते हैं कि उस स्वाधीनताके आधार पर, जिसकी नींव गांधीजी अपने जीवनमें ही मजबूतीसे रख गये, इस प्रकारके समाजका निर्माण करनेमें अपने सम्पूर्ण हृदय, मस्तिष्क और हाथोंसे लग जाँय। गांधीजीकी जिस दुःखद परिस्थितिमें मृत्यु हुई है यदि उससे हम कुछ भी स्तब्ध हुए हैं, यदि उससे हमें अपने मतभेद दूर करने और संयुक्त रूपसे प्रयत्न करनेमें कुछ भी प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है तो कहा जा सकता है कि जिस राष्ट्रसे वे इतना प्रेम करते थे उसकी उन्होंने सबसे महान तथा अन्तिम सेवा इस प्रकारकी। केवल इसी प्रकार उनके आदर्शकी प्राप्ति की जा सकती है और भारत अपनी बपौतीको पूरी तरह प्राप्त कर सकता है।

❀

लेडी एडविना माउण्टबेटन

महात्माजीकी मृत्यु अन्तर्राष्ट्रीय क्षति नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय दुर्घटना है। मैं शीघ्रातिशीघ्र दिल्ली पहुँचना चाहती हूँ जिससे इस संकटकी घड़ीमें अपने पतिके पास रह सकूँ। मेरा हृदय इस समय इतना भरा हुआ है कि कुछ कहनेको शब्द नहीं मिल रहे हैं। गांधीजीका निधन विश्वकी क्षति है।

गांधीजी महान नेता थे। इस समय अधिकसे अधिक हम यही कर सकते हैं कि उन्होंने जो कुछ हमें सिखाया है हम उसपर चलें। उनकी मृत्यु हमारी पारिवारिक क्षति जैसी है और ऐसा अनुभव उन सभी लोगोंको होगा जो गांधीजीके निकट सम्पर्कमें रहे हैं। [मद्रासः ३० जनवरी १९४८]

❀

माननीय गणेश वासुदेव मावलंकर

[अध्यक्षः विधान-परिषद (धारा सभा)]

आज हम दोहरी दुर्घटनाकी छायामें मिल रहे हैं। एक दुर्घटना तो यह है कि हमारे युगका वह सर्वोच्च महापुरुष जिसने हमारी दासताके बन्धन तोड़ कर हमें स्वाधीन बनाया आज नहीं रहा और दूसरी दुर्घटना यह है कि हमारे देशमें राजनीतिक हिंसामें लोगोंका विश्वास फिर प्रकट हुआ है।

भारतके राजनीतिक गगनमें उदय होनेके समयसे ही महात्मा गांधी हिंसाका विरोध करते आये हैं। हम लोग सोचने लगे थे कि उन्हें अपने कार्यमें अत्यधिक सफलता प्राप्त हो चुकी है। यद्यपि पिछले महीनोंमें साम्प्रदायिक उपद्रवों

तथा लोकप्रिय भावोंकी अभिव्यक्तिसे हमारा यह विश्वास बुरी तरह डिग उठा था, किन्तु फिर भी हम आशा लगाये थे कि राजनीतिक उद्देश्योंकी पूर्तिके लिए जानबूझ कर कुत्सित हत्याएँ करनेका समय इस देशसे लद चुका। गत शुक्रवार की शामकी अभागिनी एवं कायर घटनाने हमें निराश कर दिया है और हमारे सामने, राजनीतिक उद्देश्योंकी पूर्तिके लिए हिंसासे काम लेनेके विचारको आमूल नष्ट कर देनेकी एक नयी समस्या उपस्थित कर दी है। मालूम होता है कि हमें अभी यह अनुभव करना बाकी ही है कि राजनीतिक हिंसा व्यक्तिगत स्वतन्त्रताकी और इस प्रकार लोकतन्त्रकी सबसे बड़ी शत्रु है। राजनीतिक उद्देश्योंकी पूर्तिके लिए हिंसाके इस विचारकी हम कड़ेसे कड़े शब्दोंमें निन्दा करते हैं। किन्तु पथ-भ्रष्ट लोगों और दुःखान्त कांड करनेवाले पागलोंकी निंदा मात्र करना पर्याप्त नहीं है। प्रत्येक विचारवान नागरिकपर आज यह जिम्मेदारी आ पड़ी है कि वह इस प्रकार कार्य करे और अपने जीवनको इस रूपमें ढाले ताकि इस बातका पक्का निश्चय हो जाय कि हमारे इस देशमें आन्तकवादको पनपनेके लिए अनुकूल वातावरण प्राप्त न होगा; जैसा गांधीजी प्रायः कहा करते थे, "अहिंसाके बिना वास्तविक लोकतन्त्र संभव नहीं है।"

मेरा सौभाग्य था कि सन् १९१५ से ही जब महात्मा गांधीने स्थायी रूपसे यहाँ निवास ग्रहण करनेके लिए भारतकी भूमि पर कदम रखा, मैं उनके सम्पर्कमें रहा। तबसे आजतकके इन वर्षोंमें मैं महात्मा गांधीकी अनुप्रेरणा एवं पथ-प्रदर्शनमें जो कुछ भी मुझसे हो सकी, थोड़ी बहुत जनसेवा करता आया हूँ। स्वभावतः हमारे देशका इतिहास और पिछले ३४ वर्षोंके स्वाधीनता-प्राप्तिके लिए हुए हमारे आन्दोलनोंका चित्र आज हमारी आँखोंके सामने आ जाता है। हमें स्वराज्य प्राप्त करनेके लिए अपने उपायों, तरीकों आदिसे सम्बद्धित उन दिनोंके आदर्शोंकी याद आ जाती है और फिर हम यह सोचते हैं कि इन सब बातोंको महात्मा गांधीने अपने व्यक्तित्व द्वारा किस प्रकार प्रभावित किया। आज ऐसी अनेक बातें मेरे दिमागमें ताजा हो रही हैं; किन्तु सविस्तर उन सबका उल्लेख करनेका यह समय नहीं। इतना ही कहना पर्याप्त है कि सत्याग्रह अर्थात् अहिंसापूर्ण प्रतिरोधका अमोघ साधन प्रदान करके गांधीजीने हमारा सारा निरुत्साह एवं निराशा नष्ट कर दी और ब्रिटिश साम्राज्यवादके विरुद्ध हमारी लड़ाईमें हमें नवीन आशाओंसे अनुप्रेरित किया। उन्होंने हमें प्रत्यक्ष करके दिखाया कि जनताके लिए स्वराज्यका सच्चा अर्थ क्या है। हममें जो कुछ अपना था वह हमसे छिना नहीं और हम पश्चिमकी नकल करनेसे बच गये। यह सब उन्हींके पथप्रदर्शनका परिणाम था। जीवनका शायद ही कोई ऐसा पक्ष हो, जो महात्माजीके प्रभावसे अछूता बचा हो। उन्होंने हमारी राजनीति, अर्थ-व्यवस्था तथा शिक्षाको एक नवीन युगान्तकारी परिवर्तनसे प्रभावित किया और हमारे सार्वजनिक जीवनके प्रायः सारे

अंगोंको आध्यात्मिकताका जामा पहनाया। वह हमारे युगके सबसे बड़े पुरुष थे। मानवताका प्रेम सदा ही उनके हृदयमें प्रज्ज्वलित रहा और द्वेष एवं हिंसापूर्ण संघर्षोंके अन्धकारपूर्ण अवसरोंमें भी प्रेमकी उनकी यह आग न बुझी। गांधीजी अपने जीवनमें कभी निराशवादी नहीं बने, ऐसे समयमें भी नहीं जब उन्होंने अकेले ही अपनी आवाज उठायी हो। स्वयं अपने सिद्धान्तों एवं आदर्शोंमें इस प्रकारका अटूट विश्वास रखते हुए, स्वभावतः उन्होंने हमें साहस एवं बल प्रदान किया।

आज बहुत ही संकटपूर्ण समयमें वे हमसे छूट गये हैं, ऐसे समय जो न केवल हमारे देशके लिए बल्कि शायद संसारके इतिहासमें संकटपूर्ण है। उनका दृष्टिकोण मानवता, अन्तर्राष्ट्रीय भ्रातृत्व तथा 'एक दुनिया' के भावोंसे परिपूर्ण था। उनके सम्बन्धमें हम जिन बातोंका भी आदर करते, प्रेम करते तथा शोक मनाते हैं, उन्हें व्यक्त करनेके लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं।

वे कभी किसी धारा-सभाके सदस्य नहीं थे। एक बार छोड़ कर वे कभी किसी भी धारा सभाकी कार्रवाई भी देखने नहीं गये। जैसा अपनी आत्मकथामें उन्होंने स्वयं लिखा है वे इस सभाकी कार्रवाईमें अपने जीवनमें केवल एक बार उपस्थित हुए, उस समय जब 'रौलट-बिल' पर बहस हो रही थी। बिलके सम्बन्धमें स्वर्गीय श्रीनिवास शास्त्रीकी भावावेशपूर्ण वक्तृताका उल्लेख करते हुए वे कहते हैं—

"वाइसराय ऐसे ध्यानसे सुन रहे थे मानों उनपर जादू हो गया हो। उनकी आँखें शास्त्रीजी पर लगी हुई थीं। एक क्षणके लिए मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो वाइसराय पर इस वक्तृताका गहरा प्रभाव पड़े विना रह सकता.. ..किन्तु आप किसी मनुष्यको तभी जगा सकते हैं जब वह वास्तवमें सो रहा हो....सरकार जाब्तेकी कार्यवाही करनेके लिए केवल स्वांग कर रही थी..।"

उपर्युक्त उद्धारणसे स्पष्ट हो जाता है कि उस समयकी धारा-सभाओंके प्रति गांधीजीका रुख कैसा था। किन्तु आज स्थिति उससे सर्वथा भिन्न है। उनके प्रेरणापूर्ण पथप्रदर्शन एवं प्रयास द्वारा भारतने स्वाधीनता प्राप्त की और आज धारा सभा और सरकार दोनों ही हमारी हैं। मेरी इच्छा थी कि वे एक दिन इस भवनमें हमें आशीर्वाद देने आये होते, उस पवित्र एवं दायित्वपूर्ण कार्यके लिए, जिसे हमने इस केन्द्रीय धारा-सभाके द्वारा अपने ऊपर लिया है।

मुझे विश्वास है कि यह पूरी सभा मेरे इस भावसे सहमत है कि महात्माजी सबके पिताके समान रहे हैं और हम सब तथा हममेंसे प्रत्येक व्यक्ति आज उनके विछोहसे तथा उनके पथप्रदर्शनके विना अत्यधिक शोकग्रस्त हैं। ईश्वरसे प्रार्थना है कि उनकी आत्मा सदैव हमारे साथ रहे और ध्येय तक पहुंचानेमें हमारा नेतृत्व करती रहे।

माननीय पंडित जवाहरलाल नेहरू

[प्रधान मंत्रीः भारत सरकार]

हमारे जीवनका प्रकाश आज लुप्त हो गया है। चारों ओर अंधकार छा गया है। मैं आपसे क्या कहूं और कैसे कहूँ। हमारे राष्ट्रपिता, जिन्हें हम बापू कहते थे, अब हमारे बीच नहीं रहे। किंतु मैं भूलता हूँ। फिर भी अब हम लोग पहलेकी भाँति उन्हें नहीं देख सकेंगे। अब हम उनके पास सलाह लेनेके लिए नहीं जा सकेंगे, और न उनसे सांत्वना पा सकेंगे। यह भयंकर आघात मुझपर ही नहीं, इस देशके करोड़ों व्यक्तियोंपर है। इस आघातको मैं अथवा कोई भी कम नहीं कर सकता। मैंने कहा था कि प्रकाश बुझ गया; किंतु मेरी भूल थी। ऐसा नहीं है। क्योंकि जो ज्योति इस देशमें प्रज्ज्वलित हुई वह साधारण ज्योति नहीं थी। जिस ज्योति ने इतने दिनोंतक इस देशको प्रकाश दिया है वह अभी अनेक वर्षोंतक, सहस्रों वर्षोंतक इस देशमें जगमगाती रहेगी। और आगे भी यह अमर ज्योति इस देशमें प्रज्ज्वलित रहेगी और संसार देखेगा और अनगिनत प्राणियों को सांत्वना देती रहेगी। क्योंकि वह प्रकाश केवल वर्तमानके ही लिए नहीं था। वह सजीव सत्य और शाश्वत सत्य है जो हमें उचित मार्गका स्मरण दिलाता था, हमें त्रुटियोंसे बचाता था और उसीने इस प्राचीन देशको स्वतंत्रता दिलायी।

यह सब उस समय हुआ जब उन्हें बहुत कुछ करना था। हमने कभी यह नहीं सोचा कि अब उनकी आवश्यकता नहीं है अथवा उनका कार्य पूरा हो चुका है। किंतु विशेषतः इस समय जब हमारे सामने इतनी कठिनाइयाँ हैं उनका न होना हमारे लिए असह्य आघात है।

एक पागलने उनका प्राणांत किया है। जिसने ऐसा कार्य किया है उसे मैं पागल ही कहूँगा। इधर कुछ महीनों और वर्षोंसे जो विष इस देशमें फैलाया गया है उसका प्रभाव लोगोंके मनपर हुआ है। जो संकट हम लोगोंको घेरे हुए है उसीका हमें सामना करना होगा किंतु पागलनसे नहीं, बेढंगे नहीं; उस ढंगसे जो हमारे प्रिय गुरुने हमें सिखाया है। पहली बात हमें यह स्मरण रखना है कि आक्रोशमें हम अपनी मर्यादा न खो बैठें।

हमें वीर तथा दृढ़ लोगोंकी भाँति व्यवहार करना है, उन लोगोंकी भाँति जो सब उपस्थित संकटोंका सामना करेंगे, उन लोगोंकी भाँति जो हमारे महान नेता, हमारे गुरुके आदेशोंका पालन करेंगे। हमें सदा स्मरण रखना होगा कि यदि हमारा विश्वास है कि उनकी आत्मा हमारे कार्योंको देख रही है तो हमारे हिंसा अथवा नीचताके व्यवहारसे उन्हें बहुत ही दुख पहुंचेगा।

इसलिये हमें यह सब कुछ न करना होगा। किंतु इसका यह अभिप्राय नहीं है कि हम दुर्बलता दिखायें। हम लोगोंको बली होना चाहिये और एक होकर आनेवाली कठिनाइयोंका सामना करना चाहिये। हम लोगोंको मिलकर इस महान दुर्घटनाके सामने सब छोटे-मोटे झगड़ोंको, छोटी-मोटी कठिनाइयोंको भूल जाना चाहिये। बड़ी-बड़ी दुर्घटनाएँ हमें यह संकेत करती हैं कि हम जीवन की महान बातोंको ही ध्यान में रखें और छोटीं छोटी बातोंको, जो बहुत अधिक हैं, भूल जाँय।

महात्माजीकी मृत्युने हमें जीवनकी महान बातोंका स्मरण दिलाया है जो शाश्वत सत्य हैं। और यदि हम उन्हें याद रखें तो देशका कल्याण होगा।

[३० जनवरी १९४८

० ० ०

मनुष्यकी कृतियाँ दो कोटियोंमें विभाजित की जा सकती हैं-एक रचनात्मक दूसरी संहारात्मक। अधिकतर जनताकी शक्तियां विध्वंसमें लगती है रचना में उनकी प्रवृत्ति कम होती है। महात्मा गान्धी उन थोड़े लोगोंमें थे जो निरन्तर रचनात्मक-कार्य्यके लिए यत्नशील रहे।

गान्धीजी आजीवन पाप और असत्यसे लड़ते रहे। वह विधायक योद्धा थे, संहार उनको अभीष्ट नहीं था। शत्रुका संहार अथवा विनाश उनका लक्ष्य नहीं था, वह उसको परिवर्त्तित कर अपने पक्षमें लाना चाहते थे।

महात्माजीके प्रति श्रद्धा तथा उचित स्मारककी सर्वोत्तम विधि यह है कि हम उनके भावोंको ग्रहण करें और एक दूसरेको समझें और परस्पर मैत्री बढ़ायें।

भारतका भाग्य था कि विश्व-इतिहासका महापुरुष यहाँ हुआ। उनकी महत्ता सभी देशों एवं युगोंमें समझी जायगी। अपने दुर्भाग्यसे हम उनके उपदेश से पूरा लाभ न उठा सके। अपने देशमें तथा विदेशोंमें गांधीजी श्रद्धा एवं समादरसे देखे जाते थे, यह कोई साधारण बात नहीं थी। गांधीजीकी शक्ति आध्यात्मिक थी और उन्होंने सिद्ध कर दिया कि अन्तमें भौतिक शक्तिसे आध्यात्मिक शक्ति अधिक प्रभावकर होगी।

[८ फरवरी १९४८

० ० ०

भारत और संसारको उस घटनाको जाने हुए दो सप्ताह हो चुके हैं जिससे भविष्यमें युगोंतक भारत अपना मस्तक लज्जासे नीचा किये रहेगा। ये दो सप्ताह विषाद, हृदय-मंथन और जल-प्लावनकी भाँति छा जानेवाले प्रबल और निष्क्रिय भावावेशके एवं कोटि कोटि नयनोंसे अश्रुधारा प्रवाहित करनेवाले थे।

काश इस अश्रुधारासे हमारी दुर्बलता और क्षुद्रता धुल जाती और हम उस नायकके कुछ और योग्य बन जाते जिसके लिए हमने शोक मनाया है। इन दो सप्ताहोंमें समस्त संसारके कोने कोनेसे श्रद्धांजलियाँ अर्पित की गयी हैं और अर्पित करने वाले व्यक्ति राजा महाराजों और उच्च पदाधिकारियोंसे लेकर साधारण कोटिके व्यक्ति हैं जो उन्हें सहज ही अपना मित्र, सहचर और समर्थक मानते थे।

भावनाओंकी यह बाढ़ भी धीरे धीरे थमेगी जैसा प्रकृतिका नियम है; यद्यपि हममेंसे कोई भी व्यक्ति अब पहले जैसा न रह सकेगा, क्योंकि वे तो हमारे प्राणों और मस्तिष्कमें अपना घर बना चुके हैं।

लोग उनके लिए स्फटिक और कांसेकी मूर्तियाँ या स्तम्भ बनानेकी बातें करके उनका परिहास करते और उनके संदेशको महत्त्वहीन बना रहे हैं। हम उन्हें कौन-सी श्रद्धाञ्जलि भेंट करें जो वे पसन्द करते? उन्होंने हमें जीने और मरने का रास्ता दिखला दिया है और यदि हमने यह शिक्षा ग्रहण नहीं की तो अच्छा होगा कि हम उनके लिए कोई स्मारक खड़ा न करें, क्योंकि सबसे उपयुक्त स्मारक तो यही है कि हम श्रद्धापूर्वक उस मार्गका अनुसरण करें जो उन्होंने हमें दिखलाया है और अपने जीवन तथा मरणमें अपने कर्तव्यको पूरा करते रहें।

वे एक हिन्दू और भारतीय थे—कई पीढ़ियोंके सबसे बड़े हिन्दू और भारतीय। और इसके लिए उन्हें अभिमान था। उन्हें भारतसे प्रेम था। क्योंकि उसने युगोंतक अनेक अपरिवर्तनीय तथ्योंका प्रतिनिधित्व किया है। किन्तु यद्यपि वे हृदयसे धार्मिक थे और उस राष्ट्रके पिता कहलाते थे जिसका उन्होंने उद्धार किया है, फिर भी संकीर्ण धार्मिकता अथवा राष्ट्रीयता उन्हें छू भी नहीं गयी थी। और इस प्रकार वे प्रयोजनीय एकता, समस्त धर्मोंकी अंतर्निहित एकता और मानवकी आवश्यकताओंमें अपने अगाध विश्वास और विशेषतः दरिद्रों, कष्ट-पीड़ितों तथा कोटि कोटि अत्याचार-पीड़ितोंकी सेवामें अपनेको निछावर करके एक महान अन्तर्राष्ट्रीय पुरुष बन गये थे।

उनके देहावसान पर उन्हें जितनी श्रद्धांजलियाँ प्राप्त हुईं उतनी इतिहास में अबतक किसी अन्य मानवको उसके निधनपर प्राप्त नहीं हुई। संभवतः जो बात उन्हें सबसे अधिक प्रिय लगती वह है पाकिस्तान-निवासियोंकी स्वतः प्रवृत श्रद्धांजलि। महाप्रयाणके बाद ही हम सब एक क्षणके लिए हालकी कटुता, भेदभाव और पिछले महीनोंके संघर्षको भूल गये और गांधीजी भारतवासियोंके उसी प्यारे नेता और हितचिंतकके रूपमें प्रकट हुए जो रूप इस जीवित राष्ट्रके दो टुकड़े होनेसे पहले दिखाई देता था।

क्यों था उनका अधिकार जनसमुदायके मस्तिष्क और हृदयपर? उनके आत्मीय होनेके नाते उनके व्यक्तित्वकी महत्ताका निर्धारण हम नहीं कर

सकते। उसका मूल्य तो आनेवाली संतति ही आँकेगी। किन्तु यह तो हम भी अनुभव करते हैं कि सत्य ही उनकी सबसे बड़ी लगन थी। उस सत्यसे बाध्य होकर ही वे अनवरत रूपसे घोषणा करते रहते थे कि सुफलकी प्राप्ति दुष्कृत्यों द्वारा नहीं हो सकती, वह सुफल सुफल ही नहीं रहता यदि उसकी प्राप्तिमें बुरे ढंगोंका प्रयोग किया जाय। जब भी उन्हें अनुभव होता था कि मैं त्रुटि कर बैठा हूँ, तब सत्य ही सब लोगोंके सामने उन्हें अपनी गलती मान लेने पर बाध्य करता था और अपनी कुछेक गलतियोंको तो उन्होंने महान भूलके रूपसे स्वीकार किया था। बुराई और असत्यके विरुद्ध लड़नेके लिए उन्हें उसी सत्यने बाधित किया और इसमें उन्होंने नतीजेकी कभी परवाह नहीं की। उसी सत्यने निर्धन व त्यक्त जनसमुदायकी सेवाको उनके जीवनका ध्येय ही बना दिया क्योंकि यदि कहीं असह्य अन्याय व अत्याचार होता है तो यह बुरा ही है तथा असत्य भी है। और इस प्रकार वे सामाजिक व राजनीतिक कुरीतियोंके शिकार सब जन समुदायके प्रिय-भाजन तथा वास्तविक रूपमें मानवताके भारी प्रतिनिधि बन गये। इसी सत्यके कारण वे जिस स्थान पर भी बैठे वह मन्दिर बन गया, जिस भूमि पर उन्होंने पदार्पण किया वह आदरणीय भूमि बन गई!

उनका नश्वर शरीर अब नहीं रहा। अब हम उन्हें फिर कभी नह देख सकेंगे, उनकी विनम्र आवाज नहीं सुन सकेंगे और नहीं किसी परामर्शके लिए उनके पास दौड़ जायंगे। किन्तु उनकी अक्षय स्मृति व अविनश्वर संदेश हमारे पास बने रहेंगे। हम किस प्रकार उनका आदर कर सकते और उनके अनुसार रह सकते हैं?

भारतवर्षमें वे ऐक्यके समर्थक थे। ऐसे समर्थक जिन्होंने हमें केवल यही नहीं सिखाया कि हम दूसरोंको उपस्थिति सहन कर सकें वरन् हमें बताया कि कैसे एक ही ध्येयकी पूर्तिके लिए हम उनके साथ कंधेसे कंधा भिड़ाकर मित्रता और भाईचारेकी भावनासे कार्य कर सकते हैं। उन्होंने हमें सिखाया कि हम किस प्रकार अपनी क्षुद्रतासे ऊपर उठकर, अपनी गलत धारणाओंको भूलकर दूसरोंके गुणोंका दर्शन कर सकते हैं। उनके जीवनके अंतिम कुछ महीने व उनकी असाधारण मृत्यु ही हमारे लिए उनकी विशाल हृदयता, व सहन शीलताके प्रतीक हैं। उनकी मृत्युसे कुछ दिनों पहले ही हमने उनके सामने इन सबको प्रतिज्ञा की थी। हमें इस प्रतिज्ञापर अटल रहना चाहिए और यह समझ लेना चाहिए कि भारत हर व्यक्तिका घर है, उस हर व्यक्तिका जो यहां रहता है, चाहे उसका धर्म कुछ भी हो। हमारी इस भारी विपत्तिमें उसका भाग बराबर है और बराबर ही उसके कर्त्तव्य और जिम्मेदारियां हैं। हमारा राष्ट्र सम्मिलित राष्ट्र है जैसा हर महान् राष्ट्रको होना ही चाहिये। विचारोंकी संकीर्णता अथवा इस महान राष्ट्रकी विशालताको सीमित करनेका कोई भी प्रयत्न गांधीजीकी अन्तिम

शिक्षासे हमें दूर ले जायगा। ऐसा कुप्रयत्न अवश्य ही हमें बरबादीकी ओर ले जायगा तथा हमारी वह स्वतंत्रता हमसे छिन जायगी जिसकी प्राप्तिके लिए उन्होंने अथक प्रयत्न किए तथा उसे हमारे लिए प्राप्त किया।

गांधीजी विदा हो गये हैं, यद्यपि उनकी आत्माकी छाया बराबर हमारे ऊपर है। अब बोझ हमारे ऊपर है और तात्कालिक आवश्यकता इस बातकी है कि हम इस भारको यथायोग्य वहन करनेका प्रयत्न करें। हमें मिलजुलकर काम करना है और साम्प्रदायिकताके उस भयानक विषका, जिसके कारण इस युगके महत्तम मनुष्यकी हत्या हुई है, उन्मूलन करना है। यह कार्य हमें पथभ्रष्ट व्यक्तियोंके प्रति दुर्भावना रखकर नहीं करना है, बल्कि इसके प्रति घोर विरोधकी भावना द्वारा करना है। यह विष गांधीघीकी हत्यासे समाप्त नही हो गया है। इससे भी अधिक जघन्य कार्य कुछ लोगों द्वारा कई प्रकारसे उस हत्या पर हर्ष प्रकट करना था। जिन्होंने ऐसा किया वे निश्चय ही भारतीय कहलानेके अधिकारी नहीं।

इसलिए मैं सार्वजनिक जीवनमें सहिष्णुता, सहयोग और संगठनके लिए अपील करता हूँ कि हम प्रान्तीयता एवं साम्प्रदायिकताके विषको नष्ट करनेका भरसक प्रयत्न करें। भारतके निर्माणके लिए औद्योगिक संघर्षको समाप्त करने और सम्मिलित प्रयास करनेके लिए भी मेरी अपील है। इस महान कार्यके लिए मैं पुनः व्रत लेता हूँ और मेरी यह तीव्र इच्छा है कि हमारी यह पीढ़ी गान्धीजीके स्वप्नोंको कुछ तो सत्य सिद्ध कर सके। तभी हम उनका सच्चा स्मारक बना सकेंगे और उनकी याद हरी-भरी रख सकेंगे।

[रेडियो भाषण : १४ फरवरी १९४८

० ० ०

विख्यात व्यक्तिके निधनपर शोक और प्रशंसाके कुछ शब्द कहनेकी परम्परा रही है। मैं नहीं जानता कि मेरे लिए या किसी अन्य सदस्यके लिए इस अवसरपर ऐसी कोई बात कहनी उचित है या नहीं क्योंकि मैं निजी तौरपर और भारत सरकारके प्रधान मन्त्रीके नाते इस बातकी शर्मसे गड़ा जा रहा हूँ कि हम अपने अमूल्य रत्नको सुरक्षित नहीं रख सके। यह हमारी विफलता है। पिछले कुछ महीनोंमें भी हम बहुतसे निर्दोष, पुरुषों, स्त्रियों और बच्चोंको बचानेमें विफल रहे हैं। हो सकता है कि यह भार और यह कार्य हमारी शक्तिसे या किसी सरकारकी शक्तिसे कहीं अधिक बड़ा था। फिर भी यह विफलता है। आज हम सबके लिए यह अत्यन्त लज्जाकी बात है कि वह महान् पुरुष, जिसका हम अत्यन्त स्नेह और आदर करते थे, हमारे पाससे इसलिए चला गया कि हम उसकी पर्याप्त रक्षा नहीं कर सके। एक भारतीयके नाते मुझे इस बातसे लज्जा आ

रही है कि एक भारतीयने उनके विरुद्ध हाथ उठाया। एक हिन्दूके नाते मुझे इस बातसे शर्म आ रही है कि एक हिन्दूने ऐसा कुत्सित कार्य किया और यह कार्य इस समयके सबसे बड़े भारतीय तथा इस युगके एक महान् हिन्दूके विरुद्ध किया।

लोगोंकी हम प्रशंसा सुन्दर चुने हुए शब्दोंमें करते हैं और महत्ताके लिए हमारे पास कुछ माप-तौल भी है। लेकिन हम उनकी कैसे प्रशंसा करें और उसको मापें, क्योंकि हमारे सामने वह साधारण पुरुष नहीं थे? वह इस संसारमें आये दीर्घकाल तक जीवित रहे और अब इस संसारसे चला गये। हमारी प्रशंसाके शब्दोंकी उन्हें आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उन्हें तो किसी भी सामयिक जीवित व्यक्तिकी अपेक्षा अपने जीवनकालमें ही अधिक प्रशंसा मिल चुकी थी। उनके स्वर्गवासके बाद दो या तीन दिनमें उन्हें संसारका सम्मान मिल गया है। क्या इसमें हम और वृद्धि कर सकते हैं? हम उनकी कैसे प्रशंसा कर सकते हैं? हम उनके बालक रहे हैं और शायद उनकी सन्तानसे भी अधिक हम उनके आत्मीय रहे हैं, क्योंकि हम सब उनके आत्मज थे। हम ऐसे अयोग्य बालक उनकी कैसे प्रशंसा करें?

एक दिव्य आभा हमसे पृथक् हो गयी और जो सूर्य हमें प्रकाश तथा जीवन देता था वह अस्त हो गया है और हम अन्धकारमें पड़े अब ठिठक रहे हैं। लेकिन वे नहीं चाहते थे कि हम इस प्रकार विचारें। क्योंकि इतने वर्षोंसे जो दैवी आभा हम देख रहे थे उसने हमें भी बदल दिया था। इन वर्षोंमें उन्होंने हमें एक नये साँचेमें ढाल दिया था।

उस दैवी अग्निसे हममेंसे बहुतोंको कुछ चिनगारियाँ प्राप्त हो गयीं थीं। इन चिनगारियोंने हमें सुदृढ़ बना दिया और इनकी सहायतासे उस महापुरुषके निर्देशित ढङ्गपर काम करने योग्य हम बन गये थे। आज कितने ही महान और लब्ध प्रतिष्ठ व्यक्तियोंके धातु और संगमरमर के स्मारक बने हुये हैं। लेकिन दैवी शक्तिके द्वारा महान पुरुषने अपने जीवन कालमें करोड़ों व्यक्तियोंके हृदयमें इतना स्थान प्राप्त कर लिया था कि हम सभी अल्पांशमें वैसे ही बन गये थे जैसे वे थे। लाखों व्यक्तियोंके हृदय मन्दिरमें वे बसे हुए हैं और वे अनन्तकाल तक बसे रहेंगे।

इसलिए हम उनके लिए इसके सिवाय क्या कह सकते हैं कि हम इस अवसरपर अपनेको तुच्छ अनुभव करें। उनकी प्रशंसा करनेके हम योग्य नहीं हैं। हम उनकी कैसे प्रशंसा कर सकते हैं जब हम उनका ठीक तरहसे अनुसरण नहीं कर सके। जब वे हमसे कार्य, परिश्रम और त्याग चाहते थे तब इन सबके बदले कुछ शब्द कह देना उस महान आत्माके प्रति अन्याय करना है। गत ३० वर्षोंमें,

अधिकांशमें, उन्होंने इस देशको बनाया और त्यागकी उस चोटी पर पहुँचा दिया जहाँ इस क्षेत्रमें इतनी उच्चता पर अभी कोई नहीं पहुँचा है। इस कार्यमें वे सफल हुये लेकिन अन्तमें कुछ ऐसी घटनाएँ हुईं जिनके कारण उन्हें भारी आघात पहुँचा यद्यपि वे सदा मुस्कराते ही रहते—और उन्होंने कभी किसीसे कटु शब्द नहीं कहा। लेकिन उन्हें कष्ट अवश्य पहुंचा। क्योंकि जिस पीढ़ीको उन्होंने शिक्षा दी थी वह विफल रही, जो मार्ग उन्होंने दिखाया था उससे हम पथभ्रष्ट हो गये और अन्तमें उसके एक बालकने, क्योंकि वह भी तो हमारे समान उनका बालक ही है, उनका सांसारिक जीवन समाप्त कर दिया।

आजसे शताब्दियों बाद इतिहास इस युगका, जिससे हम अभी गुजरे हैं, निर्णय करेगा। इतिहास हमारी सफलताओं और असफलताओंका निर्णय करेगा—हम स्वयं तो इस कालके इतने निकट हैं कि न तो हम ठीकसे इसका निर्णय कर सकते हैं और न ही घटित तथा अघटित घटनाओंको समझ सकते हैं। हम तो केवल इतना ही जानते हैं कि विभूति थी जो अब नहीं है। हम यही जानते हैं कि इस समय चारों ओर अन्धकार है, किन्तु यह अन्धकारपूर्ण घटाटोप नहीं है क्योंकि जब हम अपने दिलोंको टटोलते हैं तब उनमें हमें एक ज्योति दिखाई देती है जिसे उन्होंने जगाया था। यदि यह ज्योति जलती रही तो हमारे देशमें अन्धकार नहीं होगा और हम सयत्न उनके मार्गका अनुसरण करते हुए तथा उन्हें स्मरण करते हुए इस देशको फिरसे देदीप्यमान कर देंगे। यद्यपि हम साधारण मनुष्य हैं फिर भी हममें वह अनुरक्ति है जो उन्होंने हममें भरी थी। अतीत भारतके वे सबसे बड़े प्रतीक थे—मैं कहना चाहूंगा कि भावी भारतके भी वे उतने ही बड़े प्रतीक थे। उस अतीत और भविष्यके बीच हम संकटपूर्ण वर्तमानमें खड़े हैं और हमे अनेक संकटोंका सामना करना है। सबसे बड़ा संकट आस्थाका अभाव, पराजयकी भावना तथा नैराश्य है। जब हम अपने आदर्शोंको डगमगाते देखते हैं और जो बातें हम अबतक कर रहे थे उन्हें शाब्दिक आडम्बर समझ जीवनधाराका प्रवाह दूसरी ओर देखते हैं, ये संकट हमें तब आ घेरते हैं। कुछ भी हो, मेरा विश्वास है कि यह दुविधाकी घड़ी शीघ्र ही बीत जायगी।

महात्मा गांधी अपने जीवनकालमें तो एक महान् पुरुष थे ही, अपनी मृत्युमें भी वे महान रहे। मुझे इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि अपनी मृत्युसे भी उन्होंने उसी महान लक्ष्यकी सेवा की जिसकी वे जीवन भर सेवा करते रहे। हम शोकातुर हैं, उनका शोक हम सदा मनायेंगे क्योंकि हम मानव हैं और अपने अलौकिक पथ-प्रदर्शकको भूल नहीं सकते। परन्तु मैं जानता हूँ कि वे हमें शोकावस्थामें देखकर प्रसन्न न होते। उन्होंने प्रियसे प्रिय सम्बन्धी अथवा मित्रके निधनपर भी कभी आँसू नहीं बहाये थे। वे केवल उस मार्गपर अग्रसर होनेका

दृढ़ संकल्प करते थे जिसे उन्होंने ग्रहण किया था। इसलिए हमारे शोकमात्रसे तो वे कुपित ही होंगे। शोक प्रदर्शन उनके प्रति उचित श्रद्धाञ्जलि भी नहीं है। उचित श्रद्धाञ्जलि तो यही है कि हम दृढ़-निश्चय हों और फिरसे यह शपथ ग्रहण करें कि हम अपने आपको उसी महान् कार्यकी पूर्तिमें जुटा देंगे जिसका बीड़ा उन्होंने उठाया था और जिसमें उन्हें बहुत कुछ सफलता मिली। अतः हमें काम करना है, घोर परिश्रम करना है, बलिदान करना है और इस बातका प्रमाण देना है कि उनके सच्चे अनुयायी हैं।

यह स्पष्ट है कि यह दुर्घटना केवल एक पागल आदमीका अनायोजित कार्य नहीं है। इसका संबंध हिंसा और घृणाके उस वातावरणसे है जो कई महीनों और सालोंसे—विशेषतया गत कुछ महीनोंसे—हमारे देशमें छाया हुआ है। वह वातावरण चारों ओर छाया हुआ है और यदि हमें वह लक्ष्य प्राप्त करना है, जो गांधीजीने हमारे सामने रखा तो हमें इस वातावरणसे लोहा लेना है, उससे संघर्ष करना है और हिंसा तथा घृणाको जड़से उखाड़ फेंकना है।

जहांतक इस सरकारका सम्बन्ध है, मुझे विश्वास है कि इसको हल करनेमें वह कोई कसर नहीं छोड़ेगी, क्योंकि यदि हम ऐसा नहीं करेंगे और यदि हम अपनी दुर्बलतासे या किसी अन्य कारणसे इस हिंसाको रोकनेके लिए जोरदार कार्रवाई न करेंगे और यदि हम शब्द और लेख द्वारा घृणाके प्रसारकी रोक-थाम नहीं करेंगे तो हम सरकारमें रहने लायक नहीं होंगे। हम निश्चय ही उसके अनुयायी होने योग्य नहीं है और उस दिवंगत आत्माके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करनेके योग्य तो बिल्कुल नहीं है। इसलिए इस अवसरपर या अन्य किसी अवसरपर जब कभी हम इस महान पुरुषका हम स्मरण करें, हमें उनका स्मरण,कार्य, परिश्रम और त्यागके रूपमें, बुराइयोंको दूर करनेके रूपमें और उनके निर्देशित सन्मार्गपर अचल रहनेके रूपमें करना चाहिये। यदि हम ऐसा करेंगे, तो चाहे हम कितने ही अयोग्य क्यों न हों, अपना कर्त्तव्य पूरा कर देंगे और उनकी आत्माके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर सकेंगे।

वह महान पुरुष इस संसारसे चला गया है और समस्त भारतमें ऐसा मालूम पड़ रहा है जैसे हम उजड़ गये हों। हम सभी इसका अनुभव करते हैं और मैं नहीं कह सकता कि हम इस भावनासे कब मुक्त हो सकेंगे लेकिन इस भावनाके साथ ही हम यह गर्व भी अनुभव करते हैं कि हमारा यह अहोभाग्य है कि हम महापुरुषकी छत्रछायामें कुछ कालतक रहे। आनेवाले युगमें शताब्दियों पश्चात् और हो सकता है कि हजारों वर्ष पश्चात् लोग हमारी पीढ़ीके बारे में यह सोचेंगे कि उस पीढ़ीके समय इस दैवी पुरुषका पृथ्वीपर अवतरण हुआ था। उस समयके लोग हमारे बारेमें सोचेंगे कि हम लोग इस महापुरुषके

मार्गका अनुसरण कर सकते थे और शायद उनके पद-चिन्होंपर चल भी सकते थे। हमें अपने आपको उनके योग्य बनना चाहिये और हमें सदा ऐसा ही रहना चाहिये।

[भारतीय पार्लमेंट : फरवरी १९४८

० ० ०

आज राष्ट्रपिताकी अंतिम यात्रा समाप्त हुई। गत ५० वर्षोंके बीच गांधीजीने सारे देशकी यात्रा की। उन्होंने निःस्वार्थ भावसे जनताकी सेवाकी तथा सत्य और अहिंसाका प्रचार किया। अब वह महामानव हम लोगोंके बीच विचरण न करेंगे, किन्तु उनका सन्देश अमर रहेगा। उनके अस्थि-प्रवाहसे हमारा उनका सम्बन्ध विच्छिन्न नहीं हो गया, अपितु यह और भी दृढ़ हो गया।

हमारा यह सौभाग्य है कि हम गांधीजीके युगमें रहे और हमने उनका यह शरीर देखा। अगली पीढ़ी तो उन्हें न देख सकेगी, किन्तु वह भी हमारी तरह इनसे प्रेरणा प्राप्त करेगी, क्योंकि उनके व्यक्तित्वका प्रभाव सदा अमिट रहेगा।

हम सदा गांधीजीके पास परामर्शके लिए जाते थे। अब हम उनकी ओर आशायुक्त नेत्रोंसे न देख सकेंगे और न उनसे अपनी कठिनाइयोंमें हाथ बँटानेको कह सकेंगे। अब हमें उनकी सहायताके बिना समस्याओंको हल करना होगा। हमें उन्होंने जो शिक्षा दी है, वह सदा हमें प्रेरित करती तथा हमारा पथ-प्रदर्शन करती रहेगी।

गांधीजीने देशको स्वाधीनता-पथपर ले जाते हुए सदा हिंसा और साम्प्रदायिकताके विरुद्ध प्रचार किया। गांधीजी द्वारा देशको मिली आजादीके बाद लोगोंका आपसमें मतभेद हो गया तथा देशमें हिंसाकी लहर व्याप्त हो गयी। गांधीजीने जिस प्रकार पददलित जनताको आजादी दिलायी, विश्वके इतिहासमें अनुपम घटना है; किन्तु आज स्वाधीन भारत विश्वके समक्ष अपमानित खड़ा है।

इधर देशमें साम्प्रदायिकता और हिंसाका विष फैल गया है। यदि यह हिंसा रोकी नहीं गयी तो हमारी आजादी नष्ट हो जायगी।

आज हमें प्रयागके इस गंगा तटसे यह संकल्प लेकर लौटना होगा कि हम हिंसा और साम्प्रदायिकताका उन्मूलन करेंगे। भारतके बहुतसे नौजवानोंने हिंसाका मार्ग अपनाया है। उन्हें अपनी मूर्खता समझने तथा अपना पथ परिवर्तित करनेके लिए विवश किया जाय।

देशमें साम्प्रदायिक घृणा और हिंसाका विष व्याप्त कैसे हुआ ? कुछ जिम्मेदार व्यक्तियोंने नयी पीढ़ीको वहकाया तथा अपने स्वार्थकी पूर्तिके लिए अबोध जनतासे फायदा उठाया।

गांधीजीके प्रति कृतज्ञताके रूपमें हमारा उनके प्रति कुछ कर्तव्य भी है। हमें गांधीजीका अधूरा कार्य पूरा करना है तथा भारतको उन आदर्शोंके अनुकूल बनाना है। हमें धर्म और जातिका भेदभाव किये बिना सबको समान अधिकार देना चाहिये। यदि हम ऐसा नहीं कर सके तो इसका अर्थ यह होगा कि हम इतने बड़े नेताके अनुयायी होनेके योग्य नहीं हैं।

गत ४० वर्षोंसे जनता गांधीजीकी 'जय' बोलती रही है। गांधीजीने कभी अपनी व्यक्तिगत 'जय' नहीं चाही। वस्तुतः उनकी जय 'भारतकी जय' थी। उन्होंने सत्य और अहिंसाकी मजबूत नींवपर भारतीय स्वाधीनताका भवन खड़ा किया है। हमें इसे उनकी जयके स्थायी स्मारकके रूपमें मजबूत करना चाहिये और तब हम वस्तुतः कह सकेंगे—महात्मा गांधीकी 'जय'।

[प्रयाग संगम : १२ फरवरी १९४८

❀

माननीय सरदार वल्लभभाई पटेल

[उप-प्रधान मंत्रीः भारत सरकार]

अभी आपने मेरे प्यारे भाई पण्डित जवाहरलाल नेहरूका भाषण सुना। इस समय आप लोगोंसे कुछ विशेष कहनेमें असमर्थ हूँ। मेरा दिल दर्दसे भरा है। जवान चलती नहीं है। आज भारतके लिए दुःख, शोक और शर्मका अवसर है। थोड़ी देर पहले ४ वजे मैं गांधीजीसे मिलने गया था और एक घंटे मैंने वातें की। घड़ीकी ओर देखनेके पश्चात् मुझसे कहने लगे 'मेरा प्रार्थनाका समय हो गया। मुझे जाने दीजिये' और यही कहते हुए गांधीजी विड़ला-भवनके वाहर निकल पड़े। मैं घर जानेके रास्तेमें ही था कि एक भाई आया और कहा कि एक नौजवान हिंदूने गांधीजीपर प्रार्थना-स्थलमें पिस्तौलसे गोली चलायी। गांधीजी इस आघातको सह न सके और उनके प्राण पखेरू उड़ गये। मैं तुरंत वहाँ पहुँचा। मैंने उनका चेहरा देखा। वही चेहरा, शांत, दया, और क्षमा भाव प्रकट हो रहा था। आस-पास काफी लोग जमा हो गये थे, पर वे तो अपना काम कर चले गये। चार दिनोंसे उनका दिल कुछ खट्टा हो गया था। हालमें ही उन्होंने उपवास किया था। यदि उसीमें वे चले गये होते तो अच्छा हुआ होता। कुछ दिन हुए उनपर

बम भी फेंका गया था किंतु वे बच गये। इस समय उन्हें जाना था। वे भगवानके मंदिरमें चले गये।

यह समय दुःख और शोकका है, क्रोधका नहीं। नहीं तो उनकी आत्माको चोट पहुँचेगी। उनका सबक हम भूल जायेंगे। उनकी कही गयी बातोंको हमने नहीं माना इसका धब्बा हमपर लग जायगा। हमारी आज परीक्षा हो रही है और शांतिपूर्वक एक दूसरेसे मिलकर हमें खड़ा रहना है। हमारे ऊपर बहुत बोझ है। बोझके मारे हमारी कमर टूटी जा रही थी। उनका एक सहारा था, वह भी चला गया। चला तो गया पर वह रहेगा और जो चीज दे गया है वह कभी जानेवाली नहीं है। कल ४ बजे उनकी मिट्टी तो भस्म हो जायगी किंतु हमेशा वह हमें देखते रहेंगे।

वह अमर हैं। मरनेसे, शायद वह जो अबतक भारतको नहीं दे सके थे अब पूरा हो जाय। जिस नौजवानने पागल होकर उन्हें मारा उसके हृदयको संयत होनेमें समय लगेगा। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि जितना भी दुःख, दर्द हो पर हमें ध्यान रखना है कि हमें शान्ति, अदब और विनयसे उस कामको करना है जो उन्होंने सिखाया है। यह समय हमारे लिए हिम्मतसे मुसीबतका मुकाबला करनेका है। हमे मजबूतीसे कदम रखना है।

[रेडियो भाषण: ३० जनवरी, १९४८

० ० ०

गांधीजीकी हत्या देशपर गहरी चोट है। अब मुख्य प्रश्न यह है किस प्रकार यथास्थिति प्राप्त की जाय, अन्यथा विनाश है।

भारतमें धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक दलोंकी बहुत बड़ी संख्या है और यह महात्माजीका माहात्म्य था कि उन्होंने इन विभिन्न विचारों तथा उद्देश्यवालोंको एक कर स्वराज्यतक पहुँचाया, उनकी सफलताका मुख्य कारण था कि वह सबके थे, पर उनकी त्रुटियों और दुर्बलताओंसे परे थे।

अन्य लोगोंकी अपेक्षा वह दूरदर्शी थे और सदा सत्य-मार्ग खोजनेमें समर्थ हो जाते थे। वह साम्प्रदायिकताके विरुद्ध उपदेश देते थे। लोगोंको समझना चाहिये कि साम्प्रदायिकता विनाशकी ओर ले जानेवाली वस्तु है। आज समय है कि आप लोग अपने हृदयोंको टटोलें और देखें कि आपका कार्य कहाँतक गांधीजीके आदर्शोंके अनुकूल है।

महात्मा गांधीने जीवनके प्रत्येक पहलूपर विचार व्यक्त किये हैं और लोगोंको उसके अनुसार चलना चाहिये। [८ फरवरी, १९४८

० ० ०

भारतके प्रत्येक प्रदेशसे गांधीजीके उन मित्रों तथा सहयोगियोंके शोकपूर्ण पत्र मुझे प्राप्त हुए हैं जिनका गांधीजीके रचनात्मक कार्यक्रमसे घनिष्ठ संबन्ध था। गांधीजीके दुःखद अन्तसे ये सब भाई विह्वल, विमूढ़ और असहाय प्रतीत होते हैं। यद्यपि गांधीजीके प्रति उनकी ममता तथा उनके वियोगजनित विषादको मैं भलीभाँति समझता हूँ फिर भी मेरा इन सबसे निवेदन है कि वे इस राष्ट्रीय दुर्भाग्यका, गांधीजीकी शिक्षाके अनुसार, उसी प्रकार मुकाबला करें जिस प्रकार गांधीजी करते। यदि ये मेरे दुखी भाई वर्तमान दुर्घटनाको गांधीजीकी दृष्टिसे देखें तो वे समझ जायँगे कि देरतक अत्यधिक शोक अथवा हीन भाव अनुचित हैं। राष्ट्रने गांधीजीकी तेरह दिनकी शोक-अवधिमें काफी अनुशासन और संयमका परिचय दिया है। ऐसी ही हमें आशा थी। शोक-अवधिकी समाप्तिपर अब हम सबको तत्काल गांधीजीके रचनात्मक कार्योंमें जुट जाना चाहिये। दुख है, अब वे हमारा पथ-प्रदर्शन स्वयं न करेंगे। परन्तु उनकी शिक्षा एवं सत्प्रेरणा अवश्य हमारा मार्ग प्रकाशमय करती रहेगी। अतः हम सबका कर्तव्य हो जाता है कि हम शोक एवं मोहको त्याग कर गांधीजीके अपूर्ण महान उद्देश्योंकी पूर्तिमें एकनिष्ठ होकर संलग्न हो जायँ। मैं आशा करता हूँ कि मेरे ये मित्र मेरी यह सलाह मानकर राष्ट्र-निर्माणके विभिन्न क्षेत्रोंमें पुनः तत्परतासे संलग्न हो जायेंगे।

मैं दुःखसे परन्तु पूरे जोरसे गांधीजीकी यादमें मंदिर अथवा ऐसे स्मारक बनानेके प्रयत्नका घोर विरोध करता हूँ जिनमें उनकी मूर्ति-पूजाकी गंध हो। मैं निश्चय रूपसे कह सकता हूँ कि गांधीजी स्वयं इस प्रकारकी मूर्ति-पूजासे प्रसन्न न होते। इस विषयमें गांधीजीने निश्चयपूर्वक अपनी राय कई बार बतायी थी। अतः मेरा उन सब सज्जनोंसे जो ऐसा करनेका विचार कर रहे हैं साग्रह अनुरोध है कि वे अपने इस विचारको छोड़ दें। गांधीजीकी आत्माको प्रसन्न करनेवाला स्मारक उनके महान उपदेशोंपर अमल करके तथा उनकी अद्वितीय कार्यप्रणालीके प्रसार द्वारा ही बनाया जा सकता है। इसी प्रकार हम गांधीजी को अपने मनमंदिरमें स्थान दे सकते हैं और क्या यह सच नहीं है कि हम सब गांधीजीकी मूर्तिको सदाके लिए अपने हृदयमें स्थान देना चाहते हैं।

भारतके स्वातंत्र्य युद्धका इतिहास महात्मा गांधीका आत्मचरित है। मेरा अपना जीवन गांधीजीके जीवनसे घनिष्ठ रूपसे सम्बद्ध था। यदि गांधीजी भारत न आते तो क्या होता, कहा नहीं जा सकता। यदि महात्मा गांधी जैसे व्यक्तिकी हत्या हो सकती है तो देशमें क्या नहीं हो जायगा, कहा नहीं जा सकता। कुछ लोग तथा दल जो खतरनाक कार्यवाही कर रहे हैं उनका विरोध करना हमारा कर्त्तव्य है। सरकारने उनके विरुद्ध कार्यवाही करनेका दृढ़ निश्चय कर लिया है। जनता इस कार्यमें सहयोग करे।

[१० फरवरी, १९४८

माननीय मौलाना अबुल कलाम आजाद

[शिक्षा-मंत्री : भारत सरकार]

यों तो मुझे अपने जीवनमें अनेक कठिनाइयों और आपदाओंका सामना करना पड़ा है किंतु आज जो मुसीबत हम पर आयी है वह सबसे भारी और असह्य है। गांधीजीके निधनसे मेरा तो मस्तिष्क ही शून्य हो गया है। उनकी जीवन-यात्रा तो पूरी हो गयी किंतु अब हमारी नयी यात्राका प्रारंभ हुआ है। हमें आशा है कि हम इसमें सफलीभूत होंगे।

महात्माजीने अपने दुर्बल कंधों पर मानवताका बहुत भारी बोझा उठा रखा था। अब वह बोझ हमें उठानेके लिये आगे बढ़ना चाहिये। यदि भारतके हम करोड़ों व्यक्ति तैयार हो जायँ और थोड़ा-थोड़ा बोझ बाँटकर आगे बढ़ें तो हमें सफलता मिलेगी और यह कोई आश्चर्य न होगा।

इस समय लोगोंको तीन बातें ध्यानमें रखनी चाहिये। पहली बात यह है कि गांधीजीकी हत्या किसी पागल या किसी व्यक्ति विशेषका काम नहीं है। इस समय चारों ओर विष फैल गया है, उसे हमें दूर करना है। दूसरी बात यह है कि सरकारने सब प्रकारकी साम्प्रदायिकताका उन्मूलन करनेके लिये निश्चय कर लिया है और तीसरी बात यह है कि हमें अपनी सरकारको शक्तिशाली बनाना है और इसके लिये हमें शांतिपूर्वक कार्य करना होगा और स्वयं अपने हाथमें कानून न लेना चाहिये। [२ फरवरी १९४८

० ० ०

यह पहला अधिवेशन है जिसमें गांधीजी अनुपस्थित हैं और हम सब उनकी महान क्षति अनुभव करते हैं। १२ फरवरीको वे अपने अंतिम अवशेषसे भी हमसे जुदा हो गये, किन्तु उनसे हमारा आध्यात्मिक संबंध सदैवके लिये बना रहेगा। उनका शानदार जीवन समस्त विश्वपर अपना प्रकाश फैला रहा और जो उपदेश उन्होंने दिये और जिनके लिये वे जिये, वे हमारी बहुमूल्य निधि हैं।

हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने दिलोंको टटोलें और मालूम करें कि क्या वास्तवमें हम उनके पद-चिन्हों पर चलनेको तैयार हैं। यदि उत्तर 'हां' में आये तो उसे पवित्र समझा जाय और उसे भविष्यमें हमारा पथ-प्रदर्शन करना चाहिये।

यह कैसे हुआ कि एक व्यक्ति गांधीजी जैसे संतपर अपना हाथ उठा सका ? इस प्रश्नको एक पागल आदमीका कार्य कहकर नहीं टाला जा सकता।

गांधीजीकी हत्या देशमें फैली हुई परिस्थितियोंका परिणाम था और हमें सोचना चाहिये कि इन परिस्थितियोंके उत्पन्न करनेमें हम कहाँ तक जिम्मेदार थे। वास्तवमें गांधीजीके देहान्तकी हम सबका लज्जाजनक भाग है। ३० जनवरीकी रात्रिको मैंने अपनेसे पूछा कि मैं कहाँतक इस हत्याका जिम्मेदार हूँ तो मैंने देखा कि मैं जिम्मेदारीके बड़े भागसे नहीं बच सकता। मैंने अपने हाथोंमें गान्धीजीके खूनके छींटें देखीं!

उनकी महत्ता प्रत्येक वस्तुसे ऊपर उठनेकी योग्यतामें और परिस्थितिको समझनेमें थी। उन्होंने अनुभव किया कि जिस रास्ते भारतके लोग जा रहे हैं, वह विनाशका मार्ग है। वे चाहते थे कि लोग उस खतरेको समझें। लोगोंने इसे समझा पर तब जब उनका मसीहा अपने जीवनसे हाथ धो बैठा। यदि हम पूजनीय गांधीजीसे प्रेम करते हैं तो हमें उनके ईश्वरीय सन्देशको समस्त संसारमें पहुंचाना चाहिये। हमारे कन्धोंपर महान जिम्मेदारी है और वास्तविक कार्य अब प्रारम्भ हुआ है। गांधीजीका कार्य समाप्त हो जाय ऐसा हमें नहीं करना है। साम्प्रदायिक सौहार्दकी उन्हें सबसे अधिक चिंता थी और हमें अपने जीवनमें उनके इस मिशनको पूरा करना चाहिये।

[अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, दिल्ली : २२ फरवरी १९४८

❀

मान्नीय सरदार बलदेव सिंह

[रक्षा मन्त्री भारत सरकार]

एक पागल हत्यारेके हाथने भारतको उसके इतिहासके निर्मातासे वंचित कर दिया। महात्मा गांधी, हमारे पथ-प्रदर्शक, करोड़ों भारतीयोंके "बापू" आज नहीं रहे और हम अनाथ हो गये।

कभी-कभी मैं 'बिड़ला-भवन'में उनसे मिलने जाता था। उनकी योग्यता एवं महत्ताके सम्बन्धमें मेरे जैसे व्यक्तिका कुछ कहना शोभा नहीं देता। मैं केवल इतना ही कह सकता हूं कि हर बार जब मैं उनसे मिलकर आया तब मैंने अपनेको सदैव अधिक उत्साहित, अनुप्रेरित तथा उन्नत पाया। थोड़ा बहुत यह जानते हुए कि उनपर कितना भारी बोझ था, उनकी क्या चिंताएँ थीं और साम्प्रदायिक रक्त-पात द्वारा हमारे अपनेको कलंकित कर लेनेसे उनको कितना गहरा क्षोभ हुआ था, मैं यह कह सकता हूँ कि मैं उनके महान धैर्य, सहिष्णुता एवं अडिग विश्वाससे अचंभित रह गया। वे कभी निराश नहीं हुए और भारतके प्रति उनका विश्वास कभी नहीं डिगा। वे जानते थे कि देशकी आत्मामें कितना विष प्रवेश कर गया है और उसे नष्ट कर रहा है। किन्तु साथ ही उनके पास

इसका उपचार भी था और वे इस उपचारको इतना अचूक समझते थे कि सदैव अपने सत्परामर्श द्वारा हमें कठिनाइयोंसे निवृत्त करनेका प्रयत्न करते रहे। उन्होंने इसीलिये कष्ट सहा कि हमें विशुद्ध कर सकें और वे इसीलिये मरे कि हम जीवित रह सकें।

क्या यह कोई आश्चर्य है कि आज उनके निधनपर सारा संसार क्षुब्ध और अश्रुप्लावित है। इस सत्यहीन अंधकार एवं संकटसे परिपूर्ण युगमें, महात्मा गांधीका जीवन एक दैवी प्रकाशके तुल्य था। हम, इस देशके वासी, उनका अत्यधिक आदर इसलिये करते हैं कि मातृ-भूमिको आजादी दिलानेकी हमारी राष्ट्रीय लड़ाईका नायकत्व उन्हींके द्वारा सफल एवं सम्पन्न हुआ। हम उन्हें अपने जनरल, सेनापति, पथ-प्रदर्शक और राष्ट्र-पिताके रूपमें मानते हैं। किंतु सारे संसारके लिये वे एक उपदेशक, एक संत एवं एक पैगम्बर थे। उन्होंने मानवता को वह शिक्षा दी जो जितनी निरुपम थी उतनी ही मार्मिक भी। व्यावहारिक रूपमें उन्होंने यह सत्य सिद्ध किया कि पाशविक शक्तिके बिना भी पशुबलपर विजय प्राप्त की जा सकती है। आत्म-शक्तिके द्वारा युद्ध, द्वेष, संदेह और भयसे जर्जरित इस संसारमें गांधीजीने सत्य और प्रेमकी आवाज उठायी। उनके लिये विजय-प्राप्तिका स्थान रणभूमि नहीं वरन् अपनी ही आत्मा थी।

अपने अंतिम दिनोंमें महात्मा गांधीने अपनी सारी शक्ति उस पागलपनको दूर करनेमें लगायी, जिसके द्वारा विभिन्न सम्प्रदाय पारस्परिक रक्तपातके शिकार हो रहे थे। लज्जाके साथ हमें स्वीकार करना ही होगा कि अत्यधिक भयानक एवं क्रूर कृत्योंके कारण ही गांधीजीको अपने जीवनके अन्तिम समयमें अनिश्चित काल तकके लिये अनशन करनेका संकल्प करना पड़ा। यह हमारे ऊपर सदैव कलंक रहेगा। यदि सच ही हम बापूका आदर करते हैं और उनके योग्य बनना चाहते हैं, तो हमें इस कलंकको मिटाना होगा। हमें अन्य सम्प्रदायों एवं समुदायोंके प्रति दुर्भावनाका विचार तक त्याग देना होगा। हिन्दू, मुसलिम, ईसाई, पारसी और सिख, सबको ही इस मातृभूमिमें उस राष्ट्रपिताकी संतानके रूपमें भाई भाईकी तरह रहना होगा। गांधीजीको श्रद्धांजलि देने और उनकी स्मृतिको चिरायु रखनेका यही एक मात्र उपाय है। हमें न भूलना चाहिये कि वह घरेलू लड़ाईका विष ही था जिसने उस हत्यारेको गांधीजीको मारनेके लिये प्रेरित किया। हम हत्यारेसे घृणा न करें किन्तु हमें उसके इस विषसे घृणा करनी होगी। ऐ मेरे देशवासियों, आओ हम सब अपने घरेलू झगड़े समाप्त कर मस्तिष्क एवं आत्मा द्वारा एक हो जायँ। महात्मा गांधीके महान एवं उदारतापूर्ण कार्यको इसी तरहसे पूरा किया जा सकता है। इसी प्रकारसे हम अपनी इस मातृभूमिकी स्वाधीनताकी रक्षा कर सकेंगे।

[रेडियो भाषण : ९ फरवरी १९४८

माननीय राजकुमारी अमृत कौर

[स्वास्थ्य मंत्रिणीः भारत सरकार]

निमेष मात्रमें हम अपने परम तथा प्रियतम नेता, सखा, दार्शनिक एवं पथ- प्रदर्शकसे वंचित हो गये। नेतासे बढ़कर वह हमारे सबके बापू थे। हम उन्हें बापू व्यर्थ ही नहीं कहा करते थे, आज हम सब अनाथ हैं। इतिहासके इस संकट कालमें इस विपत्तिके भीषणताका अनुमान असंभव है। आये दिन हम उनके उपदेशसे वञ्चित रहेंगे। उनके अचूक नेतृत्वमें हमें स्वराज्य मिला। १५ अगस्तके बादसे होने वाले दंगोने उनके हृदयको विदीर्ण कर दिया।

वह भारत हिंसारत नहीं देख सकते थे। उन्हों ने हमारा नैतिक पतन देखा और प्रिय पिताके समान उचित पथ-प्रदर्शन किया। अमित प्रेमसे वह क्रोधका शमन कर रहे थे। विपत्तिमें वही एक आश्रय थे, क्योंकि अराजकता, अव्यवस्था, हिंसा और द्वेषसे हम कहींके न रहते।

एक उन्मत्तके क्रोधने उनका शरीर नष्ट कर दिया पर उनकी आत्मा कौन नष्ट कर सकता है। वह सदा अमर है और उनके अस्तित्वको हम सदा अनुभव करेंगे और उनके प्रति अधिक निष्ठावान होंगे।

उनको वीर गति मिली और उनकी आत्माको विश्राम मिला। हमारे लिये उन्हें परम बलिदान करना पड़ा। हम अपने पापोंको स्वीकार करें। प्रत्येक सच्चे भारतीयको इसके लिये लज्जासे नत मस्तक होना चाहिये कि हममें से एक नराधमने इस अमूल्य निधिको नष्ट कर दिया। ईश्वर उसे क्षमा करे और हम भी उस वधिकको क्षमा करनेका प्रयास करें। बापू यदि जीवित होते तो गोली मारते समय उसके ऊपर प्रेम करते।

शोकमग्न एवं शोक-परिवृत हम लोग नैराश्यके अन्धकारमें मग्न हैं। सत्य तथा प्रेमके पथपर चलनेकी शक्ति हमें मिले और उनके निर्दिष्ट मार्गपर चलकर देशके कलंकका प्रक्षालन करें। ईश्वरकी दयासे हमें शक्ति मिले और हम बापूके प्रति सच्चे होकर उनके आदर्शोंके अनुसार भारतका निर्माण करें।

[रेडियो भाषण : ३१ जनवरी १९४८

o o o

गांधीजीकी हत्याके लिये व्यक्तिशः नाथूराम ही दोषी नहीं है, बल्कि देशका वातावरण ही विषमय हो उठा है। साम्प्रदायिक द्वेष सर्वत्र फैला हुआ है। उनकी हत्याके लिये हम सब उत्तरदायी हैं, क्योंकि पनपनेसे पहले ही साम्प्रदायिकताको हम विनष्ट नहीं कर सके।

गांधीजी इससे बहुत दुखी थे। इधर वे बहुधा मुझसे कहा करते थे कि अब लोग मेरे बताये हुए मार्गपर नहीं चल रहे हैं। जिस अहिंसाके द्वारा उन्होंने हमें स्वतंत्रता दिलायी, उसीमें अब हमारा विश्वास नहीं रहा, यह दुःख है। अतः मैं चाहती हूँ कि भारतकी स्त्रियाँ गांधीजीके सिद्धान्तोंका मनन करें, क्योंकि बापूके स्वप्नोंको साकार बनानेमें स्त्रियाँ पर्याप्त सहायक सिद्ध हो सकती हैं। आप प्रतिज्ञा करें कि हम गांधीजीका पथानुसरण करते हुए देशसे साम्प्रदायिकताका उन्मूलन करेंगी।

गांधीजीको हमारी सबसे बड़ी श्रद्धाञ्जलि यह होगी कि हम प्रतिज्ञा करें 'हम भारतीय महात्मा गांधीकी संतान हैं। हम उनके और सिद्धांतोंके प्रति वफादार रहेंगे। हम घृणा करनेवालोंको भी प्रेम करेंगे और सेवामें संलग्न रहेंगे।' भारतीय ईसाई इसी देशकी सन्तान हैं। वे भी महात्मा गांधीकी संतान हैं क्योंकि वे सभीको प्रेम करते थे। आज ईसाई सम्प्रदाय पितृहीन हो गया है।

मैं तो बापूके जूतोंको छूनेके लायक भी नहीं हूँ, उनकी बड़ीसे बड़ी विजयके समय मैं उनके चरणोंमें क्या अंजलि अर्पित कर सकती हूँ ?

बापूके लिये उस पारका परदा खुल गया है। आप हमेशा यही कहा करते थे कि मृत्यु तो मित्र है, और हमें उससे न डरनेकी सीख दिया करते थे। हमें, अपने नादान बच्चोंको, आपने बहुत सी बातें सिखायीं। आपके पहलेके संत जिस सँकरे और टेढ़े मार्गपर चले हैं उसी पर स्वयं चलकर आपने हमें जीवनका मार्ग बताया है। आपने हमें सिखाया कि बैर और दुश्मनीको प्रेमसे जीता जाता है। हमें आपने यह सिखाया कि सत्य ही भगवान है। आपने हमें अपने आचरणसे यह दिखाया कि उसकी सेवामें ही पूर्ण स्वतंत्रता है।

जब वह हमारे बीच थे, तब उनके साथ जीवनकी लड़ाईमें आगे बढ़ना कितना सरल था। उनकी श्रद्धा, उनका प्यार, उनकी हिम्मत और ताकत हमें सहारा देती थी और हम अपनी जगहपर कायम रहते थे। हमने अपने सारे बोझ उनपर डाल दिये थे और वे उन्हें खुशीसे उठाते थे। उनका हमपर अपार प्रेम था, इस कारण उनसे हमें अपार क्षमा मिलती थी।

ईश्वरकी बुद्धिका पार नहीं। उसने अब उन्हें अपने पास बुला लिया है। हम तो कमजोर मानव हैं। इसलिये उनके चले जानेसे हमें लगता है कि हम लाचार और अनाथ हो गये हैं। उनके बिना हमारा दिल तड़पता है, हमारी आँखोंसे आंसुओंकी धार बहती रहती है, डरने मनपर काबू जमा लिया है और हमारी श्रद्धा कमजोर हो गई है, क्योंकि उन्होंने हमें ऐसे समयपर छोड़ा है, जब हमें उनकी सबसे अधिक जरूरत महसूस हो रही है। उनकी सबसे बड़ी विजयका समय हमारी सबसे बड़ी हारका समय है, क्योंकि हमारा ही एक भाई,

उनका ही एक नादान बच्चा सही रास्तासे हटा और उसने हमारी मातृ-भूमिपर कलंक लगा दिया।

लेकिन कमजोरी और डर तो उनके शब्द-कोशमें था ही नहीं। वे उन्हें जानते ही नहीं थे। वे बुराईकी ताकतोंके खिलाफ लगातार लड़ने वाले योद्धा थे। बुराईकी ये ताकतें आज हमारे देशमें आजादीसे घूमती फिरती हैं, क्योंकि नफरत और हिंसा, पाप और बुराईकी दो जुड़वाँ लड़कियाँ ही तो हैं। इनके साम्राज्यमें हमें अपनी आत्माके खो जानेका डर है। उन्होंने जो राजनीतिक स्वाधीनता हमें दिलायी, वह उनके सपनोंके रामराज्यकी पहली सीढ़ी ही थी।

इसलिये अपनी मानव कमजोरीके होते हुये और चारों तरफ दुःखका वातावरण फैला होनेपर भी हमें सारा डर छोड़ देना चाहिये, और सत्य एवं अहिंसाके कभी न जीते जाने वाले हथियारोंकी मददसे अपनी लड़ाई जारी रखनी चाहिये। सिर्फ इसी तरह हम उनके बच्चे कहलाने योग्य बन सकते हैं। हम सिर्फ इसी तरह काम करें, इसी तरह हम उनके अटूट क्षमावाले प्यारकी शक्तिसे सहारा पा सकेंगें।

भगवान करे महाशून्यसे उनकी प्यारी वाणीका संगीत सुननेको मिले। वे जब हमारे बीच जिन्दा थे तब उनके शब्द, उनके काम और उनके विचार हमें जिस तरह ताजा बनाते और प्रेरणा देते थे, उसी तरह अन्त हमें उनकी मीठी याद, फुर्ती और प्रेरणा दे। उनका प्रेम हमेशा हमपर छाया रहे। उनकी दिव्य आत्माका प्रकाश अब भी हमें रास्ता दिखावे। न दिखते हुए भी सदा हमारे साथ रहें और टेढ़े रास्तोंपर प्यारसे हमारी रहनुमाई करते रहें। यही मेरी प्रार्थना है।

उनके जीवन-मार्गमें विश्वास रखनेवाले हम लोगोंको उन्होंने जैसी सेवाकी शिक्षा देनेकी कोशिश की, उसी सेवाकी शिक्षा हम सब फिरसे लें। सिर्फ यही अंजलि हम उनके चरणोंमें अर्पण करनेकी हिम्मत कर सकते हैं।

❀

बापूकी मृत्युसे व्यथित, शोकमग्न, हतप्रभ नेहरूजी
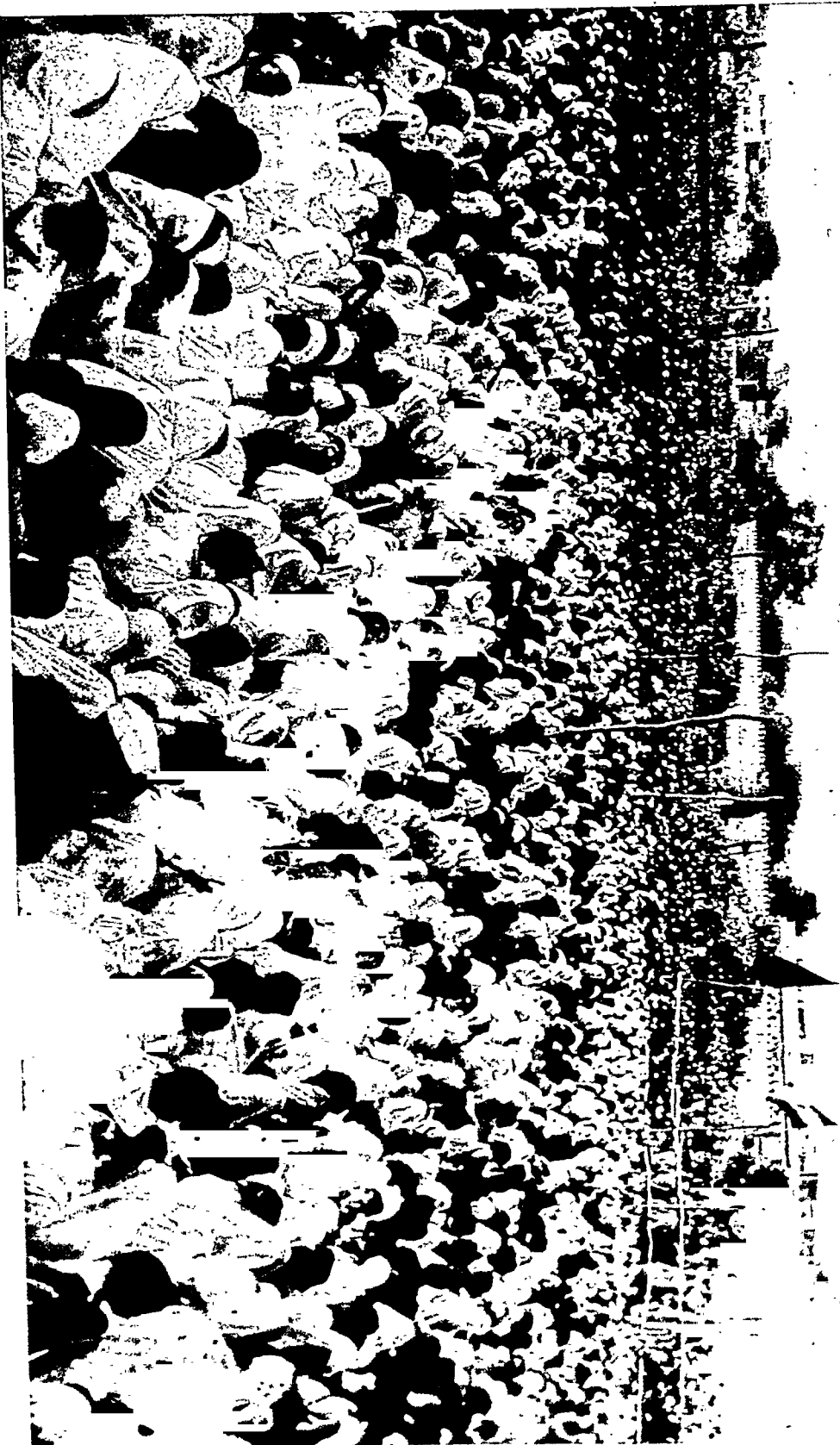
दिल्लीमें विराट् शोक-सभाका एक दृश्य : नेहरूजी भाषण दे रहे हैं

माननीय नरहरी विष्णु गाडगिल

[खान तथा विद्युत-मन्त्री : भारत सरकार]

महात्मा गांधी एशियाके ही नहीं वरन् वस्तुतः बुद्धके बाद समस्त विश्वके सर्वश्रेष्ठ महामानव थे। उस विश्वके लिए, जो कुछ दिनों पूर्व दो महायुद्ध देख चुका है, गांधीजीकी सबसे महती देन उनकी शांति और अहिंसाकी शिक्षा है।

विश्वमें स्थायी शान्तिकी स्थापनाके लिए महात्माजीकी ही शिक्षा मंगलकर हो सकती है। उनकी शिक्षामें आदर्शवाद तथा यथार्थवादका बहुत ही कल्याणकारी सामञ्जस्य था। महात्मा गांधी प्रखर बुद्धिवाले थे, ईश्वरमें उनका अविचल विश्वास था और दुर्बल शरीर होते हुए भी उनमें शक्तिमयी दृढ़ता थी। महात्मा गांधीका जीवन मौलिक विभूतियोंसे संपन्न था। धरतीसे क्षमा तथा सहिष्णुता, जलसे प्रेम, पवनसे गतिमय व्यक्तित्व, आकाशसे तेज उन्हें मिला था। वे मानवताके प्राण थे। बारदोलीका किसान और विंडसर-प्रासादके राजकुमार दोनों उनके सामने समान थे। जीवनका कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं था जिसमें उन्होंने आदर्श आचरण न किया हो। उन्होंने इस देशके कितने ही प्राणियोंको आध्यात्मिक बना दिया। अपने राजनीतिक गुरु गोखलेकी भाँति उनका भी विश्वास था कि विनय अधिक बलशाली और लाभदायक होती है। उनका स्वभाव कुसुमसे भी कोमल था किन्तु उपयुक्त समयपर वे वज्रसे भी कठोर हो जाते थे। भारतका गौरव था कि उनके ऐसा व्यक्ति यहाँ उत्पन्न हुआ और हम लोगोंका सौभाग्य था कि उनके साथ रहे, उनकी वाणी सुनी और उनके अनुगामी हुए। यह हमारी अनुपम भाग्यशीलता थी। महात्माजीकी मृत्युसे स्पष्ट हो गया कि संसारके मनुष्योंके हृदयमें उनके लिए सम्मान था। उनका सबसे बड़ा सम्मान जो हम कर सकते हैं वह यह है कि उनके आदर्शोंको कार्यान्वित करें और उनकी शिक्षाओंपर चलें। जनताको शोक छोड़कर महात्मा गांधीके उपदेशोंका पालन करना चाहिये। सरकार इस बातका पूर्ण प्रयत्न करेगी कि गांधीजीके नेतृत्वमें कांग्रेसके जो आदर्श रहे हैं, उनको कार्य रूपमें परिणत किया जाय। इस कार्यमें जनताका हार्दिक सहयोग अपेक्षित है।

प्रजातांत्रिक व्यवस्थाका आधार बहुमतका शासन और सहिष्णुता है। ८० प्रतिशत हिंदू जनताको राजनीतिक उद्देश्योंकी प्राप्तिके लिए साम्प्रदायिक संघटनकी कोई आवश्यकता नहीं। जो मुसलमान हिंदको अपना राष्ट्र मानते हैं उनको भी सांप्रदायिक आधारपर एक राजनीतिक संघटन बनानेकी क्या आवश्यकता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हिंदू महासभा जैसी संस्थाओंका कार्य हिन्दूओंमें जातिभेद और अन्य विषमताओं उन्मूलन होना चाहिये था। अब

भी सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगतिके लिए इस कार्यका पूरा होना आवश्यक है। गांधीजीने हमारे ऊपर रक्षाका भार सौंप दिया है। एकताके द्वारा हम उसे सुदृढ़ बना सकते हैं। शांति भंग करनेवाले देशका बहुत अहित करते हैं। प्रतिशोधके कारण धन, जनकी इतनी बड़ी क्षति हुई है। अपराधियोंको दण्ड देनेके लिए सरकारके पास पर्याप्त शक्ति है। जनताका कार्य समाजमें शांति स्थापित करना है। इस हत्यासे हिन्दू समाज छिन्न-भिन्न हो गया है और उससे राष्ट्रके भीतर और बाहर शत्रुओंको बल मिला है।

चन्दनकी चिताग्निने, जिसमें उनकी क्षीण काया भस्मीभूत हो गयी लोहेकी गोलीको भी सुवासित कर दिया। आज महात्माजीका सार्वभौम प्रेम समस्त विश्वमें व्याप्त हो गया है। क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है? आगेसे भारत 'गांधीय' कहा जायगा। गांधीवाद हमारा धर्म होगा। गांधीजी 'ओम' के मधुर संगीत, दक्षिण मलयके माधुर्य तथा बालकोंकी निर्दोष मुखाभामें वर्तमान हैं।

❀

माननीय डाक्टर श्यामाप्रसाद मुखर्जी

[उद्योग- मन्त्री : भारत सरकार]

भारतपर वज्राघात हुआ है। जब विश्व अन्धकारमें मार्ग टटोल रहा था उस समय गांधीजीने प्रकाश दिखाया। आज वह दीपक बुझ गया।

उनकी मृत्यु देशपर सबसे भारी आघात है। जिस व्यक्तिने भारतको स्वतंत्र करके अपने पाँवों पर खड़ा किया, जो सबका मित्र था और किसीका भी शत्रु नहीं था, जिसे करोड़ों व्यक्ति प्रेम और आदर करते थे, उसका अपनी ही जाति और अपने ही धर्मके एक हत्यारेके हाथों मारा जाना अत्यधिक लज्जा और दुःखकी बात है। गांधीजी ऐसे व्यक्ति हैं जिनका प्रभाव कभी नहीं मिटता बल्कि समय गुजरनेके साथ निरन्तर बढ़ता जाता है। हत्यारेकी गोलीने महात्मा गांधीकी नश्वर देहको ही नहीं बींधा अपितु हिन्दू धर्म और भारतके हृदयको भी बींध डाला है और जो केवल तभी जीवित रह सकते हैं जब लोग दृढ़ निश्चयके साथ ऐसे तरीकोंका अपनाया जाना असम्भव बना दें।

❀

माननीय षण्मुखम् चेट्टी

[अर्थ मन्त्री : भारत सरकार]

महात्मा गान्धीकी मृत्युसे विश्वका एक उन्नायक, समग्र राष्ट्रका पिता और हम लोगोंका मित्र, दार्शनिक तथा पथ-प्रदर्शक चला गया। नवजात भारतीय स्वतन्त्रताको पंजाबकी विकराल दुःखद आन्धीका सामना करना पड़ा। सरकार को उजड़ी मानवताकी रक्षाके लिए अपने समस्त साधनोंको लगा देना पड़ा। साथ ही अपनी आर्थिक व्यवस्थाको भी सुधारना था। प्रथम चरणमें बादलमें प्रकाशके समान आशाकी किरणें दिखाई पड़ रही थीं, पर अकस्मात आकाश और ब्रह्माण्ड को विदीर्ण करनेवाला वज्राघात हुआ। एक बार देशपर फिर संकट आ गया। राष्ट्र-शिशु अनाथ हो गया और समस्त देश तमसावृत हो गया। यह सत्य है कि गान्धीजीकी मृत्युसे उदीयमान स्वतंत्रताका संरक्षण समाप्त हो गया। मुझे आशा है, देश इस भयंकर स्थितिका सामना करनेमें समर्थ होगा। मृत्युमें भी आशा रखते हुए हम देशको गांधीजीके आदर्शोंके अनुरूप बनायेगें।

❀

माननीय जगजीवनराम

[श्रम मंत्री : भारत सरकार]

यह शोक शब्दोंकी अभिव्यक्तिसे परे है। विश्वका सबसे बड़ा आत्मा चला गया। सारा देश अनाथ हो गया है, विशेषतः हरिजनोंका सच्चा उपकारक, उनका निधि चला गया। हमारा बाल-स्वातन्त्र्य कसौटीपर है। यह हमारी योग्यता एवं क्षमताका परीक्षाकाल है। बापूके रूपमें हमारा ईश्वरीय संरक्षण अकस्मात् चला गया। इस समय सत् और असत्, संघटन और विघटन, प्रगति और प्रतिगतिका संघर्ष हो रहा है। यह महान ठेस और परीक्षाका समय है। क्या हम खड़े रह सकेंगे या भारतीय इतिहासकी पुनरावृत्ति होगी। विश्वकी सर्वोच्च आत्मा बापूका बलिदान व्यर्थ न जायगा और हम लोग एक होकर उनके उद्देश्योंको सिद्ध करेंगे और देशमें एकता और शान्ति स्थापित करेंगे।

० ० ०

भारतकी पसीना बहानेवाली मूक जनता चाहे वह खेतोंमें काम करती हो अथवा कारखानोंमें, अथवा यों कहिये कि भारतका दरिद्रनारायण आधुनिक

भारतके निर्माता और भारतीय राष्ट्रके पिता महात्माजीके सबसे निकट और प्रिय था। गांधीजी ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अत्याचार, शोषण और वर्गजन्य उच्चताकी भावनाके प्रति विद्रोह किया और देशकी दरिद्र और उत्पीड़ित जनताको आशाकी ज्योति दिखाकर प्रकाशमान किया।

आज न केवल भारत बल्कि समस्त संसार शोक और दुखके पारावारमें डूबा हुआ है। गांधीजीके निधनपर सर्वत्र शोक और दुखकी जो स्वाभाविक लहर दौड़ गयी, वैसी इतिहास अथवा मनुष्यके जीवनमें पहले कभी नहीं देखी गयी। कारण स्पष्ट है। गांधीजीने जीवन भर सत्य और अहिंसा, प्रेम और सहिष्णुता, एकता और भ्रातृत्व और सद्भावनाके जिन सार्वभौम सिद्धान्तोंका प्रचार किया, उनसे मानवका अन्तस्तल प्रभावित हो उठा। हिंसा और फूटके कटु वातावरणमें गांधीजीके ये शाश्वत सिद्धान्त मानव समाजको सान्त्वना देते थे। महात्मा गांधी मुख्यतः एक आध्यात्मिक शक्ति थे और जहाँ आत्माका साम्राज्य हो, वहाँ जाति और देशके बन्धन नहीं ठहर सकते। घृणा, विद्वेष और अविश्वाससे छिन्न-भिन्न संसारमें महात्मा गांधीका सिद्धान्त मानो नैतिक अधःपतन और मानवताकी अधोगतिके विरुद्ध विद्रोह था। उनके जीवनकी सर्वाधिक उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण बात यह थी कि उनके कथन और आचरणमें कोई भेद न था। वे जो कुछ कहते थे वही करते थे, जो कुछ वे स्वयं नहीं करते थे उसकी आशा दूसरोंसे कभी नहीं करते थे। गांधीजी सदैव गीता द्वारा प्रतिपादित स्थितप्रज्ञके आदर्शपर चले। गीताके श्लोक सदैव उनकी दैनिक प्रार्थनाके मुख्य अंग रहे। उनके सामने जीवनका प्रत्येक कार्य यज्ञ था। उन्होंने जो कुछ भी किया त्याग और उत्सर्गकी भावनासे प्रेरित होकर ही किया। उन्होंने फलकी कभी कामना नहीं की। जीवन और कर्त्तव्यके सम्बन्धमें उनकी विचारधारा एक कर्मयोगीकी विचारधारा थी। उनके अनुसार कर्मयोगी मानवकी समस्त महत्ता और श्रेष्ठताका प्रतीक है जिसके द्वारा ईश्वर अपनी इच्छाकी पूर्ति करता है। गांधीजीमें हिन्दू धर्म और निर्मल हिन्दू संस्कृतिकी श्रेष्ठ विशेषताएँ विद्यमान थीं। उनमें प्राचीन तथा अर्वाचीनका उल्लेखनीय संश्लेपण पाया जाता था।

गांधीजीका एक सर्वप्रिय भजन 'काको नाम पतित पावन जग केहि अति दीन पियारे' था। ये सब भगवानके गुण हैं, किन्तु ये ही स्वयं महात्माजीमें उल्लेख रूपमें पाये जाते थे।

जीवनके अन्तिम क्षणतक उन्होंने भारतकी जनताको वह प्रतिष्ठा और मर्यादा दिलानेकी चेष्टा की, जिसकी वह जन्मतः अधिकारी रही है, किन्तु जिससे उसे वंचित रखा गया था।

अस्पृश्यता निवारणके प्रश्नपर गांधीजीके विचारोंकी दृढ़ता सामाजिक क्रान्तिके क्षेत्रमें एक बड़ा भारी पग था, क्योंकि केवल वही एक ऐसे व्यक्ति थे

जिनमें वह सूझबूझ थी और जो इस बातकी घोषणा साहसपूर्वक कर सकते थे कि अस्पृश्यताके रहते हिन्दू समाजकी प्रगति स्वाधीनताके लक्ष्यतक असंभव है उनकी सहानुभूति केवल मौखिक न थी, अपितु वे अस्पृश्यताके गढ़को ध्वस्त करनेके लिए ठोस कार्य करनेको सदैव कटिबद्ध थे। उन्होंने हरिजनोंके अपना प्रश्न बनाया और कांग्रेसको उसे अपने कार्यक्रमके अभिन्न प्रश्नको अंगके रूपमें स्वीकार करनेके लिए विवश कर दिया। उनके जीवनका उद्देश्य हिन्दू धर्मसे इस बुराईको निकाल बाहर करने और उसके इस कलंकको धोनेका था। यद्यपि अस्पृश्यताका भूत अभीतक हमारे देशमें विद्यमान हैं, क्योंकि सामाजिक दुर्भावनाएँ और कट्टरता बहुत दिनोंमें दूर होती हैं, फिर भी महात्माजीने इस बुराईके विरुद्ध जिन शक्तियोंको जन्म दिया था, वे अभीतक काम कर रही हैं और यह अत्युक्तिकी आशंकाके बिना ही कहा जा सकता है कि अस्पृश्यताके दुर्गपर विजय प्राप्त हो गयी और उसकी नींव हिल गयी है। अभी एक और झटके तथा आयोजित प्रयत्नकी आवश्यकता है जिसके परिणाम-स्वरूप उसका भवन धराशायी होकर छिन्नभिन्न हो जायेगा।

सांप्रदायिक झगड़ोंके कोलाहलमें कुछ क्षेत्रोंमें दुर्भाग्यवश गांधीजी द्वारा हिन्दू जातिके प्रति की गयी सेवाओंकी पर्याप्त रूपसे इज्जत नहीं की गयी। अबतक हिन्दुओंमें जितने भी महापुरुषोंने जन्म लिया है, गांधीजी निस्संदेह उनमें सबसे बड़े थे। गांधीजीने धर्मके जिन सार्वभौम सिद्धान्तोंका प्रचार किया और जिस रूपमें उनकी व्याख्या की उससे हिन्दूधर्मकी कीर्तिमें अभिवृद्धि हुई और बहुत हद तक उन्हें हिन्दूधर्मके विरुद्ध फैली हुई भ्रान्त धारणाओंके निवारण करनेमें सफलता मिली। उनकी इन सफलताओंका सही मूल्यांकन तो भावी इतिहासकार ही कर सकेंगे। ऐसे समय जब प्रतिक्रियावादी शक्तियोंके परिणाम-स्वरूप समस्त देशमें संकुचित सांप्रदायिकताका बोलबाला था तथा देशमें घृणा और हिंसाका प्रचार हो रहा था, केवल गांधीजी ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दुओंको अपने उच्च धार्मिक आदर्शोंसे नीचे गिरनेसे रोका। उन्होंने अपने महान प्रभाव और नैतिक बलका प्रयोग करते हुए हिन्दुओंसे कहा कि वे प्रतिशोध और प्रतिहिंसाकी अग्निमें न कूदें और निर्बल और निराश्रितों तथा स्त्रियों और बच्चोंपर जघन्य अत्याचार न करें। कितने ही लोगोंका जो 'जैसेको तैसा' के सिद्धान्तमें विश्वास करते हैं, गांधीजीके इस ठोस और गंभीरतापूर्ण किन्तु कटु परामर्शसे चिढ़ पैदा हो जाती थी। उनकी यह प्रतिक्रिया हमारी समझमें आसानीसे आ जाती है। किन्तु जब हम अपने समीपवर्ती दूषित वातावरण और संकुचित सांप्रदायिकतासे ऊपर उठेंगे तब हमें पता चलेगा कि महात्माजीने अपनी सामयिक चेतावनी और तीव्र भर्त्सना द्वारा और अन्तमें सत्य और न्यायकी रक्षाके लिए अपने प्राणोंतक की बाजी लगाकर हिन्दुओंके पापोंका प्रायश्चित किया। इस प्रकार हम देखते हैं

कि गांधीजीने अपने बलिदान द्वारा हिन्दू धर्मको सदाके लिए रसातलमें जानेसे रोक लिया और दुनियाकी नजरोंमें उसकी प्रतिष्ठा बढ़ायी। हिन्दुओंको गांधीजीका अत्यधिक आभारी होना चाहिये कि उन्होंने ऐसे समय जब भावावेशमें वह जाना आसान था और संयमसे काम लेना कठिन था, उन्हें गलत मार्ग पर भटक जानेसे रोक दिया। लेकिन गांधीजीने हिन्दू धर्मकी जिन अच्छाइयोंपर जोर दिया है उनके कारण उनके द्वारा प्रतिपादित धर्मकी सार्वभौमिकता किसी प्रकारसे भी कम नहीं होती। धार्मिक सहिष्णुता और सद्भावनाके उच्च आदर्शोंका जितना सुन्दर सम्मिश्रण हमें गांधीजीके जीवनमें मिलता है उतना और कहीं नहीं मिलता है। आम लोगोंके विरोध और प्रार्थना-सभाओंमें प्रतिक्रियावादियों तथा कट्टर पंथियोंकी तनिक भी परवाह न कर गांधीजीने सार्वभौम धर्मकी शिक्षा दी और यह बताया कि सभी धर्म समान हैं और उनमें अच्छाइयाँ हैं। गांधीजीमें ही यह साहस और शक्ति थी कि वे हिन्दुओंकी सभाओंमें भी 'ईश्वर अल्लाह तेरे नाम' सरीखा भजन गा सकते थे और कुरानकी आयतें तथा बाइबिल पढ़ सकते थे। उनके जीवनकी महत्ता, श्रेष्ठता और उत्कृष्टताका यही रहस्य था। संसारके इतिहासमें सहिष्णुता और धार्मिक उदारता और उत्कृष्टताका इससे उज्ज्वल उदाहरण अन्यत्र कहाँ मिलेगा।

गांधीजीने श्रमिक वर्गके उद्धारके लिए जो बहूमूल्य कार्य किया है वह उनकी अन्य चमत्कारपूर्ण सफलताओंकी तुलनामें कम महत्वपूर्ण नहीं है। पहले पहल दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रह-आन्दोलनके दिनोंमें उन्होंने मजदूर वर्गके कल्याण संबंधी-कार्योंमें अपना सहयोग प्रदान किया। यह आन्दोलन मुख्यतः उस देशमें जाकर बसनेवाले भारतीय मजदूरोंके मौलिक अधिकारोंकी स्वीकृति के उद्देश्यसे ही चलाया गया था। भारतका मजदूर वर्ग उनका विशेष रूपसे आभारी है। देशके मजदूर आन्दोलनके निर्माणमें यद्यपि उनका काफी हाथ रहा है फिर भी मजदूरोंके लिए उनकी अप्रत्यक्ष सेवाओंका महत्व कहीं अधिक व्यापक है। गांधीजीने मजदूरों और मालिकोंके औद्योगिक सम्पर्ककी एक नयी प्रणालीको जन्म दिया। अहमदाबादकी कपड़ेकी मिलोंमें काम करनेवाले मजदूरोंके ऐतिहासिक आन्दोलनको गांधीजीसे प्रेरणा मिली। उसमें वे भारतीय मजदूरोंके मान्य नेता बन गये। इस ऐतिहासिक आन्दोलनके अवसरपर गांधीजीने सर्वप्रथम उपवास किया जिसका उद्देश्य मालिकोंको यह समझाना था कि औद्योगिक झगड़ोंके निबटानेका सर्वोत्तम और उपयोगी उपाय पंचायती निर्णय है। और हम देखते हैं कि अहमदाबादके मिल-मालिक और मजदूर आजतक इसी परम्परा और तरीके पर दृढ़तासे अमल कर रहे हैं। उनका मद्य-निषेध आन्दोलन वास्तवमें श्रमिकवर्गकी भलाईके लिए ही था। इसका उद्देश्य मजदूरोंके कष्टोंका निवारण और उनके नैतिक तथा भौतिक मानस्तरको उन्नत करना था। मजदूरोंके लिए उनकी यह महती सेवा थी।

एक ऐसे व्यक्तिके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करनेके लिए मैं उपयुक्त शब्द कहाँ से लाऊँ जिसका हमारे ऊपर इतना अधिक ऋण है और जिससे उऋण होनेके लिये हमने कुछ भी नहीं किया। वास्तवमें यह हमारे लिये सदैव लज्जाकी बात रहेगी कि उनकी हत्या एक भारतीय और एक ब्राह्मणके हाथ हुई। परन्तु जिस प्रकार आत्मा अजर और अमर है उसी प्रकार अवतारोंके उपदेश और उनकी शिक्षाएँ भी अमर हैं। यद्यपि आज गांधीजी का भौतिक शरीर हमारे मध्य नहीं है फिर भी उन्होंने हमें जो प्रकाश दिखाया है उससे हमारा पथ सदैव प्रकाशमान होता रहेगा और उचित मार्ग पर चलने के लिये हमें प्रेरणा मिलती रहेगी। जब कोई राष्ट्र अपने लक्ष्यकी ओर आगे बढ़ता है तब उसके जीवनमें निराशाके कुछ क्षण भी अवश्य आते हैं और उसका पथ अन्धकारसे आच्छादित हो जाता है। ऐसे सभी अवसरोंपर उसे निश्चित रूपमें उस दैवी शक्तिसे प्रेरणा मिलती है और वह उसीके सहारे अपने पथपर बढ़ा चला जाता है। मेरी उस दयानिधान ईश्वरसे यही एकमात्र हार्दिक कामना है कि वह हमें उस युग-पुरुषका योग्य अनुयायी बनाये जिसने मानवताके लिये अपना बलिदान दिया और जिसने हमारे सम्मुख त्याग, सेवा और सहिष्णुताका उच्चत्तम आदर्श उपस्थित किया।

"गांधीजी चिरंजीवी हों" "महात्मा गांधी की जय"

❀

माननीय श्री रफी अहमद क़िदवई

[यातायात मंत्री : भारत सरकार]

इस भयंकर दुर्घटनाकी निन्दा करनेके लिए शब्द नहीं मिलते! हमलोगों ऐसा अभागा कौन होगा, जिसने असमय उन्हें खो दिया! भारत उनका सदैव ऋणी रहेगा।

❀

माननीय डाक्टर भीमराव अम्बेडकर

[कानून मंत्री : भारत सरकार]

गांधीजीको खोकर वस्तुतः भारतने अपना बहुत कुछ खो दिया है। मानवताको उनपर गर्व था। दलितों और पीड़ितोंका एक सहारा चला गया। उनका जीवन ही परोपकारके लिए था; वे उसीके लिए जिये और उसीके लिए मरे! भारतीय राजनीतिको उनकी देन अमर है और है प्रेरणात्मक!

❀

माननीय डाक्टर जान मथाई

[रेलवे मंत्री : भारत सरकार]

गांधीजी महान् थे और उनके कार्य तो और भी महान थे। उन्हें खोकर मानवताने अपना एक श्रेष्ठ उपासक खो दिया। उनका व्यक्तित्व बहुत ही भव्य एवं आकर्षक था। भारत ही नहीं सारा संसार इस भयंकर दुर्घटनापर शोक-प्रकाश करेगा।

माननीय सी० एच० भाभा

[व्यापार मंत्री : भारत सरकार]

मरकर भी महात्माजी अमर हैं। उनके जीवनकी कठोर साधना और मानवताकी अनवरत सेवाने उन्हें विश्वका सर्वश्रेष्ठ पुरुष बना दिया है। धर्म, सम्प्रदाय और के वर्ण विद्वेषका विनाश करनेमें उन्होंने जो अनवरत पर शांतिमय संघर्ष किया है उसके कारण भारतके भावी इतिहासकार युगयुग तक उनकी पावन गाथा गाते रहे हैं। उनके निधनसे भारत ही नहीं समस्त विश्वकी अपूर्णीय क्षति हुई। हमारा कर्त्तव्य है कि अब भी हम उनके उपदेशोंका महत्व समझें और उनपर चलकर भारतमें शान्ति और सद्भावनाकी स्थापना करें।

माननीय एन० गोपालस्वामी ऐयंगर

[मंत्री : भारत सरकार]

महात्मा गांधी सर्वदा एकताके संपादनमें निरत रहे। देश-विभाजनकी नीति स्वीकार करनेकी विवशतासे उन्हें जितना दुःख हुआ उतना और किसी कार्यसे नहीं।

देशका विभाजन हो जानेके अनन्तर अपनी सारी शक्ति लगाकर वह सदा इसी प्रयत्नमें लगे रहे कि दोनों संप्रदायोंका पारस्परिक विद्वेष विनष्ट हो जाय और दोनोंमें बन्धुभावकी वृद्धि हो। दोनों राष्ट्रोंके बीच सद्भावनाके बंधनको दृढ़ बनानेमें वे निरंतर प्रयत्नशील रहे।

जो शक्तियाँ एकता और सद्भावनाके प्रचार और प्रसारमें बाधक रहीं उन्हें दूर करनेके लिये वे अनवरत संघर्ष करते रहे। जनतामें उस विरोध और प्रतिहिंसाकी भावनाके प्रचारके रहते हुए भी जिसके प्रभावसे भारतीय जनता, सांप्रदायिकताके विषसे ग्रस्त थी—वे सद्भावनाके प्रचारमें सबसे अधिक निरत रहे।

उनका धर्मोपदेश था अपकारका उत्तर उपकारसे देनेका। इसी सिद्धांतकी शिक्षा देते हुए महात्माजी अपने उद्देश्यकी साधनामें शहीद हुए। जब उनकी सेवाएँ इतनी आवश्यक थीं, जितनी और कभी नहीं रहीं, दुर्भाग्यके कारण हमने उन्हें खो दिया।

यह कहा जाता है कि महात्माजीके इस भांति मसीहा हो जानेसे कदाचित् उन लक्ष्योंकी सिद्धि हो सकेगी जिनकी वे साधना करते रहे। हम आशा करते हैं कि इसका फल सुसम्पन्न होगा।

आज जिन भारतीयोंके कंधेपर उत्तरदायित्वका बोझ है, उन्हें अपने कर्तव्यका विचार करना है और इस बातका सर्वतोभावेन प्रयास करना है कि बापूके निधन हो जानेपर हम उनके आदर्श सिद्धांतोंको जीवित रखें तथा अपने आचरण द्वारा उनके सिद्धांतोंका अनुसरण करते हुए उस एकता और सद्भावनाकी स्थापना करें जिसका वे सदा उपदेश देते रहे।

हमें यह प्रार्थना करनी चाहिए कि उनकी आत्मा सदा हमारे साथ रहे और हमारा पथ-प्रदर्शन करती हुई इस प्राचीन भारतभूमिमें जिसे वे श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते थे और जिसके लिये उन्होंने अपनी आहुति दे डाली शांति और सद्भावना स्थापित करनेमें हमें समर्थ बनाये।

❀

माननीय क्षितीशचंद्र नियोगी

[पुनर्वासन मंत्री : भारत सरकार]

विश्वास नहीं होता कि ऐसी दुर्घटना हुई है। महात्माजी अमर हैं, और तबतक जीवित रहेंगे जबतक भारत है। उन्होंने भारतको और भारतवासियोंको जो प्रदान किया है वह अनुपम और महान है। जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें उन्होंने भारतका पथ-प्रदर्शन किया है। ऐसे महापुरुष कभी कभी अवतीर्ण होते हैं। वे दीनबंधु थे। शरणार्थियोंके संबंधमें, दीन-दुखियोंके संबंधमें उन्होंने जो महत्तम कार्य किये हैं वे सर्व विदित हैं। उन्हें खोकर भारतने अपना महान् नेता, दीन दुखियोंने अपना त्राता और संसारने अपना उज्ज्वलतम रत्न खो दिया है।

माननीय जयरामदास दौलतराम

[खाद्य-मंत्री : भारत सरकार]

महात्माजी विश्वकी विभूति थे। भारतको इस बातका गर्व है कि ऐसे महापुरुषने यहाँ अवतार लिया। आज उन्हें खोकर वसुधा हतप्रभ हो गयी है; उसका दीप्तिमय रत्न खो गया। जो लोग महात्माजीके सम्पर्कमें आये हैं, वे जानते हैं कि उनका व्यक्तित्व कितना तेजोमय और प्रभावात्मक था। वे देशके लिए अवलंब थे; मुसीबतों और कठिनाइयोंके समय तो वह भगवान्‌के स्वरूप ही लगते थे। भारतको जो स्वतंत्रता मिली है, वह उनकी तपस्याके कारण ही मिली है। मैं उस महान् अमर आत्माके प्रति श्रद्धा और भक्तिके साथ अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ। वे उस लोकसे भी हमारा पथ-प्रदर्शन करते रहेंगे ऐसा हमारा क्या प्रत्येक भारतीयका विश्वास है।

आचार्य नरेन्द्र देव

[कुलपति : काशी विद्यापीठ तथा लखनऊ विश्वविद्यालय]

कल हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधीने, जो आजके, इस युगके सबसे बड़े महापुरुष थे, अपने जीवनकी अन्तिम लीला समाप्त की। आज दिल्ली शहरमें शामके ४ बजे यमुना नदीके तटपर उनका महाप्रस्थान होनेवाला है। वह हमारे मार्ग-प्रदर्शक थे। उन्होंने हमको जीवनके आध्यात्मिक और सामाजिक मूल्योंकी शिक्षा दी। भारतवर्षकी प्राचीन संस्कृतिको परिष्कृत कर उसकी पुरानी ज्योति फिरसे जगायी। भारतीय समाजके करोड़ों निश्चेष्ट और निष्प्राण मानवोंके हृदयमें जीवनकी एक नई ज्योति जगायी, जिसने हमको स्वतत्रंता प्रदान की। वह मशाल जिसको प्राचीन कालके ऋषियोंने इस पुण्य-भूमिमें प्रज्वलित की थी, जिसे भगवान् बुद्धने फिरसे जगायी, जिसको समय समय पर महापुरुषोंने आकर, जगाकर भारतवर्षकी अखंड सम्पत्तिकी रक्षाकी, उसी मशालको फिरसे जलाकर और हमारे जीवनमें एक नई ज्योति, एक नई स्फूर्ति, एक नया चैतन्य प्रदान कर वह मशाल हमारे कमजोर हाथोंमें सौंपी थी और जब उन्होंने अपने सामने उस मशालको हमारे कमजोर हाथोंसे जमीन पर गिरते देखा तब हमारे हाथोंको बल देनेके लिए अपना सहारा दिया। वह महापुरुष, हमारे राष्ट्रकी सबसे बड़ी सम्पत्ति, आज उठ गयी, आज हमसे छिन गयी है। हम आज

अपनेको निराश्रय, निरुपाय, और निरावलम्ब पा रहे हैं। वह हमारा दीपक आज बुझ गया। चारों ओर अन्धकार है। सारा भारतीय समाज शोकमें निमग्न है। ऐसे अवसर पर हममें कातरताका आना स्वाभाविक है।

इस रंजकी घड़ीमें मुझे अपने देशके इतिहासका वह अवसर स्मरण हो आता है जब हमारे देशका एक महापुरुष, नहीं-नहीं सारे संसारका महापुरुष, अर्थात् भगवान् बुद्धने....जब वह अपना शरीर छोड़ रहे थे...भारतीयोंको एक अनुपम शिक्षा दी थी! उस अवसर पर हमारे प्रान्तके कुशीनगरमें जब भगवान् बुद्ध मृत्युशय्या पर पड़े थे तब अपने पास अपने प्रिय शिष्य आनन्दको न देखकर उन्होंने भिक्षुओंसे पूछा कि आनन्द कहाँ है! भिक्षुओंने कहा..."भगवान् आनन्द बाहर खड़ा रो रहा है।" उन्होंने कहा.."उसको बुलाओ"। वह भगवान्के सम्मुख आया। भगवान्ने कहा—"हे आनन्द क्यों रोते हो?" उसने कहा, "संसारका दीपक बुझ रहा है, संसार अन्धकारसे आछन्न होने वाला है। आपकी अनुपस्थितिमें हम निरावलम्ब हो जायंगे। हमें उपदेश देनेवाला, हमें आदेश देनेवाला, हमको संसार चक्रसे उबारने वाला कौन होगा?" भगवान्ने कहा... "हे आनन्द तुम, हमारी उस शिक्षाको क्यों भूल गये, क्या हमने तुम्हें बार-बार यह नहीं सिखाया कि जो उत्पन्न होता है उसकी मृत्यु अवश्यम्भावी है। हमने तुम्हें क्या यह नहीं बताया कि तुम अपने पैरों पर खड़े हो। स्वयं अपने दीपक हो, किसी दूसरे दीपका सहारा मत लो। हमारे महानिर्वाणके अनन्तर हमारे निर्वाणकी शिक्षा ही तुम्हारे लिए दीपकका काम करेगी। जाओ, रोओ मत, यह रोनेका समय नहीं है। निर्वाणके लिए सदा प्रयत्नशील होते रहो।" यदि हमारा राष्ट्रपिता, संसारका महापुरुष अपनी मृत्यु शय्या पर पड़ा हुआ कुछ बातकर सकता तो मुझे पूरा विश्वास है कि उसका भी उपदेश इन्हीं सारगर्भित शब्दोंमें होता। यद्यपि उस समय वह हमको कुछ उपदेश अपनी अन्तिम घड़ियोंमें न दे सके किन्तु हम जानते हैं कि अपने जीवनमें उन्होंने बार-बार यही कहा कि तुम हमारा सहारा मत ढूँढो।

इसीलिए सन् ३२, सन् १९३५ में उन्होंने कांग्रेसकी सदस्यताको छोड़ी, इस बातके समझनेके लिए कि बड़ेसे बड़ा महापुरुष क्यों न हो, आखिर उसके जीवनकी अवधि भी निश्चित है। यदि तुम इसी प्रकारसे उसके ऊपर आश्रित होगे तो उसके उठ जानेके अनन्तर तुम अवश्य खिन्न होगे, और अवसादसे भर जाओगे। इसी प्रकार समय समय पर हमको अपने पैरों पर खड़े होनेका उपदेश देकर महात्माजीने हमको बताया कि तुम अपने पैरोंपर खड़ा होना सीखो! भगवान बुद्धके वही शब्द आज हमारे कानोंमें गूँज रहे हैं। यह दुःखका समय है। ज्यों ज्यों दिन बीतते जायंगे हम महात्माजीके अभावको अधिकाधिक अनुभव करते जायंगे! किन्तु यदि हम उनके सच्चे अनुयायी हैं, यदि हम उनके

उपदेशों और आदेशों पर दृढ़ रहना चाहते हैं, तो हमारा कर्तव्य है कि वीर पुरुषोंकी तरह उनकी शिक्षाको शिरोधार्य करें। हम स्वयं अपने पैरों पर खड़े हों। आत्मदीपक बनें। भारतवर्षका प्रत्येक व्यक्ति, जो गांधीजीका अनुयायी कहलाता है, उसका आज परमपुनीत कर्तव्य है कि अपने हृदयमें उस ज्योतिको जगाकर दूसरोंका मार्ग प्रदर्शन करे। आज वह हाड़-मांसकी कैदसे मुक्त होकर और भी विशाल रूपसे, और भी प्रभावशाली प्रकारसे हमारे हृदयों पर राज्य करेंगे। उनकी शिक्षाके प्रसारमें कठिनाई होनेके स्थानमें अब सुगमता होगी और आज जब वह राजनीतिके क्षेत्रसे ऊपर उठे तो भारत ही नहीं सारा संसार उनकी शान्ति-प्रेमकी शिक्षाको अपनानेके लिए तैयार होगा! इसके लिए आज मैं यही कहना चाहता हूं कि हम भारतीय; जो अभागे हैं, जिनको इस आजादीके साथ जिन्दगीका पैगाम मिलनेकी जगह मौतका पैगाम मिला, यदि हम अब भी संभलना चाहते हैं तो हमें चाहिए कि वह मशाल जिसे गांधीजीने हमारे हाथों में सौंपी, वह पुरानी भारतवर्षकी मशाल, जो पुरानी भी है और आजके लिए नयी भी, उस मशालको अपने मजबूत हाथोंसे पकड़ें और इस बातकी चेष्टा करें कि हमारे हाथसे इस मशालको कोई छीन न ले। जबतक हम उस मशालके नम्बरदार हैं, तबतक भारतवर्षका बाल कोई वांका नहीं कर सकता। जो यह दावा करते हैं कि गांधीजी भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्मके विनाशक हैं और विरोधी हैं, उन्होंने भारतीय संस्कृति और धर्मके मर्म और हृदयको नहीं पहचाना। भारतीय इतिहास पुकार पुकार कर कहता है कि संसारमें एकता होनी चाहिये। सर्वत्र एक ही भाव, एक ही आत्माका संचरण होता है। सारा संसार एक सूत्रमें बंधा हुआ है। मानवजातिसे प्रेम करो। अत्याचार, अनाचारसे घृणा करो।

जीवनका मार्ग शान्तिमें है, प्रेममें है, धर्ममें है, जीवनके सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्योंकी रक्षामें है। अत्याचारमें नहीं, अनाचारमें नहीं, घृणामें नहीं, विद्वेषमें नहीं। मैं पूछना चाहता हूं इस पतित भारतको उठाने वाला, उसका उद्धार करनेवाला, हिन्दू संस्कृतिको फिरसे जीवित करनेवाला, सारे समाजमें उसको आदर सम्मान दिलानेवाला, भारतका नाम जो अबतक अपमानित था, तिरस्कृत था, कलंकित था, उसको गौरव प्रदान करने वाला, भारतीय जिसका नाम लेकर समस्त संसारमें मस्तक ऊँचा करके भ्रमण कर सकते थे यह काम किसका है? किसने इस भारतीय हिन्दू समाज को, जो पतित हो गया था, जो घोर वर्ण-व्यवस्थासे पिसा जा रहा था, जिसने स्पृश्यता को इतना उत्तेजन देकर अपने सामाजिक बन्धनों को शिथिल कर दिया था, जिसमें सुदृढ़ता नहीं थी उसमें वह सुदृढ़ता लाने वाला, इस भारतीय समाज, हिन्दू समाजके अनाचार अत्याचार को नाश करने वाला, पतितों का उद्धार, स्त्रियों को समाजमें अपना

उचित स्थान दिलाने वाला कौन है ? वह गांधी है। भारत को स्वतंत्र बनाने वाला कौन है ? वह गांधी है। इसलिए जो चाहते हैं कि भारत का भविष्यमें उत्थान हो, जो चाहते हैं स्वतंत्रताका उचित उपभोग हो, जो चाहते हैं कि भारतवर्ष केवल अपनी स्वतंत्रता का भोग न करे किन्तु समस्त एशिया का मार्ग-प्रदर्शक बने, उसका नेतृत्व करे....नहीं नहीं, सारा संसार, जिसका हृदय आज व्यथित हो रहा है, जो 'वास्तविकता'के भूतसे पिसा जा रहा है, जो जीवनके मूल्योंको भूल रहा है, जिसके सामने सामाजिक नीतिका कोई मूल्य नहीं है, जिसके सामने सत्यका कोई मूल्य नहीं, उस समाजको यदि कोई शान्ति दिला सकता है, उस व्यथित हृदयको शान्त कर सकता है, संसारमें फिरसे शान्ति, सुख और वैभवकी स्थापना कर सकता है तो वह भारतवर्ष ही कर सकता है। किन्तु तभी कर सकता है जब वह महात्मा गांधीके मार्गके पर चले। हममें वह शक्ति हो कि हम उनके पद-चिन्होंका अनुसरण करें। आज हमें महात्माजीके लिए प्रार्थना नहीं करनी है। वह हुतात्मा जीवनभर सारे समाजकी सेवा करते रहे, मरकर भी उन्होंने अपने समाजका उद्धार किया। हमको आज प्रार्थना करनी है कि 'भगवान्, हमको सद्‌बुद्धि दो, भगवन् हममें सात्विक बुद्धि हो, भगवन् हम जिस मार्गपर चलें वह जीवन प्रदान करने वाला मार्ग हो, उत्तिष्ठ मार्ग हो। वह हमको पतित बनाने वाला न हो, हमको मृत्युकी घाटीमें उतारने वाला मार्ग न हो। और यदि इस सन्देश को किसीने अपनाया है तो महात्मा गान्धीने। महात्मा गांधी सदा जीवित रहेंगे और वह तभी जीवित रह सकते हैं जब भारतीयोंमें थोड़ेसे भी लोग ऐसे हों जो उनके पद-चिन्होंका अनुसरण करें। गुरु गोविन्दसिंहने जब अपने शिष्योंकी परीक्षा की तब उनको पाँच ही शिष्य पूरे मिले, सच्चे मिले, जिनकी उनमें निष्ठा थी, जो उनका पूरी तरहसे अनुसरण करनेको तय्यार थे। यही गुरुके पंज प्यारे, इन्हींको सबसे पहले उन्होंने अमृत चखाया। अगर मुष्ठिमेय लोग भारतवर्षमें पैदा हों और जीवित हों, जो उनमें आस्था रखते हों, जो उनमें श्रद्धा रखते हों, जो उनके बताए हुए मार्ग पर चलें तो मैं यह कहना चाहता हूं कि इस देशका कोई बाल बाँका नहीं कर सकता। इस देशका भविष्य गौरवमय है और उसके लिए हमें उचित गर्व होगा।

मुझे इस अवसर पर कुछ और कहना नहीं है। मेरा गला दुःखसे भरा हुआ रुँधा जाता है। यह वहुतसे शब्दोंका अवसर नहीं। यह काम करने का अवसर है। जो भारतवर्षके भविष्यके लिए सचेष्ट हैं, जो चाहते हैं कि उसकी उन्नत अवस्था हो, जो उसको आज पतनकी अवस्थासे बचाना चाहते हैं, उनका यह कर्त्तव्य है कि वे संघबद्ध होकर, इस राजनीतिके पचड़े को छोड़ना हो तो उसको भी छोड़कर, इस देशमें एक ऐसे जीते जागते सांस्कृतिक आन्दोलनका प्रचार करें, जिस आन्दोलनके वल पर उनकी शिक्षा इस देशमें टिक सके! प्रार्थी हूं कि

भारतवर्षमें, ऐसे विशाल देशमें...जहाँ अनगिनत लोग वसते हों, यहाँकी नर, नारियोंमें थोड़ेसे लोग अवश्य होगें जो आजकी परिस्थितियोंसे उठकर साम्प्रदायिक शान्तिके लिए चेष्टा करेगें। और यदि ऐसा हुआ तो हमारा भविष्य उज्ज्वल है, इस देशका कल्याण होने वाला है। [रेडियो भाषण : ३० जनवरी १९४८

o o o

संसारके सर्वश्रेष्ठ मानव तथा भारतके राष्ट्रपिता महात्मा गान्धीके प्रति उनके निधन पर अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करनेका अवसर इस व्यवस्थापिका सभाको आजही प्राप्त हुआ है। अपने देशकी प्रथाके अनुसार तथा लोकाचारके अनुसार हमने १३ दिन तक शोक मनाया। यह शोक महात्मा जीके लिए नहीं था, क्योंकि जो सर्व-भूतहितमें रत है और जो मानव जातिकी एकता का अनुभव अपने जीवनमें करता रहा हो उसको शोक कहाँ, मोह कहाँ? यदि हम रोते हैं, बिलखते हैं तो अपने स्वार्थके लिए बिलखते हैं, क्योंकि आज हम इस बातका अनुभव कर रहे हैं कि हमने अपनी अक्षय निधि खो दी है, अपनी चल सम्पत्ति को गंवा दिया है।

महात्माजी इस देशके सर्वश्रेष्ठ मानव थे इसीलिए हम उनको राष्ट्रपिता कहते हैं। हमारे देशमें समय समय पर महापुरुषोंने जन्म लिया है और इस जाति को पुनरुज्जीवित करनेके लिए नूतन संदेशका संचार किया है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि अन्य देशोंमें महापुरुष उत्पन्न हुए हैं, लेकिन मेरी अल्प बुद्धिमें महात्मा गांधी ऐसा अद्वितीय बेजोड़ महापुरुष केवल भारतवर्षमें ही जन्म ले सकता था और वह भी बीसवीं शताब्दीमें, अन्यत्र कहीं नहीं। क्योंकि महात्मा गांधीने भारतवर्षकी प्राचीन संस्कृतिको, उसकी पुरातन शिक्षाको परिष्कृत कर युगधर्मके अनुरूप उसको नवीन रूप प्रदान कर, उसमें वर्तमान युगके नवीन सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यका पुट देकर एक अद्भुत एवं अनन्यतम सामञ्जस्य स्थापित किया। उन्होंने इस नवयुग की जो अभिलाषाएं हैं, जो आकांक्षाएँ हैं, जो उसके महान उद्देश्य हैं उनका सच्चा प्रतिनिधित्व किया है। इसीलिए वे भारतवर्षके ही महापुरुष नहीं थे अपितु समस्त संसारके महापुरुष थे। यदि कोई यह कहे कि उनकी राष्ट्रीयता संकुचित थी, तो वह गलत कहेगा। यद्यपि महात्मा गांधी स्वदेशीके व्रती थे, भारतीय संस्कृतिके पुजारी थे तथा भारतीय राष्ट्रीयताके प्रबल समर्थक थे, किन्तु उनकी राष्ट्रीयता उदारतासे पूर्ण थी, ओतप्रोत थी। वह संकुचित नहीं थी। संकुचित राष्ट्रीयता वर्तमान समाज का एक बड़ा अभिशाप है किन्तु महात्माजीका हृदय विशाल था। जिस प्रकार भूकम्प-मापक यंत्र पृथ्वीके मृदुसे मृदु कंपको भी अपनेमें अंकित कर लेता है उसी प्रकार मानव जातिकी क्षीणसे क्षीण रेखा भी उनके हृदय-पटल पर अंकित हो जाती थी। हमारा देश समय समय पर महापुरुषोंको जन्म देता रहा है और मैं समझता हूँ कि

इस व्यवसायमें भारत सदासे कुशल रहा है, अग्रणी रहा है। पतित अवस्थामें भी, गुलामी की हालतमें भी भारतवर्ष ही अकेला ऐसा देश रहा है, जो जगद्वन्द्य महापुरुषोंको जन्म दे सका है। मैं समझता हूं कि इस व्यवसायमें भारत सदासे कुशल रहा है। हमारे देशमें भगवान बुद्ध हुए तथा अन्य धर्मोंके प्रवर्तक हुए, किन्तु सामान्य जनताके जीवनके स्तरको ऊंचा करनेमें कोई भी समर्थ नहीं हो सका। यह यथार्थ है कि पीड़ित मानवताके उद्धारके लिए नूतन धार्मिक संदेश उन्होंने दिये थे, समाजके कठोर भार को वहन करनेकी समर्थता प्रदान करनेके लिए उन्होंने नए नए आश्वासन दिये थे, उनके विक्षुब्ध हृदयोंको शान्त करनेके लिए पारलौकिक सुखोंकी आशाएँ दिलायी थीं, लेकिन सामान्य जीवनके जो कठोर सामाजिक बंधन हैं, जो जनताके ऊपर कठोर शासन चल रहा है, जो सामाजिक और आर्थिक विषमताएँ हैं, जो दीनों और अकिंचन जनों को भांति-भांतिके तिरस्कार और अवहेलनाएँ सहनी पड़ती हैं, इन सब समस्याओंको हल करनेवाला यदि कोई व्यक्ति हुआ तो वह महात्मा गांधी हैं। उन्होंने ही सामान्य जीवनमें जनोंके जीवनके स्तर को ऊंचा किया। उन्होंने जनतामें मानवोचित स्वाभिमान उत्पन्न किया। उन्होंने ही भारतीय जनताको इस बातके लिए सन्मति प्रदान की कि वह साम्राज्यशाहीके भी विरुद्ध विद्रोह करे और यह भी पाशविक शक्तियोंका प्रयोग करके नहीं, किन्तु आध्यात्मिक बलका प्रयोग करके हुआ। उनकी अहिंसा बेजोड़ थी। भगवान् बुद्धने कहा था 'अक्रोधेन जयेत् क्रोधम्' अर्थात् अक्रोधसे क्रोध को जीतना चाहिए। उनकी अहिंसाका सिद्धान्त भी केवल व्यक्तिगत आचरणका उपदेश मात्र न था, किन्तु सामाजिक समस्याओंको हल करनेके लिए अहिंसाको एक उपकरण बनाया और राजनीतिक क्षेत्रमें अपने महान ध्येयकी प्राप्तिके लिए उसका सफल प्रयोग करना महात्मा गांधीका ही काम था और चूँकि वह संसारमें अहिंसाको प्रतिष्ठित करना चाहते थे, इसलिए उनकी अहिंसाकी व्याख्या भी अद्भुत, बेजोड़ और निराली थी। उनकी अहिंसाकी शिक्षा केवल व्यक्तिगत आचरणकी शिक्षा नहीं है। उनकी अहिंसाकी व्याख्या वह महान अस्त्र है जो समाजकी आजकी विषमताओंका, जो वैमनस्य और विद्वेषके कारण हैं उन्मूलन करना चाहती है। अहिंसाके ऐसे व्यापक प्रयोगसे ही अहिंसा प्रतिष्ठित हो सकती है।

सामाजिक और आर्थिक विषमताको दूर कर, मनुष्यको मानवतासे विभूषित कर, आत्मोन्नतिके लिए सबको ऊँचा उठाकर जाति-पांति और सम्प्रदायों को तोड़कर ही हम अहिंसाकी सच्चे अर्थोंमें प्रतीष्ठा कर सकते हैं। यदि किसी ने यह शिक्षा दी तो गांधीजीने शिक्षा दी। इसलिए यदि हम उनके सच्चे अनुयायी होना चाहते हैं तो समाजसे इस विषमताको, इस ऊँच-नीचके भेदभावको, इस अस्पृश्यताको, समाजके नीचे से नीचे स्तरके लोगों की दरिद्रता को और आर्थिक

विषमताको समाजसे सदाके लिए उन्मूलित करके ही हम सच्चे अहिंसक कहला सकते हैं। यह महात्मा गांधीजीकी विशेषता ही थी।

हमारे देशकी यह प्रथा रही है कि महापुरुषके जन्म, निधनके बाद हमने उसको देवता की पदवीसे विभूषित किया। समाधि और मन्दिर बनाए। उसकी मूर्तिको मन्दिरोंमें प्रतिष्ठित किया या मजार बनाकर उनकी समाधि या मजार पर प्रेम और श्रद्धाके फूल चढ़ाकर हम सन्तुष्ट हो गए। इसी प्रकारसे भारतवासियोंने अनेक महापुरुषोंकी केवल उपासना और आराधना करके उनके मूल उपदेशोंको भुला दिया। मैं चाहता हूँ कि हम आज महात्मा गांधीको देवत्व की उपाधि न दें, क्योंकि देवत्वसे भी ऊँचा स्थान मानवताका है। मानवकी आराधना और उपासना समाधि-गृह और मजार बनाकर, उनपर फूल चढ़ाकर नहीं होता। दीपक, नैवेद्यसे उसकी पूजा नहीं होती, अनेकों मानवकी आराधना और उपासना का प्रकार भिन्न है, अपने हृदयोंको निर्मल और उनके बताए हुए मार्ग पर चलकर ही उसकी सच्ची उपासना होती है। यदि हम चाहते हैं कि हम महात्मा गांधीके अनुयायी कहलायें तो हमारा यह पुनीत कर्तव्य है कि जनतामें अपने प्रेम और श्रद्धाके भावों का प्रदर्शन करनेके साथ साथ हम उनका जो अमर सन्देश है, उस पर अमल करें। उनका सन्देश केवल भारतवर्षके लिए ही नहीं वरन्, वर्तमान संसारके लिए है, क्योंकि आज संसारका हृदय व्यथित है, दुखी है। एक नये महायुद्धकी रचना होने जा रही है। उसकी पूर्व सूचनाएँ मिल चुकी हैं। ऐसे अवसर पर संसारको एक नूतन आदेश और उपदेशकी आवश्यकता है। महात्माजीका बताया हुआ उपदेश जीवनका उपदेश है, मृत्युका सन्देश नहीं है। और जो पश्चिमके राष्ट्र आज संकुचितताके नाम पर मानव जातिका बलिदान करना चाहते हैं, जो सभ्यता और स्वाधीनताका विनाश करना चाहते हैं, वे मृत्युके पथ पर अग्रसर हो रहे हैं, वे मृत्युके अग्रदूत हैं। यदि वास्तवमें हम समझते हैं कि हम महात्माजीके अनुयायी हैं तो हमारी सबकी सच्ची श्रद्धाञ्जलि यही हो सकती है कि हम इस अवसर पर शपथ लें, प्रतिज्ञा करें कि हम आजीवन उनके बताये हुए मार्ग पर चलेंगे, जो जनतन्त्रका मार्ग, समाजमें समता लानेका मार्ग, विविध धर्मों और सम्प्रदायोंमें सामञ्जस्य स्थापित करनेका मार्ग है, जो छोटेसे छोटे मानवको भी समान अधिकार देता है, जो किसी मानवका पक्ष नहीं करता, जो सबको समान रूपसे उठाना चाहता है। यदि महात्माजीके बताये हुए मार्गका हम अनुसरण करते तो एशियाका नेतृत्व हमारे हाथोंमें होता और हमारा देश भी दो भूखंडोंमें विभाजित नहीं हुआ होता। हम एशियाका नेतृत्व करेंगे, किन्तु इस गृह-कलहके कारण हमारा आदर विदेशोंमें बहुत घट गया है। इसलिए यदि हम उस नेतृत्वको ग्रहण करना चाहते हैं तो हमको अपने देशमें उस सन्देशको कार्यान्वित करना होगा। भारतवर्षमें बसनेवाली विविध

जातियोंमें एकताकी स्थापना करके हमको संसारको दिखा देना चाहिए कि हम सच्चे मार्ग पर चल रहे हैं। तभी सारा संसार हमारा अनुसरण करेगा।

महात्माजीके लिए जो सोचते हैं कि वह अन्ताराष्ट्रीय व्यक्ति नहीं थे, उनका काम भारतवर्ष तक ही सीमित था, यह उनकी भूल है। भारतवर्ष तो उनकी प्रयोगशाला मात्र थी। वह समझते थे कि यदि सत्य, अहिंसासे मैं देशमें सफलता प्राप्त कर सकूँगा, तो मेरा संदेश सारे संसारमें फैलेगा।

मैं अपनी श्रद्धांजलि महात्माजीको अर्पित करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि मुझमें शक्ति पैदा हो कि मैं उनके बताये हुए मार्गका अनुसरण किसी न किसी अंशमें कर सकूं।

० ० ०

इस भीषण समाचारको पाकर मैं स्तब्ध रह गया। केवल हमारे ही ऊपर नहीं वरन समस्त विश्वके ऊपर विपत्तिका पहाड़ टूटा है। महात्माजीकी महा-यात्रासे पीड़ित मानवता, विश्वशान्ति, और सामाजिक नैतिकताको बड़ी गहरी चोट पहुंची है। साम्प्रदायिक एकता तथा जनताके अधिकार-रक्षणके लिये वे आजीवन यत्नशील रहे और उसीके लिये उन्होंने आत्म-बलिदान किया।

आकाशसे वज्रपात हुआ। विश्वका सर्वश्रेष्ठ पुरुष चल बसा। उनका शरीर भस्मसात् हो गया, पर उनका संदेश अमर रहेगा। शरीर-बन्धनसे मुक्त आत्मा विश्वमें व्याप्त हो जाती है। उनके सिद्धान्त प्रकाशका काम देंगे और हमें अन्धकारमें पथ-प्रदर्शन करेंगे। मृत्युके समय उन्होंने अपने शिष्योंसे कहा स्वयं पथ-प्रदर्शक वनो, हमको उसीके अनुसार चलना है।

विपत्तियोंसे घिरे होने पर रोना कायरता है। उन्हें वीर-गति मिली। यदि उपवाससे वे मरे होते तो हमें देशमें व्याप्त साम्प्रदायिक विष एवं परिस्थिति की गंभीरताका अनुमान न होता। इस पापके प्रक्षालनके लिये उनके निर्दिष्ट पथ-पर चलना होगा।

० ० ०

जिस समय हमारे चारों ओर गहन अंधकार छाया हुआ था गांधीजीने हमें अमर प्रकाश प्रदान किया। जब हम अपनी परम्परासे गिरकर अधोगतिको प्राप्त हो चुके थे तब उन्होंने हमें अपनी नवीन आध्यात्मिक और सामाजिक मान्य-ताओं और आदर्शोंसे आलोकित किया। गांधीजी आज हमारे बीच नहीं हैं, हमारा राष्ट्रीय प्रकाशस्तम्भ बुझ गया है किन्तु यह समय रोनेका नहीं है। उनके आदर्श सदैव हमारा मार्ग प्रदर्शित करते रहेंगे। जिनके हृदयमें उनके लिये श्रद्धा है उनके लिये आज भी वे जीवित हैं।

हमारे सामने आज दो रास्ते खुले हैं, एक विनाशका तथा दूसरा गांधीजी द्वारा दिखलाया गया कल्याणका प्रशस्त पथ, यदि हम गांधीजीकी हत्याका कलंक धोना चाहते हैं और संसारमें शानके साथ अपना अस्तित्व कायम रखना चाहते हैं तो हमें उन्हींके आदर्शोंपर चलना होगा। आज भले ही क्षणिक शोक हम उनकी मृत्युपर मना लें किन्तु आगे गांधीजीकी मरणतिथि प्रेरणा प्रदान करने वाला पुनीत पर्व होगा।

❀

श्री जयप्रकाश नारायण

[प्रधान मन्त्री : समाजवादी दल]

जब बापू दिल्लीमें अनशन कर रहे थे, मैंने आपसे उनके प्राणोंकी रक्षाके लिए अपीलकी थी। जब कुछ ही दिनों बाद उन्होंने अपना अनशन-भङ्ग कर दिया तब मैंने गांधीजीकी उन शर्तोंको मान लेनेका दृढ़ निश्चय करनेके लिये आप लोगोंको बधाई दी थी जिन शर्तोंको मान लेनेसे साम्प्रदायिक सद्भावनाकी वृद्धि होती है। परन्तु बापूको हत्यारेके हाथोंका लक्ष्य बननेसे हम बचा न सके।

हमने स्वप्नमें भी कल्पना नहीं की थी कि कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है जो विश्वके सर्वश्रेष्ठ पुरुषकी जघन्य और कायरतापूर्ण हत्याका इस भांति अपराध करेगा। ब्रिटिश सरकार भी उस गांधीके प्रति, जो आजीवन अहिंसात्मक युद्धके द्वारा भारतमें अंग्रेजोंके शासनका विरोध करता रहा, ऐसी हिंसात्मक नीति काममें लानेका साहस न कर सकी।

यह व्याख्यान देनेका अवसर नहीं है। आज हमारे देशवासियोंको रोनेकी, इस प्रकार रोनेकी आवश्यकता है जिससे भारतके इतिहासमें महात्माजी की मृत्युसे जो कलङ्कका धब्बा लग गया है वह आँसुओंके प्रवाहसे धुल जाय। गांधीजीने हमें जो मार्ग दिखाया है उसका हमें अनुसरण करना चाहिए। उन्होंने भारतकी स्वतंत्रता प्राप्त करनेके लिये अद्भुत बलिदान और त्याग किये तथा मरनेके पहले उनकी आकाङ्क्षा थी कि देशकी सेवाके लिये १२५ वर्षोंतक जीवित रहूँ। उनकी कामना थी कि भारतका निर्माण मेरे उन आदर्शोंके अनुकूल हो, जहाँ विचार और कार्यकी पवित्रता, सत्यता, शान्ति और मानवीय करुणभावनाका साम्राज्य रहे। गांधीजीके नेतृत्वमें हमें स्वतंत्रता मिली है और हमारा कर्त्तव्य है कि हम उसे खोने न दें।

कोई अकेला व्यक्ति ऐसी घृणित हत्याका अपराध तबतक नहीं कर सकता जबतक उसके पीछे संगठित समूहका हाथ और उन लोगों द्वारा

बनायी योजना न हो। अपनी योजनाको कार्यान्वित करनेमें वे अंशतः सफल भी हुए और यह भी कहा जाता है कि ऐसी ही नीच योजनाएँ अन्य नेताओंके लिये भी बनायी गयी हैं।

हमारे नेता स्वतन्त्रता-पूर्वक रक्षाकी किसी व्यवस्थाके बिना विचरण करते हैं। गांधीजीके हत्यारेने कोई वीरता नहीं दिखायी। ऐसे साम्प्रदायिक विचारवाले बहादुर उस समय न जाने कहां लुप्त थे जिस समय सरदार भगत सिंह फाँसीके फंदेमें झुलाये गये थे, जिस समय महाशक्तिशाली अंग्रेजी सत्ताके विरुद्ध अहिंसात्मक शस्त्रोंकी सहायतासे स्वतंत्रताका युद्ध लड़ा जा रहा था। ऐसे अमानुषिक पाशव अपराधोंका निवारण केवल सेना और पुलिसकी सतर्कतासे ही नहीं हो सकता। इन्हें तभी रोका जा सकता है जब जनता भी स्वयं सचेष्ट रहे तथा लोकमत इनके विरुद्ध हो।

गांधीजी देशके बँटवारेके विरुद्ध थे, किन्तु पाकिस्तानका जन्म हमारी भीतरी दुर्बलताओं तथा मतभेदोंका परिणाम है। देशकी उन्नतिका सबसे बड़ा शत्रु साम्प्रदायिकता है। हमारे देशकी भाषा, धर्म-भावना, रीति और रिवाजोंमें अनेक भेद हैं। यदि ऐसी परिस्थितिमें भी लोग अपनी अनुदार संकुचित मनोवृत्तियोंको अपनाये रखेंगे तो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके नेतृत्वमें हमने जो स्वतंत्रता प्राप्त की है वह नष्ट हो जायगी।

यदि जनता चाहती है कि हम राष्ट्रीय संकटसे अपनी रक्षा कर सकें तो सबसे पहले सांप्रदायिकताको पूर्णतः भस्म कर डालना अत्यावश्यक है। यदि शासनके संचालकोंमें कहीं साम्प्रदायिकताकी गन्ध हो तो उसका कठोरताके साथ दमन करना चाहिये; क्योंकि सरकारका संचालन सुरक्षाके साथ उस अवस्थामें हो ही नहीं सकता जब उसका प्रबन्ध देशद्रोहियोंके हाथोंमें हो। देशकी सभी साम्प्रदायिक और प्रतिगामिनी संस्थाओंको जड़से उखाड़ फेंकनेके लिए हमें एक सुनिश्चित कार्यक्रम बना कर उसके अनुसार चलना चाहिये।

❀

आचार्य जीवतराम भगवानदास कृपालानी

[भूतपूर्व राष्ट्रपतिः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस]

जो लोग हिन्दुत्वकी रक्षा करना चाहते हैं वे पहले यह समझें कि हिन्दू-धर्म वास्तवमें क्या चाहता है। सच्चा हिन्दुत्व तो वही है जिसकी शिक्षा महात्मा गांधीने दी है। हिन्दू-धर्मके तथाकथित समर्थक हिन्दू-धर्मके शरीरकी रक्षा तो करते हैं पर उसकी आत्माकी हत्या कर डालते हैं। प्रतिशोधकी सभी बातें बंद कर देनी चाहिये। इससे गांधीजीकी आत्माको चोट पहुँचेगी और भारतके लोग आपसमें ही लड़कर नष्ट हो जायेंगे।

गांधीजीका शरीर हमारे बीच अब नहीं रह गया। किन्तु यदि हम उनका अनुसरण करें और उनके उपदेशोंसे आलोकित मार्गपर अग्रसर हों तो उनकी आत्मा सदा हमारे साथ रहेगी। उनकी मृत्यु यह सिद्ध करती है कि अब भी विश्व सत्य और अहिंसाके सिद्धान्तको सामूहिक या व्यक्तिगत जीवनमें उस भाँति स्वीकार नहीं करना चाहता जिस रूपमें गांधीजी उसका प्रयोग करते थे। सत्य और अहिंसाका पथ आज भी वैसे ही मसीहोंका पथ है जैसे सदा इतिहासमें रहा है। आधुनिक घटनाओं द्वारा नैतिकतामें उनके विश्वासकी कठोर परीक्षा हुई और गांधीजी उस कसौटीपर खरे उतरे। जीवनकी बड़ीसे बड़ी कठिनाईके क्षणोंमें भी उनका विश्वास अडिग रहा।

'जो लोग अपने माने जाते हैं उनपर चाहे कुछ भी आ पड़े हमें बदला न लेना चाहिये, प्रतिहिंसासे प्रेरित न होना चाहिये। मनमें भी हिंस्र भावोंका उदय न होने देना चाहिये। हिन्दूके घरोंपर चाहे कुछ भी क्यों न आ पड़े, पर भय और शक्ति-प्रयोगसे खाली कराये गये मुसलमानोंके घरोंको (हिन्दुओं और सिखोंके लिए) उपयोगमें न लाना चाहिये। मुसलमानोंके जो गाँव खाली हो गये हैं उन्हें खाली ही पड़े रहने देना चाहिये। यदि पाकिस्तानकी मुस्लिम महिलाएँ अपहृत कर ली गयी हैं तो सुरक्षा और सम्मानके साथ उन्हें वापस कर देना चाहिये, चाहे हिन्दू और सिख महिलाओंके प्रति उनका उलटा व्यवहार ही क्यों न हो' यह थी उनकी नीति।

महात्माजीके अनुसार नैतिकताकी दृढ़ता तभी स्वीकार की जा सकती है जब उसका अनुसरण करनेवाला अपनी और अपने समाजकी तिल जैसी त्रुटिको ताड़-सा समझे और दूसरोंकी तथा उनके समाजकी ताड़सी त्रुटियाँ भी तिलके समान देखे। इसी प्रकार नैतिक नियमोंके उद्देश्य पूर्ण हो सकते हैं। और इस भाँति जब हम उनका पालन करेंगे तब उनसे कल्याण ही होगा। जो

मनुष्य और राष्ट्र नैतिक पथका अनुसरण करते हैं उनकी दुर्गति कभी नहीं होती। जहाँ धर्म है, अन्तमें वहाँ विजय भी अवश्यंभावी है।

गांधीजीने विश्वको यह दिखा दिया कि अपनेको चाहनेका अर्थ मानवतासे द्वेष करना नहीं होता, दोनोंका प्रेम परस्पर विरोधी नहीं है। उन्होंने हिन्दुओं, मुसलमानों, सिखों या किसी अन्य सम्प्रदायवालोंको न कभी भेदभावसे देखा और न कभी भारतीयोंमें ही कोई भेद स्वीकार किया। उनकी दृष्टिमें मानव-समाज एक है, उसमें कोई अन्तर नहीं है, उसका एक धर्म है और नैतिकताके बन्धनसे समस्त विश्व बँधा और गुँथा हुआ है।

हमारा परम सौभाग्य था कि इतने महान और साधु पुरुषका जन्म हमारे बीच हुआ और उस समय हुआ जब हम परतंत्र थे और हमारा नैतिक पतन हो रहा था।

आज हमारा मस्तक लज्जासे धरतीमें गड़ा जा रहा है। जिसे विदेशी विरुद्ध मतवालोंने (क्योंकि गांधीजी अजातशत्रु थे) भी जीवित रखा, उस महामानवकी हत्या आज उसी समाजके एक व्यक्तिके हाथोंसे हुई जिस समाजकी उन्होंने इतनी बुद्धिमत्ताके साथ सेवा की थी।

महात्मा गांधीके नीतियुक्त और बुद्धिसंगत उपदेशोंकी जिस समय देशको सबसे अधिक आवश्यकता थी उस समय उनके महाप्रयाणसे देश अनाथ हो गया। केवल वही एक ऐसे पुरुष थे जिन्होंने हमें पराधीनावस्थामें भी आदरा-स्पद बनाया। उन्होंने हमारे आन्तरिक भेदोपभेदोंको दूर किया। हम अपनी व्यक्तिगत और सार्वजनिक कठिनाइयोंके समय उनका सहारा ढूँढ़ने उनके पास जाते थे। उनके लिए जीवन और मृत्यु दोनोंका समान महत्त्व था। वे सदा कहा करते थे कि मेरा जीवन भगवानके हाथमें है। उनकी दृष्टिमें 'शरीर' का कोई मूल्य न था, 'आत्मा' ही सब कुछ थी। और शरीरकी कारासे मुक्त उनकी आत्मा आज सर्वत्र व्याप्त है।

हम उन्हें अपना 'आचार्य' कहते थे और उनकी छायामें रहकर हमने थोड़ी-बहुत योग्यता प्राप्त की है। इसलिये हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने वर्गभेद मिटाकर एक हो जायँ, उस स्वराज्यकी स्थापना करनेके लिए एक हो जायँ जिसका बापू स्वप्न देखा करते थे और जिसकी अभी वे केवल नींव ही डाल सके थे। उनका आशीर्वाद हमारे साथ रहे, यही हमारी कामना है। ईश्वरसे प्रार्थना है कि वह हमें शक्ति और उद्देश्यकी सत्यताका बल दे ताकि हम बापूके उस महान लक्ष्यको प्रचारित और कार्यान्वित कर सकें जिस लक्ष्यने सम्प्रदायगत, जातिगत अथवा देशगत भेददृष्टिको अपनेसे सदा दूर ही रखा और उदारताके साथ जिसने समस्त मानवताको अपनाया।

हत्यारेने महात्मा गांधीकी दुर्बल कायाको नष्ट कर दिया किंतु हिंसा और प्रतिशोधात्मक कार्रवाइयों द्वारा हम उस दिवंगत आत्मापर ही प्रहार कर रहे हैं। उनकी पूजा करते हुए भी हम वह उपदेश भुला दे रहे हैं जिनके लिए उन्होंने प्राणोत्सर्ग किया। अगर हत्यारेने गांधीजीको कुछ भी समय दिया होता तो वे अपने अन्तिम क्षणमें उस अज्ञानीके लिए ईश्वरसे अवश्य क्षमा-याचना करते। ईसाकी भाँति उनका भी विश्वास था कि मनुष्यके सम्बन्धमें केवल ईश्वर ही न्याय कर सकता है। यदि हम वर्तमान साम्प्रदायिक स्थितिमें सतर्कतासे काम नहीं लेंगे तो देशमें अव्यवस्था फैल जायगी। यद्यपि इस राजनीतिक और नैतिक संकट कालमें हम लोगोंको महात्मा गांधीका पथ-प्रदर्शन प्राप्त नहीं है तथापि गांधीजीके आदर्शों और विचारोंका अनुसरण करनेपर हमारा राष्ट्र उनकी आहुतिसे और अधिक शक्तिशाली होगा।

महात्मा गांधीपर यह पहली वार ही आक्रमण नहीं हुआ है। बहुत दिन पहले दक्षिण आफ्रिकामें उनके एक पठान अनुयायीने भी यह समझकर कि गांधीजीने भारतीयोंके साथ विश्वासघात किया है, उन-पर घातक आक्रमण किया था। गांधीजीने उसके विरुद्ध गवाही देना भी अस्वीकार कर दिया। कुछ दिन पूर्व जब उनकी प्रार्थना-सभामें बम फेंका गया था, तब उन्होंने खुले आम अपराधीको क्षमा कर देनेके लिए अनुरोध किया था। बापू प्रतिशोधमें विश्वास नहीं करते थे। उनका विश्वास था कि घृणापर प्रेमसे अधिकार किया जा सकता है। घृणा, हिंसा और युद्धसे पार पाना कठिन है। ब्रिटिश साम्राज्यवादके विरुद्ध युद्धमें उन्होंने हमेशा व्यक्ति और व्यवस्थाका भेद सामने रखा। साबरमतीके मुकदमेमें उन्होंने जजसे कहा था कि अगर आप वर्त-मान शासन-व्यवस्थाको दोषपूर्ण नहीं मानते हैं, तो मुझे वड़ीसे वड़ी सजा दे सकते हैं। ६ वर्षकी सजा मिलनेपर उन्होंने जजको धन्यवाद दिया था।

महात्मा गांधीका कोई शत्रु नहीं था। विरोधियोंको उन्होंने हमेशा अपना भक्त वनाया। उन्होंने वारम्वार राष्ट्रको भय और क्रोधसे वचनेकी चेतावनी दी। एक वार हिंसात्मक प्रदर्शनोंके कारण उन्होंने सत्याग्रह-आन्दोलन तक स्थगित कर दिया।

बापूकी हत्यापर जनताका उत्तेजित हो जाना स्वाभाविक है। किंतु गांधीजी इसीको संयममें रखनेका हमेशा उपदेश देते रहे हैं। वे तो किसी भी जीवकी हिंसा न करनेके लिए शिक्षा देते थे। फिर क्या उस शान्तिदूतके नामपर हम वदला या प्रतिशोध लेंगे जिसने साम्प्रदायिक प्रतिशोधके विरुद्ध अपने प्राणोंकी वाजी लगा दी।

हालमें एक वार गांधीजीने अपने भाषणमें कहा था कि हमारी मृत्युके वाद हमारे देशवासी यदुवंशियोंकी भाँति आपसमें लड़कर नष्ट हो जायँगे। क्या

हम उस कथाकी पुनरावृत्ति करेंगे। राजनीतिक दृष्टिसे भी हमें अपनी हिंसात्मक वृत्तियोंको संयममें रखना चाहिये। हमारे सार्वजनिक जीवनमें अधिकार-प्राप्तिके लिए भीषण संघर्ष छिड़ा है। कुछ लोग वर्तमान स्थितिसे अनुचित लाभ उठाना चाहते हैं। उनका नारा है--'हम गांधीजीका बदला लेंगे।' जनताको ऐसे लोगोंसे सावधान रहना चाहिये। वे लोग साधु-महात्मामें विश्वास नहीं रखते। राजनीतिक अधिकार हस्तगत करनेके लिए वे बदलेकी बात करते हैं। इनके लिए साधनका महत्व नहीं। किंतु बापूके लिये साधन और साध्य दोनों समान थे।

इसका यह अर्थ नहीं कि इस जघन्य कार्यके लिये जिम्मेदार व्यक्तियोंको, जिन्होंने विश्वके समक्ष राष्ट्रका अपमान किया है, दण्ड नहीं मिलना चाहिये। सरकारपर असावधानीका आरोप लगाया जा रहा है। कहा जाता है कि उसने साम्प्रदायिक पत्रोंका विष-वमन नहीं रोका और अपने ही कर्मचारियोंको ऐसे कामोंमें भाग लेने दिया। अगर यह बात सच है तो सरकारको कड़ाईसे काम लेना चाहिये। प्रत्येक कांग्रेसजन तथा उन लोगोंका, जो बापूपर श्रद्धा रखते हैं, कर्त्तव्य है कि इस कांग्रेसको सुदृढ़ बनानेमें सरकारकी सहायता करें।

❀

डाक्टर पट्टाभि सीतारामय्या

[भूतपूर्व सभापति : देशी-राज्य प्रजा परिषद]

मनुष्य मरनेके लिए ही पैदा होता है और शेष सृष्टिकी भाँति महापुरुष भी अपने समय पर मरते हैं; किन्तु वास्तविकता यह है कि महापुरुष अपने जीवनमें जो कार्य कर जाते हैं, मृत्युके पश्चात् भी वे उसके द्वारा सदैव जीवित रहते हैं। उनका यह कार्य समयकी गतिके साथ अधिकाधिक शक्ति एवं व्यापकत्व संग्रह करते हुए चिरकालतक अक्षुण्ण रहता है। इस कार्यके आधारभूत सूक्ष्म सिद्धांत चिर-स्थायी होते और परिवर्तनशील अवस्थामें स्वयं परिवर्तित होते रहते हैं; इस प्रकार परिवर्तित होकर वे बदले हुए वातावरणके ही अनुरूप बन जाते हैं। यदि आज नहीं तो आगे कभी, गांधीजी इस संसारकी पचीस शताब्दियों-के महापुरुषोंमें सर्वश्रेष्ठ माने जा सकेंगे। इसका कारण यह है कि जीवनकी कार्यवाहियों एवं पक्षोंको विभिन्न विभागोंमें पृथक न करके उन्होंने जीवनकी धाराको एक और अविभाज्य समझा है। जिन्हें हम सामाजिक, आर्थिक तथा नैतिक पक्ष समझते अथवा कहते हैं, गांधीजीकी दृष्टिमें वे एक ही धाराकी सहायक सरिताएँ और एक ही ढाँचेके विभिन्न पहलू हैं। गांधीजीने जीवनके इस नवीन दृष्टिकोणकी व्याख्या किसी आन्दोलन-गीत या दार्शनिक-महाकाव्य के रूपमें नहीं की, वरन् मनुष्यकी आत्मामें एक ओर अपने बहुरूपी स्वार्थों

और दूसरी ओर न्यायके प्रति निष्ठा, सत्-पक्षकी सेवा तथा आदर्शके प्रति सत्यताके बीच निरंतर चलनेवाले द्वंद्वके रूपमें उसे प्रतिपादित किया है।

यदि हम बहुप्रयुक्तशब्द "राजनीति" को कुछ व्यापक अर्थोंमें लें, तो इन सभी कार्यवाहियों एवं द्वंद्वोंका हम उसमें समावेश कर सकते हैं। राजनीति और कुछ नहीं, केवल मानव-कल्याण-संबन्धी विज्ञान एवं कला है, जिसमें मानवताके सामाजिक, नैतिक तथा आर्थिक उत्थानका समन्वय रहता है। ये विभाजन उसी प्रकार कल्पनिक है, जिस प्रकार विभिन्न देशों एवं राष्ट्रोंमें विभाजित संसारका विद्यमान पार्थक्य। स्वाभाविक ही था कि शासन-सत्ता प्राप्त करनेकी अभिलाषा, राजनीतिसे उत्पन्न हो। यद्यपि यह नितांत सत्य है कि हर सत्ता हमें पूर्णतया दुराचारी बनाती है, तथापि सबको इस दुराचरणसे मुक्त करनेकी उसी प्रकार अत्यन्त आवश्यकता है, जिस प्रकार कांचनको तपाकर मैल दूर कर देनेकी। हमारी राजनीतिमें गांधीजीने यही दुष्कर कार्य सम्पन्न किया है, और वह भी, अपने जीवन एवं चरित्रकी विशुद्धताके द्वारा। निःसंदेह, राजनीतिसे मलिनता हटाकर और उसका परिष्कार करके उन्होंने उसे धार्मिक पवित्रता प्रदान की और सर्वांगीण नैतिकताका जामा पहनाया। सत्य और अहिंसाके मार्गपर बढ़ते हुए, धर्म-राजकी भाँति, गांधीजीने कभी मुड़कर नहीं देखा कि मेरी इस महान और उच्चतम-यात्रामें कौन पीछे चल रहा है अथवा कौन गिर चुका है। दृढ संकल्पी मानवकी भांति वे अपने चुने हुए पथपर अविचल रूपसे आगे ही बढ़ते गये।

दक्षिण अफ्रीकासे लौट कर उन्होंने देखा कि राष्ट्रीय जीवन किस प्रकार अस्तव्यस्त है, आर्थिक शोषणसे गांव किस प्रकार तबाह हैं, सामाजिक असमानताओंसे किस प्रकार मनुष्य-मनुष्यके बीच न्याय एवं औचित्य दुर्लभ हो रहा है और सरकारकी पापपूर्ण आमदनीसे देशका कितना नैतिक पतन हो चुका है। यही सब देखकर उन्होंने खद्दर तथा ग्रामोद्योगोंद्वारा स्वावलम्बी समाजकी स्थापनाकी आवाज उठायी। ऐसा समाज बन सके जो अस्पृश्यता-निवारण और मद्य, अफीम, भाँग आदि मादक द्रव्योंके निषेध द्वारा स्वाभाविक एवं आत्मशुद्ध हो। इस रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा उन्होंने भारतके पुनर्निर्माणका प्रयत्न किया और साथ ही, सत्य एवं अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह की अपनी योजना द्वारा विदेशियोंकी दासतासे उसे मुक्त किया। इस प्रकार उन्होंने अपने दोहरे उद्देश्यकी पूर्ति की, एक तो भारत की दासता हटायी और दूसरे, सत्य एवं सुंदर रूपमें भारतीय राष्ट्रीयताकी नींव डाली।

यद्यपि गांधीजी महामानव हैं, तथापि अन्तिम विश्लेपणमें वह केवल ऐसे मानव ही निकले, जिसमें मनुष्योंमें पाये जाने वाले मस्तिष्क एवं हृदय संबन्धी गुण मौजूद थे। १९३१ में पंचम जार्जसे हुई उनकी भेंटके सिलसिलेमें बालकोंसे उनके अत्यन्त प्रेमकी भी चर्चा हुई थी। उनकी परिहास प्रियताने ही जीवनकी

अनेक परीक्षाओंमें पीड़ाओंके बोझसे दबकर नष्ट हो जानेसे उन्हें बचाया। आदर्शकी अपेक्षा वास्तविकताके प्रति उनका काफी ख्याल था और इसीलिये गांवोंके पुनरुद्धारका मुख्य साधन उन्होंने चरखेको माना। तुच्छ हरिजनके लिये उनका आशीर्वाद सरलतासे सुलभ हो सकता और उच्चसे उच्च नरेशकी भी वे भर्त्सना कर सकते थे, वाइसराय उनके शब्दसे दहल उठते, शासक उनकी कार्य-कुशलतापर मंत्र-मुग्ध रह जाते और राजनीतिज्ञ उनकी साधन-सम्पन्नताका विचार करके थर्रा उठते थे। उनकी उंगलीके उठते ही करोड़ों मनुष्य मौन होकर उनकी आज्ञाका पालन करते, लाखों जेलोंमें धंस जाते, सैकड़ों अपना सब कुछ निछावर कर देते और सैकड़ों उनके उपदेशों पर आचरण करते हुए प्राण त्याग देते। इस प्रकार, वास्तविकताके क्षेत्रमें उन्होंने आदर्शकी महत्ता स्थापितकी और वास्तविकताको आदर्शके उच्च शिखर तक पहुंचा दिया। उन्होंने ऊपर स्वर्ग और नीचे पृथ्वीके बीचकी एक कड़ीके रूपमें काम किया है। वे अवतार हैं जो इस कलियुगमें धर्म-स्थापनार्थ संसारमें अवतीर्ण हुए।

उन्होंने अपना कार्य पूरा किया और हमें छोड कर चले गये। यद्यपि इहलोकके हम लोगों को उनके निधन पर ऐहिक शोक है, किन्तु हमें समझना चाहिए कि कोई भी अवतार अपना कार्य समाप्त करनेके बाद उस क्षेत्रमें नहीं रुकता। निश्चय ही, पिछले जूनके महीने से, ऐसा विश्वास करनेके लिए उनके पास कारण मौजूद थे कि मेरी आवश्यकता अब नहीं रही और समाज एवं नीति सम्बन्धी उनके विचारों और उनके चतुर्दिक प्रचलित तत्सम्बन्धी अन्य विचारोंके बीचकी खाई अधिकाधिक चौड़ी होती जा रही है। निर्वाणसे ठीक पहले, अवतारोंपर ऐसी ही बीती है। कुरुक्षेत्रके रण-प्रांगणमें पांडवोंकी सफलताके बाद श्रीकृष्णके साथ भी ऐसा ही हुआ था। द्वारिका लौटनेपर उन्होंने देखा कि वहाँकी जनता पाप तथा व्यभिचारमें लीन हो चुकी है। इसीलिये उन्होंने वनको प्रस्थान किया और वहाँ, हिरणके धोखेमें, एक बहेलियेके तीरसे मारे गये। अपना कार्य पूरा कर लेनेके बाद श्रीरामचंद्रने भी पवित्र सरयू नदीमें जल-समाधि लेकर अपनी इहलीला समाप्त की। पश्चिमी देशोंमें भी ब्रूनोंको जला दिया गया, सुकरातने विष-पान किया, गेलिलियोकी कारामें मृत्यु हुई और अब्राहम गोलीके शिकार हुए। गांधीजी भी गोलीके शिकार हुए, किन्तु वे अवतार बनकर चिरंजीवी रहेंगे। अपने अंतिम अनशनमें ही वे समाप्त हो चुके होते, किन्तु इसीलिये बच गये कि उन्हें एक हत्यारेके हाथोंसे मरना था। उनके निधनपर शोक मनाना भी निरर्थक ही है, क्योंकि अपने जीवन पर्यन्त उन्होंने हम लोगोंको यही शिक्षा दी थी कि इस संसारके लिए कोई भी व्यक्ति अनिवार्य नहीं है जिसके बिना काम ही न चल सके, क्योंकि उनके जीवनकी पुस्तक सदैव हमारे सामने है और चिरकाल तक रहेगी। उनका अंकित उपदेश यह था कि भारत अभी स्वतंत्र नहीं

और दूसरी ओर न्यायके प्रति निष्ठा, सत्-पक्षकी सेवा तथा आदर्शके प्रति सत्यताके बीच निरंतर चलनेवाले द्वंद्वके रूपमें उसे प्रतिपादित किया है।

यदि हम बहुप्रयुक्तशब्द "राजनीति" को कुछ व्यापक अर्थोंमें लें, तो इन सभी कार्यवाहियों एवं द्वंद्वोंका हम उसमें समावेश कर सकते हैं। राजनीति और कुछ नहीं, केवल मानव-कल्याण-संबन्धी विज्ञान एवं कला है, जिसमें मानवताके सामाजिक, नैतिक तथा आर्थिक उत्थानका समन्वय रहता है। ये विभाजन उसी प्रकार कल्पनिक है, जिस प्रकार विभिन्न देशों एवं राष्ट्रोंमें विभाजित संसारका विद्यमान पार्थक्य। स्वाभाविक ही था कि शासन-सत्ता प्राप्त करनेकी अभिलाषा, राजनीतिसे उत्पन्न हो। यद्यपि यह नितांत सत्य है कि हर सत्ता हमें पूर्णतया दुराचारी बनाती है, तथापि सबको इस दुराचरणसे मुक्त करनेकी उसी प्रकार अत्यन्त आवश्यकता है, जिस प्रकार कांचनको तपाकर मैल दूर कर देनेकी। हमारी राजनीतिमें गांधीजीने यही दुष्कर कार्य सम्पन्न किया है, और वह भी, अपने जीवन एवं चरित्रकी विशुद्धताके द्वारा। निःसंदेह, राजनीतिसे मलिनता हटाकर और उसका परिष्कार करके उन्होंने उसे धार्मिक पवित्रता प्रदान की और सर्वांगीण नैतिकताका जामा पहनाया। सत्य और अहिंसाके मार्गपर बढ़ते हुए, धर्म-राजकी भाँति, गांधीजीने कभी मुड़कर नहीं देखा कि मेरी इस महान और उच्चतम-यात्रामें कौन पीछे चल रहा है अथवा कौन गिर चुका है। दृढ संकल्पी मानवकी भांति वे अपने चुने हुए पथपर अविचल रूपसे आगे ही बढ़ते गये।

दक्षिण अफ्रीकासे लौट कर उन्होंने देखा कि राष्ट्रीय जीवन किस प्रकार अस्तव्यस्त है, आर्थिक शोषणसे गांव किस प्रकार तबाह हैं, सामाजिक अस-मानताओंसे किस प्रकार मनुष्य-मनुष्यके बीच न्याय एवं औचित्य दुर्लभ हो रहा है और सरकारकी पापपूर्ण आमदनीसे देशका कितना नैतिक पतन हो चुका है। यही सब देखकर उन्होंने खद्दर तथा ग्रामोद्योगोंद्वारा स्वावलम्बी समाजकी स्थाप-नाकी आवाज उठायी। ऐसा समाज बन सके जो अस्पृश्यता-निवारण और मद्य, अफीम, भाँग आदि मादक द्रव्योंके निषेध द्वारा स्वाभाविक एवं आत्मशुद्ध हो। इस रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा उन्होंने भारतके पुनर्निर्माणका प्रयत्न किया और साथ ही, सत्य एवं अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह की अपनी योजना द्वारा विदेशियोंकी दासतासे उसे मुक्त किया। इस प्रकार उन्होंने अपने दोहरे उद्देश्यकी पूर्ति की, एक तो भारत की दासता हटायी और दूसरे, सत्य एवं सुंदर रूपमें भारतीय राष्ट्रीयताकी नींव डाली।

यद्यपि गांधीजी महामानव हैं, तथापि अन्तिम विश्लेषणमें वह केवल ऐसे मानव ही निकले, जिसमें मनुष्योंमें पाये जाने वाले मस्तिष्क एवं हृदय संबन्धी गुण मौजूद थे। १९३१ में पंचम जार्जसे हुई उनकी भेंटके सिलसिलेमें बालकोंसे उनके अत्यन्त प्रेमकी भी चर्चा हुई थी। उनकी परिहास प्रियताने ही जीवनकी

अनेक परीक्षाओंमें पीड़ाओंके बोझसे दबकर नष्ट हो जानेसे उन्हें बचाया। आदर्शकी अपेक्षा वास्तविकताके प्रति उनका काफी ख्याल था और इसीलिये गांवोंके पुनरुद्धारका मुख्य साधन उन्होंने चरखेको माना। तुच्छ हरिजनके लिये उनका आशीर्वाद सरलतासे सुलभ हो सकता और उधर उग्र नरेशकी भी वे भर्त्सना कर सकते थे, वाइसराय उनके शब्दसे दहल उठते, शासक उनकी कार्य-कुशलतापर मंत्र-मुग्ध रह जाते और राजनीतिज्ञ उनकी साधन-सम्पन्नताका विचार करके थर्रा उठते थे। उनकी उंगलीके उठते ही करोड़ों मनुष्य मौन होकर उनकी आज्ञाका पालन करते, लाखों जेलोंमें धंस जाते, सैकड़ों अपना सब कुछ निछावर कर देते और सैकड़ों उनके उपदेशों पर आचरण करते हुए प्राण त्याग देते। इस प्रकार, वास्तविकताके क्षेत्रमें उन्होंने आदर्शकी महत्ता स्थापितकी और वास्तविकताको आदर्शके उच्च शिखर तक पहुंचा दिया। उन्होंने ऊपर स्वर्ग और नीचे पृथ्वीके बीचकी एक कड़ीके रूपमें काम किया है। वे अवतार हैं जो इस कलियुगमें धर्म-स्थापनार्थ संसारमें अवतीर्ण हुए।

उन्होंने अपना कार्य पूरा किया और हमें छोड कर चले गये। यद्यपि इहलोकके हम लोगों को उनके निधन पर ऐहिक शोक है, किन्तु हमें समझना चाहिए कि कोई भी अवतार अपना कार्य समाप्त करनेके बाद उस क्षेत्रमें नहीं रुकता। निश्चय ही, पिछले जूनके महीने से, ऐसा विश्वास करनेके लिए उनके पास कारण मौजूद थे कि मेरी आवश्यकता अब नहीं रही और समाज एवं नीति सम्बन्धी उनके विचारों और उनके चतुर्दिक प्रचलित तत्सम्बन्धी अन्य विचारोंके बीचकी खाई अधिकाधिक चौड़ी होती जा रही है। निर्वाणसे ठीक पहले, अवतारोंपर ऐसी ही बीती है। कुरुक्षेत्रके रण-प्रांगणमें पांडवोंकी सफलताके बाद श्रीकृष्णके साथ भी ऐसा ही हुआ था। द्वारिका लौटनेपर उन्होंने देखा कि वहाँकी जनता पाप तथा व्यभिचारमें लीन हो चुकी है। इसीलिये उन्होंने वनको प्रस्थान किया और वहाँ, हिरणके धोखेमें, एक बहेलियेके तीरसे मारे गये। अपना कार्य पूरा कर लेनेके बाद श्रीरामचंद्रने भी पवित्र सरयू नदीमें जल-समाधि लेकर अपनी इहलीला समाप्त की। पश्चिमी देशोंमें भी ब्रूनोंको जला दिया गया, सुकरातने विष-पान किया, गेलिलियोकी कारामें मृत्यु हुई और अब्राहम गोलीके शिकार हुए। गांधीजी भी गोलीके शिकार हुए, किन्तु वे अवतार बनकर चिरंजीवी रहेंगे। अपने अंतिम अनशनमें ही वे समाप्त हो चुके होते, किन्तु इसीलिये बच गये कि उन्हें एक हत्यारेके हाथोंसे मरना था। उनके निधनपर शोक मनाना भी निरर्थक ही है, क्योंकि अपने जीवन पर्यन्त उन्होंने हम लोगोंको यही शिक्षा दी थी कि इस संसारके लिए कोई भी व्यक्ति अनिवार्य नहीं है जिसके बिना काम ही न चल सके, क्योंकि उनके जीवनकी पुस्तक सदैव हमारे सामने है और चिर-काल तक रहेगी। उनका अंकित उपदेश यह था कि भारत अभी स्वतंत्र नहीं

और दूसरी ओर न्यायके प्रति निष्ठा, सत्-पक्षकी सेवा तथा आदर्शके प्रति सत्यताके बीच निरंतर चलनेवाले द्वंद्वके रूपमें उसे प्रतिपादित किया है।

यदि हम वहुप्रयुक्तशब्द "राजनीति" को कुछ व्यापक अर्थोंमें लें, तो इन सभी कार्यवाहियों एवं द्वंद्वोंका हम उसमें समावेश कर सकते हैं। राजनीति और कुछ नहीं, केवल मानव-कल्याण-संवन्धी विज्ञान एवं कला है, जिसमें मानवताके सामाजिक, नैतिक तथा आर्थिक उत्थानका समन्वय रहता है। ये विभाजन उसी प्रकार कल्पनिक है, जिस प्रकार विभिन्न देशों एवं राष्ट्रोंमें विभाजित संसारका विद्यमान पार्थक्य। स्वाभाविक ही था कि शासन-सत्ता प्राप्त करनेकी अभिलाषा, राजनीतिसे उत्पन्न हो। यद्यपि यह नितांत सत्य है कि हर सत्ता हमें पूर्णतया दुराचारी बनाती है, तथापि सबको इस दुराचरणसे मुक्त करनेकी उसी प्रकार अत्यन्त आवश्यकता है, जिस प्रकार कांचनको तपाकर मैल दूर कर देनेकी। हमारी राजनीतिमें गांधीजीने यही दुष्कर कार्य सम्पन्न किया है, और वह भी, अपने जीवन एवं चरित्रकी विशुद्धताके द्वारा। निःसंदेह, राजनीतिसे मलिनता हटाकर और उसका परिष्कार करके उन्होंने उसे धार्मिक पवित्रता प्रदान की और सर्वांगीण नैतिकताका जामा पहनाया। सत्य और अहिंसाके मार्गपर बढ़ते हुए, धर्मराजकी भाँति, गांधीजीने कभी मुड़कर नहीं देखा कि मेरी इस महान और उच्चतम-यात्रामें कौन पीछे चल रहा है अथवा कौन गिर चुका है। दृढ संकल्पी मानवकी भांति वे अपने चुने हुए पथपर अविचल रूपसे आगे ही बढ़ते गये।

दक्षिण अफ्रीकासे लौट कर उन्होंने देखा कि राष्ट्रीय जीवन किस प्रकार अस्तव्यस्त है, आर्थिक शोषणसे गांव किस प्रकार तबाह हैं, सामाजिक असमानताओंसे किस प्रकार मनुष्य-मनुष्यके बीच न्याय एवं औचित्य दुर्लभ हो रहा है और सरकारकी पापपूर्ण आमदनीसे देशका कितना नैतिक पतन हो चुका है। यही सब देखकर उन्होंने खद्दर तथा ग्रामोद्योगोंद्वारा स्वावलम्बी समाजकी स्थापनाकी आवाज उठायी। ऐसा समाज बन सके जो अस्पृश्यता-निवारण और मद्य, अफीम, भाँग आदि मादक द्रव्योंके निषेध द्वारा स्वाभाविक एवं आत्मशुद्ध हो। इस रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा उन्होंने भारतके पुनर्निर्माणका प्रयत्न किया और साथ ही, सत्य एवं अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह की अपनी योजना द्वारा विदेशियोंकी दासतासे उसे मुक्त किया। इस प्रकार उन्होंने अपने दोहरे उद्देश्यकी पूर्ति की, एक तो भारत की दासता हटायी और दूसरे, सत्य एवं सुंदर रूपमें भारतीय राष्ट्रीयताकी नींव डाली।

यद्यपि गांधीजी महामानव हैं, तथापि अन्तिम विश्लेपणमें वह केवल ऐसे मानव ही निकले, जिसमें मनुष्योंमें पाये जाने वाले मस्तिष्क एवं हृदय संवन्धी गुण मौजूद थे। १९३१ में पंचम जार्जसे हुई उनकी भेंटके सिलसिलेमें बालकोंसे उनके अत्यन्त प्रेमकी भी चर्चा हुई थी। उनकी परिहास प्रियताने ही जीवनकी

अनेक परीक्षाओंमें पीड़ाओंके बोझसे दबकर नष्ट हो जानेसे उन्हें बचाया। आदर्शकी अपेक्षा वास्तविकताके प्रति उनका काफी ख्याल था और इसीलिये गांवोंके पुनरुद्धारका मुख्य साधन उन्होंने चरखेको माना। तुच्छ हरिजनके लिये उनका आशीर्वाद सरलतासे सुलभ हो सकता और उच्चसे उच्च नरेशकी भी वे भर्त्सना कर सकते थे, वाइसराय उनके शब्दसे दहल उठते, शासक उनकी कार्य-कुशलतापर मंत्र-मुग्ध रह जाते और राजनीतिज्ञ उनकी साधन-सम्पन्नताका विचार करके थर्रा उठते थे। उनकी उंगलीके उठते ही करोड़ों मनुष्य मौन होकर उनकी आज्ञाका पालन करते, लाखों जेलोंमें धंस जाते, सैकड़ों अपना सब कुछ निछावर कर देते और सैकड़ों उनके उपदेशों पर आचरण करते हुए प्राण त्याग देते। इस प्रकार, वास्तविकताके क्षेत्रमें उन्होंने आदर्शकी महत्ता स्थापितकी और वास्तविकताको आदर्शके उच्च शिखर तक पहुंचा दिया। उन्होंने ऊपर स्वर्ग और नीचे पृथ्वीके बीचकी एक कड़ीके रूपमें काम किया है। वे अवतार हैं जो इस कलियुगमें धर्म-स्थापनार्थ संसारमें अवतीर्ण हुए।

उन्होंने अपना कार्य पूरा किया और हमें छोड कर चले गये। यद्यपि इहलोकके हम लोगों को उनके निधन पर ऐहिक शोक है, किन्तु हमें समझना चाहिए कि कोई भी अवतार अपना कार्य समाप्त करनेके बाद उस क्षेत्रमें नहीं रुकता। निश्चय ही, पिछले जूनके महीने से, ऐसा विश्वास करनेके लिए उनके पास कारण मौजूद थे कि मेरी आवश्यकता अब नहीं रही और समाज एवं नीति सम्बन्धी उनके विचारों और उनके चतुर्दिक प्रचलित तत्सम्बन्धी अन्य विचारोंके बीचकी खांई अधिकाधिक चौड़ी होती जा रही है। निर्वाणसे ठीक पहले, अवतारोंपर ऐसी ही बीती है। कुरुक्षेत्रके रण-प्रांगणमें पांडवोंकी सफलताके बाद श्रीकृष्णके साथ भी ऐसा ही हुआ था। द्वारिका लौटनेपर उन्होंने देखा कि वहाँकी जनता पाप तथा व्यभिचारमें लीन हो चुकी है। इसीलिये उन्होंने वनको प्रस्थान किया और वहाँ, हिरणके धोखेमें, एक बहेलियेके तीरसे मारे गये। अपना कार्य पूरा कर लेनेके बाद श्रीरामचंद्रने भी पवित्र सरयू नदीमें जल-समाधि लेकर अपनी इहलीला समाप्त की। पश्चिमी देशोंमें भी ब्रूनोंको जला दिया गया, सुकरातने विष-पान किया, गेलिलियोकी कारामें मृत्यु हुई और अब्राहम गोलीके शिकार हुए। गांधीजी भी गोलीके शिकार हुए, किन्तु वे अवतार बनकर चिरंजीवी रहेंगे। अपने अंतिम अनशनमें ही वे समाप्त हो चुके होते, किन्तु इसीलिये बच गये कि उन्हें एक हत्यारेके हाथोंसे मरना था। उनके निधनपर शोक मनाना भी निरर्थक ही है, क्योंकि अपने जीवन पर्यन्त उन्होंने हम लोगोंको यही शिक्षा दी थी कि इस संसारके लिए कोई भी व्यक्ति अनिवार्य नहीं है जिसके बिना काम ही न चल सके, क्योंकि उनके जीवनकी पुस्तक सदैव हमारे सामने है और चिरकाल तक रहेगी। उनका अंकित उपदेश यह था कि भारत अभी स्वतंत्र नहीं

है, केवल स्वाधीन हुआ है। हिन्दू-मुस्लिम एकताका कार्य उन तीन महान कार्योंमें से था, जिन्हें लेकर उन्होंने राष्ट्रका नायकत्व आरंभ किया और जो कार्य शेष रह गया। उसके लिए उन्होंने अपनी जान दे दी। क्या हम आशा नहीं कर सकते कि उनके परिश्रमके फलस्वरूप, उनके अनुयायियोंको सफलता प्राप्त हो और पहलेसे अधिक विचारवान् बनाकर वे अपनेको सुधार सकें।

यह विश्व-विख्यात मानव, जिसके उपदेशोंका प्रभाव निश्चय ही दोनों गोलार्द्धोंके अनेक राष्ट्रोंके भविष्य-निर्माण पर पड़ेगा—अपने वैराग्यके लिए बुद्ध, कष्ट-सहनके लिए ईसा, सत्यताके लिए हरिश्चंद्र, ईमानदारीके लिए श्रीराम और नीति-नैपुण्यके लिए श्रीकृष्णके यशोपूर्ण उदाहरण हमारे मस्तिष्कमें पुनः जाग्रत कर देता है। स्वदेशकी मुक्तिके लिए अवतरित तपोदूत गांधीने, पहले लिप्सा एवं भयपर विजय पायी और अपनेको ही मुक्त किया। यही वह संत है,जो जीवनमें नायक और मृत्युमें शहीद बना। युद्ध एवं अहिंसासे त्रस्त इस संसारका वह आधुनिक मसीहा है। यदि किसीका यह कथन सच है कि ईसाई तो केवल एक ही था जो सूली पर मारा गया तो उतनी ही सचाईके साथ यह भी कहा जा सकता है कि ईसाई तो एक ही था जो गोलीसे मारा गया। संसारकी सेवा गांधीजीने अर्द्ध शताब्दीतक की और अपने कार्य-क्षेत्रसे विदा होते समय भावी संतानके लिए दोहरा कर्तव्य बता गये, एक अपने लिए और दूसरा राष्ट्रके लिए। मृत्युके बाद अपना स्मारक-वाक्य लिख सकनेका यश किसीको प्राप्त नहीं हुआ। किन्तु ३० मार्च १९३१ को कराचीमें अनजाने ही वे कह गये कि 'गांधी मरेगा किन्तु गांधीवाद सदैव ही जीवित रहेगा' वस्तुतः गांधीवाद क्या है और कहाँ वास करता है? न जिह्वापर, न परिधानोंमें और न परिष्कृत अथवा गँवारू उन अल्पकालीन सामाजिक रूपोंमें, जिनसे मानव जीवनका स्तर चित्रित है। गांधीवाद जीवनकी एक प्रणाली है। न तो उस पर 'आश्रम' का ही एकाधिकार है, और न कांग्रेसके स्तम्भाश्रित राजसी मंडपका। न उसका स्थान बीहड़ वनोंके वृक्षोंके बीच हैं और न प्रवाहित जलाशयोंके तटोंपर। उसका स्थान है हृदयमें। गांधीवाद जीवनकी एक प्रणाली है। वह अनेक भाषाएँ बोलता है, पर एक ही जबानसे और एक ही आदर्शमें निष्ठा रखकर भी वह सहस्रों प्रकारसे सेवाएँ करता है। गांधी तो मरा पर गांधीवाद अमर हो गया।

❀

डाक्टर सर तेज बहादुर सप्रू

[भारतके प्रमुख विधान-शास्त्री और राजनीतिज्ञ]

मैं इस शोकपूर्ण समाचारको सुनकर अवाक् हो गया। सर्वश्रेष्ठ साधु-पुरुष, सर्वश्रेष्ठ देशभक्त और भारतीय स्वाधीनताके जनकने भारतीय एकताके लिए अपने प्राणोंकी आहुति दे डाली। मैं आशा करता हूँ जो कांग्रेसी गांधीजीके पीछे रह गये हैं वे उनकी परम्पराकी रक्षाके योग्य अपनेको सिद्ध करेंगे। आज समस्त देश इस आघातसे विचूर्ण हो गया है, कहना चाहिये।

o o o

हमारे इतिहासमें १९४७ का १५ अगस्त, जिस दिन भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्त की, चिरस्मरणीय रहेगा। पर हमें यह भूल न जाना चाहिये कि इस स्व-तन्त्रताके जन्मदाता महात्मा गांधी थे, जो स्तुति और निन्दाको चिंता न करते हुए स्वतंत्रता-प्राप्तिके लिए अनवरत रूपसे कर्मशील रहे। और अन्तमें उस स्वतन्त्रताको, जो उनके हृदयकी सबसे अधिक अभीष्ट वस्तु थी, प्राप्त करनेमें सफल हुए। किन्तु स्वतन्त्रता-प्राप्तिका उल्लास बहुत ही अल्पकालीन रहा। स्वतन्त्रता मिलते ही देशके कुछ भागोंमें ऐसे दुष्कर्म हुए जो हमारे विख्यात इतिहास-ग्रन्थके सबसे कलंकित पृष्ठ होंगे। हम लोग शोक और संघर्षसे मुक्त होना ही चाहते थे कि ३० जनवरी सन् १९४८ की सन्ध्याके समय सबसे बड़े संकटका पहाड़ हमारे ऊपर टूट पड़ा।

उसी सन्ध्याकी वेलामें स्वतन्त्रताके जन्मदाता और जीवनकी समस्त उदात्त सद्वृत्तियोंके प्रेरणास्रोत महात्माजी, दिल्लीमें एक हत्यारेके कायरतापूर्ण घातक आक्रमणके शिकार हुए। हममेंसे किसीने भी यह कल्पना कभी नहीं की थी कि सत्य और अहिंसाके इतने बड़े पैगम्बर एवं स्वतंत्रता और समता की स्थापनाके लिए निरन्तर लड़ते रहनेवाले महा योद्धाको अपने जीवनके ७९ वें वर्षमें अपने शुभ्र तथा सन्तोंके समान आचरणका मूल्य इस भाँति चुकाना होगा। महात्मा गांधीका महाप्रयाण केवल हमारे देशके ही इति-हासका नहीं वरन् समस्त विश्वके इतिहासकी एक युग-समाप्तिका सूचक है। यह सोचना कि महात्मा गांधी भारतके महान देशभक्त थे, नितान्त भ्रम है। सत्य तो यह है कि वे आधुनिक युगके सबसे बड़ी जीवित नैतिक-शक्ति थे जिसका संदेश आजके संघर्षपूर्ण त्रस्त विश्वके कोने-कोनेमें श्रद्धाके साथ सुना जाता था, चाहे कलहशील मानवता इस पथका अनुसरण भले ही न कर सकी हो। कदाचित

मानव जातिके इतिहासमें दो या तीन महापुरुषोंसे अधिक अबतक ऐसे मनुष्य नहीं हुए हैं, जिनकी तुलना नैतिक उत्कर्ष और सत्य तथा अहिंसामें अविचल विश्वासकी दृष्टिसे महात्मा गांधीके साथ की जा सके। ऐसे पुरुष किसी एक देशके नहीं होते; वे समस्त विश्वके होते हैं। ऐसे महापुरुष यदि उत्पन्न न होते तो विश्वकी मानवताका इतिहास महत्वहीन रहता। ऐसे ही मानव अपने उपदेशों और आचरणों द्वारा मनुष्य-जातिके इतिहासको महत्वशाली बनाते हैं। वे लोग किसी एक दल या देशके न होकर समस्त विश्वके, समस्त मानवजातिके, होते हैं।

महात्माजीके जीवनके महत्वपूर्ण कार्य भारतभूमिपर सम्पन्न हुए। स्वतन्त्रताकी सिद्धिके लिए, समता और विश्वबन्धुताकी स्थापनाके लिए तथा शोषित और निर्दलित मानवताके अभ्युत्थानके लिए महात्माजीने अपना जीवन समर्पित कर दिया था। न्याय, पवित्रता,सत्यता तथा उदारताके द्वारा अपने लक्ष्य-साधनमें वे अनवरत लगे रहे। जिस समय आजका उत्तेजनापूर्ण वातावरण शान्त हो जायगा और हम शान्तचित्तसे विचार करने योग्य हो सकेंगे, हमें पूर्ण विश्वास है, उस समयका निष्पक्ष इतिहासकार बतायेगा कि भारतवर्षके विशाल इतिहासमें केवल महात्मा गांधी अकेले व्यक्ति थे जिन्होंने जाति, रंग और सम्प्रदायके कारण कभी किसीको भेद-दृष्टिसे नहीं देखा और जो इस देशका निर्माण सद्भावना और मेलजोलकी दृढ़ भित्तिपर करनेके लिये सदा उत्सुक रहे। उन्होंने अपने उक्त सिद्धान्तों और विश्वासोंकी साधनामें अपने प्राणोंकी आहुति दे दी।

अनातोले फ्रांसकी एक कहानीमें एक स्थलपर बताया गया है कि जहाँ एक ओर मानव समाजने प्लेटोको भुला दिया वहीं दूसरी ओर महात्मा ईसाको आज भी सभी स्मरण करते हैं, उनका सम्मान करते हैं, उनकी पूजा करते हैं और उनके उपदेशसे न जाने कितने लोगोंके आन्तरिक विचार प्रभावित होते रहते हैं। इसी प्रकार हम पूर्ण विश्वासके साथ यह कल्पना कर सकते हैं, यद्यपि महात्मा गांधीके हत्यारेको संसार थोड़े ही दिनोंमें भूल जायगा तथापि महात्मा गांधी चिरकाल तक सदैव सभी सत्कर्त्तव्यों और देशके कल्याणार्थ निःस्वार्थ सेवा-कार्योंकी ओर मानव जातिको उन्मुख और प्रेरित करते रहेंगे।

इस समय मेरा हृदय इतना भरा हुआ है कि उन सभी बातोंको, जिन्हें इस समय मैं कहना चाहता था, नहीं कह पा रहा हूँ

[प्रयाग हाइकोर्टकी बैठकमें पठित वक्तव्य

❀

महर्षि अरविंद घोष

[सुप्रसिद्ध संत और दार्शनिक]

जो प्रकाश स्वतन्त्रता-प्राप्तिमें हम लोगोंका नेतृत्व करता रहा वह ऐक्य प्राप्ति नहीं कर सका। परन्तु वह प्रकाश बुझा नहीं है, अभी प्रज्ज्वलित है और जबतक विजयी न हो जायगा जलता रहेगा। मेरा विश्वास है कि इस देशका भविष्य अत्यन्त महान है तथा एकता अवश्य स्थापित होगी। जिस शक्तिने इस संघर्ष कालमें भी हम लोगोंका नेतृत्व किया और हम लोगोंको स्वतंत्रता दिलायी वही शक्ति हमें उस लक्ष्यतक भी ले जायगी जिसके लिए महात्माजी अंततक सचेष्ट रहे और जिसके कारण उन्हें इस दुर्घटनाका शिकार बनना पड़ा। जिस प्रकार हमने स्वतंत्रता प्राप्त की उसी प्रकार हमें ऐक्य-प्राप्तिमें भी सफलता मिलेगी। भारत स्वतन्त्र और संघटित रहेगा। देशमें पूर्ण ऐक्य होगा तथा हमारा राष्ट्र अत्यन्त शक्तिशाली होगा।

डाक्टर भगवान्दास

[प्रथम कुलपति : काशी विद्यापीठ]

उसने दूसरोंको बचाया, वह अपनेको न बचा सका। क्या दूसरोंको बचानेकी यह शर्त नहीं है कि वे ही लोग उसे सूलीपर चढ़ा दें जिनके कल्याणके लिए वह जीवनभर प्रयत्न तथा परिश्रम करता रहा है ? गौतम बुद्ध और महावीर सरीखे विरले अपवादोंको छोड़कर, संसारके सभी मसीहोंका यही अनिवार्य एवं वांछित अन्त रहा है। महात्माजीके महान जीवनका भी यही संगत तथा पूर्वनिश्चित दिव्य अन्त हुआ। जो राजनीतिमें उनके शत्रु थे अथवा दोष देखने वाले थे वे भी आज उनके दोषोंको भूल गये हैं, केवल उनके उत्तम गुणोंका और सतत आत्मबलिदानका स्मरण करते हैं और मानवताके उस हितैषी और प्रेमीके लिए अभीतक शोक मनाते और भग्न हृदयके आँसू बहाते हैं।

किन्तु जहाँ महात्माजीके लिए यह सुखद अन्त रहा है वहीं भारतके लिए इसका अर्थ होगा कि हिन्दू और मुसलमानोंके बीच जो भयंकर कुहराम और आपसी मारकाट मची हुई है वह दस गुनी बढ़ जायगी और वह न केवल हिन्दू और मुसलमानोंके आपसी कत्लतक ही सीमित रहेगी वरन् हिंदुओं और हिंदुओं, हिंदुओं और सिखों और मुसलमानों-मुसलमानोंके पारस्परिक संहारका

स्वरूप धारण करेगी। पाकिस्तानके गवनर-जनरलकी हत्याके तीन प्रयत्न हो चुके हैं और गवर्नर-जनरल महोदय तभीसे छिपकर रह रहे हैं। शीया तथा सुन्नी आपसमें लड़ते ही आये हैं और लखनऊमें हालमें लड़े थे। और चूँकि महात्माजी एक महाराष्ट्रीयके हाथ मारे गये और यह बात प्रसिद्ध है कि हिन्दू महासभाके सदस्य मुसलिम लीगियों और पाकिस्तानियोंके सम्बन्धमें पक्षपातके कारण उनसे घृणा करते थे, दैनिक पत्रोंकी रिपोर्टके अनुसार हिन्दुओंने पूना तथा अन्य स्थानोंमें हिन्दू महासभाके नेताओंके घरोंको जलाना और लूटना शुरू कर दिया है। बहुसंख्यक मोमिन सम्प्रदायके अनेक भारतीय मुसलमान नेता पाकिस्तानके गवर्नर जेनरल और उनके अनुयायियोंकी जोरदार शब्दोंमें निन्दा कर रहे हैं। हरि इच्छा!

❀

डाक्टर सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

[भूतपूर्व कुलपति : हिन्दू विश्वविद्यालय]

गांधीजीपर होनेवाले इस प्राणघातक प्रहारसे मुझे शब्दातीत क्लेश पहुँचा। जिसकी कभी कल्पना नहीं की जा सकती थी, जिसपर विश्वास नहीं किया जा सकता वह हो ही गया। पवित्रतम, उत्कृष्टतम सत्प्रेरणाके स्रोत बापूके पुनीत व्यक्तित्वपर एक विक्षिप्त द्वारा प्राणान्तक प्रहार तो यही सिद्ध करता है कि सुकरातको विषपान करानेवाले और ईसाको सूली देनेवाले मानव अबतक जहाँके तहाँ ही रह गये।

० ० ०

अतीतके एकमात्र सजीव प्रतीक महात्मा गांधी अब नहीं रहे। हमने उनके शरीरकी हत्या कर डाली। किन्तु उनकी वह ज्योति जो, सत्य और प्रेमके प्रकाशपुञ्जसे उद्भूत थी, कभी बुझ नहीं सकती।

आखिर यह संसार महात्माओंके रहने योग्य कब होगा? आज हिन्द और पाकिस्तानके उपनिवेश ही नहीं वरन् समस्त विश्वको भलीभाँति समझ लेना चाहिये कि यदि हम हिंसा, नृशंसता और अनाचारके महागर्तमें पतित होनेसे बचना चाहते हैं तो उन आदर्शोंके अतिरिक्त दूसरा पथ नहीं है जिनके लिए महात्माजी जिये और मरे।

यदि हम अपनेको गांधीजीका भक्त मानते हैं तो हमको उन्हींके सिद्धान्तों के अनुसार चलना चाहिये और मनसा, वाचा, कर्मणा क्रोधसे परे रहकर उन्हीं का अनुसरण करना चाहिये। गांधीजीने विदेशी शासनका बोझ हटानेके लिए दोनों प्राचीन प्रणालियोंका, सशस्त्र विद्रोह तथा अनुनयात्मक याचनाका, बहिष्कार किया। उन्होंने पूर्ण स्वतन्त्रताका ध्येय तो स्वीकार किया किन्तु अन्य नेताओंसे उनकी दृष्टि भिन्न थी और उन्होंने सिद्ध कर दिया कि राजनीतिक स्वतंत्रता ऐसे साधनोंसे भी प्राप्त की जा सकती है जो मानव मर्यादाके अनुरूप हों। उनका ध्येय केवल विदेशी साम्राज्यके पंजेसे स्वाधीनता प्राप्त करना ही नहीं था वरन् देशको अन्य संघर्षोंसे भी मुक्त करना था। शताब्दियोंतक नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धान्तोंके द्रष्टा महर्षिके समान वे पूजित रहेंगे। उन्हींके बताये हुए पथपर चल-कर पथभ्रष्ट विश्व शान्ति प्राप्त कर सकता है।

❀

डाक्टर सच्चिदानंद सिंहा

[प्रथम अध्यक्ष : भारतीय विधान परिषद]

भारतके महापुरुषोंमें गान्धीजी एक हैं। उनमें आध्यात्मिकता एवं व्यावहारिक आदर्शका विचित्र एवं अनुपम समन्वय था।

मैं महात्माजीको महान सन्तके रूपमें मानता रहा हूँ। भारतवर्षने जिन महत्तम विभूतियोंको जन्म दिया उनमेंसे वे एक थे। उनमें उच्चकोटिकी आध्यात्मिकता तथा साधारण-तम सक्रिय आदर्शवादिताका समन्वय रूप देखनेको मिलता था। ऐसे व्यक्ति इस वसुधापर अनेक युगों बाद जन्म लेते हैं। जहाँतक भारतका सम्बन्ध है, इस संकटके क्षणोंमें उनका हमारे बीचसे उठ जाना देशकी भारी अपूरणीय क्षति है।

❀

जगद्गुरु शंकराचार्य

[ज्योतिष्पीठाधीश्वर : बदरिकाश्रम]

भारत ही नहीं, समस्त विश्वका एक देदीप्यमान नक्षत्र सदाके लिए अस्त होगया। इस आकस्मिक महाविपत्तिसे भारत ही नहीं वरन् समस्त विश्व गम्भीर दुःख सागरमें डूब गया है भगवान् उनकी आत्माको शान्ति प्रदान करें।

सर मिर्जा इस्माइल

[भूतपूर्व दीवान : मैसूर तथा जयपुर राज्य]

गांधीजीने भारतके मुसलमानोंके लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया और इसमें सन्देह नहीं कि भारतके मुसलमान उनके बताये रास्तेपर चलकर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करेंगे और उनकी स्मृतिको चिरस्थायी बनायेंगे। इस समय प्रत्येक भारतीयका कर्तव्य है कि वह सरकारको पूरी तरहसे मदद करे। गांधीजीकी मृत्युसे सारे राष्ट्रको बहुत गहरा नुकसान पहुँचा है। अतः भारत और पाकिस्तानको अपने मतभेद दूर कर परस्पर सद्भावकी भावनाएं उत्तेजित करनी चाहिये।

❀

श्री शरच्चन्द्र बोस

[भूतपूर्व सदस्य : भारतीय अंतरिम सरकार]

राष्ट्रपिताकी जघन्य हत्याका हृदय-द्रावक शोक-समाचर सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। ऐसे कुकृत्यकी निन्दा करनेके लिए शब्द नहीं मिलते। देश अनाथ हो गया है। ईश्वर ही जाने कि भविष्यमें क्या होने वाला है। महात्माजीका देहान्त हुआ; देखें अब दूसरा महापुरुष कब अवतार लेता है।

❀

श्री पुरुषोतमदास टण्डन

[अध्यक्ष : युक्तप्रान्तीय व्यवस्थापक सभा]

स्वतन्त्र-भारतकी महत्ता और महात्मा गांधीका व्यक्तित्व दोनों अभिन्न हैं। संसारके किसी कोनेमें जब भारतकी महत्ताका नाम लिया जायगा गांधीजीका नाम भी साथ रहेगा। जिस हिन्दूने भ्रान्त हिन्दुत्वके पागलपनमें उनकी हत्याकी है उसने सबसे अधिक हानि हिन्दुओंको ही पहुंचायी है।
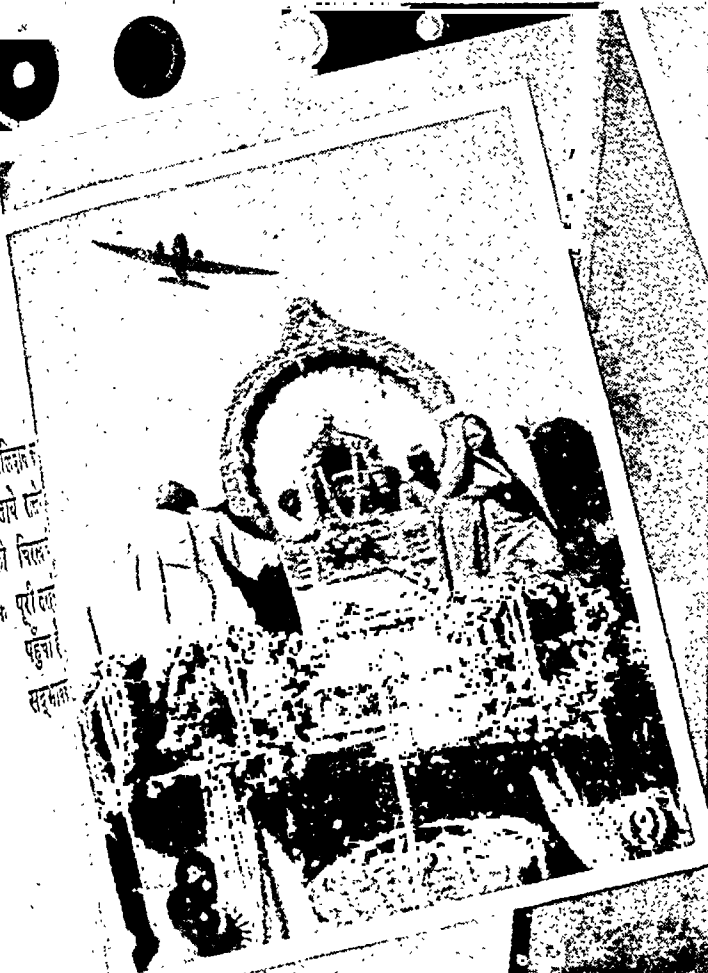
❀

१—अस्थिघट वाही रथ-पर वायुयान द्वारा पुष्प वृष्टि।
२—अस्थिघटके जलूसमें 'रामधुन' का कीर्तन
३—रथके आगे नेहरू जी पैदल चल रहे हैं।
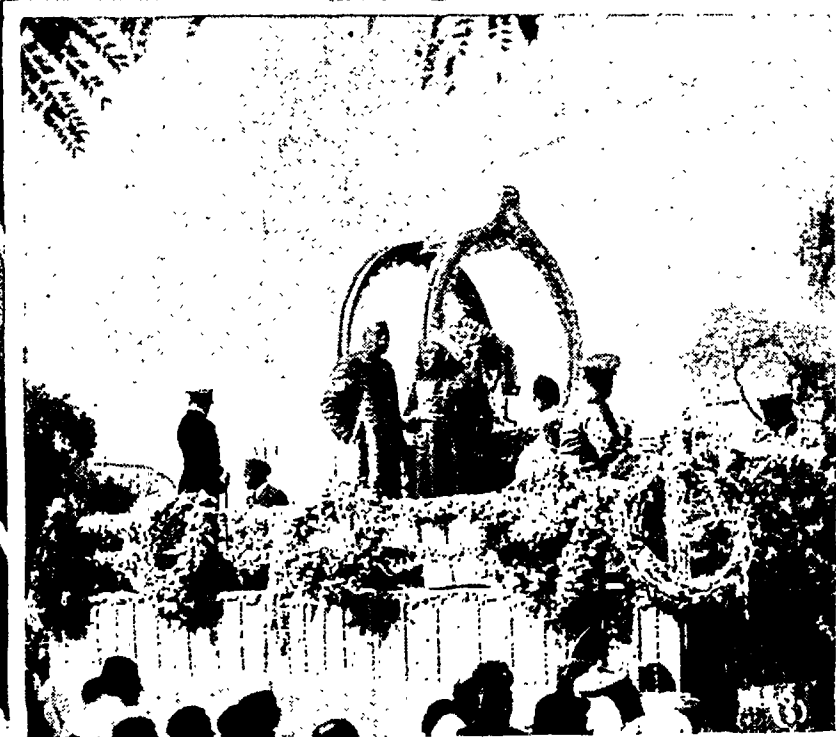
१--प्रयागमें वह सुसज्जित रथ, जिसपर पुनीत अस्थि-
घट रखा गया। रथपर युक्तप्रांतके प्रधान मंत्री
पंतजी और रफी अहमद किदवई साहब खड़े हैं।
२—जल-थलमें समान रूपसे चलनेवाली नौका जो
अस्थिघट लेकर संगममें जल संतरण कर रही है।

श्री चंद्रशेखर व्यंकटरमण

[विश्व-विख्यात वैज्ञानिक तथा नोबुल-पुरस्कार-विजेता]

कठिनाईके समय मनुष्यके व्यवहारका अध्ययन तथा ऋतु-शास्त्रका अध्ययन—दोनोंमें बहुत समता दिखाई पड़ती है। निरीक्षक देखता है कि सागरमें वायुका दबाव कम हो रहा है और वह बता देगा कि किनारे आँधी आने ही वाली है। उसकी भविष्यवाणी समय तथा स्थानके संबंधमें कितनी भी निश्चित हो, परन्तु आँधीको वह रोक नहीं सकता और उससे होनेवाली हानिसे रक्षा भी नहीं कर सकता। गत कई महीनोंकी दुःखद घटनाएँ हमारे अभागे देशमें बहनेवाली प्रचंड आँधी थी जिसके परिणामस्वरूप मनुष्यके जीवन और सुखका ध्वंस हमें देखनेको मिला है और उसका अन्तिम प्रहार वह दुखमय घटना है जिसने हममेंसे ऐसे व्यक्तिको हरा दिया जो अपनी मानवताके कारण तथा मानवताकी भलाईके लिए सदा तत्पर रहनेके कारण इस युगका अद्वितीय व्यक्ति था। मैं समझता हूँ कि इस विषयपर विचार करना बेकार है कि भावी इतिहास महात्माजीके संबंधमें क्या कहेगा अथवा महात्माजीके जीवन तथा शिक्षाका प्रभाव हमारे देश अथवा एशियापर आगे क्या पड़ेगा। यह सब भविष्यके गर्भमें है। किन्तु हम लोगोंको, जो उस स्वाधीन भारतके निवासी हैं जिसे वह हमें दे गये हैं, यदि अपने भाग्यमें विश्वास है और यदि हममें वर्तमान दुःख तथा कठिनाइयोंपर विजय प्राप्त करनेकी और महान भविष्य निर्माण करनेकी शक्ति है तो महात्मा गांधीने भारतको पुनः स्वतंत्र करनेके लिए जो कार्य किया है और जिस प्रकार उन्होंने इसमें अपना जीवन बिताया है उसे हम कभी भूल नहीं सकते।

गत चालीस वर्षोंसे मैं जिस कार्यमें लगा हूँ वह राजनीतिक क्षेत्रसे सर्वथा भिन्न है और इधर भारतमें मुख्यतः इन दिनों राजनीतिक कार्य ही होता रहा है। मैंने इस प्रयत्नमें किसी प्रकारका सहयोग नहीं दिया, न किसी राजनीतिक नेतासे संपर्क स्थापित किया किन्तु महात्माजी तो सभीसे भिन्न थे। मैंने जब उन्हें देखा, उनकी बातें सुनीं तभी मेरे ऊपर उनकी गहरी छाप पड़ी। पहली बार मैंने उस ऐतिहासिक अवसरपर उन्हें देखा जब बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयकी नींव पड़ी और भीड़के सम्मुख उन्होंने भाषण किया। जिस समय वे राजाओंको उनके अपव्यय तथा प्रजाके प्रति निर्मम उपेक्षाके लिए फटकार रहे थे, जनता मूर्तिवत सुनती रही। राजा लोग उपस्थित थे। उनमें सब इस आलोचनाके पात्र थे या नहीं, यह दूसरी बात है किन्तु एक एक करके सब हालसे चले गये और श्रीमती एनी

वेसेण्टने उनका साथ दिया, जो उनको असफल रूपसे सांत्वना देनेकी चेष्टा कर रही थीं। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया और महात्मा गांधीकी शिक्षाके कारण जीवनकी समस्याओंको नये ढंगसे लोग देखने लगे, और उनके विचारोंसे लोग परिचित होते गये उनका प्रभाव देशवासियोंके मनपर अधिकसे अधिक पड़ने लगा और धीरे धीरे यह स्पष्ट होने लगा, सब लोग जान गये कि भारतकी स्वतंत्रताकी लड़ाईमें वे सर्वप्रथम हैं। यह भी स्पष्ट हो गया कि जीवनकी समस्याओंके प्रति उनका दृष्टिकोण उदारतापूर्ण तथा व्यावहारिक था। उनकी रुचि मनुष्यके जीवन तथा उसके सुखमें थी। विज्ञान, अर्थशास्त्र अथवा राजनीति आदिमें, जिनका इनसे संबंध न था, उनकी रुचि न थी। इस मनोवृत्तिके कारण साधारण मनुष्यके हृदयमें उनके प्रति भक्ति थी चाहे उन लोगोंको, जिनके लिए यह ज्ञान-विज्ञान मानवतासे ऊपर है, उतनी श्रद्धा न रही हो। इसमें सन्देह नहीं कि महात्मा गांधीकी हत्यापर जो श्रद्धा और भक्तिपूर्ण शोक तथा प्रदर्शन संसारके सभी भागोंमें हो रहा है वह महात्मा गांधीके उन्हीं भावों तथा सेवाओंके वदलेमें हो रहा है, जो उन्होंने मनुष्य-समाजके लिए की हैं। उनकी सेवाएँ जाति और धर्मसे परे सारी मानवताके लिए रही हैं। एशियामें ऐसे उदार व्यक्ति और भी हुए हैं जिनके जीवनका प्रभाव देशपर शाश्वत रहा है। महात्माजी उनमें सबसे प्रमुख हैं।

डाक्टर हृदयनाथ कुँजरू

[अध्यक्ष : सर्वेण्ट आफ इण्डिया सोसायटी]

अपनी आत्माके प्रति सच्चा रहनेका हमें उपदेश देते हुए तथा भारतके प्राचीन पावन आदर्शोंको अपने आचरण द्वारा साकार करते हुए महात्मा गांधीका साम्प्रदायिकताकी ज्वालामें भस्म होना एक अत्यंत हृदय-विदारक घटना है। भारत ही नहीं समस्त विश्वमें ऐसा उपदेशक अनेक शताब्दियोंमें अवतरित नहीं हुआ है। उनका निधन समस्त मानवताकी हानि है। यद्यपि वे अब नहीं रहे तथापि उनकी आत्मा हमें प्रकाश देती रहेगी। यह परम दुःखका विषय है कि वे हमारे बीच अब नहीं रहे किन्तु हमारे विचारों और कार्योंको प्रभावित करनेकी उनकी जितनी शक्ति आज है, उतनी पहले कभी नहीं रही। उनका जीवन देश-विदेशमें करोड़ों व्यक्तियोंको प्रेरणा और स्फूर्त्ति देता रहेगा। एक फारसी कविके शब्दोंमें हम कह सकते हैं—"भावी युगके महापुरुष तेरे चरण-चिन्होंपर सम्मानपूर्वक नतमस्तक होते रहेंगे।"

युक्तप्रांत

मानर्नीय सरोजिनी नायडू

[गवर्नर : युक्तप्रान्त]

उस महापुरुषके संबंधमें मेरे लिए कौन-सी नयी बात कहनेको शेष रह गयी है, जिसके संबंधमें समस्त विश्वके राष्ट्रोंने अपनी-अपनी भाषाओंमें श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर उनकी अन्तर्राष्ट्रीय महत्ता स्वीकार कर ली है। संसारके सभी धर्मनिष्ठ, आदर्शवादी, विवेकशील तथा शान्तिप्रिय व्यक्तियोंके मनमें उनके प्रति आदर और प्रेम था। मुझे स्मरण है, महात्माजीका प्रथम अनशन हिन्दू-मुस्लिम एकताके लिए हुआ था। उस समय मैं उनके साथ थी। उस अनशनके साथ सारे देशकी सहानुभूति थी। उनका अन्तिम अनशन भी हिन्दू-मुस्लिम ऐक्यके निमित्त ही हुआ था। पर इस अन्तिम अनशनमें सारा देश उनके साथ नहीं था। इस समय इस देशमें प्रचलित सभी मतोंकी धर्मशिक्षाओंके विपरीत, देशवासियोंमें आपसी मतभेद, परस्पर विरोध, घृणा और आशंका इतनी बढ़ गयी थी कि कुछ पक्के गांधीवादियोंके सिवा और कोई भी गांधीजीके अनशनके रहस्यको नहीं समझ सका। हिन्दू-समाजके लिए कितने खेदकी बात है कि संसारके सर्वश्रेष्ठ हिन्दूकी, हिन्दू धर्मके सिद्धान्तों, आदर्शों और दर्शनके एकमात्र सच्चे प्रतीककी, एक हिन्दूके ही हाथों हत्या हुई।

हममेंसे कुछ लोगोंका गांधीजीके साथ इतना निकट संबंध था कि हमारा और उनका जीवन एक दूसरेसे अविच्छिन्न हो गया था। हम लोगोंमेंसे कुछ तो उनकी मृत्युसे सचमुच ही मृत-से हो गये हैं। हममेंसे कुछ लोग उनकी मृत्युसे जीवित रहकर भी निष्प्राण हो गये हैं; क्योंकि हमारे स्नायु, माँसपेशियाँ,

तन्तु, नस, नाड़ियाँ, हमारे हृदय और रक्त उनके जीवनके साथ घुले-मिले थे, गुँथे हुए थे।

पर उनकी मृत्युसे यदि हम निराश हो जायँगे और यह विश्वास करने लगेंगे कि सचमुच ही वे मर गये, उनके चले जानेसे सब कुछ चला गया तो हम उनके विरोधी, उनका साथ छोड़नेवाले अर्थात् पथभ्रष्ट बन जायँगे। उनके प्रति हमारी निष्ठा और आस्थाका मूल्य ही क्या होगा यदि हम विश्वास करने लगें कि उनके नश्वर शरीरके उठ जानेके साथ ही सब कुछ समाप्त हो गया।

क्या उनके उत्तराधिकारी, उनके आध्यात्मिक वंशधर, उनके महान आदर्शोंकी थाती सम्हालनेवाले तथा उनके बाद उनके कार्योंको आगे बढ़ानेवाले हम जीवित नहीं हैं ? दुःख और विलापका अब समय नहीं रहा, छाती पीटने और बाल नोचनेका समय भी समाप्त हो गया। अब तो वह समय है जब हमें उन लोगोंकी चुनौती स्वीकार करनी है जिन्होंने महात्मा गांधीका विरोध किया है।

हम उनके जीवित प्रतीक हैं, और इस युद्ध-रत विश्वमें उनकी शांति-पताका फहरानेवाले हैं। सत्य हमारी पताका है, अहिंसा हमारी ढाल है और बिना किसी रक्तपातके विश्व-विजय करनेवाली आत्माकी करवाल हमारा शस्त्र है। क्या हम अपने धर्मगुरुके पथका अनुसरण न करेंगे ? क्या हम राष्ट्र-पिताकी आज्ञाओंका पालन नहीं करेंगे ? क्या हम उनके सैनिक न बनेगें ? क्या हम उनके द्वारा पशुता और अशान्तिके लिए छेड़े गये युद्धको विजयप्राप्ति तक नहीं चलायेंगें ? क्या हम उनके उपदेशोंका विश्वके सामने उस रूपमें न रख सकेंगे जिस रूपमें वे चाहते थे ? यद्यपि अब उनकी वाणी हमें न सुनाई पड़ेगी किन्तु क्या हम लोगोंके पास, उनके महान संदेशको विश्वके कोने कोनेमें फैलानेके लिए, अगणित वाणियाँ नहीं हैं ? केवल अपने इस समकालीन विश्वके लिए ही नहीं वरन् भावी सभी पीढ़ियोंके लिए हमें उनके उपदेशोंका अगणित कण्ठोंसे प्रचार करना है।

मैं आज समस्त संसारके सामने, जो मेरी काँपती हुई वाणी सुन रहा है, ३० वर्ष पूर्वकी तरह अपनी ओरसे महात्मा गांधीकी सेवाके लिए प्रतिज्ञा करती हूँ। मृत्यु क्या है ? इस संबंधमें मेरे पिताने मरनेके पूर्व कहा था—"मृत्यु, मृत्यु नहीं वरन पुनर्जन्म है। सत्यके उच्चसे उच्च स्तरकी खोजमें जीव बार बार जन्म ग्रहण करता है।"

महात्मा गांधीका दुर्बल शरीर कल अग्नि-शिखाओंमें भस्मसात् हो गया। पर सचमुच वे मरे नहीं हैं। प्राचीन युगमें ईसामसीहकी भाँति अपने भक्तों तथा विश्वके मानवोंकी पुकारके उत्तरमें, अपने पथ-प्रदर्शन, प्रेम, सेवा और प्रेरणाका क्रम जारी रखनेके लिए वे मृत्युके तीसरे दिन पुनः उठ खड़े हुए हैं।

बादशाहोंकी समाधिस्थल दिल्लीमें उनकी अन्त्येष्टिका होना ठीक ही हुआ क्योंकि वे बादशाहोंके बादशाह थे। शान्तिके अग्रदूतके शवका श्मशान भूमितक एक योद्धाके शवकी भाँति सज-धज और प्रतिष्ठासे ले जाना उचित ही था; क्योंकि वह लघुकाय व्यक्ति उन सभी योद्धाओंमें महान और वीर था जिन्होंने युद्ध-स्थलमें बड़ी बड़ी सेनाओंका नेतृत्व किया है। वे सबके विश्वस्त मित्र थे। दिल्ली उस महान क्रान्तिकारीका केन्द्र और तीर्थ-स्थल बन गयी जिसने अपने परतंत्र देशको विदेशी दासतासे मुक्त कर स्वाधीनता और राष्ट्रीय झंडा प्रदान किया। मेरी प्रार्थना है कि मेरे गुरु, मेरे नेता, मेरे पिताकी आत्मा शांत होकर निष्क्रियता न प्राप्त करे। पिता, तुम्हारी आत्मा सुप्त न हो। हमें दृढ़प्रतिज्ञ रखो। हमें, जो तुम्हारे उत्तराधिकारी हैं, तुम्हारे वंशज हैं, तुम्हारे शिष्य हैं, तुम्हारे स्वप्नोंके संरक्षक हैं, भारतके भाग्य-निर्माता हैं उन्हें अपनी प्रतिज्ञाका पालन करनेकी शक्ति प्रदान करो।

० ० ०

युगोंकी प्राचीन गङ्गा तथा यमुना नदियोंके संगममें असंख्य नर-नारियों-का अस्थि-प्रवाह हुआ है जो यहाँ मिलकर विलीन हो गये हैं। पर भारतके इतिहासमें इतने बड़े महापुरुषका अस्थि-पुष्प पानेका इन्हें कभी सौभाग्य नहीं मिला, जिसका जीवन-मरण भावी सन्ततिके लिए एक अमर और सनातन आदर्श रहेगा। हमारे प्रान्तमें देशकी अनेक पावन नदियाँ हैं। मुझे अभिमान है कि जनताके सहयोगसे हमारे प्रिय महात्माजीके अस्थि-प्रवाहका ऐसा सुन्दर और समुचित प्रबन्ध हुआ। इतिहासमें महात्माजीके अन्तिम संस्कारका अपूर्व आयोजन मानवताको उनके प्रेम, सत्य एवं अहिंसाका प्रकाश प्रदान करेगा।

❀

माननीय पुरुषोत्तमदास टंडन

[अध्यक्ष: युक्तप्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा]

मैं गत बुधवारको गांधीजीसे मिला था और लगभग एक घंटेतक कांग्रेसके विषयमें बातचीत करता रहा। उनके चले जानेसे हमारा पथ-प्रदर्शक चला गया। भारतीय स्वतंत्रताके वे जन्मदाता थे और विश्व-इतिहासमें वे चिर-स्मरणीय रहेंगे। इस देशमें वे एक महान अवतारकी भाँति सदा पूजित रहेंगे।

इस देशके प्रत्येक व्यक्तिका हृदय आज रो रहा है। हत्यारेने समस्त राष्ट्रको जो महान क्षति पहुँचायी, उसे उसने तनिक भी नहीं समझा। उसने सोचा कि हिन्दू जातिकी वह बड़ी भारी सेवा कर रहा है, पर अपने कुकृत्यसे उसने हिन्दुओंकी बड़ी भारी हानि की। महात्माजी केवल हिन्दुओंके लिए ही कार्य नहीं करते थे वरन सभी जाति और वर्गवालोंके वे समान रूपसे सच्चे सेवक थे।

o o o

बापूको खोकर आज हम लोग सचमुच पितृ-हीन, बिना बापूके, हो गये। वह केवल हमारे देशके ही नहीं, किन्तु यदि संसार पहचानता तो, वह सब देशोंके सच्चे -बापू थे। उनके हृदयमें सबकी रक्षाका भाव था और वह सबके शिक्षक थे और सच्चे अर्थमें वह जगद्गुरु थे। हमारे देशके तो वह सर्वस्व थे ही, किन्तु उन्होंने केवल अपने देशके लिए ही नहीं वरन संसार भरके लिए एक नया युग बनाया। वह युग-प्रवर्तक थे। हमारे देशमें तो वह अवतारी पुरुष माने जायेंगे। वह उसी शृंखलामें हैं जिसमें राम, कृष्ण, बुद्ध और ऋषभदेव हुए। उनका भी नाम उन्हीं अवतारी पुरुषोंके साथ गिना जायगा। जैसा अवतारी पुरुषोंके कामके ढंगोंमें अन्तर था उसी तरह उनके कामका ढंग भी अद्भुत और निराला था। जब जब अवतारी पुरुष आये हैं उन्होंने समयके अनुरूप शिक्षाएँ दी हैं। धर्मकी रक्षा करनेके लिए, बुराइयोंको हटानेके लिए ही अवतारोंका आना होता है। "सम्भवामि युगे युगे" में जो वचन है कि मैं युग-युगमें आता हूँ बुराइयोंका नाश करनेके लिए, वह वाणी महात्माजीके जीवन-कालमें सफल होती दिखाई पड़ती है। हमने तो उनको अपने पिताके रूपमें, अपने नेताके रूपमें देखा। परन्तु वह केवल हमारे देशकी स्वतंत्रताके लिए नहीं आये। इस देशमें पैदा होनेके नाते वह तो उनका सीधा काम था; किन्तु सारा संसार किस तरह ऊँचा हो यही उनका असली अभिप्राय था। यदि हम उनके कामोंको थोड़ा विचार करके देखें तो ऐसा जान पड़ता है कि दृष्टिकोणके अन्तरसे कुछ बातोंमें हममेंसे कुछ लोगोंका और उनका मतभेद था। हम अपने ही राष्ट्रके मसलोंको सामने रखते थे। वह उनके सामने भी थे, लेकिन उनकी निगाह सारा संसार किस तरह ठीक हो, इसपर थी। राष्ट्रीयता और संसार-व्यापक दृष्टिकोण, इन दोनोंमें कुछ अन्तर कभी कभी होना स्वाभाविक है। यही बात हम महात्माजीके कामोंमें, उनके जीवनमें देखते हैं। राष्ट्रके साथ साथ वह संसार भरका ध्यान रखकर कभी कभी कुछ ऐसी बातें भी कहते थे जो हमारे देशके लोगोंको ऐसी लगती थीं कि मानो वे राष्ट्रीयताकी सहायता करनेवाली नहीं हैं, यद्यपि राष्ट्रीयतासे ऊपर हैं।

लोक-संग्रहका काम महात्मा गांधीजीके हृदयमें बैठा हुआ था। लोक-संग्रहके भीतर धर्मकी एकता मुख्य बात है। सब धर्मोंमें जो एक अभिप्राय और

एक ईश्वरका पूजना बताया गया है उसकी ओर विशेष रीतिसे ध्यान दिलाना, देश-जन्य अन्तर होते हुए भी संसार भरकी एक संस्कृति है, इसकी घोषणा और शिक्षा महात्मा गांधीजीने अपना मुख्य कर्तव्य बनाया। अन्तिम दिनोंकी उनकी उपासनाका एक वाक्य था—"ईश्वर अल्ला एकहि नाम"

यही उनकी भावनाका द्योतक था। हमारे देशमें पहले भी भक्त-जन और धर्म-प्रवर्तक हमको सिखला गये हैं कि राम-रहीम एक हैं। यह बात हमारे बहुतसे भक्तोंने सिखलायी परन्तु हम उसे बार-बार भूल जाया करते हैं और उन बातोंके भूलनेका ही यह पापमय परिणाम हुआ जो हमने पिछले दिनोंमें देखा। इधर साल भरके भीतर जो हमारी भूलें हुईं, बहुत गहरी भूलें हुईं, आज उनके याद करनेका अवसर नहीं है। धर्मके नामपर हमने प्रेम, जो धर्मका वास्तविक तत्त्व है, नहीं फैलाया; किन्तु हमने आपसमें घृणा पैदा की। ईसाके समान पूज्य बापूजीने भी हमारी भूलोंका प्रायश्चित्त किया। मुश्किल है यह कहना कि क्या महात्मा गांधीके प्रायश्चित्तके बाद भी हम कुछ सम्हलेंगे? ईसाने प्रायश्चित्त किया किन्तु जगत उसके बाद बहुत नहीं बदला। क्या गांधीजीके प्रायश्चित्तके बाद हमारी भावनाएँ सचमुच सच्ची राहपर आवेंगी?

आज हमारे लिए यह सोचना भी एक कठिन बात हो गयी है कि वह चले गये और अब हमारा मार्ग-प्रदर्शन नहीं करेंगे। यह दिलको दहलानेवाली बात है। हमारे समाजके कोने कोनेमें, केवल राजनीतिमें नहीं सब दिशाओंमें, वे इतने फैले हुए थे, हमारी रगोंमें उनका प्रभाव इतना छा गया है कि हमारे लिए यह सोचना भी मुसीबत है। मुश्किलसे हमारे देशका कोई प्रश्न होगा जिसपर गांधीजीने मार्ग-प्रदर्शन न किया हो। आज केवल उनकी याद ही हम कर सकते हैं। वे धार्मिक पुरुष थे, वे अर्थशास्त्रके भी अद्वितीय ज्ञाता थे, वे शिक्षण-गुरु थे, वे एक सच्चे वैद्य भी थे। समाजका ऐसा कौन-सा कोना था जिसमें उन्होंने प्रवेश कर मानवमात्रकी भलाईकी बात न सोची हो। आज उनकी स्मृतिमात्र रह गयी है। वह हमको ठीक रास्तेपर ले चलें, हम उनके योग्य हों, इस योग्य हों कि हम उनके साथ भारतवासी कहलायें, आज हृदयसे हमारी यही प्रार्थना है। इसीमें हम उनकी आत्माको शान्ति दे सकते हैं।

❀

"जब पानीसे जमीन कटने लगती है तो अच्छी जमीन भी बरबाद हो जाती है। यह काफी बुरी चीज है। मगर जात-पांत रूपी घुन उससे भी बुरा है। वह आदमियोंको बरबाद कर देता है और उन्हें एक दूसरेसे अलग करता है।"

—गांधीजी

माननीय सर सीताराम

[अध्यक्ष : युक्तप्रांतीय कौंसिल]

महात्मा गांधीके आकस्मिक महाप्रयाणसे आज हम अनाथ हो गये। देशकी इस विपत्तिपूर्ण बेलामें हम किसके पास पथ-प्रदर्शनके लिए जाँय, इसे हम आज नहीं जानते। विश्वके उस सर्वश्रेष्ठ पुरुषके चले जानेसे आज संसार दरिद्र हो गया है।

o o o

स्वातन्त्र्य-लाभके पश्चात् हमारी उच्च आकांक्षाएँ आज ध्वस्त हो गयीं। हत्यारेकी उस गोलीने—जिसने बापूकी हत्या की—समस्त राष्ट्रको व्याकुल कर दिया है।

❀

माननीय गोविन्दवल्लभ पन्त

[प्रधानमंत्री : युक्तप्रांत]

आज हमारे देशमें सर्वत्र शोक छाया हुआ है। सबके हृदय उदास हैं। महात्मा गांधीके देहावसानके कारण सबको महान वेदना हो रही है। महात्मा गांधी हमारे राष्ट्रके पिता थे। उन्होंने स्वतंत्र भारतको जन्म दिया। वह हमारे इस नवजात राष्ट्रके उत्पादक, निर्माता और पोषक थे। उनके निधनसे हमारा राष्ट्र और हम सब अनाथ हो गये। हमें उन्होंने गड्ढेसे उठाकर ऊँचे शिखरपर पहुँचाया। उनके नेतृत्वमें ही देशकी असाधारण उन्नति हुई। जो बात कल्पनामें नहीं आती थी उसे उन्होंने सिद्ध और प्राप्त करके दिखाया। वे इस युगके अवतार थे। हमारे इस प्राचीन देशमें धर्मकी ग्लानि हो रही थी, अधर्म बढ़ा हुआ था, कायरताने सबको ग्रस्त कर रखा था, सब बन्धनोंमें जकड़े हुए थे। किसीको भी अंधकारमें रास्ता नहीं दिखाई देता था। महात्मा गांधीने हमारे निर्जीव और मृतप्राय देशमें नवजीवनका संचार किया, मुर्दनीको दूर किया तथा जर्जर अस्थि-पंजरके ढाँचेमें आत्म-विश्वास और स्वावलम्बनका स्रोत प्रवाहित करके संसारमें हमें उचित स्थानपर स्थापित किया।

उन्होंने ४० करोड़ स्त्री-पुरुषोंको केवल राजनीतिक स्वतंत्रता ही नहीं दिलायी बल्कि सभी क्षेत्रोंमें अपने आध्यात्मिक प्रभावसे जड़ताके स्थानमें चेतनाका

संचार किया। भारतीय-संस्कृतिका पुनरुद्धार उनके द्वारा हुआ। उन्होंने हमें भारतीय-सभ्यताके मौलिक सिद्धांत बतलाये। उनके उपदेशसे हमने अपने खोये हुए रत्न और लुप्त निधिको फिर पा लिया। महात्माजी मोहसे परे और निस्पृह थे। प्रतिदिन प्रार्थनामें वह गीता-पाठ करते और सुनते थे। वास्तवमें वे स्थित-प्रज्ञ थे। वे असहायोंके सहायक, दलितोंके उद्धारक और दरिद्रनारायणके उपासक थे। वह सभी जातियों, वर्गों और सारेमानव-समाजके हित-चिन्तनमें निरंतर लगे रहते थे और सब कुछ करते हुए भी निर्लिप्त रहते थे। वे मन, वचन और कर्ममें असाधारण सामञ्जस्य रखते हुए सबकी सेवा-सुश्रूषा करने और सबको सबल, सुखी और आत्मोन्नत बनानेमें प्रयत्नशील रहते थे।

उनकी ख्याति संसार भरमें सर्वत्र अनंत काल तक बनी रहेगी। उनकी मुक्त आत्मा सत्यलोकसे सदा हमारा पथ-प्रदर्शन करती रहेगी। उनके बताये हुए मार्गको हमारा देश कभी न भूलेगा; वह पथ-भ्रष्ट नहीं होगा। उनका स्मरण करके हम सभी संकटोंसे पार हो जायेंगे और जब भी हमें कोई कठिनाई होगी, हम सोचेंगे कि बापू ऐसी अवस्थामें क्या कहते? उसे सोचकर, उनका ध्यान करके हम उसको सुलझानेकी विधि निकालेंगे। गांधीजीका शरीर हमारे बीच नहीं है, पर गांधीजी अमर हैं। हमारे उद्धारक 'बापू' जहाँ भी होंगे वहींसे हमें उन्नत करते रहेंगे। हमें उनके सत्य, अहिंसा, निर्भीकता और मानवताके सिद्धांतोंको निरंतर अपने सामने रखना है। उनके उपदेशोंके अनुसार पारस्परिक प्रेम और सद्भावका व्यवहार करना है। इस लज्जाजनक घटनासे हमारे देशपर जो कलंक लगा है उसे उनके पावन आदेशों और शिक्षाओंके अमृतसे धो देना है। इस घोर विपदासे हमें यह विदित हो गया है कि सांप्रदायिक द्वेष फैलानेसे कितनी भयंकर हानि हो सकती है।

कमसे कम प्रत्येक भारतीयको यह प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि हम सब देशवासियोंमें सहिष्णुता, सहृदयता और एकताको बढ़ानेका प्रयत्न करेंगे और इसके विपरीत कोई बात न होने देंगे।

० ० ०

महात्माजी अपने युगके मसीहा थे। ऐसे समय जब भारत अनेक बंधनोंमें जकड़ा था, महात्माजीने उसे नवीन जीवन प्रदान किया और संसारमें उसे सन्मानका स्थान दिलाया। महात्माजी राष्ट्रके पिता थे। और कुछ नहीं तो उन्होंने स्वतंत्र भारतका निर्माण तो किया ही और उसे ऊँचा पद प्रदान किया, जो उनकी सहायताके बिना सम्भव नहीं था।

उन्होंने भारतवासियोंको स्वतंत्रता ही नहीं दिलायी, वरन उन्हें उनकी संस्कृति तथा सभ्यताका ज्ञान भी कराया। पददलितोंके वह सबसे बड़े संरक्षक थे

और सब संप्रदायोंके सेवक थे। उनकी वाणी और उनके कार्य सबको सुख देनेके लिए होते थे।

महात्मा गांधीकी आत्मा अब भी हमारा पथ-प्रदर्शन करेगी और उन्होंने जो कुछ सिखाया उसे भारतवासी कभी नहीं भूलेंगे। जब हमें कठिनाइ पड़ेगी तब हम उनकी शिक्षाओंको सम्मुख रखकर और उसी प्रकार आचरण कर, जिसे महात्माजीने उचित समझा होता, हम उन कठिनाइयोंपर सहज विजय प्राप्त कर सकेंगे।

महात्मा गांधीकी हत्या हमारे ऊपर कलंकका धब्बा है। हम उनकी बतायी राहपर चलकर ही उसे धो सकते हैं। लोगोंको समझ लेना चाहिये कि सांप्रदायिकतासे बड़े अनर्थ हो जाते हैं। हम लोगोंको फिरसे एकताके लिए तथा मेलजोलके लिए प्रयत्न करना चाहिये। आशा करता हूँ कि महात्माजीकी शिक्षाएँ हमारा पथ-प्रदर्शन करेंगी और जिन सिद्धांतोंके लिए वह जिये और मरे उन्हें हम कभी न भूलेंगे।

o o o

चार दिन हुए महात्मा गांधीके भौतिक शरीरका अंतिम संस्कार हम लोगोंने प्रयागमें किया। उस दिन महात्माजीकी अस्थियाँ गंगा-यमुनाके संगममें, उस पवित्र धारामें समर्पित की गयीं। महात्माजीकी इहलौकिक यात्राका अंत हुआ। आज हम लोग यहाँ पर एकत्र हुए हैं। इस बीच सारे संसारने महात्माजीके प्रति अपनी श्रद्धा और भक्ति प्रकट की है और जिस आदरके साथ संसार उनको देखता था उसका कुछ अणुमात्र दिग्दर्शन कराया है। आज हम इस व्यवस्थापिका सभामें उस घोर पापके बाद जो दिल्लीमें १७-१८ दिन पूर्व हुआ था, एकत्र हुए हैं। किसी भी भारतवासीके लिए इस अवसरपर कुछ कहना कठिन होता है। उनके लिए, जिनका कुछ सौभाग्य रहा और महात्माजीके चरण-कमलोंमें अपनी श्रद्धांजलि और समय देनेका भी जिन्हें अवसर मिला है, उनके लिए इस अवसरपर कुछ कहना कठिन हो जाता है। जो लोग भावुक नहीं हैं उनके लिए भी यह एक कठिनाईकी बात होती है।

मैंने आजतक यथासंभव इस संबंधमें कुछ भी कहनेमें संकोच किया क्योंकि मैं उसको कठिन पाता था। पर जब सारे संसारसे महात्माजीको श्रद्धांजलि दी गयी, इस व्यवस्थापिका सभाका भी कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अपनी श्रद्धांजलि उनकी पवित्र स्मृतिके प्रति अर्पित करे। इस पुनीत कर्त्तव्यको पूरा करनेके लिए ही मैं खड़ा हुआ हूँ।

महात्माजीके बारेमें कुछ भी कहना कठिन है, परंतु जो इस व्यवस्था-

पिका सभाको शोक, वेदना, लज्जा, गम, अफसोस, रंज और शर्म इस बातसे हुई उसका इसकी कार्रवाईके पन्नोंमें आ जाना आवश्यक है। मैं समझता हूँ कि इस बारेमें किसीमें भी, इस सूबेके अन्दरके और बाहरके लोगोंके विचारोंमें भेद नहीं है। कोई नीच व्यक्ति ही होगा जो दूसरी भावना रखता हो, वर्ना सबकी एक ही भावना है। और जहाँ तक इस सभाका संबंध है, यह तो महात्माजीकी ही देन है। इसके जो कुछ अधिकार हैं, इसे जो गौरव मिला है भारतीय स्वतंत्र राष्ट्रका अंग होनेका, वह महात्माजीके ही परिश्रम, नेतृत्व और अलौकिक प्रभाव का ही फल है, उन्हींकी तपस्यासे हम इस व्यवस्थापिका सभामें एकत्र होकर सेवा करनेका अवसर पाते हैं। महात्माजीके बारेमें किन्हीं शब्दोंमें कुछ कहना किसीके लिए भी संभव नहीं है। हमारे भारतवर्षकी पिछले तीस सालकी जो भी घटनाएँ हैं, जो कुछ भी इतिहास हमारे देशका है, वह महात्मा गांधीके जीवनका इतिहास है। महात्माजीने ऐसी अवस्थामें, जब कि हमारा देश जर्जर था, हमारे यहाँ लोगोंमें पराधीनताके भारसे जकड़े होनेके कारण जो निर्बलता रोम-रोममें बस जाती है, उसने जब घर कर लिया था, जब कि देशमें कहीं भी स्वावलंबन और आत्म-विश्वास नहीं रह गया था, जब कि सब जगह एक मुर्दनी-सी छायी हुई थी, महात्माजीने अवतार लेकर हमारे इस जर्जर देशमें एक नये जीवनका संचार किया, नयी बिजली, उन हड्डियोंमें जो बिल्कुल घिस चुकी थीं पैदा की और फिर संसारको एक नया चमत्कार दिखलाया, जिसके परिणामस्वरूप अहिंसा द्वारा चालीस करोड़ स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध अपनी जंजीरोंसे, बेड़ियोंसे मुक्त और आजाद हुए। यह संसारके इतिहासमें ऐसी बात है जिसकी मिसाल कहीं मिलती नहीं और जब तक इस संसारमें कोई भी मनुष्य जीता रहेगा, जिंदा रहेगा, वह इस बातको भूलेगा नहीं कि एक ऐसे दुर्बल शरीरवाले महापुरुषने किस ढंगसे बेजान लोगोंमें जान डाल दी और जो बिल्कुल जर्जर थे उनको पुनर्जीवित कर दिया। महात्माजी हमारे देशके उद्धारक थे। आज यदि भारतवर्ष स्वतंत्र है, चाहे वह भारतीय संघ है चाहे पाकिस्तान है, तो वह महात्माजीके ही पराक्रमका परिणाम है। जहाँ तक मनुष्य देख और समझ सकता है, हमारी बेड़ियाँ टूटती नहीं और पाकिस्तानके सब हिस्से उसी तरह बंधनोंमें बँधे होते जैसे पहले थे। पाकिस्तानके रहनेवालोंको भी महात्माजीका उतना ही कृतज्ञ और अहसानमंद होना है जितना भारतके किसी और दूसरे प्रांतके रहनेवालेको। क्योंकि सभीकी आजादी महात्माजीके पराक्रमसे, उनकी एक अलौकिक शक्तिसे और उनके एक आश्चर्यजनक नेतृत्वसे ही प्राप्त हुई है। महात्माजीने ऐसे समयमें, जब कि पहली लड़ाई में (सन् १९१४ से १९१८) विजयी होनेसे अंग्रेजोंके साम्राज्यका बल पहलेसे भी बढ़ गया था और संसार भरमें छाया हुआ था, जब कि आधेसे ज्यादा दुनियामें उनका एकच्छत्र राज्य था और संसारकी तमाम नाशकारी शक्तियाँ अंग्रेजोंके हाथमें थीं, ऐसे समयमें इस देशमें आत्म-सन्मान, आत्म-गौरव और

स्वावलंबनका ऐसा स्रोत प्रवाहित किया कि उसके अमृतसे हमारे यहाँ एक नव-जीवनकी धारा बह चली। और, इससे ही बढ़ते-बढ़ते हम उनके ही प्रभावसे उनके बताये हुए रास्तेपर बढ़े। हम बरसोंसे गांधी-जयंती मनाते आये हैं और महात्माजीके प्रति प्रतिवर्ष हम अपनी प्रतिज्ञा करते हैं कि हम उनकी आज्ञाओंका पालन करनेका प्रयत्न करते रहेंगे, पर महात्माजीके महत्वको संसार अभी क्या, सैकड़ों बरस तक भी,पूरी तरह नहीं समझ पायेगा। महात्माजी केवल एक भारतीय ही नहीं थे। यद्यपि उन्होंने भारतके राष्ट्रीय संग्राममें, उसके स्वतंत्र करानेमें पूर्ण भाग लिया, उसमें सबसे आगे रहे, तथापि वह तो यहाँके चरित्रको सुधारनेके लिए। यद्यपि यहाँकी जनताकी अवस्था सुधारनेके लिए, यहाँके गिरे हुए लोगोंको ऊँचा उठानेके लिए,यहाँके भूखों-नंगोंको खाना दिलानेके लिए, यहाँ के दबे हुए आदमियोंको फिर संसारमें पुनः जीवित करानेके लिए एकमात्र महात्माजी ही थे और इन कार्योंमें उन्होंने अपनी शक्ति भी लगायी तथापि उनकी आत्मा और उनके विचार किसी देशकी सीमाके भीतर सीमित नहीं थे। वह तो सारे संसारके महापुरुष थे। भारतको स्वतंत्र करानेकी उनकी अभिलाषा उतनी ही थी जितनी संसारके अन्य दबे हुए परतंत्र लोगोंकी। पर वह हमेशा यह समझते थे कि जिस क्षेत्रमें वह हैं वही उनका क्षेत्र है और वहीं उनको काम करना है। वह दुनियाँमें अपना कर्तव्य कर गये और उनके कारण दुनियाँके सब देश जागे। हुआ भी ऐसा ही कि भारतकी स्वतंत्रताके साथ सारा एशिया स्वतंत्र हो गया। महात्माजीके कार्यने सभी गिरे हुए देशोंमें जान डाल दी और सब लोगोंमें यह भावना फैलायी कि वे भी उठ सकते हैं, उनके लिए भी संसारमें स्थान है और वे भी स्वतंत्र हो सकते हैं। हमारे देशमें ही नहीं, वरन समस्त एशिया में एक आत्म-विश्वास उत्पन्न करके महात्माजीने केवल हमें ही नहीं बलिक सारे एशियाको ऊपर उठाकर संसारमें उच्च स्थान दिलाया है।

महात्माजी केवल राजनीतिक कार्योंको करनेवाले ही नहीं थे, वह तो उनके जीवनका छोटा-सा अंग था। उनकी तो अपनी एक फिलासफी थी, जीवनका एक आदर्श था। उसीके लिए वह प्रयत्नशील रहते थे और उसीके ढाँचेपर वह समाजका निर्माण करना चाहते थे। महात्माजीके समान क्रांतिकारी आज-तक कोई शायद ही हुआ हो। उन्होंने जो क्रांति हमारे देशमें की उसका पूरा परिणाम हमने देख लिया और उसको देखनेके बाद उसकी तुलना या मुकाबला किसी दूसरे कामसे कठिनाईसे हो सकता है। किस अनोखे ढंगसे उन्होंने कार्य किया यह तो लोगोंको भौचक्का करनेवाली बात है जिसको संसारके लोग सुनते हैं और उनकी समझमें नहीं आता कि कैसे यह परिवर्तन हो गया। पर महात्माजीने सदैव जहाँ भी हुआ, भारतीय आत्माको उठानेमें, हमारा गर्व और राष्ट्रीय उत्थान जहाँ भी आवश्यक हुआ उसमें, उन्होंने हमारा पूरा-पूरा नेतृत्व किया। दक्षिण अफ्रीकामें,जहाँ हिन्दुस्तानियोंपर अत्याचार होता था, अकेले उन्होंने स्मट्ससे, जो

उस जमानेमें वहाँ लेफ्टिनैण्ट था तथा वहाँके अन्य गोरोंसे भारतीयोंके लिए उनके अधिकारोंको सुरक्षित और स्वीकार करवाया। यहाँ आकर उन्होंने जगह-जगह पर, चम्पारनमें तथा अन्य स्थानोंपर गरीबोंकी मर्यादाको ऊँचा उठाकर, उनको स्वतंत्रता प्राप्त करायी। उन्होंने जिसको दुखी पाया उसको सुखी बनानेमें अपनी शक्ति लगायी, मगर सबसे अधिक निर्बलोंको बलवान बनानेमें। उन्होंने प्रत्येक व्यक्तिको यह समझा दिया कि वह अपनी कौमको ऊँचा उठा सकता है। उन्होंने किसानों, मजदूरों और हरिजनोंको एक नया पाठ बतलाया और सबके लिए एक नयी दुनियाँ पैदा कर दी। उन्होंने हमारे स्त्री-समाजमें भी अद्भुत क्रांति कर दी। जो देश मुर्झाया हुआ था वह पूरी तरहसे जानदार बन गया। उन्होंने ये सब बातें कीं और भी कई बातें की। उनका कोई विशेष क्षेत्र नहीं था। वह हर जगह यह भी देखते थे कि समाजमें किस तरीकेपर लोगोंको कमसे कम तकलीफ करके खानेके लिए अपने स्वास्थ्य और तन्दुरुस्तीको आगे बढ़ानेका मौका मिल सकता है। खेती कैसे सुधर सकती है। उनका राजनीतिक-क्षेत्र भी था और उन्होंने भारतकी संस्कृतिको भी ऊँचे उठाया। हमारे राजनीतिक क्षेत्रमें महात्माजीके आनेसे पहले एक विदेशी हवा ऐसी चलती थी कि किसीको, खासकर राजनीतिक नेताओंको, जमीनपर बैठना या धोती पहनना या टोपी देना एक गैरमामूली-सी बात जान पड़ती थी। उन्होंने भारतीयताको हमारे देशमें स्थापित करके हमें मनुष्य बनाया और संसारके सामने हमारी जो पुरानी आभा थी उसको रखकर हमारे राष्ट्रका गौरव बढ़ाया। ऐसे महात्माके प्रति श्रद्धांजलि देना किस तरीकेसे हमारे लिए पर्याप्त हो सकता है और किन शब्दोंके द्वारा हो सकता है? हम कुछ भी करें, प्रत्येक भारतीय अगर बीसों बार भी महात्माजीके लिए अपने प्राण दे दे, तब भी उऋण नहीं हो सकता और जबतक मानव-इतिहास रहेगा तबतक महात्माजीका स्थान संसारके ऊँचेसे ऊँचे महात्माओंमें रहेगा। महात्माजीने यह सब कुछ किया था। वह अनासक्ति-योगका पाठ किया करते थे और उन्होंने हमको यह बतलाया कि पुराने जमानेके ऊँचे आदर्शोंको अपनाकर भी कैसे संसारकी और राष्ट्रकी उन्नति की जा सकती है। महात्माजीके बराबर अनासक्त और निरासक्त व्यक्ति कोई आजतक नहीं हुआ जिसने समाजके कल्याणमें अपना तमाम समय और शक्ति लगायी हो। जो आसक्ति छोड़कर समाजसे अलग होते वे संसारको छोड़कर संन्यास लेकर चले जाते परंतु महात्माजीने वास्तविक कर्मयोगका पालन किया और अपने संयमके द्वारा अपनेको बनाया।

महात्माजीने बचपनसे ही प्रत्येक छोटी-सी छोटी बातको सोचकर कि आगे क्या करना चाहिये, अपनी शैली अपने लिए नियत की और इसी ढंगसे चलकर अपनेको अजेय बना लिया। महात्माजीकी निर्भीकता, महात्माजीका अदम्य उत्साह और सब काम करते हुए उसपर आसक्त न होना दुनियाकी सब

बातोंसे अलौकिक बात है। और इसी कारण महात्माजीका निर्णय हमेशा सही होता था। इससे जब भी कोई गुत्थी और समस्या देशके सामने आती थी तो सब दौड़ दौड़कर महात्माजीके पास जाते थे और वे अपना निर्णय बतलाते थे, उसकी विवेचना करके अपना निर्णय बतलाते थे कि आगे क्या करना है। इसलिए उनके सिद्धांतोंको सामने रखकर हमें आगे चलना है। जिस सत्य और अहिंसाके आधारपर उन्होंने जीवनमें बराबर एक नये ढाँचेपर चलनेका उद्योग किया हमें उन सिद्धांतोंको सामने रखना चाहिये। जिन दीन-हीन व्यक्तियोंको ऊँचा उठानेके लिए उन्होंने हमें आदेश दिया है उन्हें निभाना और उनके प्रति अपने कर्तव्यको हमें भूलना नहीं है। विधिकी कैसी विडंबना है, कि जिन महात्माने अहिंसाके लिए अपना सर्वस्व अर्पण किया, जिन्होंने आतंकवादको, हिंसावादको अपने मुल्कसे खत्म किया, हिंसक क्रान्तिकारियोंको अपनी बात और अपने उद्देश्यको दिखाकर अहिंसात्मक बना दिया उन्हीं महात्माजीको हमारे देशके एक देशवासीके ही हाथसे, उनके सहधर्मी कहलानेवाले किसीके हाथसे, इस प्रकारकी हत्याका शिकार होना पड़ा। इससे और अनर्थकी बात कोई हो ही नहीं सकती। सिर्फ यह एक ऐसी बात है, ऐसा कलंक है जो हमारे देशके माथेसे कभी धुलेगा या नहीं, हम जानते नहीं हैं। हमें गौरव होता था, हम समझते थे, हम संसारमें कभी भी कह सकते थे कि हमारे यहाँ महात्मा गांधीने जन्म लिया तो हमारे लिए वह भी काफी श्रेयकी बात है और संसारके सामने हम घमंडसे अपना सर ऊँचा करके, इस प्रकार कह कर उसके साथ ही अपनी हैसियत हासिल कर सकते थे। और आज जब हम संसारमें यह बात कहें और वह यह पूछे कि उनकी हत्या करनेवाला तुम्हारे ही देशका था या नहीं, तो उसी बातपर हमारा घमंड चूर हो जाता है। यदि हमारे देशने गांधीको उत्पन्न किया, जिसका हमें गर्व है और हमेशा रहेगा, तो हमें इस बातकी लज्जा भी है, शोक है और हम कभी इसको भूल नहीं सकते कि हमारे ही देशके किसीने यह महापाप—हमारे राष्ट्रके पिताका वध—किया। आज जब हम यहाँपर एकत्र हैं, हमें इससे सबक सीखना है कि हमें करना क्या है। ऐसे उपद्रव क्यों हुए। इस तरहकी बातें किसीके मनमें क्यों आयीं। आज अगर हम अपने दिलको टटोलें, अगर हम गहरी तहमें जाकर हर एक चीजको सोचें तो मालूम पड़ेगा कि हममेंसे बहुतोंका शायद दोष था जिससे वह जहरीली हवा पैदा हुई, जिस जहरीली हवासे किसीके मनमें ऐसा पाप करनेकी धारणा आयी और इस पापको करनेके लिए उसने अपनेको उद्यत किया।

हमें यह याद रखना चाहिये, जो महात्माजी कहा करते थे कि छोटा-बड़ा कोई नहीं होता है। छोटेसे ही बड़ी बातें होती हैं। वह कहते थे कि मेरे लिए तो आजकी मंजिल काफी है; कल क्या होगा देखा जायगा। वह कहते थे कि मुझे कर्तव्य करना है, मैं तो ड्यूटीको मानता हूँ और उसीको हृदयसे पूरा करना है।

वह कहते थे कि मनसा, वाचा और कर्मणा किसीके प्रति कभी भी दुश्मनीकी भावना न हो। बुराइयोंको दूर करें मगर किसीके लिए कोई बुराई अपने हृदयमें न रखें। अपने देशमें हमने उनके उद्देश्य और सिद्धांतको, उनकी रात-दिनकी दिनचर्याको एवं जो बातें वे करते और कहते थे उनको किस तरह बिसराया, आज हमें उन सबको फिर पूरी तरहसे जांच करके पूरा करना है और जाँच करके यह देखना है कि यदि हम महात्माजीके उद्देश्योंको निरंतर सामने रखते तो क्या यह लज्जाजनक दुर्घटना होती अथवा नहीं। अभी मैंने एक दो बातें सुनी हैं कि कुछ जगहोंमें महात्माजीके निधनपर कुछ लोगोंने शोक मनानेके बदले कुछ और तरहका आचरण किया। मैं नहीं समझता कि यहाँ तक कोई पतित हो सकता है परंतु यदि कोई ऐसा हो तो उसको भारतमें रहनेका कैसे साहस होता है और वह कैसे अपना चेहरा किसीको दिखा सकता है, मैं नहीं समझ सकता। जब कभी कोई दुश्मन भी मरता है तब भी कोई खुशी नहीं मनाता है। उस संसारके साधु, शान्तिके अवतार, मानवताके पुजारी, अहिंसाके व्रती, सबके प्रति दया, हित और प्रेमकी भावना रखनेवाले महापुरुषकी हत्या हो और उसमें कोई भी व्यक्ति ऐसा निकले जो शोकमें व्यस्त न हो तो वह मनुष्य नहीं किंतु मनुष्य-जीवनका कलंक है। मैं समझता हूँ कि यदि ऐसी कोई बात हुई होगी तो हमको सोचना है कि हम कहाँतक गिर चुके हैं जो हमारे बीच ऐसे किसी व्यक्तिका होना संभव हो सका है। यदि कोई ऐसा है तो उसका कभी कल्याण नहीं हो सकता है। हमने और संसारने यह मान लिया है कि बम और पिस्तौलके जरिये परिवर्तन नहीं हुआ करते। अगर वह हो सकता है तो ज्ञानके जरिये, मनुष्योंपर प्रभाव डालकर उनके विचारोंको बदलकर ही हो सकता है। इसलिए कमसे कम इतना तो हर एकको मानना चाहिये कि किसीके राजनीतिक विचार कैसे भी हों, पिस्तौलके जरिये या हिंसाके जरिये कभी कोई परिवर्तन नहीं हो सकता है और न कभी ऐसा करनेसे परिवर्तन हुआ करता है। और न इस वक्तकी बनी हुई शासन-प्रणालीमें ही परिवर्तन हो सकता है परंतु उसके भयंकर परिणाम क्या होते हैं यह आपको देखना है। जो सांप्रदायिक कलह भड़क रहा था, फिरकेवाराना विचार पैदा हो रहे थे, जो तंगदिली बढ़ रही थी, उसे हमें देख लेना चाहिये। समझ लेना चाहिये कि उसके कितने भयंकर परिणाम होते हैं और कहाँतक बात हुई। हिन्दू, मुसलमान और सिखका सवाल नहीं है। आज तो सबसे पहला सवाल यह है कि इस सांप्रदायिक उन्मादने उसीको मार डाला है जिसने सभी संप्रदायोंका कल्याण किया। सांप्रदायिकताका इससे अधिक और क्या बुरा परिणाम हो सकता है? वह कहींपर ठहरता नहीं। वह कहींपर संप्रदायों या फिरकोंके अन्दर बन्द नहीं रह सकता। वह हरएकपर पड़ता है। वह घर-घरमें कलह पैदा करता है। वह भाई-भाईको लड़ाता है। वह कहीं ठहरता नहीं। इसलिए हमको याद रखना है कि महात्माजी हमारे लिए जिये

और हमारे ही लिए उन्होंने अपने जीवनको समाप्त भी किया। महात्माजीने देशको, जो एक पागलपनमें आ गया था, उससे बचानेके लिए अपनी आहुति दे दी। वह अकेले नोआखालीमें घूमते रहे, कलकत्ते गये, दिल्ली आये। सब जगह उन्होंने फिर इस बातका उद्योग किया और हमको उस बातकी याद दिलानेकी कोशिश की जिसे हम भूले जारहे थे। आज जिस उद्देश्यको, जिस आदर्शको जिस मकसदको पूरा करनेमें हमारे जमानेका, हमारे देशका सबसे बड़ा महापुरुष चला गया, उस मकसदको हम न भूलें—कमसे कम इतना तो हमारा फर्ज और कर्तव्य हो ही जाता है। और हम यह सोचें कि एक सेक्यूलर डेमोक्रेटिक स्टेट बनानेका हमने ऐलान किया है, घोषणा की है, इकरार किया है, प्रतिज्ञा की है, तो हम जो कुछ भी करें अपने इस आदर्शके मुताबिक करें, सच्चाईसे करें। महात्मा गांधीके उद्देश्योंको आगे रखें और उनको कभी भूलें नहीं। महात्माजी गरीबोंके, दरिद्रनारायणोंके पुजारी थे। उनके प्रति इस देशके प्रत्येक मनुष्यका विशेष कर्त्तव्य है। उनका उद्धार करना और उनको उठाना यह हम सबका सबसे बड़ा कर्तव्य है। उन्होंने अपनी रचनात्मक कार्य-प्रणाली हमारे बीच रख छोड़ी है और वही उनकी सबसे बड़ी स्मृति होगी। अब जो महात्माजीका स्मारक बनाया जा रहा है उसके द्वारा महात्माजीके सिद्धांतोंका प्रचार होगा, महात्माजी, जो हमलोगोंको शिक्षा और उपदेश देते थे, हमको मिलते रहेंगे और यदि हम उनके अनुयायी होनेके योग्य अपनेको प्रमाणित कर सके तो हम अपने ही देशका नहीं वरन संसारका भी कल्याण कर सकेंगे।

[व्यवस्थापिका सभा में

❀

माननीय सम्पूर्णानन्द

[शिक्षा और श्रम-मन्त्री : युक्तप्रान्त]

महात्माजी महापुरुष थे, क्योंकि उनका जीवन सर्वांगीण था। उनके जीवनका प्रत्येक अंग शिक्षा-प्रद था, महात्माजीने हमलोगोंको विविध आदर्श दिये और सबसे बड़ा आदर्श धर्मका था। धर्मका अर्थ परोपकार है।

हिन्दू धर्म-शास्त्रोंमें अधिकारोंका उल्लेख नहीं है, उनमें केवल कर्त्तव्योंका लेख है। प्राचीन ऋषियोंका यह मत था कि कर्त्तव्योंसे अधिकार स्वतः प्राप्त होते हैं। आधुनिक जगतके 'अधिकार' शब्दने सर्वत्र संघर्ष एवं विघटन उत्पन्न कर दिया है। स्वतंत्र होनेपर हमारे कर्त्तव्य बढ़ गये हैं। महात्माजी सदैव गीताके 'कर्मयोग' का अनुसरण करनेके लिए कहा करते थे।
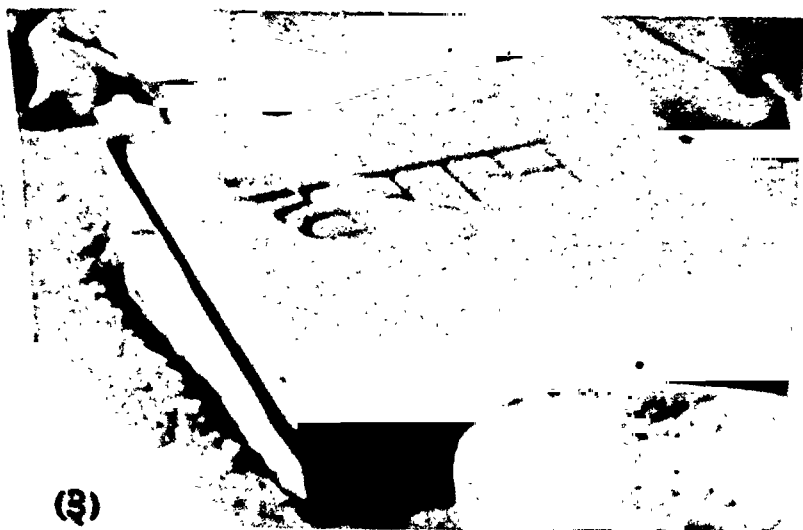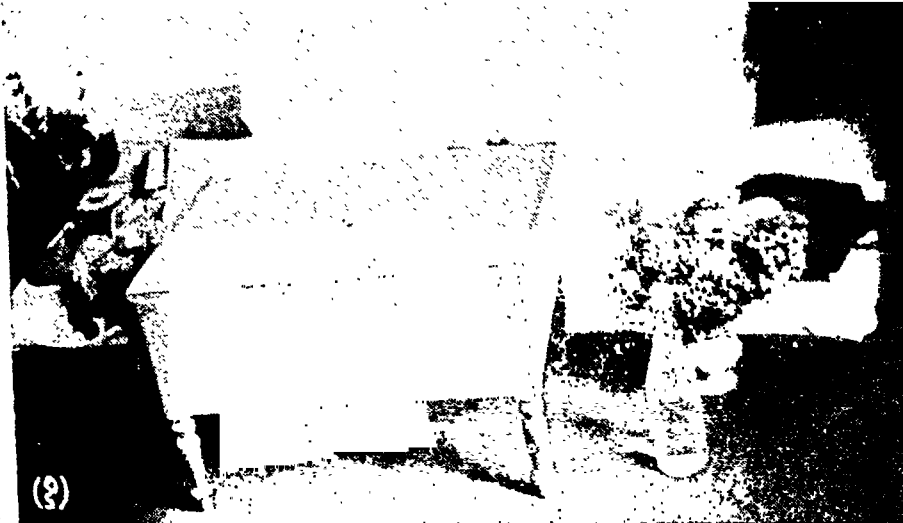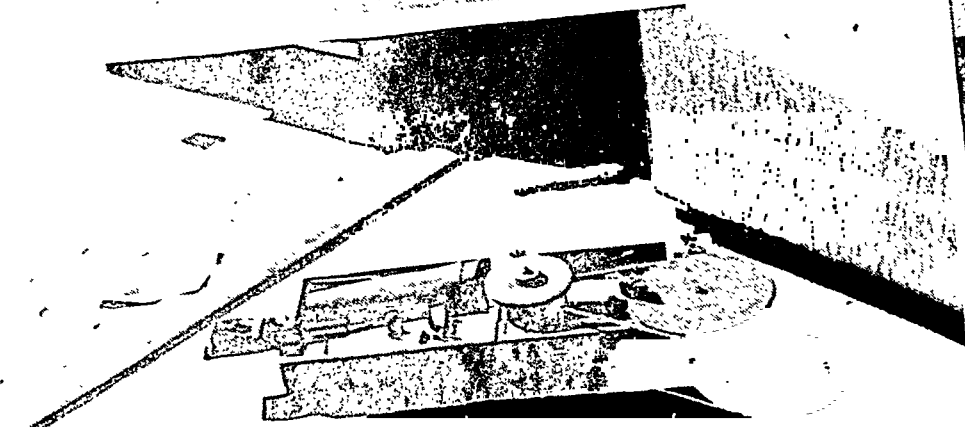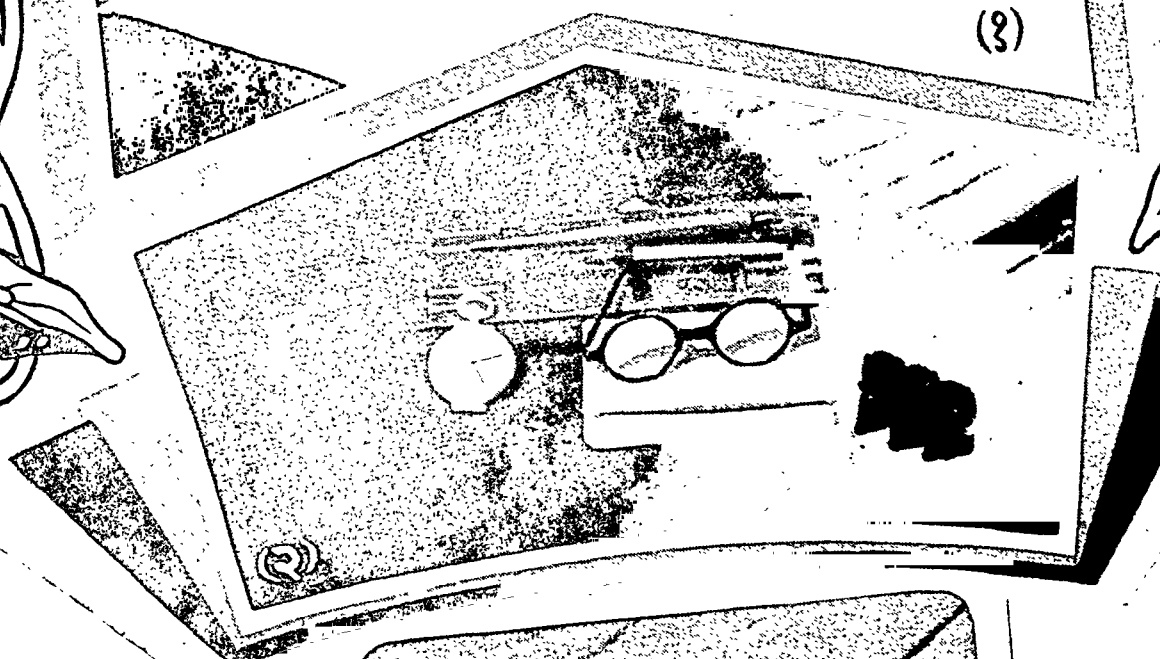
१—गांधीजीका चर्खा 'यरवदा चक्र' जो सदैव स्वावलम्बनकी सूचना देता रहेगा।

२—गांधीजीका कलमदान, जेब-घड़ी, चश्मा, आश्रम - भजनावली पुस्तक तथा तीन बन्दर-वाला गांधीजीका प्रिय खिलौना, जो निन्दा मतकर, निन्दा मत सुन, बुराई मत देख—इसकी शिक्षा देता रहा है।

(१) (२) (३)
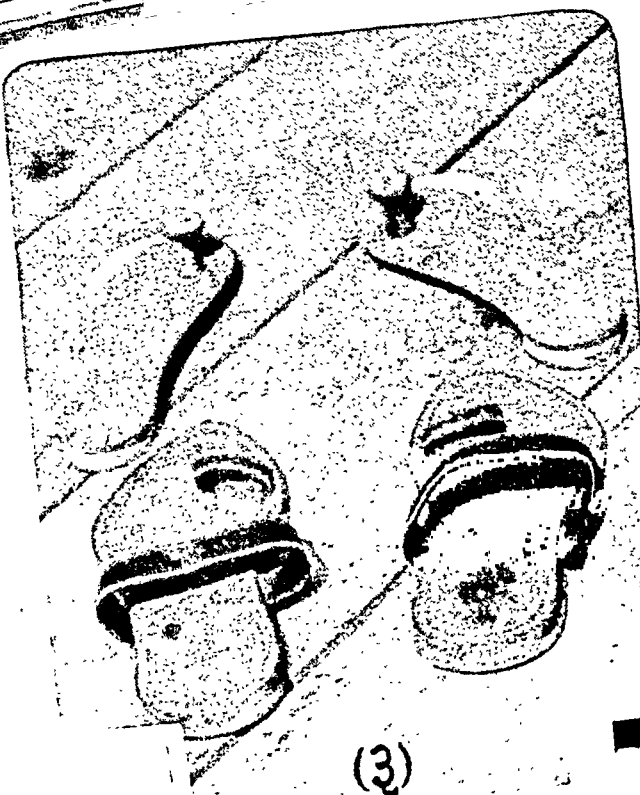
३—गांधीजीकी चरणपादु[illegible] और चप्पल।

४—गांधीजीके भोजनके ३ [illegible] और एक चम्मच।

५—गांधीजीको बर्माके प्र[illegible] मंत्री द्वारा उपहार [illegible] गयी दो ईंटें। ऐसी ईं[illegible] बर्माके किसान पहनते हैं।

माननीय हाफिज मोहम्मद इब्राहीम

[यातायात-मंत्री : युक्तप्रांत]

हमारे इतिहासका यह सबसे अधिक शोकपूर्ण क्षण है। समस्त राष्ट्र दुःखसे भर उठा है। महात्मा गांधीने अपने जीवनकी आहुति उन आदर्शोंके लिए दे डाली, जिसका वे आजीवन प्रचार करते रहे। अब हमें उनके दिखाये हुए पथपर चलना है। स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् आज हमें उनकी सबसे अधिक आवश्यकता थी, पर हत्यारेके क्रूर हाथोंने हमारे बीचसे उन्हें छीन लिया। हमारी भगवानसे प्रार्थना है कि उनके आदर्श इस राष्ट्रका पथ-प्रदर्शन करते रहें।

० ० ०

महात्मा गांधीका निधन सामान्यतः विश्वकी और विशेषतः भारतकी अपूरणीय क्षति है। वर्तमान संकटके समय देशको पथ-प्रदर्शन करनेके लिए उनकी सबसे अधिक आवश्यकता थी। इस निकृष्ट हिंसक हत्यारेने मानव जातिको सबसे बड़ी हानि की है। उसका यह कलुषित आचरण इतिहासका सबसे दुःखपूर्ण पृष्ठ सदैव बना रहेगा। ईश्वरसे प्रार्थना है कि अब भी यह देश महात्माजीके चरण-चिह्नोंपर चलता हुआ उनके सत्य, प्रेम और एकताके सिद्धांतका अनुसरण करे और उनके जीवनके आदर्शसे धर्मका उचित और मानवीय तत्व समझे।

❀

माननीय श्रीकृष्णदत्त पालीवाल

[सूचना एवं अर्थ-मन्त्री : युक्तप्रान्त]

हिन्दू-मुस्लिम एकताके लिए गांधीजी शूलीपर चढ़े। सांप्रदायिक एकताके उनके पवित्र संदेशको हमें पूरा करना या उसके लिए मरना है। शहीद गांधी महात्मा गांधीसे सौगुना शक्तिशाली है। सांप्रदायिक अधिनायकवादका सामना करनेमें उनकी दैवी-शक्ति हमारी सहायता करे।

० ० ०

महात्माजी राष्ट्रके पिता थे और संसारके उद्धारक थे। गांधीजीने देशकी जनतामें चेतना उत्पन्न की। उनकी राष्ट्रीयतासे अन्तर्राष्ट्रीयताका पथ प्रशस्त हुआ। मुसलमान गांधीजीको अपना शत्रु समझते थे, पर मुसलमानोंकी रक्षाके

लिए गांधीजीने अपना महाबलिदान कर दिया, जैसा कोई मुसलमान भी नहीं कर सकता। कुछ हिन्दुओंने परिगणित जातियोंको हिंदू-समाजसे बाहर जानेसे बचाया है, पर गांधीजीने अपने जीवनकी बाजी लगाकर परिगणित जातियोंका वर्ग पृथक करनेकी अंग्रेजी कूटनीति ही विफल कर दी। गांधीजीने देशको बलवान बनानेके लिए राजनीतिक एवं सामाजिक क्रांतियाँ की। इसके अतिरिक्त उन्होंने आर्थिक जनतंत्र स्थापित करनेका प्रयत्न किया। मार्क्सने भी साम्यवादके सिद्धांतों द्वारा जनताकी दरिद्रता दूर करनेकी चेष्टा की, पर यह सत्य है कि गांधीजी द्वारा निर्दिष्ट मार्गपर चलनेसे ही समाजमें सच्ची समता प्राप्त हो सकती है।

❀

मानतीय निसार अहमद शेरवानी

[कृषि एवं ग्राम-सुधार मन्त्री : युक्तप्रान्त]

जिस व्यक्तिके हृदयमें सत्यके प्रति तनिक भी आस्था होगी, उसे अवश्यमेव यह अनुभूति हुई होगी कि सम्प्रदायवादियों द्वारा तथा उनकी राजनीति द्वारा फैलाये गये विषके विरुद्ध संघर्ष करते हुए बापूने अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया। हमें आज प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि हम बापूके उज्ज्वल आदर्शोंपर चलनेका सतत प्रयास करें, जिससे उनकी महान आत्मा शान्तिके साथ विश्राम करे। भारतीय इतिहासको अपने जीवनमें इतनी बड़ी विपत्तिका सामना कभी नहीं करना पड़ा था। हमारे इस कुकृत्यने हमें पतनके भयंकर गर्त्तमें ढकेल दिया है।

❀

माननीय हुकुम सिंह

[न्याय एवं माल मंत्री : युक्तप्रान्त]

वह महान व्यक्ति हमारे देशका ही नहीं, समस्त विश्वका अनमोल रत्न था। आज उसे खोकर हम निर्धन हो गये हैं। भारत तो सदैव उनका आभार मानेगा, क्योंकि उन्होंने ही इसे प्राचीन लुप्त गौरव और स्वतंत्रता प्रदान की।

माननीय लालबहादुर शास्त्री

[मंत्री पुलिस-विभाग : युक्तप्रान्त]

सबसे बड़ा पाप कर डाला गया। विश्वके न्यायालयके सामने भारतका मस्तक इसलिए लज्जासे झुक गया कि उसीके एक देशवासीने अपने देशके ही नहीं वरन समस्त विश्वके सर्वश्रेष्ठ महामानवकी हत्या कर डाली। शान्तिके अग्रदूतसे आज विश्व वंचित हो गया। शान्तिके लिए वे जीते रहे और उसीके लिए उनका अंत हुआ। हमारी कामना है कि इस संकटपूर्ण कालमें उनका आत्म-बलिदान हमारे हृदयोंमें शांति और सांप्रदायिक एकताके परिपालनका भाव जागरित करे।

❀

माननीय आत्माराम गोविन्द खेर

[स्वास्थ्यतथा स्वायत्त शासन-मन्त्री : युक्तप्रान्त]

महात्माजीके निधनसे आज सारा विश्व दुःखी है। पीड़ित संसार अमानुषिकताकी अग्निमें तड़फड़ाता हुआ पूज्य बापूकी ओर टकटकी लगाये हुए मार्गप्रदर्शनकी याचना कर रहा था। उनका एक-एक शब्द विश्वके दलित राष्ट्रोंको, समाजोंको तथा व्यक्तियोंको ढाढ़स देता था। भारतके दलितोंके तो बापू साक्षात् मसीहा थे। उनके सत्य, अहिंसा, प्रेम और विश्व-बन्धुत्वके अटल सिद्धांतोंने सारे विश्वमें दलितोंको सहारा दिया है। भारतवर्षके हरिजनोंका तो बड़ा ही उपकार हुआ है। उनकी सर्वांगीण सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक उन्नति करनेका कार्यक्रम महात्माजीके पूरे जीवनका महत्वपूर्ण कार्य रहा है।

महात्मा गांधीजीका जीवन ही दुनियाँके लिए संदेश था। उनकी कार्य-शैलीसे स्पष्ट है कि उनका मुख्य जीवनोद्देश्य संसारके दुःखी, दरिद्र, दलित वर्ग तथा कुचले हुए देशोंको दुःखोंसे छुड़ाना था। इसी कारण उन्होंने हिन्दुस्तानमें दलित वर्गोंकी उन्नति तथा उन्हें समाजमें बराबरीका स्थान प्राप्त करानेका कार्यक्रम अपने सभी कार्योंका प्रमुख अंग बनाया था। उन्होंने अपने देशको अपना कार्यक्षेत्र बनाया, यह स्वाभाविक ही था। यहाँकी पतनावस्थासे वह विह्वल हो गये और यहाँकी सामाजिक व्यवस्थाको, जिनके कारण दलित वर्ग सदियोंसे कुचला जा रहा था, वह हमारे राजनीतिक पतनके मुख्य कारणोंमें समझते थे। हमारा देश अंगरेजी साम्राज्यकी गुलामीसे दुःखी था और दलित वर्ग गुलामोंका

अब भारतीय जनतापर आ पड़ा है। इतिहासमें यह प्रथम अवसर नहीं है कि प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ रूढ़िवादितामें पड़ी रहकर समयानुकूल परिवर्तनकी उपेक्षा करें, अपनी इच्छाके विरुद्ध क्रान्तिको आगे बढ़ते देखकर चकित तथा भयभीत हों और अंतमें निराश होकर उस उपायका प्रयोग करें जो हिन्दू-राष्ट्रके नामपर प्रतिक्रियावादके एक प्रतिनिधिने गांधीजीके साथ किया। उन्होंने नहीं समझा कि ऐसा करनेसे क्रान्तिको बल तथा स्फूर्ति मिलेगी और स्वयं उनकी शक्ति क्षीण होगी। मुझे पूर्ण आशा है कि इन प्रतिक्रियावादी शक्तियोंका अब स्वयं ही विनाश होगा और इस अभागे देशका अनैक्य, जो लक्ष्यतक पहुँचनेमें सबसे अधिक बाधक था, मार्गको अधिक समय तक न रोक सकेगा। गांधीजीके अपूर्व अन्तिम बलिदानसे उनका नश्वर शरीर अब संसारमें नहीं रहा, परन्तु उनका क्रान्तिकारी संदेश अमर हो गया। वह हमें कठिनाइयोंमें सदैव दीपककी भाँति प्रकाश देता रहेगा और उस कामके पूरा करनेमें सहायता देगा जिसे पूरा पूरा करके ही यह देश पीड़ित संसारका नेतृत्व कर सकेगा तथा अपने प्राचीन गौरवको फिरसे प्राप्त करनेमें समर्थ होगा। उस लोकका गांधी जीवित गांधीसे अधिक शक्तिशाली है। क्रान्तिकारी गांधी चिरंजीवी हो।

माननीय केशवदेव मालवीय

[विकास एवं उद्योग-मंत्री : युक्तप्रान्त]

गांधीजीने सारे जीवनमें हमें यही बताया और स्वयं काम करके यह दिखाया कि छोटे-छोटे कामोंमें देशकी समृद्धि है और यदि हम इन छोटे कामोंके करनेमें गर्व नहीं करते तो हम हर मानीमें ओछे हैं, तुच्छ हैं और संसारमें रहने योग्य नहीं हैं।

मैं अपने देशके नवयुवकोंसे यह कह देना चाहता हूँ कि यदि तुम्हें अपने देश तथा जातिका मान रखना है और साथ ही साथ दूसरे देशोंके बराबर अपने देशको सुदृढ़ बनाना है तो तुम गांधीजीके निधनके बाद उनके बताये हुए वही काम करना सीखो जो गांधीजी पिछले ३०-४० वर्षोंसे हमसे और तुमसे करनेको कहते आये हैं। यानी जो काम हरिजनोंके लिए हमने अलग कर रखा था, जिस कामको राजगीरोंकी बपौती हम समझे हुए थे, उन्हें करनेमें हमें उतना ही अभिमान करना चाहिये जितना दफ्तरोंमें बैठकर लिखापढ़ी करने या पढ़ने-लिखनेमें अथवा ड्राइंग रूमको सुसज्जित करनेमें हम किया करते हैं। आज देशके आर्थिक गठनके लिए ऐसा विचार जरूरी है। इसके लिए कानून

अब भारतीय जनतापर आ पड़ा है। इतिहासमें यह प्रथम अवसर नहीं है कि प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ रूढ़िवादितामें पड़ी रहकर समयानुकूल परिवर्तनकी उपेक्षा करें, अपनी इच्छाके विरुद्ध क्रान्तिको आगे बढ़ते देखकर चकित तथा भयभीत हों और अंतमें निराश होकर उस उपायका प्रयोग करें जो हिन्दू-राष्ट्रके नामपर प्रतिक्रियावादके एक प्रतिनिधिने गांधीजीके साथ किया। उन्होंने नहीं समझा कि ऐसा करनेसे क्रान्तिको बल तथा स्फूर्ति मिलेगी और स्वयं उनकी शक्ति क्षीण होगी। मुझे पूर्ण आशा है कि इन प्रतिक्रियावादी शक्तियोंका अब स्वयं ही विनाश होगा और इस अभागे देशका अनैक्य, जो लक्ष्यतक पहुँचनेमें सबसे अधिक बाधक था, मार्गको अधिक समय तक न रोक सकेगा। गांधीजीके अपूर्व अन्तिम बलिदानसे उनका नश्वर शरीर अब संसारमें नहीं रहा, परन्तु उनका क्रान्तिकारी संदेश अमर हो गया। वह हमें कठिनाइयोंमें सदैव दीपककी भाँति प्रकाश देता रहेगा और उस कामके पूरा करनेमें सहायता देगा जिसे पूरा पूरा करके ही यह देश पीड़ित संसारका नेतृत्व कर सकेगा तथा अपने प्राचीन गौरवको फिरसे प्राप्त करनेमें समर्थ होगा। उस लोकका गांधी जीवित गांधीसे अधिक शक्तिशाली है। क्रान्तिकारी गांधी चिरंजीवी हो।

❀

मानीय केशवदेव मालवीय

[विकास एवं उद्योग-मंत्री : युक्तप्रान्त]

गांधीजीने सारे जीवनमें हमें यही बताया और स्वयं काम करके यह दिखाया कि छोटे-छोटे कामोंमें देशकी समृद्धि है और यदि हम इन छोटे कामोंके करनेमें गर्व नहीं करते तो हम हर मानीमें ओछे हैं, तुच्छ हैं और संसारमें रहने योग्य नहीं हैं।

मैं अपने देशके नवयुवकोंसे यह कह देना चाहता हूँ कि यदि तुम्हें अपने देश तथा जातिका मान रखना है और साथ ही साथ दूसरे देशोंके बराबर अपने देशको सुदृढ़ बनाना है तो तुम गांधीजीके निधनके बाद उनके बताये हुए वही काम करना सीखो जो गांधीजी पिछले ३०-४० वर्षोंसे हमसे और तुमसे करनेको कहते आये हैं। यानी जो काम हरिजनोंके लिए हमने अलग कर रखा था, जिस कामको राजगीरोंकी बपौती हम समझे हुए थे, उन्हें करनेमें हमें उतना ही अभिमान करना चाहिये जितना दफ्तरोंमें बैठकर लिखापढ़ी करने या पढ़ने-लिखनेमें अथवा ड्राइंग रूमको सुसज्जित करनेमें हम किया करते हैं। आज देशके आर्थिक गठनके लिए ऐसा विचार जरूरी है। इसके लिए कानून

इसमें सन्देह है। यदि उनके आदर्श हमारे हृदयोंमें जीवन तथा ज्योति पैदा कर सकें तो यह सिद्ध होगा कि महापुरुष मरनेपर भी दुनियाँका पथप्रदर्शन करते हैं।

उनकी जय हमने बहुत मनाई पर उनके आदर्शोंका पालन नहीं किया। गांधीजीने अपनी तपस्यासे देशको ऊँचा उठाया। भविष्यमें भी अगर हम गांधीजीके बताये मार्गका अनुसरण करेंगे तो इतना कहा जा सकता है कि हम उनको जीवनमें संतुष्ट नहीं कर सके, पर शायद उनकी आत्माको संतुष्ट कर सकेंगे।

❀

पंडित बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

[प्रान्तके तेजस्वी नेता और साहित्यकार]

मुझसे कहा गया है कि मैं एक लेखक और कविके रूपमें महात्माजीकी वन्दना करूँ। वास्तवमें मेरे जैसे जनके लिए महात्मा गांधीको खण्ड खण्ड करके देख सकना संभव नहीं है। मैं उन लक्षावधि जनोंमेंसे एक हूँ जिनके ऊपर गांधीजीका प्रभाव सर्वरूपसे सब दिशाओंसे पड़ा है और इस कारण मैं यदि गांधीको केवल एक लेखक या एक साहित्य-निर्माताके रूपमें देखनेका प्रयास करूँगा तो मुझे ऐसा लगेगा जैसे मैं गांधीजीको ठीक ठीक देख नहीं रहा हूँ और न उन्हें समझनेका प्रयास कर रहा हूँ। एक उदाहरण यदि मैं आपके सामने रखूँ तो आपको मेरी बात स्पष्ट हो जायगी। गीताको लीजिये। उस महान ग्रन्थकी भाषा आप देखिये। आप गीताकारको साहित्यकार कहते हुए कदाचित संकोच करेंगे किन्तु यदि आप स्वर्गीय पुण्यश्लोक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ऐसे महान विद्वानके मतको देखेंगे तो आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि उन्होंने गीताकारके संबंधमें कहा है कि वे एक अद्भुत साहित्यिक थे क्योंकि उन्होंने जीवनमें ऊँचेसे ऊँचा तत्व सरलसे सरल भाषामें व्यक्त करनेका अद्भुत प्रयास किया है। गांधीजीके संबंधमें भी यही बात कही जा सकती है। जीवनके गहरेसे गहरे तत्वोंको उन्होंने भी सरलतापूर्वक जिस प्रसादगुणमयी भाषामें व्यक्त किया है उसे देखकर आश्चर्य होता है। आपको कदाचित् ज्ञात ही है कि उन दिनों हमारे देशमें इस प्रश्नकी अत्यधिक चर्चा थी कि ईसाईयोंको भारतवर्षमें लोगोंको ईसाई बनानेका काम करना चाहिये या नहीं। हमारे गांधीजी महाराज इसके विरुद्ध थे। खुद ईसाई लोग उनसे वार्तालाप करनेके लिए आये। उस समय उन्होंने जो एक बात कही वह आप देखें—कितनी बड़ी बात थी। उन्होंने कहा—'भाई तुम ईसाई धर्मका प्रचार करते हो न।' तो वे बोले—'हाँ'।

गांधीजीने कहा—'जो गुलाबका फूल है वह छतपर चढ़कर इस बातकी घोषणा नहीं करता है कि लोगों मुझे सूँघो। मैं गुलाबका फूल हूँ, आओ भाई! उसकी तो आंतरिक सुगंध ही ऐसी होती है कि भौंरे भी आ जाते हैं और फूलके लोभी भी उसके पास पहुँच जाते हैं। अतः यदि तुम्हारा जीवन इंसानियतसे सुगंधित हो जाय तो लोग अपने आप तुम्हारे पास आवेंगे। लोगोंको धर्म-परिवर्तित करनेकी, उनको ईसाई बनानेकी जो प्रक्रिया तुम करते हो उससे क्या लाभ।' यह ऐसी बात उन्होंने कही जिसे सुनकर सब लोग दंग रह गये और किसीका साहस नहीं पड़ा कि बहस करे। जितने महापुरुष, जितने युगावतार पुरुष होते हैं, जितने संत पुरुष होते हैं, सब ऊँचे कोटिके साहित्यकार होते हैं। कोई उपन्यास लिख लेना या कविता कर लेना ही उच्च कोटिकी साहित्य-रचना नहीं है। उच्च कोटिके साहित्यकार तो वे ही होते हैं। प्रभु ईसाको देखिये, उनकी नीतिकथाएँ देखिये। उनकी प्रतियोगितामें, उनके मुकाबिलेमें, क्या विश्व-साहित्यमें कोई कहानी आपको मिल सकती है? हाँ, टालस्टाय अवश्य कुछ समान होते हैं नीतिकथाओंमें, अपनी कहानियोंमें। किन्तु भगवान ईसा-मसीहके मुखसे जो कहानियाँ उद्घोषित हुई हैं, वह तो इस पृथ्वीके साहित्यकी अमर निशानी हैं। इस प्रकार महात्मा गांधीके एक एक वाक्य अमर रहेंगे। गायके संबंधमें उन्होंने एक बार कहा—'गाय करुणाका काव्य है।' मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि क्या एक भी साहित्यकार ऐसा उत्पन्न हुआ है जिसने गायको काव्य कहा हो, काव्यकी धारा लिखा हो। आप तुलना कीजिये, करुणाकी काव्य-धारा और उसके दुग्धकी धारा!! फिर कहते हैं—उसकी आँखोंकी ओर मेरी दृष्टिसे देखो। तुमको समूची करुणा उसकी आँखमें एकत्र मिलेगी।' जिसने भी गायको देखा है वह समझता है कि कितनी करुण आँखें होती हैं उसकी। भला बताइये, जो आदमी इस रूपमें वस्तु-स्थितिके दर्शन कर सकता है वह कितना महान साहित्यकार है। और साहित्यकी मैं क्या कहूँ। उन्होंने तो गुजराती साहित्यको प्रायः सात-आठ सौ नये-नये शब्द दिये। गुजरातीको, हमारे देशकी भाषाको, हमारे देशके विचारको, हमारे देशकी शैलीको जो उन्होंने एक नयी दिशा सुझायी है वह ऐसी है जिसके लिए महानसे महान साहित्यकार भी गौरवका अनुभव कर सकता है। अतः मैं गांधीजीको एक बहुत ऊँची श्रेणीका साहित्यकार-महारथी मानता हूँ और इस नाते भी उनकी पुण्य-स्मृतिमें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

डाक्टर अमरनाथ झा

[कुलपति : काशी हिन्दू विश्वविद्यालय]

महात्माजीका पार्थिव शरीर अब नहीं है। किन्तु उनकी आत्मा सदैव अमर रहेगी। उनका शोकपूर्ण अन्त हमारे हृदयमें भय और आक्रोशकी भावना उत्पन्न करेगा, पर इस भीषण संकटके समय प्रेम, दया, उदारता और क्षमाकी भावना हममें जागे, यही हमारी प्रार्थना है। ईश्वर करे, इस दुर्घटनासे समस्त देशमें सद्भावना उत्पन्न हो। देशके करोड़ों नर-नारियोंके लिए यह व्यक्तिगत और महत्वपूर्ण क्षति है। इतना ही नहीं, यह अन्तर्राष्ट्रीय क्षति भी है। भगवान करे, उनका लक्ष्य पूर्ण और सफल हो।

डाक्टर ताराचन्द

[कुलपति : प्रयाग विश्वविद्यालय]

महात्मा गांधीका निधन उनका पुनर्जन्म है। अपने ही लोगों द्वारा उन्होंने वीर गति प्राप्त की और अब वह सब युगोंके महत्तम व्यक्तियोंमें श्रेष्ठ हो गये हैं। अपने पुनीत आदर्शोंके लिए महात्माजीने अपना सब कुछ निछावर कर दिया था और जीवनके अंततक निर्भीकतासे उन्होंने अपने कर्त्तव्यका निर्वाह किया। गांधीजी मर नहीं सकते। जिन आदर्शोंके लिए उनका जीवन था, वे अमर हैं। सत्य और अहिंसाके लिए उन्होंने आत्म-बलिदान किया। उनके हृदयमें न किसीके प्रति द्वेष था, न ईर्ष्या। वह स्नेह और प्रेमकी मूर्ति थे। उनसे मिलकर आत्मा उत्फुल्ल हो उठती थी। दुर्निवार्य कठिनाइयोंमें भी वे हँसते रहते थे। उनके पास सभी नेता विचार-विमर्श एवं परामर्शके लिए जाते थे और उनका प्रभाव ऐसा था कि अंधकारमें भटकनेवालोंको भी वहाँ आशाकी किरण दिखलायी पड़ने लगती थी।

❀

"मेरे पास सिवा प्रेमके और कुछ नहीं हैं। उसीसे मैं अपने विरोधीको अपने समीप खींचता हूँ। मनुष्य और मनुष्यमें वैरकी कल्पना भी मैं नहीं कर सकता। मैं इसी आशामें रहता हूँ कि इस जन्ममें नहीं तो दूसरे जन्ममें मैं अपने प्रेमपूर्ण आलिंगनमें सारी मानवताको हृदयसे लगा सकूंगा।" —गांधीजी

डाक्टर नारायणप्रसाद अष्ठाना

[कुलपति : आगरा विश्वविद्यालय]

इस संकट कालमें महात्माजीकी मृत्युसे अपूरणीय क्षति हुई है। इस समय उनकी बड़ी आवश्यकता थी। महात्माजीने अपने शान्तिमय प्रभावको अमर कर दिया है।

❀

महापंडित राहुल सांकृत्यायन

[अध्यक्ष : अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन]

आजसे पहले भारतमें मतभेदके कारण कहीं ऐसी कायरतापूर्ण हत्या नहीं की गयी थी। बुद्धने कठोरसे कठोर सत्य कहा तथा समाजकी कुरीतियोंपर प्रहार किया किंतु संपूर्ण जीवनका उपयोग किया और अंतमें निर्वाणको प्राप्त हुए। महावीरने अपने युगकी सामाजिक दुर्व्यवस्थाकी आलोचना की किन्तु किसीने उनपर आक्रमण नहीं किया। इस घृणित कार्यने, जिसकी तुलना हमारी परंपरामें, हमारी संस्कृतिमें नहीं है, हमारे इतिहासको कलंकित कर दिया है।

महात्मा गांधीकी हत्या बहुत कायरतापूर्ण कृत्य है। उनकी हत्या करनेमें कोई कठिनाई नहीं थी। वह तो बिना किसी प्रकारकी रक्षाके लाखों प्राणियोंके बीच चला करते थे। अपनी रक्षाकी कभी उन्होंने चिंता नहीं की। उन्होंने अपने जीवनके प्रत्येक क्षणका पूर्ण उपयोग किया। देशकी स्वाधीनताका उनका सपना साकार हुआ। जो उनकी इच्छा थी, पूर्ण हुई। अपने जीवनका ध्येय वह पा गये। इस निकृष्ट कृत्यसे हत्यारेको मिला ही क्या ?

गांधीजीकी हत्याका अपराध केवल गोडसेका नहीं है। उसके पीछे बहुतसे लोग हैं जिनकी कुचेष्टाओंका वर्णन हम लोग इधर सुनते रहे हैं। हम लोग सुन रहे थे कि यह लोग वर्तमान शासनको उलट देनेका षड़यंत्र कर रहे थे। गांधीजीने, यदि वे होते तो अपने हत्यारेको क्षमा कर दिया होता किंतु राष्ट्र उसे कभी क्षमा न करेगा। यदि हम अपराधियोंको दंड नहीं देते तो अपने कर्तव्यसे च्युत होंगे।

गांधीजीके जीवनका प्रत्येक क्षण कर्तव्यसे पूर्ण था और उनकी मृत्यु भी निरर्थक न होगी। उनका अस्सी सालका जीर्ण शरीर बुद्धके शब्दोंमें शकटके समान

चलता था। तभी तो उसको शांति प्राप्त होती थी किंतु इस प्रकारकी शांति महत्व-पूर्ण थी। उनकी मृत्यु उनके जीवनके समान ही महान है। गांधीजीका स्थान शताब्दियोंतक दिव्य रहेगा। गांधीजी सच्चे अर्थोंमें राष्ट्रके पिता थे। देशके जागरणमें उनका बड़ा हाथ था। भारत कभी मर नहीं सकता ; गांधीजी भी कभी मर नहीं सकते। गांधीजीने हमें राह दिखायी है। उन्होंने हमें वह दीपक प्रदान किया है जिसके प्रकाशमें हम अपना पथ देख सकेंगे। यदि ऐसा न होता तो गांधीजीका सारा जीवन व्यर्थ होता।

निर्वाणके समय जैसा बुद्धने कहा था, उसी प्रकार हमारे राष्ट्र-पिताने कहा—"अपने ऊपर निर्भर रहो, स्वयं अपने प्रकाश बनो।"

❀

श्री विधुभूषण मलिक

[प्रधान न्यायाधीश : उच्च न्यायालय, प्रयाग]

हम परम विपत्तिमें मिल रहे हैं। महात्माजीकी मृत्युसे केवल भारत तथा हिंदू समाजकी ही हानि नहीं हुई, समस्त मानवताकी क्षति हुई है। हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई सबका अहित हुआ है। जैसे भारतकी वैसे ही पाकिस्तानकी की भी क्षति हुई। सभी शान्तिप्रिय देशोंका अहित हुआ है। स्वतंत्रताके द्वारमें प्रवेश करते ही हमको आश्रय देनेवाला राष्ट्र-निर्माता चला गया। यह देशके लिए भयंकर विपत्ति है। युगोंसे भारत सहिष्णुताके लिए प्रसिद्ध है। यह सदाके लिए कलंक हो गया कि शान्ति एवं अहिंसाके इस महर्षिका वध एक भारतीय द्वारा अनायास किया गया। वधिकको पागल कहा गया है, पर यह हमारे देशके नैतिक पतनका चिन्ह है।

महात्माजी ईश्वर-भक्त थे। उनका विश्वास था कि ईश्वरकी इच्छाके विना मेरी मृत्यु नहीं हो सकती। मुझे आशा है कि उनकी मृत्युके वाद हम उनके सत्य तथा अहिंसाके उपदेशोंको मानेंगे। महात्माजीकी दृष्टिमें सभी मनुष्य समान थे। उनकी दृष्टिमें शूद्र, ब्राह्मण तथा हिन्दू, मुसलमान सब बराबर थे। दो राष्ट्रोंका सिद्धांत उन्हें मान्य नहीं था।

सहिष्णुताके इस देशमें सर्वदा असहिष्णुता व्याप्त है। उनका कहना था कि यदि पाकिस्तानमें हिन्दू और सिख उत्पीड़ित हुए तो उसके लिए यहाँके मुसलमानोंको दण्डित करना उचित नहीं।

हम उनके अनुयायी बनें और हृदयसे समस्त द्वेष निकाल दें। उत्पीड़ितोंको यहाँके मुसलमानोंके प्रति द्वेष नहीं रखना चाहिये। वे निर्दोष हैं। दण्डको दण्ड देना चाहिये। द्वेषसे द्वेष बढ़ता है। विधानके अनुसार दण्ड देनेका काम न्यायालयोंका है, व्यक्तियोंका नहीं। केवल विशेष अवसरोंपर ही उन्हें बदला लेनेका अधिकार है। यदि हमारा जीवन शुद्ध और सेवा-भावसे पूरित हो, यदि हममें भ्रातृ-भावना हो और ईश्वरको हम पिता समझें तो गांधीजीकी मृत्यु व्यर्थ न होगी।

❀

मौलाना हफिजुल रहमान

[प्रधानमन्त्री : जमैतुल-उलमा हिन्द]

महात्माजीके लिए शोक प्रकट करनेका सबसे अच्छा ढंग यह है कि हम देशसे साम्प्रदायिकता दूर करें और उनके सिद्धांतोंको कार्यान्वित करें।

उस सबसे बड़े अभागेने, जिसने यह कुत्सित कृत्य किया, विश्व-शान्तिका चुनौती दी है। हम हिन्दुओं, मुसलमानों, सिखों और समस्त भारतवासियोंका कर्त्तव्य है कि उनके एकता और शान्तिके संदेशको जीवित रखें और निकृष्ट शक्तियोंको सदाके लिए समाप्त कर दें।

❀

बाबा राघवदास

[तेजस्वी कार्यकर्त्ता और सुप्रसिद्ध गांधीवादी]

महात्माजीकी हत्या हमारे लिए कलंक है। भारतके वह भाग्य-विधायक थे। उनके त्याग और तपस्यासे ही हमें स्वराज्य मिला था। आज भारत अनाथ हो गया है। वह उन प्रातःस्मरणीय पुरुषोंमें हैं जिनपर सारा संसार गर्व कर सकता है। हमें आँसू बहाकर नहीं, बल्कि उनके बतलाये पथपर चलकर ही अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करनी चाहिये और यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

❀

नवाब मुहम्मद सईद

[छतारीके नवाब]

भारतने आज अपनी आत्मा खो दी, इसका बड़ा भारी दुःख मुझे है।

जहीरुल हसन लारी

[विरोधी दलके नेता : युक्तप्रांतीय व्यवस्थापिका सभा]

हृदय दुःखी है और आँखें भींगी, मानवता शोकमें है। हिन्दुस्तान लज्जित है कि उसीके पुत्रके हाथोंने इस क़ौमके पिता, सत्याग्रहके बानी, सचाईके पुजारी और हिन्दू-मुस्लिमके दायीको हमारे दर्मियानसे उठा दिया। जिस्म तो चला गया लेकिन उनकी रूह आज भी हममें बाकी है और उनका पैगाम मुल्क और दुनियाँके सामने रोशन है। तीस वर्ष हुए, जब हमारा मुल्क गुलाम था, हमारी कौम मुर्दा हो चुकी और बस उस वक्त इस महात्माने हममें वह कूवत पैदा की जो साम्राज्यकी हुकूमतका मुकाबिला करे और आज मुल्क जो आजाद है, आज जो हम सरबुलन्द हैं, आज जो हम दुनियाँके सामने खड़े हो सकते हैं वह उसी महात्माकी कोशिशोंका नतीजा है। उन्होंने वह इखलाकी कूवत पैदा की जिस इखलाकी कूवतके बायस आज हम आजाद हैं। उन्होंने इन्सानियतको बतलाया, साम्राज्यी कूवतोंको बतलाया कि हम इखलाकी तरीकोंसे भी गुलामी खत्म कर सकते हैं और मुल्कको आजाद करा सकते हैं। महात्माने समझा कि शायद आजादीका जिस्म तो हमें हासिल हुआ लेकिन रूह हममेंसे उड़ गयी। शहादत पानेवाला कभी मरता नहीं, वह हमेशा जिन्दा रहता है और अगर दुनियाँकी तवारीखपर हम नजर डालें तो बहुत कम ऐसे सानहे नजर आयेंगे। वह एक हिन्दूके घरमें पैदा हुए, लेकिन मुसलमानकी खातिर जान दी। तवारीखमें चन्द ही ऐसी मिसालें हैं। हमें वह वक्त याद आता है जब सुकरातने अपने उसूलोंकी खातिर जहरका प्याला नोश किया। हमें याद आता है वह जमाना जब हजरत ईसाने दूसरोंके गुनाहोंकी खातिर अपनी कुरबानी कर दी। हमें याद आता है वह जमाना जब इमाम हुसैनने वहशियाना कूवतका मुकाबला करनेके लिए खुदको दुश्मनोंके सामने पेश कर दिया। यह उसी किस्मकी एक मिसाल है जो फिर इस मुल्कने दुनियाँके सामने पेश की। इस मुल्कने महात्मा बुद्ध ऐसा फिलासफर दिया, अशोक ऐसा हुक्मरां दिया, अकबर ऐसा सुलहजू दिया; लेकिन शायद इनमेंसे इतना अमीक, इतना हमगीर और इतनी कुरबानी करनेवाला कोई नहीं था जितनी महात्माकी जात थी।

❀

"मुझे नाशवान ऐहिक राज्यकी कोई अभिलाषा नहीं है। मैं तो ईश्वरीय राज्यको पानेका प्रयत्न कर रहा हूँ। वही है मोक्ष। मनुष्य जातिकी सेवा करनेके लिए सतत परिश्रम करना ही मुक्ति का मार्ग है।" —गांधीजी

राजा जगन्नाथबख्श सिंह

[जमींदार पार्टीके नेता : युक्तप्रांतीय व्यवस्थापिका सभा]

जो दुर्घटना हुई है वह ऐसी महान है जिससे यह देश ही नहीं परन्तु सारा संसार शोकग्रस्त हो गया है। महात्मा गांधीका आत्मत्याग, उनकी देशसेवा, उनका दिल ऐसा था जो संसारका परिवर्तन कर सकता है और ऐसी महान आत्मा मिलनी दुर्लभ है।

ऐसी अमर आत्मावाले महात्माजी, नश्वर शरीरके नष्ट हो जानेसे भी नाशको नहीं प्राप्त हो सकते। हमको स्मरण है कि महात्मा बुद्धके भौतिक शरीरके नाश होनेपर उनके विचारोंने किस प्रकार संसारमें अपना प्रकाश फैलाया। शंकरस्वामीके इस शरीरके नाश होनेपर उनके ज्ञानके विचारोंसे जिस प्रकार हमको शिक्षा मिली उसी प्रकार इस दुर्घटनामें भी यह शान्तिकी ज्योति दिखलायी पड़ती है। महात्माजीके प्रस्थान करनेपर यद्यपि हम बहुत दुःखी हैं तथापि उनके विचार दिनों-दिन फैलते जायँगे। उनके अनुयायी और उनके विचार इसी प्रकार बढ़ेंगे जिस प्रकार महात्मा बुद्ध और शंकरस्वामीके बढ़े हैं। महात्माजी अनेक महात्माओंके आदर्शोंकी सामूहिक शक्ति माने जाते हैं। महात्मा बुद्ध जैसे शान्तिके विचार, शंकरस्वामी जैसे वेदान्ती विचार और भीष्म जैसे दृढ़प्रतिज्ञावाले महात्मा गांधीजी थे। ऐसे महात्माके निधनपर यद्यपि हम बहुत दुःखी हैं और जो धक्का हमको लगा वह इस भारतवर्षका प्रत्येक व्यक्ति अनुभव कर सकता है, पर हमें संतोष है कि उनके विचारोंसे हमें दिनों-दिन सहायता मिलेगी। उनके स्मारकसे इस देशको वही कल्याण प्राप्त होगा जो उनकी जीवित अवस्थासे इस देशको प्राप्त होता। मैं इस दुःखद अवस्थामें इससे अधिक कह नहीं सकता।

❀

ई० एम० फिलिप्स

[ईसाई नेता : युक्तप्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा]

मैं दीगर अकलीयतोंकी तरफसे यह कहना चाहता हूँ कि यह ऐसा मौका है जब आज हम लोग बड़े अफसोसके साथ हाजिर हैं और इस बातका इजहार करते हैं कि हमारे बापूजी, महात्मा गांधी, जो अब हमारे बीच नहीं हैं और इस घटनाके जरिये मार डाले गये हैं उनके देशमें न रहनेसे हमको बहुत सख्त

नुकसान हुआ। इसमें शक नहीं कि महात्मा गांधी हमारे दरम्यान ऐसी बातोंको बतलाते रहे जिनपर न सिर्फ हिन्दुस्तान ही बल्कि दूसरे देशोंके तमाम लोग भी अमल करते रहे और उनसे फायदा उठाते रहे। इसमें कोई शक नहीं कि वे मसीहाके बहुत पूरे पैरो थे।

इसमें कोई शक नहीं है कि बापूजी सब कौमोंको साथ लेकर चलते थे और सबको वह बातें सिखाते थे जो एक इंसानको दूसरे इंसानके साथ करना चाहिये। इसमें कोई शक नहीं कि महात्माजीके पास बड़ीसे बड़ी वे बातें जो पिछले गुजरे हुए जमानेमें बड़े बड़े कवियोंने कही हैं उनके अमलमें मौजूद थीं। बाइबिल, भगवद्-गीता, इंजील, और कुरान यह सब उनकी निहायत पसंदीदा किताबें थीं। उनके दरमियान जो विचार है उनसे वह हमें और आप सबको आगे बढ़ना सिखाते रहे। मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि उन्होंने किस तरीकेसे हमेशा ऐसी सब बातोंका संदेश आपके सामने पेश किया जो हमें और आपको सबको मिलाकर, सबको एक दूसरेसे सहयोग सिखाकर मजबूत बनाता है। उन्होंने हमारे दर्मियान मुहब्बतका इतना प्रचार किया जितना मसीहने बताया और जो पहले कवियों के १३ बाबमें इंजीलमें दर्ज है। यह बहुत मुश्किल है कि कोई दूसरा इंसान इस हदतक पहुँच सके। मैं आपके सामने यह भी याद दिलाना चाहता हूँ कि जिस शख्सने उनके ऊपर बम फेंका था, उन्होंने किस तरहसे रहम-दिलीका उससे बर्ताव किया। उनका मसीही उसूल था कि अपने दुश्मनके साथ रह-मका बर्ताव करो और उसके लिए दुआ मागों। उनको बख्श दो। उनको साथ लेकर चलो। उनका वैसा ही वसूल था जैसा हजरत ईसाने सलीबपर फर्माया था कि 'हे पिता! इनको माफ कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि हम क्या कर रहे हैं।' इस मसीही उसूलके सच्चे पुजारी, हमारे बापूजी, महात्मा गांधी थे। आपका बड़ा मसीही प्रचार यह था कि सब मुबारक रहें। हम तो यह समझते हैं कि वे हिन्दु-स्तानके लिए सलीबपर चढ़ा दिये गये। न सिर्फ हिन्दुस्तानके लिए बल्कि तमाम दुनियाँको इससे सबक मिला। और सब अखबारवालोंने यह मसीहाकी मिसाल पेश की जिससे यह पता चलता है कि वह हजरत ईसाके कैसे सच्चे मानने-वाले थे। और यह भी सच है कि अगर हमारे दर्मियान उसी तरीकेसे उनकी बातों-पर अमल होता रहेगा, तो उनके वह उसूल हमारे दर्मियान कायम रहेगें जिनके वे सच्चे पुजारी थे। काश, हमारे मुसलमान भाई इस बातको कुछ अर्सा पहले समझ गये होते तो हमारा मुल्क आज एक होता और बापूजी भी मारे न जाते। अब उनको मालूम हो गया कि वह सच्चाई पर थे और उनके लिए जान देनेको तैयार थे। महात्मा गांधीकी सच्चाईको मिस्टर जिन्ना मान लेते तो यह मुल्क बँट कर दो न होता। हम जानते हैं कि अब हमारे मुसलमान भाइयोंपर इस बातका इतना असर है जो हमेशाके लिए उनके दर्मियान कायम रहेगा।

आप लोगोंके सामने याद दिलाना चाहता हूँ कि महात्माजीका एक पसंदीदा गीत था जो हमारे दर्मियान हमेशा पेश किया जाता था। उसका तर्जुमा यों है—

(१) जिस क्रूसपर ईसा मरा था,
उस क्रूसपर जब मैं ध्यानता हूँ,
संसारी लाभको टोटा-सा,
और जसको अपजस जानता हूँ।

(२) मत फूल जा मेरे मन निर्बुध,
इस लोकके सुख और संपतपर,
तू ख्रीष्टके मरनकी कर सुध
और उसपर सारी आशा धर।

(३) देख उसके सिर, हाथ, पाँवके घाव,
ये कैसा दुःख और कैसा प्यार,
अनूठा है ये प्रेम-स्वभाव,
अनूप ये जगका तारनहार।

(४) जो तीनों लोक दे सकता मैं,
इस प्रेमके जोग ये होता क्यों,
हे यीसू प्रेमी आपके तईं,
मैं देह और प्रान चढ़ाता हूँ।

महात्माजीके बारेमें जो कुछ भी कहा जाय वह थोड़ा है। मैं आप सब लोगोंसे यह दरख्वास्त करता हूँ कि हम सब लोग गांधीजीकी उन बातोंको याद करें और उसीके मुताल्लिक उनके ख्यालको सामने रखें।

❀

नवाब मुहम्मद यूसुफ़

[प्रसिद्ध मुसलिम नेता]

इससे ज्यादा बदकिस्मती किसी कौम या किसी मुल्ककी क्या हो सकती है कि महात्माजी ऐसी हस्ती, जो दुनियाँमें आज रोशन है, जिसके फलसफे-जिन्दगीने आज वह काम किया है जिसकी वजहसे हम दुनियाँके बुलन्द लोगोंमें समझे जाते हैं, हमसे जुदा हो जाय। हम हिन्दुस्तानके लोग और हमारे फलसफे इस कदर बुलन्द हैं कि हम दुनियाँको रोशनी दिखाते

रहे हैं और आगे भी दिखायेंगे। गांधीजीकी तालीम, मुहब्बत, सच्चाई, रवादारी, अमन, चैन, इन्साफकी थी। गांधीजी उन उसूलोंके एक जिंदा तसवीर थे क्योंकि हर एक शख्सके दिलमें उनके लिए जगह थी। बादशाहोंने, प्राइम मिनिस्टरोंने, गरीब व अमीर सबने, दुनियाके हर कोनेसे दर्द भरे अल्फाजमें बयानात दिये और उनकी इज्जत की। हमसे ज्यादा बदकिस्मत कोई नहीं हो सकता। जब हमें उनकी सबसे ज्यादा जरूरत थी और ऐसे मुश्किल वक्तमें वह हमारे दर्मियान नहीं रहे। उन्होंने हमें आजाद कराया। हमें सही रास्तेपर चलानेकी कोशिशमें थे कि सारे हिंदोस्तानके हिन्दू-मुसलमानोंके दिलमें ऐसी मुहब्बत पैदा हो जाय जिससे बुलंदी न सिर्फ अपना मुल्क हासिल करे, बल्कि एशिया और सारी दुनिया हासिल करे।

आज वह हममें नहीं हैं। वह शहीद हो गये हैं। मगर बड़े लोग और फिलासफर जिनकी जिन्दगी कौमको बनाती है, मरनेके बाद मुर्दा नहीं हो जाते, बल्कि वह फिर जिन्दा हो जाते हैं। लिहाजा यह तो खुली हुई बात है कि जितना भी हम गम करें वह कम है। मगर हम अब अमल करनेको तैयार हो जावें। उनकी हिदायत, मोहब्बत, रवादारीकी बिनापर, हमको वह फेल करने चाहिये जिससे हम उनकी बुलन्दीको साबित कर सकें, क्योंकि वह सिर्फ हमारी कौमके लिए नहीं थे, वह तो सारी एशियाके लिए, बल्कि सारी दुनियांके लिए थे। हमने गलतियाँ कीं, उनका नतीजा और फल हमने पाया। मगर आयन्दा कोई गुन्जाइश न रहे कि हम गलतियां करें। हम सही रास्तेपर चलकर उनकी तालीमको मद्दे नजर रखकर वह तरीका इख्त्यार करें जो गांधीजीने हमको सिखाया है। हम अपने मुल्ककी, बल्कि सारी दुनियांकी खिदमत करनेको तैयार हों। उनके उसूलोंपर, यानी इत्तहाद, हिन्दू-मुसलिम यूनिटी (इत्तहाद) पर खास तौरसे हमको चलना चाहिये। मैं खुदासे दुआ करता हूँ कि हम लोगोंके कुलूबपर ऐसा असर हो कि हम सही मानोंमें उनकी तर्जुमानी कर सकें और उनके बतलाये हुए रास्तेपर चलें।

❀

"हमारा प्रेम हृदयगत चीज है। हमारा रास्ता तलवारका नहीं है। गालीका उत्तर हम गालीसे नहीं दे सकते, और न घूँसेका घूँसेसे। प्रेमकी सच्ची परीक्षा तो यही है कि हम मरकर दूसरोंके अप्रेमका उत्तर दें।"

—"गांधीजी"

श्री सुन्दरलाल

[मंत्री : हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी]

गांधीजीसे अपने लगभग तीस बरसके साथके आधारपर मैं यह कह सकता हूँ कि अगर कोई मनुष्य मैंने गीताके अनुसार या योग-सूत्रोंके अनुसार या मनुके दस लक्षणोंके अनुसार जीवन बितानेकी कोशिश करते हुए देखा है तो गांधीजीको। इस दृष्टिसे वे एक आदर्श पुरुष थे। इस संबंधमें उनका जीवन ऊँचेसे ऊँचे मुसलमान सूफियोंके जीवनसे मिलता था। इमाम गिजालीके अनुसार वह सच्चे सूफी और सच्चे मुसलमान थे। 'इमिटेशन आव क्राइस्ट' के लेखक कैम्पिसके अनुसार वह सच्चे ईसाई थे। उनकी जिंदगी सब धर्मोंका संगम थी। वह आदर्श धर्मात्मा और सच्चे दीनदार थे। उनकी राजनीति भी इसीलिए ऊँची थी कि वह धर्मकी कसौटीपर कसकर सामने आती थी। जिस किसीके दिलमें दीन या धर्मकी प्यास हो, वह महात्मा गांधीकी जिंदगीसे अनमोल, असली सबक सीख सकता है।

❀

श्री ए० जे० फैन्थम

[प्रसिद्ध एंग्लो इंडियन नेता]

मैं इस वक्त ऐवानके सामने आकर खड़ा हो गया हूं। मेरा इरादा भी था कि उनकी तारीफ़ करूँ और उनके न होनेकी वजहसे अपना रंज व गम जाहिर करूं। मगर जब मैं यह ख्याल करता हूं कि किस शख्स की तारीफ़ करूं और अपना रंज व गम जाहिर करूं तो मेरी अक्ल हैरान हो जाती है। वह सिर्फ एक महात्मा ही नहीं थे बल्कि वह महात्माओंके महात्मा थे। वह महात्मा गांधी जी थे।

इंसानकी यह कमजोरी होती है कि जब हम लोगोंके बीच कोई आदमी होता है तब हम लोग उसे पहचानते नहीं हैं, उसकी सही-सही कदर नहीं करते हैं। मैं तब समझता हूं कि खुदाने अपने भेजे हुए पैगम्बरको ७९ साल रखा और उसने बिल्कुल उसकी बतायी हुई बातोंपर अमल किया, पर जब उसने देखा कि इंसान अब मेरी बातें नहीं मानता, या पूरी बात नहीं मानता, थोड़ा हिस्सा ही मानता है तब खुदाने कहा समय आ गया कि मैं उसे वापस बुला लूं

और अब मैं खुद उसकी तारीफ करूं क्योंकि उसने मेरी बतायी हुई तमाम बातें फैलायी।

गांधीजीने दो बातोंकी कोशिश की। एक तो उन्होंने आजादी हासिल करनेकी कोशिश की और वह १५ अगस्तको मिल गयी। यहांपर कोई आदमी नहीं होगा जो न कहे कि महात्मा गांधीजीकी वजहसे हमें आजादी मिल गयी। इस आजादीके मौकेपर सब खुश थे पर क्या वह खुश थे ? नहीं, वह खुश नहीं थे। ब्रिटिश गवर्नमेंटको उन्होंने निकाला, क्योंकि वह हम लोगोंके ऊपर सख्ती करती थी। महात्माजीकी वजहसे हमको आजादी मिली। हम लोग असेम्बली बेंचोंपर, गवर्नमेंट बेंचोंपर बैठे हुए हैं। अगर वह चाहते तो वह भी गवर्न-मेंट बेंचोंपर बैठ सकते थे। लेकिन उन्होंने कोई ओहदा नहीं लिया क्योंकि वह समझते थे कि मेरी जगह यहांपर नहीं है।

वह समझते थे कि हमारी जगह दुनियां भरमें है। हमारी जगह गरीब आदमियोंको ऊपर उठानेके लिए है। अगर हम भी वहीं बातें मानेंगे,हम लोग भी उन्हींकी बतायी हुई बातोंपर अमल करेंगे, गरीब आदमियोंको ख्यालमें रखकर जब हम कोई कायदा-कानून पास करेंगे, तभी हम उनके कामको पूरा कर सकेंगे।

मैं मजहबका ईसाई हूं। अगर मैं यह कहूं कि महात्माजी हमारे ईसा मसीहके बाद सबसे बड़े ईसाई थे तो कोई शख्स मेरा विरोध नहीं कर सकता। गांधीजी चाहते थे कि मजहबोंमें एका हो। इसीलिए वह गीता, कुरान और बाइबिल पढ़ते थे। यही दिखानेके लिए वह पढ़ते थे कि मैं यह चाहता हूँ कि सब मजहब आकर एक हों। और इससे बढ़कर कोई बात नहीं हो सकती।

❀

बेगम ऐज़ाज रसूल

[नेत्री विरोधी दल : युक्तप्रान्तीय कौंसिल]

महात्मा गांधीके निधनसे मानवता शोकके सागरमें डूब गयी है। अब हम लोगोंको चाहिये कि महात्माजीके आदर्शोंपर चलकर यह दिखा दें कि उनके शहीद होनेका प्रभाव हमपर क्षणिक नहीं अपितु स्थायी है।

❀

बंबई

माननीय राजा सर महाराज सिंह

[गवर्नर : बंबई प्रांत]

पहले पहल मैंने महात्मा गांधीको बम्बईमें सन् १९१६ के भारतीय राष्ट्रीय-कांग्रेसके अधिवेशनमें देखा था। दक्षिण अफ्रीकामें भारतीयोंके साथ होनेवाले दुर्व्यवहारके खिलाफ उन्होंने जो आन्दोलन किया था, उसके सिवा उन दिनों लोग उन्हें बहुत कम जानते थे। अंतिम बार मैं उनसे लगभग सात सप्ताह पहले १९ दिसम्बरको नयी दिल्लीमें मिला था। बीचके अनेक वर्षोंमें मैं उनसे बहुत ही कम मिल सका। किंतु मुझे अच्छी तरह याद है कि बहुत साल नहीं बीते जब वे मेरे स्वर्गीय पिताके मकानमें शिमलेमें ठहरे थे और वहीं मेरी बहन अमृत कौरके मकानमें भी ठहर चुके हैं और सन् १९४५ और सन् १९४६ में मेरे भाई शमशेर सिंहके यहाँ भी ठहरे हैं।

महात्मा गांधीका वह गुण, जिसका प्रभाव मेरे ऊपर अत्यधिक पड़ा, उनकी विशाल मानवता थी। सारी दुनियामें ही उनकी दिलचस्पी थी और वस्तुतः उनका दृष्टिकोण अन्तर्राष्ट्रीय था। वर्ण, धर्म, जाति आदिके भेदमें उनका विश्वास न था और उनके विचार कहीं अधिक व्यापक थे। बच्चोंसे उन्हें प्रेम था। मुझे याद है कि सन् १९२१ में लार्ड रीडिंगसे मुलाकात करनेके बाद ही शिमलेमें मेरे पिताके मकानपर उन्होंने मेरे सबसे बड़े बेटे रणवीर सिंहको, जो उस समय छोटा ही था, किस प्रकार गोदमें उठा लिया और उसे खिलाने लगे। मुझे उनकी परिहास-प्रियताकी भी याद आती है। उन्हें हँसनेसे प्रेम था और हँसी-मजाकमें

वे पूरा आनंद लेते थे। इस सिलसिलेमें मुझे याद है कि सन् १९४५ में शिमलेके मकानमें जब मैं अपनी गुड़ियासे अप्रत्यक्ष रूपसे बात कर रहा था, तब उन्होंने उसमें कितनी दिलचस्पी दिखायी थी।

पिछले दिसम्बरमें जब मैं उनसे मिला तब मैंने देखा कि सांप्रदायिक अशांतिके कारण वे बहुत ही चिंतित थे। मेरे एक प्रश्नके उत्तरमें उन्होंने कहा कि जबतक सांप्रदायिक स्थितिमें निश्चित तौरपर कुछ सुधार नहीं हो जाता, तबतक मैं दिल्लीसे बाहर न जाऊँगा और इसीमें उनकी मृत्यु भी हुई। हिंसा एवं सांप्रदायिकतासे उन्हें घृणा थी और हमारी सामान्य मानवतामें उनका अमिट विश्वास था।

❀

माननीय बालगंगाधर खेर

[प्रधान मंत्री : बम्बई]

आधुनिक भारत तथा विश्वका महामानव आज प्रार्थना-स्थलपर जाते समय मृत्युको प्राप्त हुआ। इस संकट-कालमें जनतासे मेरी प्रार्थना है कि वह शांति तथा सद्भावना बनाये रखे जिसके लिए गांधीजीने यह आत्माहुति की है। उन्होंने भारतको स्वराज्य दिलाया और सुराज्य बनानेके लिए प्रयत्नशील थे।

गांधीजी मानवताकी आत्मा थे और मानव सर्वदा आत्माका तिरस्कार किया करता है। उनके शिष्योंका कर्त्तव्य है कि उनके अपूर्ण कार्योंको पूरा करें। यह हमारे लिए महासंकट है कि जब वह शांति, सद्भावना तथा मेल बढ़ानेके लिए अत्यंत प्रयत्नशील थे और जब उनकी अत्यंत आवश्यकता थी, वह एक क्रूर ढंगसे हमसे छीन लिये गये।

उनके परवर्त्तियों द्वारा उनका कार्य पूरा होना चाहिये। प्राचीन कालमें भी ऐसी घटनाएँ मिलती हैं, पर सत्कार्य सफल होते ही रहे। गांधीजी मर गये, पर वे अमर हैं।

○ ○ ○

रोना इस समय व्यर्थ है। हमें महात्माजीकी शिक्षा और उनका व्यक्तित्व समझनेकी चेष्टा करनी चाहिये। एक बार गांधीजी अस्वस्थ थे। हम लोगोंको उस समय उनके पथ-प्रदर्शनकी बड़ी आवश्यकता थी। मैं डर गया था, क्योंकि हमारा सब कुछ नष्ट होने जा रहा था, उस समय मैंने डाक्टर राधाकृष्णन्से कहा था—

'जब महात्माजी न रह जायँगे तब क्या होगा।' राधाकृष्णन् मुस्कुराकर बोले— 'गांधीजीकी मृत्यु उपवाससे अथवा किसी हत्यारेकी गोलीसे होगी।' महात्माजी ऐसे व्यक्ति थे जिनकी वाणी, जिनके कार्य और जिनके विचार समान थे। उनके जीवनका केन्द्र सत्य था। महात्माजीके जीवनमें सत्यके सामने किसी भी वस्तुका कोई महत्त्व न था और उनका सारा जीवन सत्यका ही प्रयोग था। सारी वसुधा उनका कुटुम्ब थी। चालीस वर्षोंतक वे अपने देशवासियोंकी दरिद्रता और पीड़ाको दूर करनेके लिए संघर्ष करते रहे। आइंस्टीनके शब्दोंमें हम कह सकते हैं कि आनेवाली पीढ़ीको यह विश्वास न होगा कि गांधीजीके समान मनुष्य भी इस धरित्रीपर उत्पन्न हुआ था। हम महात्माजीके इतने निकट थे कि उनकी महत्ता और उनके व्यक्तित्वका मूल्यांकन नहीं कर सकते हैं। हममें समुचित दृष्टिका अभाव था। इतिहासके प्रकाशमें ही उनके व्यक्तित्वका गौरव प्रकट हो सकेगा।

किंतु इतना तो सभी मानते हैं कि निर्दलित और पीड़ित जनताके हित-साधनमें वे सदैव निरत रहे। तीस वर्ष हुए जब उन्होंने हरिजनोंको अपनी गोदमें लेकर अपनाया था, जिसका परिणाम यह हुआ कि अहमदाबादमें रहनेके लिए उन्हें घर नहीं मिला। उन्होंने मनुष्योंके हृदय और विचारोंमें अपने क्रांतिकारी विचारों और कार्यों द्वारा अद्भुत परिवर्त्तन कर दिखाया।

० ० ०

गांधीजी सारी मानवताकी चेतना-शक्ति थे, किंतु आश्चर्य है कि मनुष्य अपनी ही चेतना-शक्तिको बुझा देनेका प्रयत्न करता है।

महात्माजीने भारतको स्वतंत्रता प्रदान की। अब वह यही प्रयत्न कर रहे थे कि उसे अच्छी सरकार भी दे सकें।

जो लोग महात्माजीके बाद इस देशमें बच गये हैं, जो उनकी शिक्षाओंका आदर करते हैं, उनका महान कर्तव्य है कि वे उनके अपूर्ण कार्यको पूरा करें।

महात्मा गांधी शांति और मैत्रीका प्रसार करनेमें अपनी सारी शक्तियोंका व्यय कर रहे थे। जिस समय देशको उनकी उपस्थिति और प्रकाशकी आवश्यकता थी, उसी समय इतनी निर्दयताके साथ उनके जीवनका अंत कर उन्हें हमसे छीन लिया गया।

महात्माजीसे पूर्व अन्य देशोंमें भी इसी प्रकारका कार्य करनेका अनेक महान आत्माओंने प्रयत्न किया था और वहाँ भी उनके देशवासियोंने उनकी हत्या कर दी, फिर भी उनके जीवन-लक्ष्यका अंत नहीं हुआ। उनका जलाया हुआ दीपक शताब्दियोंतक जलता रहा और उसका परिणाम हमारे सामने है।

मुझे ज्ञात है कि इस देशमें बहुत बड़ी संख्या ऐसे लोगोंकी है जो महात्माजीके सिद्धांतोंका घोर विरोध करते हैं। किंतु मैं कहूँगा कि यदि वे स्वतंत्रताके प्रेमी हैं, यदि वे देश-प्रेमी हैं, यदि वे नहीं चाहते कि हमारी नव-पल्लवित स्वाधीनता सूखकर नष्ट हो जाय, तो मेरा उनसे अनुरोध है कि वे देशमें सुव्यवस्था, शांति और सद्भावना बनाये रखें। गांधीजी अमर हैं।

o o o

महात्माजीके निधनसे जो असीम क्षति पहुँची है वह किसी एक वर्ग, जाति या देशकी ही नहीं हुई है, समस्त मानवताको उससे धक्का लगा है। महात्माजी किसी देश विशेषकी ही सम्पत्ति न थे, वह सारे संसारके धन थे।

महात्माजीने संसारको जो दार्शनिक ज्ञान दिया है उसका उज्ज्वलतम अंश अहिंसात्मक असहयोगकी रीति है। जो निर्णय पहले युद्ध या बिना हिंसाके नहीं किये जा सकते थे, उन्हें अहिंसात्मक असहयोग द्वारा पूरा करनेकी रीति गांधीजीने बतायी। जीवनकी अंतिम घड़ीतक जो बात महात्मा गांधीके मस्तिष्कमें गूँजती रही, वह थी—अहिंसा।

❀

माननीय मोरारजी देसाई

[गृह-मंत्री : बंबई]

राष्ट्रपिताके प्रति सर्वश्रेष्ठ श्रद्धाञ्जलि यही हो सकती है कि हम उनके द्वारा प्रदर्शित सत्य, अहिंसा और शांतिके मार्गपर चलें।

❀

माननीय वैकुंठ लालूभाई मेहता

[अर्थ-मन्त्री : बम्बई]

महात्माजीकी मृत्युसे हमारा हृदय शोकमग्न हो गया है। वह समस्त पीड़ित मानवताके उद्धारक थे और हरिजनोंका दैन्य और कष्ट दूर करनेमें उन्होंने बड़ा महत्त्वशाली कार्य किया। हमें आज प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि जिस ध्येयके लिए महात्माजी जिये और मरे उसे हम आगे बढ़ावें।

भारत और उसके बाहर होनेवाले धर्मगुरुओंमें तथा गांधीजीमें यह अंतर था कि गांधीजीकी अंतरात्मा क्षण-क्षणपर उन्हें स्मरण दिलाती थी कि भूखे पेट भगवानका भजन करना अशक्य नहीं तो कठिन अवश्य है। यही कारण था और गांधीजीकी दृढ़ मान्यता थी कि जबतक सबका पेट नहीं भरेगा तबतक थोड़े व्यक्तियोंका ऐश-आराम भोगना मानव-जातिके प्रति द्रोह करना है। खादीका कार्य-क्रम उनकी इस विचारधाराका प्रतीक है। राष्ट्रीय वृत्तिवाली प्रजाकी खादीकी पोशाक राष्ट्रीय प्रवृत्तिमें स्वाश्रय, स्वावलंबन एवं समताके सिद्धांतको प्रत्यक्ष स्वीकार करती है। ज्यों ज्यों कारखाने बढ़ते गये, ग्रामोद्योग टूटते गये। बढ़ती हुई बेकारी और भीषण दरिद्रता महात्माजीके मनमें सर्वदा उद्वेग उत्पन्न करती रही। और इन्हींसे बचानेके कार्यको वे दरिद्रनारायणकी सेवा मानते थे, जो आत्म-शुद्धिका एक मार्ग है। ऐसी आत्म-शुद्धि बिना अहिंसाका पालन हो नहीं सकता। अहिंसाके पालन बिना सत्य-शोध व्यर्थ है। यह विचार-परंपरा गांधीजीके अर्थशास्त्र और धर्मशास्त्रका संबंध जोड़ती है। जीवनके निकट प्रश्नोंका हल धर्मके मार्गमें लानेका प्रयोग गांधीजीके जीवनकी विशेषता है।

❀

माननीय दिनकरराव एन० देसाई

[न्याय तथा पूर्ति-मंत्री : बम्बई]

यह अप्रत्याशित दुर्घटना है। भारतीय इतिहासमें सर्वाधिक शोकपूर्ण और लज्जाजनक विषय यह होगा। ऐसी विभूतिको खोकर न केवल भारत अपितु संसार भी एक प्रकारसे श्री-हीन हो गया है।

❀

माननीय गुलजारीलाल नन्दा

[श्रम-मंत्री : बम्बई]

आज सारा संसार क्षुब्ध और व्यथित है। गांधीजी युगावतार थे। उन्हें पाकर भारतका मस्तक गर्व और गौरवसे ऊँचा था। हम उनके निर्दिष्ट पथपर चलकर ही उनके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

राष्ट्रपति

डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद

भारतके गवर्नरजनरल तथा गवर्नर
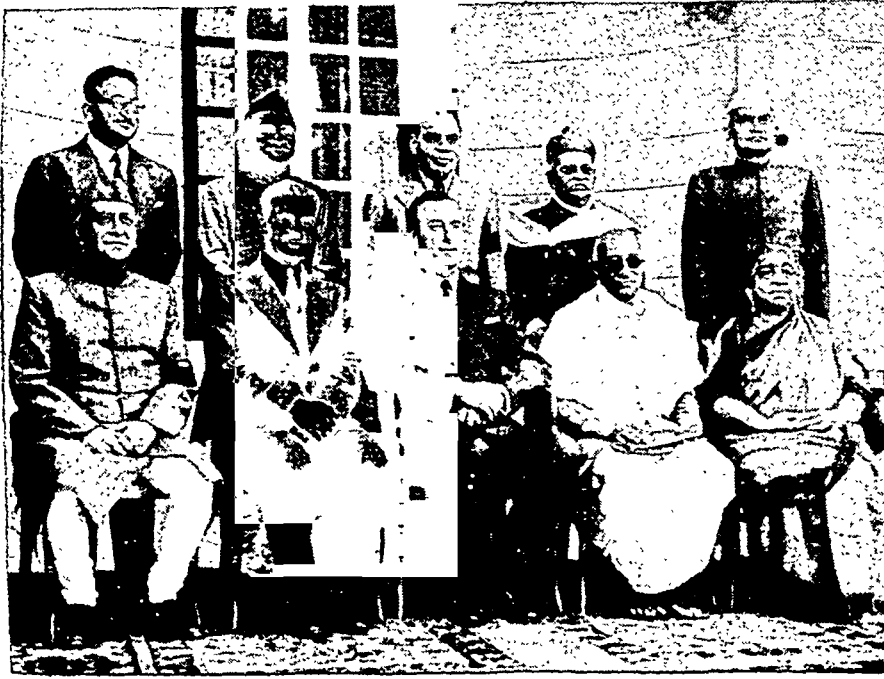
कुर्सीपर बैठे हुए: १—माननीय राजा सर महाराज सिंह (बंबई), २—माननीय सर आर्चिवाल्ड नाय (मद्रास), ३—लार्ड माउण्टबेटन (गवर्नर जनरल), ४—माननीय श्री राजगोपालाचारी (पश्चिमी बंगाल) ५—माननीया सरोजिनी नायडू (युक्तप्रान्त)

खड़े हुए: १—माननीय सर अकबर हैदरी (आसाम), २—माननीय श्री मंगलदास पकवासा (मध्यप्रान्त), ३—माननीय श्री चंदूलाल त्रिवेदी (पूर्वी पंजाब) ४—माननीय श्री माधव श्रीहरि अणे (बिहार), ५—माननीय डाक्टर कैलाशनाथ काटजू (उड़ीसा)

प्रान्तीय मंत्रिमण्डलोंके माननीय प्रधान-मंत्री

माननीय बालगंगाधर खेर (बंबई)

माननीय पं० गोविन्दवल्लभ पंत (युक्तप्रान्त)

डा० विधानचन्द्रराय (पश्चिमी बंगाल)

जम्मू
जालंधर
फिल्लौर
मानसरोवर
हरद्वार
दिल्ली
रामपुर
गढ़मुक्तेश्वर
डिबरुगढ़
मथुरा
अयोध्या
मुजफ्फरपुर
शिव सागर
पुष्कर
ग्वालियर
तेजपुर
गौहाटी
कराची
प्रयाग
पटना
सिलचर
इलाहाबाद
काशी
गया
भागलपुर
ढाका
अहमदाबाद
भुज
नोआखाली
बरकपुर
इन्दौर
त्रिपुरी
रांची
पोरबंदर
राजकोट
कलकत्ता
सूरत
वर्धा
कटक
पुरी
बम्बई
नासिक
रंगून
वारंगल
नरसिंहवाडी
बेजवाड़ा
गोकर्ण
मद्रास
मैसूर
श्रीरंगम
भरथ पुज्हा
रामेश्वरम
कन्याकुमारी
कोलम्बो

अस्थि-प्रवाह-स्थल
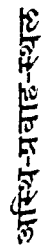
माननीय लक्ष्मण महादेव पाटिल

[आवकारी-मंत्री : वम्बई]

महात्माजीकी इस अमानुषिक हत्याका समाचार सुनकर हृदय स्तब्ध हो गया है। आजके इस सभ्य-युगमें मानव इतना बर्बर, पैशाचिक और पाशव आचरण कर सकता है, इसकी कल्पना भी हृदयने कभी नहीं की थी। अहिंसा और प्रेमके देवदूतका क्रूर हिंसा द्वारा निधन भारतके उज्ज्वल ललाटपर अमिट कलंक है। भारतवासियोंका यह परम कर्तव्य है कि बापूके पावन उपदेशोंपर चलकर इस कलुषके प्रक्षालनका प्रयत्न करें।

❀

माननीय मनछोर साधनजी भाई देसाई

[मंत्री : वम्बई]

बापूके निधनसे भारत ही नहीं समस्त विश्वकी सर्वश्रेष्ठ विभूति उठ गयी। मानवताके शुभ्र आदर्शोंका चरम विकास जिस महापुरुषके जीवनमें साकार हो गया था उसका इस प्रकार एक धर्मोन्मत्त व्यक्तिकी मूढ़तासे उठ जाना विश्वकी सबसे बड़ी दुर्घटना है। भगवानसे हमारी प्रार्थना है कि वह अब भी भारतके सांप्रदायिक विषसे मूर्च्छित मानवोंको ऐसी सुबुद्धि दे जिसमें वे बापूके आदर्शोंका अनुसरण करते हुए कलह-पीड़ित मानवताकी रक्षा करें।

❀

माननीय एम. पी. पाटिल

[कृषि-मंत्री : वम्बई]

गांधीजी अवतारी पुरुष थे। उनकी हत्या भारतीयोंके ही लिए नहीं, विश्वके प्रत्येक प्राणीके लिए अनिष्टकारी है। उनकी आत्मा हमें बल और साहस प्रदान करे।

माननीय गोविन्द धरमजी वर्तक

[स्वायत्त-शासन मंत्री : बम्बई]

इससे बढ़कर हमारे लिए और क्या भीषण कुसम्वाद हो सकता है ? उन्हें खोकर आज हमने अपनी अनमोल निधि खो दी है।

❀

माननीय डाक्टर एम. डी. डी. गिलडर

[स्वास्थ्य-मंत्री : बम्बई]

हन्त, जो न कभी सोचा था, वह हो गया। यह महात्माजीकी हत्या नहीं मनुष्यताकी हत्या है। उन्हें खोकर आज विश्व अनाथ हो गया है।

❀

माननीय गणपति देवजी तपासे

[उद्योग-मंत्री : बम्बई]

इस अत्यंत शोकपूर्ण मृत्युसे न केवल हरिजनोंने अपितु सारी मानवताने अपना सबसे बड़ा मित्र खो दिया। इस हृदय-विदारक दुर्घटनाका संताप शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। बापूका जीवन और मरण दोनों ही द्वेषपर प्रेमकी अतुलनीय विजयके साक्षी हैं। दलितोंकी सेवा ही उनका धर्म था, चाहे वे दलित किसी भी देशके क्यों न हों।

❀

श्री नूरी

[भूतपूर्व मंत्री : बम्बई]

महात्मा गांधीने मुसलमानोंके लिए अपनेको कुर्बान कर दिया। खिलाफत आंदोलनसे लेकर आखिरी दमतक उन्होंने अहिंसाका उपदेश दिया। महात्मा गांधीके दिल्लीमें रहनेसे ही दिल्लीकी स्थिति मुसलमानोंके लिए ठीक हो गयी थी।

श्री ए. ए. खाँ

[विरोधी दलके नेता : व्यवस्थापिका सभा, बम्बई]

इस पुण्य-आत्माकी अप्रत्याशित और जघन्य हत्यासे जो धक्का मानवताको लगा है, उसके विक्षिप्त प्रभावसे वह अभी मुक्त नहीं हो सकी है। स्वतंत्रता और प्रजातंत्र, दोनों हमारे सामने ऐसे चित्र हैं जिनकी रूपरेखाका अनुमान केवल अनुभवके ही आधारपर हो सकता है। हमारे पास न तो वह अनुभव ही अभी है और न कोई परंपरा ही है। जिन यंत्रोंसे इनकी उचित माप की जा सकती है वह हमारे पास नहीं हैं। ऐसी स्थितिमें हमें यह पूर्ण आशा थी कि महात्मा गांधी, जिन्होंने प्रजातंत्रकी नींव डाली है, इतने समयतक जीवित रहेंगे कि इस नींवपर ऐसा महान प्रासाद खड़ा कर सकेंगे जिसका स्थान संसारकी बड़ीसे बड़ी प्रजातंत्रीय व्यवस्थाओंमें सम्मानप्रद होगा।

❀

श्री सी. पी. ब्रैम्बल

[यूरोपीय दलके नेता : व्यवस्थापिका सभा, बम्बई]

महात्माजीने शांति-स्थापन कार्यमें बहुत उच्च सेवाएँ की हैं।

❀

माननीय एम. सी. चागला

[विचारपति : बम्बई न्यायालय]

एक महान और भयंकर विपत्ति हमपर आ पड़ी है। हमारे राष्ट्रपिता और हमारी स्वतंत्रताके निर्माता हमारे बीचसे उठ गये। उनका बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय एवं परामर्श, उनका निर्देश, उनका सबको अपनानेवाला स्नेह अब हमें न मिल सकेगा और हम उनसे वंचित रहेंगे। उन्माद और घृणासे वशीभूत होकर नृशंस और भयंकर आक्रमण द्वारा उनके अनमोल जीवनका अंत कर दिया गया। यह दुर्भाग्य देखिये कि मनुष्योंमें सबसे बड़े दयालु, सबसे बड़े उदार और सर्वश्रेष्ठ सज्जनका इस प्रकार क्रूरतापूर्ण निधन हुआ।

स्वतंत्रताके लिए काफी खून बहा और अश्रुकण गिरे, कई बलिदान और आत्मसमर्पण हुए, साहस और वीरताके अनगिनत कार्य हुए, किंतु गांधीजीका कार्य सर्वोच्च था। उन्होंने हमारे भाग्यका समुचित निर्माण किया। उन्होंने देखा कि भारत एक महान साम्राज्यके अधीन छटपटा रहा है। उन्होंने देखा कि भारतकी जनतामें अनैक्य है, नैतिक पतन है और है निरुत्साह एवं निष्क्रियता। उन्होंने कार्यारंभ किया और एक पीढ़ीमें ही विश्वके महत्तम राष्ट्रको भारतपरसे अपनी छत्र-छाया हटा लेनेके लिए विवश किया, भारतकी जनताको भयमुक्त कर उसमें आत्म-सम्मानकी भावना भरी और यूनियन जैकके स्थानपर तिरंगे झंडेको साभिमान लहरा कर दिखला दिया।

उनकी महत्ता इस बातमें है कि उन्होंने हमें खोयी आत्माकी प्राप्तिके लिए प्रेरित किया, हमें अपनी महती परम्पराका ध्यान दिलाया, हममें आत्म-गौरव और स्वाभिमानकी भावना जगायी और देशभक्तिकी प्रज्ज्वलंत ज्योति पुनः प्रकाशित कर दी।

❀

डाक्टर मुकुन्द रामराव जयकर

[प्रसिद्ध विधान-शास्त्री तथा कुलपति : पूना विश्वविद्यालय]

महात्माजीकी यह जघन्य हत्या उसी हत्याके समान है जैसी ईसाकी हुई थी। इस दृष्टिसे वे दोनों भाई थे और भाईकी तरह ही शहीद हुए। गांधीजीके आदर्शोंका अनुसरण ही उनकी स्मृतिको स्थायी बनानेका सर्वोत्तम साधन है।

❀

श्री रिचार्ड डाइक अकलैण्ड

[आर्क विशप : बम्बई]

हिन्दके प्रधान मंत्रीने प्रार्थना, त्याग और तपस्याके लिए जो अनुरोध किया है उससे हमारे ईसाई भाइयोंके हृदयस्थ सहानुभूति-पूर्ण ऐक्य भावोंकी जागर्त्ति होगी। शनिवारके दिन अन्य साधारण दिनोंकी अपेक्षा अधिक संख्यामें लोग गिरिजाघरोंमें एकत्र होंगे जो सदा ही निजी पूजाके लिए खुले रहते हैं। यह वह दिवस भी है जब सहस्रों व्यक्ति ईश्वरके सम्मुख तपस्यामें अपने अपराध स्वीकार करते हैं। अब इस अभ्यासका अनुसरण उन उच्च आदर्शोंके प्रति पूर्ण आत्मसमर्पण द्वारा होगा जिनके लिए महात्मा गांधी जीवित रहे और मरे।

श्री ए. पी. सापवाला

[मेयर : बम्बई कारपोरेशन]

गांधीजीका जीवन विलक्षण था, जो केवल भारतके लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानवताके लिए अर्पित था। उन्होंने भारतवासियोंको स्वतंत्रता-प्राप्तिके लिए सत्य और अहिंसाके शस्त्र-प्रयोगकी शिक्षा प्रदान की।

❀

श्री एस. के. पाटिल

[अध्यक्ष : बम्बई प्रांतीय कांग्रेस कमेटी]

गांधीजी शांतिकी अद्वितीय मूर्ति थे। भाग्यके निष्ठुर हाथोंने जिस परिस्थितिमें उन्हें हमारे बीचसे उठा लिया है, उससे हमारा रक्त खौल उठता है। उनका छिन जाना राष्ट्र पर क्रूर वज्रपात है। यह चोट आकस्मिक होनेके कारण और भी अधिक तीक्ष्ण हो गयी है। उनके अभावसे इस देशकी जनताकी मानसिक वृत्तियोंपरसे नियंत्रण उठ गया।

❀

श्रीमती हंसा मेहता

[अध्यक्षा : अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन]

भारतीय स्त्रियाँ अनाथ हो गयीं और उनकी अपूर्णीय क्षति हुई है। महात्माजी आध्यात्मिक नेताओंके प्रकाश थे। भारतीय नारी-समाजकी सच्ची श्रद्धाञ्जलि यह होगी कि हम महात्माजीके बतलाये हुए राज्यका निमार्ण करें।

❀

श्री हुसेन भाई ए. लालजी

[प्रसिद्ध उद्योगपति तथा अध्यक्ष : शीया-सम्मेलन]

यह हत्या भारतीय राष्ट्रपर भयंकर क्रूर आघात है। इस लज्जास्पद घटनाका एक ही प्रायश्चित्त हो सकता है और वह यह कि सभी संप्रदाय मिलकर वर्तमान सांप्रदायिक कटुताको मिटा दें।

श्रीमती सोफ़िया वाडिया

[मन्त्रिणी : पी. ई. एन.]

भारतके तथा समस्त विश्वके करोड़ों नर-नारी ऐसे हैं जिनके हृदय महात्माजीके व्यक्तित्वकी स्नेहपूर्ण पवित्रता और उज्ज्वलतासे एवं उनके जीवन-संदेशके स्फूर्तिदायक उदाहरणोंसे प्रभावित रहे हैं। हिंसाके एक जघन्य आचरणने बापूकी भौतिक सत्ताका विलोपकर उस पवित्र संदेशके साकार अस्तित्वसे हमें विहीन कर दिया। परंतु ज्यों-ज्यों दिन बीतते जा रहे हैं, हमें अनुभव हो रहा है कि यद्यपि उनका शरीर नहीं रहा तथापि उनकी आत्माकी सतत गतिशील शक्ति निरंतर सक्रिय है और उनकी अमूर्त्त सत्ता अपने कार्यको आगे बढ़ानेमें तत्पर है।

पूर्ण मनोयोगसे यही हमारा प्रयत्न होना चाहिये कि हम उनके प्रवर्तित कार्यको आगे बढ़ावें। उनके प्रति यही सबसे बड़ी श्रद्धाञ्जलि होगी; क्योंकि इसी प्रकार हम उनके जीवनके लक्ष्यकी पूर्तिकी ओर बुद्धिमत्ता और निपुणताके साथ बढ़ सकते हैं।

भगवानसे हमारी प्रार्थना है कि वह हमें ऐसी शक्ति दे कि बापूके इस बलिदानसे स्फूर्ति पाकर हम सत्यका अन्वेषण करें, सत्यको प्राप्त करें तथा सत्यके साथ जीवन बितावें। भगवान करे, उनकी प्रेममयी स्मृति हमारे हृदयको ऐसी प्रेरणा प्रदान करे जिससे हम शांतिमयी शक्ति और सेवापूर्ण आनंद पा सकें।

श्री पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास

[प्रसिद्ध व्यवसायी तथा सामाजिक कार्यकर्त्ता : बम्बई]

आज गांधीजी नहीं रहे। पर हमें महात्माजीकी उन सेवाओंका ऋण स्वीकार करना चाहिये जो उन्होंने स्वतंत्रताके प्रथम चरणमें अपने अनुपम और दृढ़ नेतृत्वके कालमें प्रदान की। द्वितीय महायुद्धने सबसे अधिक क्षति नैतिकताको ही पहुँचायी और उसे भारतमें पुनरुज्जीवित करनेका श्रेय महात्माजीको ही है। युग-युग तक विश्व उनको स्मरण करता रहेगा।

श्री सैयद अब्दुल्ला बेरेलवी

[प्रसिद्ध पत्रकार और राष्ट्रिय मुसलिम नेता]

यद्यपि सुबुद्धि, स्वार्थ-भावना तथा परिस्थितियोंकी अचूक पुकारने मुसलमानोंको सांप्रदायिक राजनीतिके त्यागका निर्णय करनेपर बाध्य कर दिया है, तथापि महात्मा गांधीने मुसलमानोंके लिए जो कुछ भी किया है उसके प्रति अपनी कृतज्ञता ही इस निर्णयके लिए उपयुक्त कारण समझा जाना चाहिये।

महात्माजीने अपने जीवनका बलिदान इसलिए किया कि मुसलमान तथा अन्य अल्पसंख्यक भारतमें सुरक्षित तथा सम्मानपूर्वक रह सकें। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि मैं अल्पसंख्यकोंका सर्वप्रिय और सबसे बड़ा मित्र हूँ। इधर शताब्दियोंमें उन्हें ऐसा कोई मित्र नहीं मिला था। तो क्या भारतके मुसलमान इतने बेगैरत और इतने अकृतज्ञ होंगे कि अपने सर्वोच्च मित्रको धोखा देंगे और उसके पवित्रतम जीवन-कार्यपर पानी फेर देंगे ?

उनके मनमें इस बातमें तनिक भी शंका नहीं है कि यद्यपि भारतमें रहनेवाले अधिकांश मुसलमानोंने पिछले दिनोंमें घोर विचार-हीनताके साथ मुस्लिम लीगका अनुसरण किया और उसके घातक द्वि-राष्ट्रीय सिद्धांतको अपने सहयोगसे बलप्रदान किया, परंतु अब उन्होंने भलीभाँति अनुभव कर लिया है कि इस द्वि-राष्ट्रीय भावनाका कितना घातक परिणाम हो सकता है। उससे यही निष्कर्ष निकलता है कि एक ही देशमें दो विभिन्न राष्ट्र तबतक नहीं रह सकते हैं जबतक एकके साथ विदेशी जैसा व्यवहार न किया जाय।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीने महात्मा गांधीके इस प्रस्तावको स्वीकार कर लिया था कि शरणार्थियोंको भारत और पाकिस्तानमें अपने पुराने स्थानोंको वापस लौट जानेमें सहायता दी जाय।

महात्मा गांधीके अंतिम अनशनके कारण भारत तथा पाकिस्तान दोनों प्रदेशोंमें वहाँके प्रत्येक संप्रदायके रुखमें सुंदर परिवर्तन हो चला था, और अब गांधीजीके निधनसे एक अतुलनीय क्षतिका अनुभव दोनों प्रदेश कर रहे हैं।

इस महान शोकके कारण भारत और पाकिस्तान एक दूसरेके सन्निकट आ गये हैं। अब पाकिस्तान अवश्य महसूस करेगा कि काश्मीरके प्रति हमारी नीति और कार्यका क्या परिणाम हो रहा है। पाकिस्तान अवश्य अपनी कारवाइयोंको इस तरह बदलेगा जिससे दोनों प्रदेशोंमें ऐसा समझौता हो सके जो उनके लिए सम्मानजनक हो और साथ ही साथ काश्मीर-निवासियोंके लिए भी संतोषप्रद सिद्ध हो सके।

भारत तथा पाकिस्तानके प्रत्येक विचारशील नर-नारीकी यह हार्दिक कामना है कि दोनों देश आपसमें शांति तथा मैत्रीका संबंध बनाये रखें और इस प्रकार उन्नतिके मार्गपर चलते रहें जो दोनोंके हितमें सहायक सिद्ध हो। दोनोंमेंसे कोई भी इस स्थितिमें नहीं है कि उसकी राज्य-व्यवस्थाका आधार केवल धर्म ही बनाया जा सके। अपने ही स्वार्थोंकी सिद्धिके लिए यह निश्चित कर लें कि किसीकी भी राज्य-व्यवस्थाका आधार धर्म न हो सकेगा। वर्तमान संसारमें प्रत्येक प्रगतिशील राज्य अब धर्मके आधारका त्याग कर चुका है और भौतिक हितोंकी बुनियादपर ही निर्मित है।

o o o

३० जनवरीको अनुमानकी सीमाओंसे भी कठोरतम कुठाराघात भारतवर्षपर हुआ जब एक हत्यारेने देशकी सर्वश्रेष्ठ संतानपर ही प्रहार किया। महात्मा गांधीके महाप्रयाणके पश्चात् देशमें जो कुछ भी हुआ है और हमने जो कुछ भी देखा या सुना है, उसकी कोई भी मिसाल भारतीय इतिहासमें नहीं मिल सकती है 'किसी भी एक व्यक्तिके निधनके पश्चात् सारे मानव-इतिहासमें इतने संसार-व्यापी विषादका अनुभव नहीं हुआ है, और न इतनी पवित्र तथा वेदनापूर्ण श्रद्धाञ्जलियाँ ही किसीको अर्पित हुई हैं जितनी महात्माजीको समर्पित की गयीं। उनकी मृत्युसे न केवल भारतको वरन समस्त जगतको जो क्षति पहुँची है वह अपूर्व तथा असीम है।

o o o

महात्माजीके बलिदानने हममेंसे प्रत्येकको यह चुनौती दे दी है कि हम अपने पूर्ण प्रयाससे सांप्रदायिक वैमनस्यके विषवृक्षको जड़से उखाड़ कर फेंक दें। हम महात्माजीके प्रति प्रेम और श्रद्धाका दावा करते हैं,साथ ही हम सब उनकी हत्याके घोर पापके भी भागी हैं। इसलिए इस राष्ट्रीय पापके धब्बेको धो डालनेके लिए, उनके प्रति अपनी श्रद्धा और प्रेमकी वास्तविकता सिद्ध करनेके लिए, तथा उनकी कृतज्ञताका ऋण चुकानेके हित भी, हमारा यह अनिवार्य कर्त्तव्य हो जाता है कि हम राष्ट्रीय ऐक्य और मैत्रीके उस लक्ष्यको प्राप्त कर लें जो उनके जीवन कालमें हमें प्राप्त न हो सका।

o o o

गांधीजीका स्वर्गवास हुए आज पाँच दिन हुए। इन पाँच दिनोंमें जो कुछ हमने देखा, जो कुछ सुना और जो कुछ हुआ उसका उदाहरण इतिहासमें नहीं मिलेगा। यह पहला अवसर है कि एक व्यक्तिकी मृत्युसे दुनियाके हर कोनेमें रंज

और मातमकी एक लहर फैल गयी है और दुनियाके सब बड़े और छोटे देशोंके नेता इस व्यक्तिकी मृत्युपर दुःख प्रगट कर रहे हैं।

गांधीजीके लिए सारी दुनिया रोती है इसलिए कि करोड़ों व्यक्तियोंको उनसे प्रेम था और अपने दुःख और कठिनाईमें वह उनको अपना सहारा समझते थे। आज संसारमें पिछली लड़ाईके कारण और आगे होनेवाली लड़ाईकी आशंकासे अँधेरा छा गया है। इस अँधेरेमें एक ही रोशनी थी जो गांधीजीकी रोशनी थी जो अहिंसाके रास्तेसे शांति और सुखकी ओर ले जाती थी। गांधी-जीने पिछले २५ वर्षोंमें इतिहासमें एक नया अध्याय लिखा और वह यह कि अहिंसाकी शक्ति हिंसाकी शक्तिसे सहस्रों गुना अधिक है; और एक जाति अहिंसाकी सहायतासे भी अपनी स्वतंत्रता जीत सकती है और अपनी दूसरी आकांक्षाओंको पूरा कर सकती है।

यह सत्य है कि अहिंसाका प्रयोग गांधीजीने इस देशकी स्वतंत्रताके लिए किया किंतु उनका संदेश केवल भारतवर्षके लिए नहीं है अपितु सारे संसारके लिए है, जिसका प्रमाण विदेशोंसे आयी हुई श्रद्धाञ्जलियोंसे मिलता है। गांधीजीने स्वयं अनेक बार कहा है कि मेरा अभिप्राय केवल भारतवर्षको स्वतंत्र करना और इसी देशमें भाई-चारा पैदा करना नहीं है अपितु मैं चाहता हूँ कि स्वतंत्र भारतके द्वारा सारे संसारके लोग आपसमें भाईकी भाँति शांति और अहिंसाका जीवन बितायें। गांधीजीकी मृत्युके ठीक एक सप्ताह पहले मुझे उनसे दिल्लीमें बात करनेका अवसर मिला। इनके पिछले व्रतका जो प्रभाव दिल्ली तथा देशके दूसरे प्रांतोंपर पड़ा इससे वे बहुत प्रसन्न हुए। फ्रान्सके दो बड़े नेताओंने जो उनकी प्रशंसा की थी, उसकी ओर मैंने उनका ध्यान दिलाया और कहा—'गांधीजी,आपको यूरोप और अमेरिका जाना चाहिये, क्योंकि वहाँके लोग आपकी शिक्षा अपनानेके लिए तैयार हैं।' गांधीजीने उत्तर दिया—'हाँ मैं भी जानता हूँ और मेरा विचार भी यूरोप और अमेरिका भ्रमण करनेका है किंतु इस समय मैं पाकिस्तान जानेका विचार कर रहा हूँ।'

गांधीजी हम लोगोंसे इस प्रकार हिल मिल गये थे कि हममेंसे हर एक उनकी मृत्युको अपनी निजी हानि समझ रहा है।

हमारे मुल्कका कोई नगर, कोई गाँव, कोई महल या कोई झोपड़ी ऐसी न थी जहाँ उनका प्रभाव न था। कोई छोटी या बड़ी समस्या ऐसी न थी जिसे उन्होंने इस प्रकार नहीं सुलझाया जो सारे देशको स्वीकार न हो। कोई छोटी या बड़ी ऐसी शिकायत न थी जो उन्होंने सुनी और जिसे दूर करनेकी चेष्टा नहीं की। हम गफलतकी नींदमें सो रहे थे, गांधीजीने हमें जगाया। इंडियन नेशनल कांग्रेस पहले केवल पढ़े-लिखे लोगोंका संघ था। गांधीजीने इसे क्रांतिकारी जनताका संगठन

बनाया। उन्होंने हममें नयी वीरता, निर्भयता और स्वावलंवनको जन्म दिया और सत्याग्रहका ऐसा अनमोल अस्त्र दिया जिसकी सहायतासे पच्चीस सालकी अवधिमें हमने अपने देशको स्वाधीन बना लिया।

हममेंसे बहुत लोग किसान और मजदूर हैं। गांधीजी स्वयं अपनेको किसान कहते थे और समझ रहे थे कि भारतवर्षकी सच्ची स्वतंत्रता तभी हो सकती है जब किसान और मजदूरोंकी आर्थिक तथा सामाजिक अवस्था सुधरे और देशसे गरीबी, बेकारी, छूआछूत और मूर्खता दूर हो और हम सब हिन्दू-मुसलमान, सिक्ख, पारसी और ईसाई भाई-भाईकी तरह मिल-जुल कर रहें। स्वतंत्रता-प्राप्तिके पश्चात् गांधीजीकी सबसे बड़ी शिक्षा यानी अहिंसाको हम लोग भूल गये और सांप्रदायिकताके विषसे हमने अपना हृदय भर डाला। महात्मा गांधीने अपने जीवनके अंतिम महीने इसी विषको मिटानेमें बिताये, यहाँतक कि अपनी जानतक इसके लिए दे दी।

अब हम लोगोंका कर्त्तव्य है कि गांधीजीकी आत्माको प्रसन्न रखनेके लिए चेष्टा करें, हम सब हिन्दुस्तानी मिल-जुल कर भाई-भाईकी तरह रहें और स्वतंत्र भारतमें जनताका राज स्थापित करें जिसमें प्रत्येक धर्मके लोग आनंद और शांतिसे रहें। हमारे देशके सम्मुख शानदार भविष्य है; मगर शर्त यह है कि गांधीजीने हमें जो शिक्षा दी है उसके अनुसार चलें।

❀

श्री अच्युत पटवर्धन

[प्रसिद्ध समाजवादी नेता]

इस महान नेताके उपयुक्त स्मारककी प्रतिष्ठा देशमें उनकी मूर्तियोंकी स्थापनासे नहीं, वल्कि उन उच्च आदर्शोंके अनुसरणमें है जिनके लिए वे जीवित रहे और अंतमें अपने प्राण भी उन्होंने विसर्जित किये।

सांप्रदायिकताका विष, जिसके कारण पाकिस्तानका विभाजन सम्भव हुआ, अभी हमारे देशके वहुतसे लोगोंके हृदयमें विद्यमान है और गांधीजी द्वारा विश्वको प्रदत्त यह महान् संदेश भी, कि अपना घर सँवारनेके लिए दूसरेका घर जलाना ठीक नहीं, हमने भुला दिया है। गांधीजीने इस राष्ट्रके रहनेवाले सभी संप्रदायों एवं जातियोंके नागरिकोंके लिए इस देशको सम्पन्न और सुरक्षित वनानेका प्रयत्न किया। उन्होंने राष्ट्रकी विभिन्न शक्तियोंको एक सूत्रमें आवद्ध किया, अनैक्य दूर किया और उन्हें राष्ट्रहितके कार्यमें नियोजित किया। क्या उनकी मृत्युसे वह सूत्र भंग हो जायगा जिसने सबको संवद्ध कर रखा है।

श्री मीनू आर. मसानी

[प्रसिद्ध भूतपूर्व समाजवादी नेता]

कुछ लोग इस विचारके थे कि देशकी प्रगतिमें गांधीजीको जो कुछ करना था, वह सब वह कर चुके थे। उनका आदर्श और उनका चर्खा प्रगति-विरोधी माना जाता था; पर थोड़े ही दिनोंमें लोगोंको स्पष्ट हो गया कि राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रोंमें उनकी एक विशेष देन है। वह इस युगके सबसे बड़े समाजवादी थे और अपने समयसे बहुत आगे थे। हम लोगोंको उद्देश्यतक पहुँचाकर वह चले गये। जैसा प्रधान मंत्रीने कहा है, हम लोगोंको हिंसा, द्वेष तथा धर्मान्धता दूर करनी चाहिये। सैनिकवादका अनुसरण करनेसे देशका सर्वनाश हो जायगा। अब तो उनकी मृत्युके पश्चात् हमें बदल जाना चाहिये और उनके आदर्शोंपर चलकर उनसे शक्ति प्राप्त करनी चाहिये। गांधीजीके आदेशानुसार हमको अन्तर्मुख होना चाहिये।

श्री गंगाधरराव देशपांडे

[कर्नाटकके वयोवृद्ध कांग्रेसी नेता]

मुझे अपनेको हिन्दू कहनेमें शर्म आती है, क्योंकि एक हिन्दूने भारतके भाग्य-विधायक राष्ट्रपिता महात्मा गांधीपर जघन्य आक्रमण किया।

श्री साने गुरुजी

[प्रसिद्ध समाजवादी नेता और लेखक]

हमें सत्य और अहिंसाके उस सिद्धांतके ऊँचे महत्त्वपर जोर देना चाहिये जिसके लिए गांधीजी जीवित रहे और अंतमें उन्होंने अपने प्राणोंको उत्सर्ग कर दिया।

रावसाहब पटवर्धन

[प्रसिद्ध कांग्रेस नेता]

महात्मा गांधीका अवतार-कृत्य समाप्त हुआ । गांधीजी हम लोगोंको छोड़कर चले गये । आजके भारतका निर्माता तथा युगमें क्रांति उत्पन्न करनेवाला महापुरुष इस संसारसे उठ गया । अपना परम प्रिय पूज्य राष्ट्रपिता हमें अकेला छोड़ कर चला गया ।

गांधीजीकी मृत्युसे दुःखी लाखों व्यक्तियोंके मुखसे अभागे राष्ट्रका दुःख प्रकट हो रहा है । करोड़ों आँखोंसे अश्रु-प्रवाह हो रहा है । सभी देशोंको एकाकीपनका अनुभव हो रहा है । गांधीजीकी मृत्युसे कितनी हानि हुई है, इसका अभी न तो अनुमान ही है और न होगा ही । गांधीजीको श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित की गयीं, उनकी चितापर फूल चढ़ाये गये, उनकी संगमरमरकी धवल मूर्ति वनायी गयी, मंदिर वनाया गया और श्रद्धासे यह सब होगा ही । किंतु इससे क्या आप गांधी-भक्त वन जायेंगे । उनके प्रति हम लोगोंने जो विश्वासघात और अपराध किया है उसे दूर करके ही हम सच्चा स्मारक बना सकते हैं । हमको, आपको और सारे हिन्दुस्तानके लोगोंको 'आर्य' वनानेमें ही उन्होंने प्राण गँवाये । उनका स्मारक निर्जीव कैसे होगा, वह तो सजीव ही होना चाहिये । नया स्वतंत्र समाज ही उनका सच्चा स्मारक होगा ।

श्री आर्देशिर दलाल

[वम्बइके प्रसिद्ध उद्योगपति]

महात्मा गांधीकी हत्या मानव इतिहासमें सवसे महान और निरर्थक अपराध है । उनकी मृत्यु केवल भारतपर ही नहीं वल्कि सम्पूर्ण विश्वपर एक भयंकर आपत्ति है । उनकी मृत्युसे संसार आधुनिक युगके सवसे महान उपदेष्टासे वंचित हो गया है ।

सर होमी मोदी

[वम्बईके प्रसिद्ध व्यापारी]

यह बहुत ही हृदय-विदारक समाचार है। इसपर विश्वास नहीं होता कि कोई इस हदतक पागल हो जायगा कि सबसे नेक व्यक्तिपर, जिसे भूमिपर देखकर स्वर्ग भी स्पर्धा करता था, हाथ उठायेगा। आज एक शक्तिशाली प्रभाव वाला व्यक्तित्व उठ गया और भारत तथा सम्पूर्ण विश्व दोनों वस्तुतः निर्धन हो गये।

❀

सर कावसजी जहाँगीर

[वम्बईके उद्योगपति]

गांधीजीको खोकर भारतने अपना सबसे महान नागरिक खो दिया। गांधीजीके महान चरित्र और कार्योंपर बहुत कुछ लिखा जा सकता है। बहुतसे लोग उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतोंसे सहमत नहीं थे पर किसीने भी उनके दृढ़ विश्वासोंकी ईमानदारीमें संदेह नहीं किया। वस्तुतः वे गरीबों, अभाव-ग्रस्तों और पददलितोंके सबसे बड़े रक्षक थे और अंतमें न्यायपूर्ण सिद्धान्तोंमें अपनी पूर्ण आस्था प्रकट करनेके लिए उन्होंने अपना जीवन ही उत्सर्ग कर दिया।

❀

लेडी थाकरसी

[प्रसिद्ध समाजसेविका तथा पूनामें गांधीजीकी आतिथेया]

कोई भी व्यक्ति या जाति अपने आत्मबलसे ही उन्नति कर सकती है। हिन्दू धर्मने जिन दोनोंको धर्म-ज्ञानके लिए अयोग्य बतलाया है, उन दोनों-स्त्रियों और शूद्रों-की बापूने सबसे अधिक सेवा की है। गांधीजीके उपदेशसे स्त्री-समाजने अवमानता और अबलत्वके दुःखसे जागकर सत्ता और सामर्थ्यका अनुभव किया। बापूकी देह आज नहीं है पर उनकी विराट् आत्मा आज समस्त भारतमें व्याप्त है और प्रत्येक भारतीयके हृदयमें वह अजर और अमर रहेगी। बापूने हिन्दको स्वराज्य दिलाया, पर उनके प्रेम और अहिंसाके सिद्धांतको संसार भरमें फैलानेका कार्य शेष रह गया है। हमें इस कार्यको संपन्न करनेकी प्रतिज्ञा करनी चाहिये। यही हमारी उनके प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि हो सकती है।

श्री शापूरजी बोमानजी बिलिमोरिया

[बंबईके प्रसिद्ध उद्योगपति]

महात्मा गांधीके निधनसे भारतीय राष्ट्रको जो भयंकर और अमिट क्षति पहुँची है उससे समस्त पारसी जातिका हृदय क्षुब्ध है। महात्माजीको खोकर देशने गरीब, पीड़ित तथा दलित मानवताका सर्वश्रेष्ठ रक्षक खो दिया। ईश्वर उनकी आत्माको शांति प्रदान करे।

ख्वाजा गुलाम सैयदैन

[शिक्षा सलाहकार : बम्बई सरकार]

महात्मा गांधीके व्यक्तित्वके अनेक पहलू थे और हर पहलू सुंदर कटे हुए हीरेकी भाँति था; जिस ओर वह घूम जाता ज्योति जगा देता। किंतु हीरा तो बाहरके प्रकाशके सहारे चमकता है पर गांधीजीका व्यक्तित्व स्वयं प्रकाशकी धारा था जिसने हमारे राष्ट्रीय जीवनके कोने-कोनेको प्रकाशित कर दिया और नये ढंगसे, नये रूपसे अबूबिन आदमकी भाँति मनुष्यका धर्म मानव-समाजकी सेवा बताया। स्त्रियाँ रूढ़िगत शृंखलाओंमें बँधी हुई थीं। उन्हें स्वतंत्र करके राष्ट्रकी सेवाके लिए साहस प्रदान किया। अछूतोंको उन्होंने हरिजन बना दिया अर्थात् जिन लोगोंको छूना मनुष्य अपमान समझता था उन्हें समझाया कि वह भी अन्य प्राणियोंकी भाँति ईश्वरके प्यारे हैं। हमारी राजनीति जो ऊपरी और दिखावटी वस्तुओंमें उलझी थी उसके मूलकी ओर हमें आकृष्ट किया और राजनीतिक कार्यकर्ताओंको बताया कि तुम्हारा मुख्य कर्त्तव्य जनताकी सेवा और सुधार है। सुषुप्त बुद्धिवालों और पराजित मनोवृत्तिवालोंके हृदयमें स्वतंत्रताकी लगन लगायी और इसके लक्ष्यतक पहुँचानेके लिए अहिंसा और सत्याग्रहका मार्ग दिखाया अर्थात् लड़ो किंतु हाथमें शक्तिकी तलवार और बलिदानकी ढाल लो; लड़ो, किंतु हृदयमें घृणा न हो; लड़ो, किंतु स्मरण रखो कि लड़ाई अन्याय, अहिंसा, झूठ और दासताके विरोधमें है, मनुष्यके विरोधमें नहीं। क्योंकि अत्याचार करनेवालेको भी हमारी सेवा और सहानुभूतिकी आवश्यकता है। लड़ो, और यदि अहिंसा अपनी सारी शक्तिके साथ तुमपर झपटे तो वीरोंकी भाँति

गोलियाँ सीनेपर खाओ, पीठपर नहीं। गांधीजीने हमें यह सब कुछ न केवल बताया और सिखाया अपितु स्वयं करके दिखाया।

सच तो यह है कि भारतकी बीसवीं शती महात्माकी शती है। जब देशके हिन्दू, मुसलमान और सिक्खोंने शिष्टता, प्रेम, सहानुभूति और आपसदारीकी सारी शिक्षा भुला दी और खूनकी होली खेलनी प्रारंभ कर दी, जब इनकी पुकारपर, जो सत्यकी पुकार थी, लोगोंने ध्यान नहीं दिया तब इनका सहानुभूति-पूर्ण हृदय तड़प उठा—क्या मेरा देश हिंसाके रास्तेपर चलकर नष्ट हो जायेगा? नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता। इसने हिन्दुस्तान और पाकिस्तानको इस आगसे बचानेके लिए इस अंतिम लड़ाईमें सब वस्तुएँ यहाँतक कि अपने प्राणोंकी भी बाजी लगा दी।

❀

बम्बई असेम्बलीका प्रस्ताव

भारतीय राष्ट्रके पिता, भारतीय स्वाधीनताके जनक, प्रेम शांति तथा भ्रातृत्वके देवदूत महात्मा गांधीके निधनपर हम अपना हार्दिक शोक प्रकट करते हैं। उन्होंने अपना जीवन मानवताकी सेवाके लिए अर्पित कर दिया था तथा मानवताकी राजनीतिक तथा अन्य समस्याओंको सुलझानेके लिए अहिंसाके सिद्धांतका प्रतिपादन ही नहीं किया वरञ्च स्वयं उस सिद्धांतपर चलकर उसकी उपयोगिता प्रदर्शित की।

विगत तीस वर्षोंसे भारतके सार्वजनिक जीवनके अनेक क्षेत्रोंमें उनकी जो अद्वितीय देन है उसने उनको मानवजातिके उन महान उपकारियोंकी श्रेणीमें रख दिया है जो यद्यपि संसारसे उठ गये हैं तथापि संसारके विभिन्न भागोंमें असंख्य प्राणियोंके जीवनका निर्माण कर रहे हैं। ऐसे महान तथा श्रद्धेय व्यक्तिकी हत्यासे बढ़कर और दूसरी कौन दुर्घटना हो सकती है। यह असेम्बली मानवताके प्रति इस क्रूर तथा घृणित अपराधकी तीव्र निंदा करती है।

पश्चिमी बंगाल

माननीय चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

[गवर्नर : पश्चिमी बंगाल]

एक विक्षिप्त द्वारा हमारी सबसे बड़ी निधि आज लूट ली गयी। इस महादुःखके क्षणोंमें भगवान भारतकी सहायता करे, यही प्रार्थना है। हमारे सबसे प्यारे नेताके बलिदानसे समस्त घृणा, संपूर्ण संदेहका विनाश हो—यही हमारी कामना है।

० ० ०

अगर सरोजिनी देवी और जवाहरलाल नेहरूको बापूके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करनेमें अपनी आत्माके उभारको शांत करनेके लिए उपयुक्त शब्द नहीं मिलते, तो मुझे कहाँसे मिलेंगे ?

हिन्दुस्तान उस क्रौंचकी भाँति वेदनासे तड़प रहा है जिसका साथी बाल्मीकिकी आँखोंके सामने निर्दय बहेलियेके तीरका शिकार हुआ था। उस दुःखजनक घटनाको देखकर बाल्मीकिके हृदयका आवेग ऐसे शब्दोंमें फूट पड़ा, जिनकी ताल और रूपने श्रीरामकी कथाको ताल और रूप दिया।

हमारे इतिहासका, हिन्दुस्तानके भविष्यका स्वर भी हमारे इस विलापके अनुरूप हो, जो इस दुःखभरे अवसरपर, जब हमारे प्यारे बापूने प्रेम और सत्यके लिए अपने प्राण दिये हैं, फूट पड़ा है। हम ऐसी कोई बात न करें जिससे उस आत्माकी शांतिमें विघ्न पड़े क्योंकि गांधीजीका शरीर भले ही पंचतत्वोंमें मिल गया हो किंतु उनकी आत्मा अब भी हमारे कार्योंको देख रही है।

० ० ०

प्रेमके सिद्धांतका प्रचार करनेके लिए गांधीजीका अवतार हुआ था और उसी कार्यमें उनकी मृत्यु हुई।

यह जनताके छाती पीटने और विलाप करनेका समय है। वह पर्वत-शिलाके समान सत्यके और हरिजनोंकी आशाओंके आधार थे। कंधोंपर भारतका भार लिये भारत सरकार अपने सच्चे मित्र एवं कर्णधारसे वंचित हो गयी है।

यदि गांधीजीके घातक बधिकसे मेरी बातचीत हुई होती तो मैं उसे हृदयसे समझाता कि हम लोगोंके लिए दो-एक साल गांधीजीको छोड़ दे। यदि महात्माजी दो-एक साल और जी गये होते तो वह बहुत कुछ कर जाते। हालमें जब उन्होंने उपवास भंग किया तब उन्हें आशा थी कि वह इस उपयुक्त अवसरपर देशकी सेवा कर सकेंगे।

२९ जनवरीको प्यारेलालने मुझे एक पत्र भेजा था जो मुझे गांधीजीकी मृत्युके बाद मिला। उन्होंने लिखा था कि गांधीजी अपने सारूप्यमें हो गये हैं, पर मेरे मतसे उनका सारूप्य रामसे था जिनको वे सदा भजा करते थे।

० ० ०

यदि हमें इस संकटको पार करना है तो हम अंतर्मुख होकर अपनी त्रुटियोंको देखें और उनका परीक्षण करें, शेष ईश्वरपर छोड़ दें। ऐसा किये बिना संकट पार करना कठिन है। मुझे आशा है कि इस प्रकारकी प्रार्थनाएँ हमें अपने पापोंका परिचय देंगी और परस्पर प्रेम उत्पन्न करेंगी।

० ० ०

यदि जनता गांधीजीकी नीतिपर चले तो गांधीजी अमर हैं। वह हमारे हृदयमें वास करेंगे और हममें रहेंगे। यदि हम गांधीजीकी नीतिपर नहीं चलते तो नीतिके साथ नेताकी भी मृत्यु समझिये। और फिर हमारा पतन होगा और हम लोग वधिकके साथी माने जायँगे।

बापूके देहांतके बाद मेरा ध्यान निरंतर उनकी ओर जाता है। वह हमारे श्रद्धास्पद शिक्षक थे, हमारे अजातशत्रु नेता, हमारे सत्य, धर्म, पराक्रम थे। वह असंख्य जन-समूहके लिए समर्थ चिकित्सक थे जो भय दूरकर प्रेमका संचार करते थे। भारतके नर-नारी प्रतिदिन सायंकाल ५ बजे उस घटनाका स्मरण किया करें, जब बापूके मधुर उपदेशोंका श्रवण करनेके लिए जन-समूह एकत्र होता था और उनकी इच्छाओं और उद्देश्योंपर विचार किया करता जिसके लिए वे प्रार्थना करते थे। उस समय प्रति दिन दो मिनट व्यापक सद्भावनाके लिए मौन रहें तथा प्रार्थना करें।

हम अब भी अपना शोक, रोष और हिंसाके रूपको उलटकर संतोष करना चाहते हैं। हमारी प्रकृतिको दूषित करनेवाले इन पापोंसे हमें सदा सावधान रहना चाहिये। इस अपूर्ण संसारमें हम राजकीय दमनका परित्याग नहीं कर सकते, पर हम लोगोंको स्वीकार करना चाहिये कि सद्भावनासे सद्भावना होती है। पापका एकांतिक शमन महात्माजीकी शिक्षा द्वारा ही हो सकता है। शांति और सद्भावनाके लिए युद्ध और युद्धकी तैयारियोंकी बड़ी-बड़ी बातें की जाती हैं; पर तेलकी आहुतिसे अग्नि शांत नहीं हो सकती। क्या हम दिवंगत नेताके प्रेमके संदेशको स्मरण रखेंगे। क्या हम उनके उपदेशोंको स्मरण रखेंगे—प्रेम करना सीखो और बदलेमें प्रेम मिलेगा। अपना प्रेम बढ़ाओ, इससे प्रेम बढ़ेगा और तुम्हारी ओर आयेगा। यह ऐसी नीति है जिसे कोई विधान या तर्क बदल नहीं सकता।

० ० ०

अब कार्य समाप्त हो गया। संसार आज अपनेको खोयासा, भयंकर रूपसे खोयासा, महसूस कर रहा है। गत ३० जनवरीके शामको ५ बजे बापूका प्राणपखेरू उड़ गया। नश्वर शरीर हमारे साथ रहा और चेहरेकी मुस्कराहटने कुछ समयतक लोगोंको भ्रममें रखा; पर शनिवार ३१ जनवरीको हम लोगोंने अपनी धार्मिक रीतिके अनुसार अपने प्रिय नेताकी देहको यमुना-तटपर चिताकी लपटोंमें रख दिया। तब अवशेषके लिए हम सभी दौड़ पड़े।

भक्ति-भावके कारण हमें अवशेषमें बापू दिखाई पड़े। पर हमारे पूर्वजों द्वारा निर्धारित रीतिने हमें इस अवशेषको भी प्रवाहित करनेका आदेश दिया। अतः हमने बापूकी अस्थियाँ गंगामें प्रवाहित कर दीं और हम दुःखी हृदयके साथ अपनेको सर्वत्र तिरस्कृत समझ घर लौट रहे हैं। जिस क्षण बापू धराशायी हुए थे, प्रत्येक दिन, उसी क्षण हम अपने प्रिय गुरु,अपने अजातशत्रु, अपने सत्य-धर्म पराक्रमके बारेमें सोचें, जो अनगिनत नर-नारियोंके पथ-प्रदर्शक थे और जिन्होंने निरंतर भय दूरकर प्रेम बढ़ानेकी चेष्टा की।

प्रत्येक दिन शामको ५ बजे प्रत्येक भारतीय नर-नारी बापूके इंतजारमें समागत नर-नारियोंके दृश्यका स्मरण करे, उनकी मीठी आवाजकी याद करे और महात्माजी जो चाहते थे,जिसके लिए प्रतिदिन प्रार्थना करते थे,उसपर विचार करे। हमें प्रत्येक दिन ठीक इसी समय दो मिनट मौन रहकर भारत भरमें सद्भावना स्थापित करनेकी प्रार्थना करनी चाहिये। अब भी शोक क्रोध और हिंसामें आश्रय पाना चाहता है। इस पापसे हमें सतर्क रहना पड़ेगा। इस संसारमें दमन और सरकारी नियंत्रणसे छुटकारा नहीं मिल सकता। पर हमें स्पष्ट रूपसे अनुभव कर लेना

चाहिये कि सद्भावके द्वारा ही सद्भाव प्राप्त किया जा सकता है। हम अपने प्रिय नेताके उपदेशका अनुसरण कर बुराइयोंपर विजय पा सकते हैं। शांति और सद्भावकी चर्चा चारों ओर वहुत हो रही है, पर आगमें तेल डालकर उसे बुझाया नहीं जा सकता। हम अपने नेताके उपदेश और संदेशको स्मरण रखें। आप प्रेम करना शुरू करें तो दूसरे भी आपसे प्रेम करने लगेंगे। [अस्थि-विसर्जनके दिन

० ० ०

गांधीजीकी हत्याको चार सप्ताह बीत गये। हत्याका आज चौथा शुक्रवार है। इस राष्ट्रीय विपत्तिने भारतीय राजनीतिपर गहरा प्रभाव डाला है। सभी लोगोंमें यह इच्छा बलवती हो गयी है कि जिस हिंदू-मुस्लिम एकताकी बलिवेदीपर गांधीजीने अपनेको चढ़ा दिया उसकी स्थापना ही उनका सर्वोत्कृष्ट स्मारक होगा।

हिंदू-मुस्लिम एकताका अर्थ है हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, पारसी आदि उन सभी जातियोंकी एकता जो आज भारतमें बसी हुई हैं। भारतके सभी वर्णों और संप्रदायोंका राजनीति, संस्कृति आदि समस्याओंपर पहले जो कुछ भी मत रहा हो, गांधीजीकी मृत्युके कारण वे काफी प्रभावित हुए हैं। इस जघन्य हत्याके कारण लोगोंको जो शोक और संताप हो रहा है, यदि उसने क्रियात्मक रूप धारण किया तो गांधीजीकी मृत्युका देशपर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा अपितु यह उन महान पुरुषकी, उनके न रहनेके बाद, एक गौरवपूर्ण विजय होगी। यदि महात्माजीकी आत्मा हमारे हृदयमें व्याप्त हो गयी है तो हमारा शोक मनाना व्यर्थ है। परंतु मानव-सुलभ निर्बलता प्रायः हमारे सभी सुन्दर प्रयासोंको विफल बना देती है। अतः अपना कर्त्तव्य करनेके समय हमें सचेष्ट और सतर्क रहना आवश्यक है। सद्भावना, प्रेम, सत्य, आदिका प्रचार करनेके लिए महात्माजी जिये और उसीके लिए मरे। हमें स्मरण रखना चाहिये कि इन आदर्शोंकी स्थापना केवल कुछ संस्थाओं और संघटनोंमें परिवर्तन करनेसे नहीं होगी, और न यह काम वर्तमान व्यवस्थाका उन्मूलन करनेसे ही होगा। बाह्य आवरणको सुन्दर बना देनेसे ही हमारे उद्देश्य नहीं सिद्ध हो सकते और न आतंक और न भयसे ही हम प्रेम, आदर आदि उन्नत भावोंकी सृष्टि कर सकते हैं। हमारा काम तो उसी समय पूरा हो सकता है जब हमारे हृदयमें घृणाके स्थानपर प्रेम और सद्भावनाका उदय हो। यह उद्देश्य उसी समय सिद्ध होगा जब असंतुष्ट लोग यह कार्य अपने हाथमें लें। 'संप्रदायवादका नाश हो' के नारे हम लोगोंका हृदय परिवर्तन नहीं कर सकते। इसका श्रेष्ठ उपाय यही है कि हम अपने कार्योंसे लोगोंका हृदय बदलें।

[२७ फरवरी, १९४८]

माननीय ईश्वरदास जालान

[अध्यक्ष : पश्चिमी बंगाल प्रांतीय व्यवस्थापिका सभा]

महात्माजीका निधन ऐसे समय हुआ जब हमें उनकी बहुत जरूरत थी। उनका व्यक्तित्व ऐसा था, जैसा मानवताके संपूर्ण इतिहासमें दुष्प्राप्य है। ऐसे नेता तो अनेक हैं, जिन्होंने देशका उद्धार किया है, किंतु उनमेंसे शायद ही किसीने धर्म-रक्षाकी ओर भी ध्यान दिया हो। धार्मिक नेता भी अनेक हुए पर राजनीतिसे उनका कोई संपर्क नहीं रहा। केवल महात्मा गांधीमें ही धर्म और राजनीतिका हम समन्वय देखते हैं। इस देशमें जो बड़े-बड़े आंदोलन हुए, उनका संचालन गांधीजीने हिंसा और असत्यपर नहीं, बल्कि सत्य, अहिंसा, सुहृदता और सद्भावनाके आधारपर ही किया। यह अनुपम वस्तु है जिसे न केवल भारतीय अपितु समस्त विश्वके लोग सदैव याद रखेंगे। उनकी शिक्षाएँ हमारे लिए ज्योति-स्तंभका काम देंगी।

❀

माननीय विधानचंद्र राय

[प्रधान मंत्री : पश्चिमी बंगाल]

कितना स्तब्धकर समाचार! अहिंसाका युवराज एक हत्यारेकी हिंसाका लक्ष्य हो गया। इससे उत्पन्न शून्यताका माप असंभव है। इस क्षतिका अनुमान कौन कर सकता है। उस प्रिय दिवंगतके सम्मानमें हमको शांति बनाये रखना चाहिये और संसारको दिखला देना चाहिये कि हम उनके सच्चे शिष्य हैं।

० ० ०

अपने देशकी स्वतंत्रता और मानवताकी स्वाधीनताके लिए उन्होंने आजीवन संघर्ष किया। उनका विश्वास था कि हिंसा और रक्तपातसे क्लांत विश्व अंतमें सत्य और अहिंसाके पथका अनुसरण करेगा। साधारण मानवोंकी दुर्बलताओं और त्रुटियोंसे उन्होंने अपना जीवन आरंभ किया। पर धीरे-धीरे जीवनकी सरल किंतु भावुक दृष्टिसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण विचारोंपर अपनी कठोर साधनाओंको केंद्रित करते हुए अपने व्यक्तित्वको उन्होंने आमूल परिवर्त्तित कर दिया। अनेक वर्षोंसे आत्मानुशासन और आत्म-शिक्षणके पथपर चलते हुए वे

आगे ही बढ़ते गये। इस भाँति उनकी आत्मामें मनस्तुष्टि और स्वातंत्र्यका ऐसा बल उदित हुआ जो दूसरोंको शांति और स्वाधीनता प्रदान करनेमें सदैव समुत्सुक रहा।

हमारे राष्ट्रमें जो घृणा और हिंसा आज सक्रिय हो रही हैं उनकी एक भयावह और विचारणीय सूचना महात्माजीके इस निधनसे प्रकट होती है। इन शक्तियोंपर शीघ्रसे शीघ्र नियंत्रण करना और इन्हें विनष्ट कर देना अत्यावश्यक है। इनके प्रतिरोधमें सभी लोगोंको सहायता देनी चाहिये। अब गांधीजी नहीं रहे और न अब उनका स्थान कोई दूसरा ले सकता है। जबतक हम हैं हमें अपनी सारी शक्ति लगाकर महात्माजीके संदेशको पूर्ण करनेका प्रयत्न करना चाहिये। हमें सत्य और सहिष्णुताका अनुसरण करना चाहिये।

❀

डाक्टर प्रफुल्लचंद्र घोष

[भूतपूर्व प्रधान मंत्री : पश्चिमी बंगाल]

यह कितनी लज्जाकी बात है कि भारतकी स्वतंत्रता-प्राप्तिके बाद ही भारत-भाग्य-विधाता महात्मा गांधीकी हत्या एक भारतीय द्वारा हुई। भारतीय जनताके राष्ट्रीय जीवनके विभिन्न क्षेत्रोंमें गांधीजीकी जो बहुमुखी देन है, उसे हम अभी भलीभाँति या पूर्णरूपेण नहीं समझ सके हैं। सत्य और अहिंसाके देवदूत गांधीको किसी भी स्थितिमें हिंसा सह्य न थी। गांधीजीके जो भक्त और शिष्य हैं उन्हें हिंसाको कदापि प्रोत्साहन न देना चाहिये।

० ० ०

जनता महात्माजीके बताये आदर्शोंपर, बंधुता, सहिष्णुता एवं शांतिपर चले। उनके मार्गपर चलना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धा है। महात्माजी ऐसे समाज-की रचना चाहते थे जिसमें जाति, धर्म तथा स्त्री-पुरुषका कोई भेद न हो और एक वर्ग दूसरेका शोषण न करे।

❀

श्री हसन शहीद सुहरावर्दी

[भूतपूर्व प्रधान-मंत्री : बंगाल]

मुझे ऐसा जान पड़ रहा है जैसे समस्त विश्वका आधार ही ध्वस्त हो गया हो। आज कौन है जो दुखियोंके घावोंपर मलहम लगायेगा। जब कभी दुःखकी घड़ीमें उनके उपदेश और उनके द्वारा पथ-प्रदर्शनके लिए हम उनके पास गये, उन्होंने कभी निराश नहीं किया।

❀

माननीय किरणशंकर राय

[गृहमंत्री : पश्चिमी बंगाल]

हम स्तब्ध हैं। महान जीवनका महान अंत हुआ। स्वराज्य-प्राप्तिके पश्चात् उन्होंने उस हिंदू-मुस्लिम एकताके लिए आत्म-बलिदान कर दिया जो उनको स्वराज्यके समान ही प्रिय थी। वह इतने महान थे कि उनके लिए यथोचित शोक मनाना भी असंभव है।

❀

माननीय नलिनीरंजन सरकार

[अर्थ-मंत्री : पश्चिमी बंगाल]

मानवमात्रसे सहानुभूति रखनेवाले इस युग के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति महात्मा गांधी सार्वजनीन थे। गांधीजीके संदेशका मुख्य लक्ष्य यही था कि राजनीतिक स्वतंत्रता तबतक यथेष्ट नहीं है जबतक प्रत्येक साधारण व्यक्तिके जीवनमें आकांक्षाओं और सुख-सुविधाओंमें उसका रूप प्रतिबिंबित न हो जाय। वे जनताके ही थे, उसके अनन्य शुभचिंतक थे।

❀

माननीय राय हरेन्द्रनाथ चौधुरी

[शिक्षा-मंत्री : पश्चिमी बंगाल]

महात्मा गांधी भारतीय संस्कृतिके सच्चे प्रतिनिधि थे और भारतीय आदर्शोंके पूर्ण अवतार थे। अहिंसा, सत्य और बन्धुत्वका चिरंतन भारतीय संदेश गांधीजीकी वाणीमें पूर्ण रूपेण अभिव्यक्त हुआ है। वह अमर है।

❀

माननीय नीहारेन्दु दत्त मजूमदार

[न्याय-मंत्री : पश्चिमी बंगाल]

ऐसा कोई भी व्यक्ति न होगा जो यह समाचार सुनकर व्यथित न हुआ हो। गांधीजी हमारे देशकी शोभा थे, विभूति थे और नेता थे। उन्हें खोकर वसुंधराने अपना एक अनमोल रत्न खो दिया।

❀

माननीय के० पी० मुखर्जी

[श्रम-मंत्री : पश्चिमी बंगाल]

क्या मनुष्य इतना नीच हो सकता है कि विश्वकी विभूति, मानवताके अलंकार और भारतके निर्माता महात्मा गांधीकी हत्या कर डाले। यह असह्य है। इसपर विश्वास नहीं होता। गांधीजी शोषितों, पीड़ितों और निम्न वर्गके व्यक्तियोंकी सुख-सुविधाके साथ प्रत्येक व्यक्तिका हित-चिंतन करनेवाले थे। उनसे भी कोई बुरा मानकर ऐसा कुत्सित कर्म करेगा, यह अकल्पनीय है।

❀

माननीय यादवेन्दु पंजा

[कृषि-मंत्री : पश्चिमी बंगाल]

इस संवादपर विश्वास नहीं होता। गांधीजी भारतके भाग्य-विधायक और निर्माता तो थे ही, वह विश्वभरके शुभचिंतक और मानवताके प्रेमी थे। उनकी हत्या करनेवाला नराधम ही हो सकता है।

❀

माननीय प्रफुल्लचन्द्र सेन

[मंत्री पूर्त्ति-विभाग : पश्चिमी बंगाल]

क्रांतिकारियोंके मूर्धन्य महात्माजीकी मृत्यु वैभवमयी हुई। उनकी सहज मृत्युसे विश्वकी नैतिक-शिला इतनी डाँवाडोल न हुई होती जितनी इस मृत्युसे हुई। भारतीय-स्वतंत्रताके लिए ही गांधीजीका जन्म नहीं हुआ बल्कि विश्वकी एक नयी व्यवस्थाके लिए उनका जन्म था। जीवनके प्रत्येक अंगपर गांधीजीने अपनी छाप छोड़ी है। भले ही कुछ दिनोंतक प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ प्रतिवर्त्ती रहें पर उनकी मृत्युसे उत्पन्न शक्तियाँ एक नयी व्यवस्थाका सर्जन करेंगी।

o o o

महात्माजी अमर हैं। उनका संपूर्ण जीवन भारतके लिए एक संदेश था। उनकी मृत्युसे उनके आदर्शोंने सभी विरोधिनी शक्तियोंपर विजय प्राप्त की है और मुझे विश्वास है कि समयपर उन्हीं सिद्धांतोंकी आधार-भूमिपर एक नये समाजकी प्रतिष्ठा होगी। जिस सिद्धांतके लिए वे जिये और मरे वह एक दिन अवश्य ही सफल होगा।

❀

माननीय विमलचन्द सिन्हा

[मन्त्री उद्योग और यातायात विभाग : पश्चिमी बंगाल]

विना महात्माजीके भारतका स्वरूप-चिंतन अत्यंत कठिन था। हमें आज इस वातकी शपथ ले लेनी चाहिये कि हम इस देशमें सांप्रदायिकताको कभी बढ़ने नहीं देंगे।
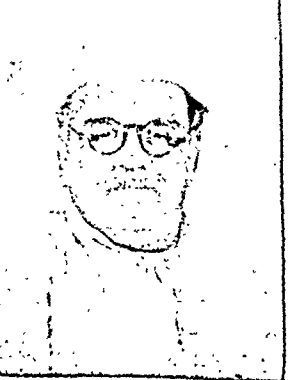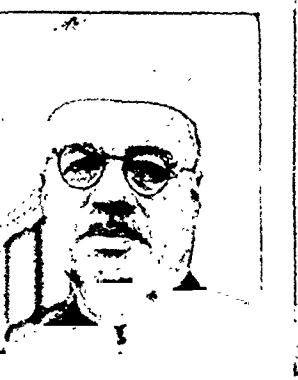
केन्द्रीय मंत्रिमण्डलके माननीय सदस्य प्रथम पंक्ति—१—पं० जवाहरलाल नेहरू, प्रधान मंत्री; २—सरदार वल्लभभाई पटेल, उप-प्रधान मंत्री; ३—मौलाना अबुल कलाम आजाद (शिक्षा), ४—श्री एन. गोपालस्वामी एयंगर। द्वितीय पंक्ति; ५—श्री क्षितीशचन्द्र नियोगी (पुनर्वासन); ६—श्री जगजीवनराम (श्रम); ७—डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी (उद्योग तथा पूर्ति); ८—राजकुमारी अमृतकौर (स्वास्थ्य); तृतीय पंक्ति: ९—श्री षण्मुखम् चेट्टी (अर्थ); १०—सरदार बलदेवसिंह (रक्षा); ११—श्री जयरामदास दौलतराम (खाद्य); १२—श्री रफी अहमद किदवई (संचार); चतुर्थ पंक्ति; १३—डाक्टर जान मथाई (यातायात); १४—श्री सी. एच. भाभा (व्यापार); १५—श्री विष्णु नरहरि गाडगिल (विद्युत तथा खान); १६—डाक्टर भीमराव अम्बेडकर (कानून)

युक्तप्रान्तीय सरकारका मंत्रिमंडल

श्री सम्पूर्णानन्द

पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल

श्री लालबहादुर शास्त्री

श्री एन० ए० शेरवानी

श्री चन्द्रभान गुप्त

श्री आत्माराम गोविन्द खेर
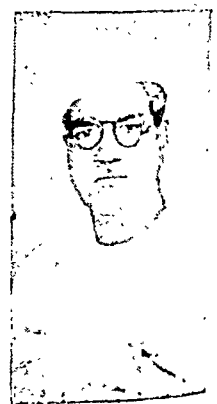
ठाकुर हुकुम सिंह

श्री गिरधारी लाल

हाफ़िज मुहम्मद इब्राहिम

पं० केशवदेव मालवीय

माननीय एच. सी. नस्कर

[मंत्री जंगल विभाग : पश्चिमी बंगाल]

महात्मा गांधीके आकस्मिक निधनपर मैं अखिल भारतीय हरिजन संघकी ओरसे परमात्मासे प्रार्थना करता हूँ कि उनकी दिवंगत आत्माको सद्गति प्रदान करे। परिगणित जातिवाले उनके आदर्शोंसे अनुप्राणित होकर उनके अपूर्ण कार्योंको पूरा करें, मैं यही चाहता हूँ।

० ० ०

महात्मा गांधीको अमर बनानेका सर्वोत्तम उपाय यह है कि हम उनके सिद्धांतोंपर चलें। हमारी अदूरदर्शिता ही गांधीजीकी मृत्युका कारण है। वर्षोंसे हमने सांप्रदायिकताका विष फैलाया और वह महात्माजीकी मृत्युका कारण हुआ।

महात्माजी आजीवन हिंदू-मुस्लिम एकताके समर्थक थे और शोषण-विहीन समाजकी स्थापना करना चाहते थे। हम अपने हृदयका शोधन करें, हिंसा तथा असत्यको दूर करें और परस्पर प्रेम करना सीखें। हमें ऐसे समाजकी स्थापनाके लिए प्रयत्नशील होना चाहिये जिसमें एक मनुष्य दूसरेका शोषण न करे। यदि हम ऐसा नहीं कर सकते तो हमें लज्जित होना चाहिये और महात्माजीके देशके निवासी होनेका गौरव त्याग देना चाहिये।

❀

श्री मुहम्मद अली

[भूतपूर्व मंत्री : बंगाल]

महात्मा गांधीकी मृत्युके कारण जो हानि हुई है उस अपार दुःख, असह्य वेदना और अपूरणीय क्षतिको व्यक्त करनेके लिए समुचित शब्द ही नहीं बने हैं। अनाथ भारतका हृदय विदीर्ण हो उठा, जनताकी आँखोंमें आँसू छलछला आये और सहानुभूतिमें सारा विश्व रो पड़ा। इतिहासमें ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिलता जिसके निधनपर इतना विश्वव्यापी शोक मनाया गया हो। आइये, अब हम अपने हृदय-मंदिरमें शांति, सद्भावना, प्रेम और स्नेहकी उनकी अमर शिक्षाओं-को बिना किसी भेदभावके प्रतिष्ठित करें।

श्री ए. एफ. एम. अब्दुर्रहमान

[मुसलिम लीगी दलके नेता : पश्चिमी बंगाल]

धर्म तथा पवित्रताका पथ प्रकाशित करनेवाली ज्योति बुझ गयी।

सर आर्थर ट्रेवर हेरिस

[प्रधान न्यायाधीश : प्रधान न्यायालय, कलकत्ता]

गांधीजीका वध करनेवाली गोलियोंकी प्रतिध्वनि जगतके सभी देशोंमें व्याप्त हो गयी। सभ्य जगतमें यह बात मान ली गयी है कि गांधीजीकी दुःखद मृत्युसे शांति एवं न्यायके पक्षको गहरा धक्का लगा है। भारतके सभी लोगोंको उनकी आकस्मिक मृत्यु असह्य हो गयी है। विपत्तिमें धैर्य्य, सरलता, विनय, दयालुता, सहनशीलता और सत्य उनके विशेष गुण थे।

भारतकी स्वतंत्रता उनकी देन है। जगतके पवित्र शहीदोंमें उनको स्थान मिल गया है। आदर्शोंके लिए वे मरे। उनके जीवनकी पवित्रता हमारा पथ-प्रदर्शन करे और हम उनके आदर्शोंको पूर्ण करनेमें समर्थ हों।

सर प्रमथनाथ बैनर्जी

[कुलपति : कलकत्ता विश्वविद्यालय]

निराश हृदयके अंतरालसे निकले हुए आँसू अबतक सूखे नहीं हैं। आज विश्वका कण-कण रो रहा है। नगर और प्रासाद, गाँव और वृक्ष, झोपड़ियाँ और राजमहल, दरिद्र और वैभवशाली, सभी एक स्वरसे रो रहे हैं। मानवताके सर्वोत्तम पुत्रके निधनपर जो क्रंदन आज सबके कंठसे फूट पड़ा है, उसमें तनिक भी कृत्रिमता नहीं है। विश्वकी जो उच्च और धार्मिक भावनाएँ सृष्टिके आदिकालसे कलुषित शक्तियोंके विरुद्ध संघर्ष करती आयी हैं, महात्मा गांधी उन सबके मूर्तिमान प्रतीक थे।

विना किसी भेदभावके वे समस्त मानवताके सर्वप्रथम सबसे बड़े सेवक थे। उन्होंने भारतीय दर्शनोंका तत्व पूर्णतः अनुभव किया था। दो महायुद्धोंने धरतीपर जिस क्रूरता, हिंसा और निरंकुशताका सर्जन किया है और उसके कारण जिस अंधकारसे आज सारा संसार आच्छन्न है, उसमें प्रकाश-पुंजकी भाँति अवतरित होकर पथभ्रष्ट मानवताको सच्चा मार्ग दिखानेका श्रेय केवल महात्माजीको ही प्राप्त है। आज दो सहस्राब्दी पूर्व ईसाकी मृत्युकालसे 'सत्य क्या है' की जो समस्या पश्चिमने विश्वके सामने रखी थी, पूर्वके इस महर्षिने उसका समाधान उपस्थित किया। उनके लिए ईश्वर ही सत्य था और सत्य ही ईश्वर। हमने जो पाप आज किया है, केवल पश्चात्तापसे उसका प्रायश्चित्त नहीं हो सकता। गौतम और ईसा जिस भाँति युग-युगसे पूजित होते आ रहे हैं, वैसे ही बापू भी पूजित होंगे और यदि मानव उनके उपदेशोंपर चल सका तो यहीं पृथ्वीपर स्वर्गीय नन्दन-काननकी सुख-शांतिका साम्राज्य छा जायगा।

० ० ०

वापूने हमें वह मार्ग दिखाया जिसपर हमें भविष्यमें चलना चाहिये। विश्वके अभ्युत्थान और कल्याणका केवल वही एक मार्ग सदैव रहेगा जिसका उन्होंने उपदेश दिया है।

❀

आचार्य क्षितिमोहन सेन

[आचार्य : शान्ति निकेतन]

आजका दिन प्रार्थना तथा आत्म-शुद्धिका है, जिससे जीवनमें हमारी श्रद्धा हो कि वह मृत्युसे वड़ा है। जो राष्ट्रीय दुर्घटना हुई है और जिसने हम सबको संतप्त कर दिया है उसके उत्तरदायित्वसे हम लोग अलग नहीं हो सकते। प्रत्येक व्यक्ति,जो घृणा और लालचके पापमें सम्मिलित है,इसमें सहायक हुआ है। हत्यारा उस हिंसाका प्रतीक मात्र है जो देशमें व्याप्त हो रही है। मनसे, वचनसे, कर्मसे हिंसाको त्यागनेके पश्चात् ही हमें गांधीको श्रद्धाञ्जलि अर्पित करनेका अधिकार है। यदि आत्मा अमर है तो गांधी मर नहीं सकते।

❀

श्री सुधीर चन्द्र राय चौधरी

[मेयर : कलकत्ता कारपोरेशन]

ऐसे संकटपूर्ण समयमें जब मानव जातिको उनकी सबसे अधिक आवश्यकता थी, महात्माजीका महाप्रयाण केवल किसी एक राष्ट्रकी विपत्ति नहीं है वरन् समस्त विश्वकी सबसे बड़ी शोकपूर्ण दुर्घटना है।

ऐसे महापुरुषकी स्तुति करना सर्वथा असंभव है जो स्तुति-प्रशंसासे भी ऊपर था और जिसका नामोच्चारणमात्र लाखों-करोड़ों मनुष्योंके लिए स्तुतिका मूलमंत्र था। कवीन्द्र रवीन्द्र जैसे प्रतिभाशाली कविके द्वारा ही ऐसे सर्वोच्च अलौकिक महापुरुषके चरित्र-सौंदर्यका शब्द-चित्रांकन किया जा सकता है। उनके जीवनमें जो युग-प्रवर्त्तक घटनाएँ भरी पड़ी थीं उनका रहस्य उद्‌घाटित करनेके लिए बासफोल्डके समान भाषापर अधिकार होना आवश्यक है और उनके सामाजिक तथा राजनीतिक सेवाओंकी घोषणा करनेके लिए एडमण्ड बर्कके समान वक्तृत्व-शक्तिकी आवश्यकता है।

❀

सर अब्दुल हलीम गजनवी

[भूतपूर्व मेयर : कलकत्ता]

असत्‌पर सत्‌की, हिंसापर अहिंसाकी तथा नृशंसतापर दया और उदारताकी विजयका अंतिम अभिनय दिखानेके लिए गांधीजीने अपना जीवन आहुत कर दिया।

विश्वका सर्वश्रेष्ठ मानव आज चला गया। इस उन्मत्त संसारमें, जहाँ प्रत्येक क्षण विनाशके अधिक शक्तिशाली साधनोंके आविष्कारका प्रयत्न होता रहता है, यह विचित्र महापुरुष, यह स्थितप्रज्ञ हमारे बीच करुणापूर्ण स्नेह और वीरतापूर्ण साधुताका संदेश लेकर आया। उनकी वाणीका महत्त्व न समझनेके कारण अधिकतः लोगोंने उन्हें पागल समझा। आज उनके निधनके बाद उनका तात्पर्य लोग धीरे-धीरे समझ रहे हैं। इसी कारण उनका जीवन एक महाकाव्य है जो उनकी मृत्युमें निहित है। भावी युगके निरंतर चिंतनके लिए यह एक महत्त्वपूर्ण विषय है और उसका चिंतन करते हुए हम आजतक जितने उपदेशक महात्मा हो चुके हैं उन सबके संदेशामृतका पान कर सकते हैं।

इस हृदय-विदारक समाचारसे भयंकर धक्का लगा है। समवेदनाके लिए शब्द ही नहीं मिलते। महात्माजी मरे हैं अमर होनेके लिए ।

❀

मानीय सैयद बद्रूदुजा

[भूतपूर्व मेयर: कलकत्ता]

एक विनम्र मुसलमान होनेके नाते आज उस महात्माकी स्मृतिमें अपनी अश्रुधाराकी श्रद्धाञ्जलि समर्पित कर रहा हूँ जो वर्तमान युगमें हिंदके मुसलमानोंका सबसे बड़ा शुभचिंतक था।

किसी भी राष्ट्रके इतिहासमें ऐसे क्षण आ जाया करते हैं जब आँसुओंकी मौन श्रद्धाञ्जलि अभिव्यक्तिसे अधिक भावाभिव्यंजक होती हैं। आदर्श और उज्ज्वलचरित बापूके जीवनकी आकस्मिक और शोकपूर्ण समाप्तिने हमारे जीवनमें आज वैसा ही क्षण ला दिया है।

इस महापुरुषमें न जाने क्या अलौकिक आकर्षण था, अद्भुत मोहक शक्ति थी जिसके कारण चालीस करोड़ जनताके हृदयकी अभिलषित स्वतन्त्रता बापूके जीवनमें ही हमें प्राप्त हो गयी। उनकी मृत्युसे विश्वकी सर्वश्रेष्ठ विभूति उठ गयी। स्वातंत्र्य-संग्राममें जिस प्रणालीकी सहायतासे उन्होंने सफलता प्राप्त की, विश्व-स्वातन्त्र्यके इतिहासमें वह अभूतपूर्व घटना है। वे शांति, सत्यता और प्रेमके साकार प्रतीक थे। अहिंसा और करुणा उनके जीवनकी स्फूर्त्ति थी।

हम मुसलमानोंके लिए तो वे पथ-प्रदर्शक, बंधु और सबसे बड़े उपदेष्टा थे। सांप्रदायिक विद्वेषके विरुद्ध लड़ते हुए उन्होंने अपने जीवनकी आहुति दे डाली। उनके जीवनकी महत्ता उनके दीर्घ जीवनमें नहीं है वरन् उन अनेक लक्ष्योंकी साधना है, जिनमें उनके जीवनका प्रत्येक क्षण निरत था, जिनमें उन्हें अद्भुत सफलता प्राप्त हुई और जिन क्षणोंमें पीड़ित मानवताके कष्ट-निवारणमें करुणार्द्र चित्तसे वे लगे रहे। उनके शरीरका अंतिम रक्त-कण भी इसीलिए बहा। उनकी मृत्यु शहीदोंके समान हुई। उच्च आदर्शोंको प्रतिष्ठित करनेके लिए संघर्ष करते हुए वे मरे। हमारी कामना है कि उनके रक्तकी यह आहुति उच्च आदर्शोंकी स्थापना करनेमें सफल हो।

❀

आदरणीय लार्ड बिशप फास वेस्टकाट

[भूतपूर्व मेट्रोपालिटन : पश्चिमी बंगाल]

महात्मा गांधीकी क्रूर हत्याका समाचार सुनते ही हम शोकाभिभूत हो गये हैं। इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती कि कैसे महात्माजी जैसे संत महापुरुषको मारनेकी कोई व्यक्ति इच्छा कर सका होगा, जिसका सारा जीवन अपने देशवासियोंकी कल्याण-साधनमें बीतता था और जो सभी भाँति उनकी सहायता करनेकी चिंता किया करता था। कुछ दिनों पूर्व, जब मैं दिल्लीमें था, मैंने उन्हें देखा था। जिस समय मैं उनसे भेंट करने गया था उस समय वह नयी दिल्लीकी सीमापर हरिजनोंके लिए बने हुए एक छोटेसे घरमें रहते थे। कुछ दिनोंसे वह बिड़ला-भवनमें रहने लगे थे, जो भवन उस हरिजन बस्तीवाली कुटीसे भिन्न था। पर, मैं समझता हूँ, वहाँ रहनेका यह कारण था कि उन्हें नेताओंका सदा निरीक्षण करते रहनेकी आवश्यकता पड़ा करती थी और यह कार्य हरिजनोंके मकानमें रहकर संभव नहीं था!

० ० ०

कितनी मूर्खतापूर्ण यह हत्या थी। उस मनुष्यकी हत्या जिसके जीवनका लक्ष्य दलितों, पीड़ितों और अस्पृश्योंकी सहायता करना था, जिसके जीवनका ध्येय कष्ट सहकर भी सेवा करना था!

किंतु इसी रीतिसे संसार महापुरुषोंके साथ व्यवहार करता आया है। ईसाका शूलीपर चढ़ाया जाना इस बातका प्रतीक है कि संसार महात्माओंके साथ कैसा व्यवहार करता है।

❀

"अहिंसा सत्यकी गवेषणाका अधिष्ठान है। अहिंसा और सत्य एक दूसरेके साथ इस तरह गुथे हुए हैं कि उनको खोलकर अलग अलग करना बहुत मुश्किल है। वे सिक्केकी दो बाजुओंके समान हैं, बल्कि यों कहिये कि वे एक धातुकी गोल चिकनी और बिना छापवाली चक्रीकी दो बाजुएँ हैं। कौन कह सकता है कि उनमेंसे कौन सी सीधी और कौन सी उलटी हैं? फिर भी अहिंसा साधन है और सत्य साध्य। साधनाका साधनत्व इसीमें है कि वह अव्यवहार्य न हो। इसलिये अहिंसा हमारा परम धर्म है। यदि हम साधनकी रक्षा करें तो आज नहीं तो कल हम साध्यको प्राप्त कर ही लेंगे।" —गांधीजी

❀

श्री सुरेन्द्र मोहन घोष

[अध्यक्ष : प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, पश्चिमी बंगाल]

महात्माजीकी हत्याके समाचारसे आज समस्त राष्ट्र स्तब्ध हो गया है। एक विक्षिप्त मनुष्यने आज विश्वको सर्वश्रेष्ठ महामानवसे विहीन कर दिया। महात्माजीने अपने नश्वर शरीरकी मृत्युको सदैव उपेक्षाकी दृष्टिसे देखा और अब उनकी आत्मा भी सदाके लिए मृत्युको तुच्छ समझेगी। उन्होंने केवल स्वतंत्रता ही नहीं, वरन् बहुत कुछ दिया। उन्होंने मानवको उसकी विनष्ट नवचेतना फिरसे प्रदान की। हमारे सामने उन्होंने नये आदर्श और नयी सामाजिक भावना प्रतिष्ठित की। इन सबसे बढ़कर उन्होंने साधारणसे साधारण व्यक्तिको भी मानवताके उच्च स्तरपर ला खड़ा किया। कवीन्द्र रवीन्द्रके शब्दोंमें कह सकते हैं—'जिसकी हमने हत्या कर डाली, वही हमारा पथ-प्रदर्शन करेगा।' अपनी संदेहशीलताके कारण हमने उनका महत्त्व समझनेमें भूल की, अपने क्रोधके कारण हमने उन्हें मार डाला, पर अब हम लोग उनके प्रति अपने प्रेमके कारण उनका गौरव समझेंगे, क्योंकि उनकी ब्राह्मीभूत आत्मा हम सबमें व्याप्त हो गयी है। इस भाँति वे मृत्युञ्जय हो गये हैं।

श्री कालीपदो मुखर्जी

[मंत्री: प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, पश्चिमी बंगाल]

भारतीय इतिहासकी इस संकटापन्न स्थितिमें महात्माजीका अभाव घातक सिद्ध हो सकता है। वह राष्ट्रके पिता ही नहीं थे, वरन् निकटतम मित्र और परामर्शदाता भी थे। उन्होंने ही हमें विजयकी शुभ घड़ीतक पहुँचाया। अहिंसा, सत्य और सत्याग्रहका अमोघ अस्त्र उन्होंने हमें प्रदान किया, तथा चतुर गुरुकी भाँति स्वातंत्र्य-संग्राममें लड़नेवाले देशको उस अस्त्रका उचित प्रयोग करना सिखाया। उन्होंने सारे विश्वको दिखला दिया कि घातक शस्त्रास्त्र और हिंसा ही ऐसे साधन नहीं हैं जिनसे देश स्वाधीनता प्राप्त कर सकता है।

इसलिए भारतवर्षको महात्मा गांधी और उनकी युद्ध-कलापर महान गर्व है। खेद है कि महात्माजी अपने लगाये हुए वृक्षको फला-फूला हुआ न देख सके। उनके स्वराज्यका चित्र किसान-प्रजा-मजदूर-राजका था। वे धनिकोंके

आदरणीय लार्ड बिशप फास वेस्टकाट

[भूतपूर्व मेट्रोपालिटन ; पश्चिमी बंगाल]

महात्मा गांधीकी क्रूर हत्याका समाचार सुनते ही हम शोकाभिभूत हो गये हैं। इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती कि कैसे महात्माजी जैसे संत महापुरुषको मारनेकी कोई व्यक्ति इच्छा कर सका होगा, जिसका सारा जीवन अपने देशवासियोंकी कल्याण-साधनमें बीतता था और जो सभी भाँति उनकी सहायता करनेकी चिंता किया करता था। कुछ दिनों पूर्व, जब मैं दिल्लीमें था, मैंने उन्हें देखा था। जिस समय मैं उनसे भेंट करने गया था उस समय वह नयी दिल्लीकी सीमापर हरिजनोंके लिए बने हुए एक छोटेसे घरमें रहते थे। कुछ दिनोंसे वह बिड़ला-भवनमें रहने लगे थे, जो भवन उस हरिजन बस्तीवाली कुटीसे भिन्न था। पर, मैं समझता हूँ, वहाँ रहनेका यह कारण था कि उन्हें नेताओंका सदा निरीक्षण करते रहनेकी आवश्यकता पड़ा करती थी और यह कार्य हरिजनोंके मकानमें रहकर संभव नहीं था!

० ० ०

कितनी मूर्खतापूर्ण यह हत्या थी। उस मनुष्यकी हत्या जिसके जीवनका लक्ष्य दलितों, पीड़ितों और अस्पृश्योंकी सहायता करना था, जिसके जीवनका ध्येय कष्ट सहकर भी सेवा करना था!

किंतु इसी रीतिसे संसार महापुरुषोंके साथ व्यवहार करता आया है। ईसाका शूलीपर चढ़ाया जाना इस बातका प्रतीक है कि संसार महात्माओंके साथ कैसा व्यवहार करता है।

❀

"अहिंसा सत्यकी गवेषणाका अधिष्ठान है। अहिंसा और सत्य एक दूसरेके साथ इस तरह गुथे हुए हैं कि उनको खोलकर अलग अलग करना बहुत मुश्किल है। वे सिक्केकी दो बाजुओंके समान हैं, बल्कि यों कहिये कि वे एक धातुकी गोल चिकनी और बिना छापवाली चक्रीकी दो बाजुएँ हैं। कौन कह सकता है कि उनमेंसे कौन सी सीधी और कौन सी उलटी हैं? फिर भी अहिंसा साधन है और सत्य साध्य। साधनाका साधनत्व इसीमें है कि वह अव्यवहार्य न हो। इसलिये अहिंसा हमारा परम धर्म है। यदि हम साधनकी रक्षा करें तो आज नहीं तो कल हम साध्यको प्राप्त कर ही लेंगे।"

—गांधीजी

❀

श्री सुरेन्द्र मोहन घोष

[अध्यक्ष : प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, पश्चिमी बंगाल]

महात्माजीकी हत्याके समाचारसे आज समस्त राष्ट्र स्तब्ध हो गया है। एक विक्षिप्त मनुष्यने आज विश्वको सर्वश्रेष्ठ महामानवसे विहीन कर दिया। महात्माजीने अपने नश्वर शरीरकी मृत्युको सदैव उपेक्षाकी दृष्टिसे देखा और अब उनकी आत्मा भी सदाके लिए मृत्युको तुच्छ समझेगी। उन्होंने केवल स्वतंत्रता ही नहीं, वरन् बहुत कुछ दिया। उन्होंने मानवको उसकी विनष्ट नवचेतना फिरसे प्रदान की। हमारे सामने उन्होंने नये आदर्श और नयी सामाजिक भावना प्रतिष्ठित की। इन सबसे बढ़कर उन्होंने साधारणसे साधारण व्यक्तिको भी मानवताके उच्च स्तरपर ला खड़ा किया। कवीन्द्र रवीन्द्रके शब्दोंमें कह सकते हैं—'जिसकी हमने हत्या कर डाली, वही हमारा पथ-प्रदर्शन करेगा।' अपनी संदेहशीलताके कारण हमने उनका महत्त्व समझनेमें भूल की, अपने क्रोधके कारण हमने उन्हें मार डाला, पर अब हम लोग उनके प्रति अपने प्रेमके कारण उनका गौरव समझेंगे, क्यों कि उनकी अविनाशी आत्मा हम सबमें व्याप्त हो गयी है। इस भाँति वे मृत्युञ्जय हो गये हैं।

❀

श्री कालीपदो मुखर्जी

[मंत्री : प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, पश्चिमी बंगाल]

भारतीय इतिहासकी इस संकटापन्न स्थितिमें महात्माजीका अभाव घातक सिद्ध हो सकता है। वह राष्ट्रके पिता ही नहीं थे, वरन् निकटतम मित्र और परामर्शदाता भी थे। उन्होंने ही हमें विजयकी शुभ घड़ीतक पहुँचाया। अहिंसा, सत्य और सत्याग्रहका अमोघ अस्त्र उन्होंने हमें प्रदान किया, तथा चतुर गुरुकी भाँति स्वातंत्र्य-संग्राममें लड़नेवाले देशको उस अस्त्रका उचित प्रयोग करना सिखाया। उन्होंने सारे विश्वको दिखला दिया कि घातक शस्त्रास्त्र और हिंसा ही ऐसे साधन नहीं हैं जिनसे देश स्वाधीनता प्राप्त कर सकता है।

इसलिए भारतवर्षको महात्मा गांधी और उनकी युद्ध-कलापर महान गर्व है। खेद है कि महात्माजी अपने लगाये हुए वृक्षको फला-फूला हुआ न देख सके। उनके स्वराज्यका चित्र किसान-प्रजा-मजदूर-राजका था। वे धनिकोंके

कारण उत्पन्न होनेवाले संकटसे पूर्णतः परिचित थे, इसलिए आर्थिक विकासके क्षेत्रमें भी उनकी योजना अहिंसा और सत्यके सहारे ऐसी स्थिति उत्पन्न करनेकी थी जिसमें ऊँच-नीचका भेदभाव न रह जाय, जिसमें एक दूसरेका शोषण न हो सके। संभव था, आर्थिक-क्षेत्रमें भी उनके साधन सफल होते किंतु ईश्वरकी इच्छा कदाचित् कुछ और ही रही।

महात्माजी समस्त मानवताके मित्र और शुभचिंतक थे,किंतु हरिजनोंपर उनका ध्यान विशेष था। पीड़ितोंकी रक्षा उनका धर्म था। आधुनिक युगके मनुष्योंमें महात्माजी मानव शरीरमें विश्व-बंधुत्व और शांतिके साक्षात् अवतार थे। अपने लक्ष्यकी सिद्धिके लिए उन्होंने अपना जीवन बलिदान कर दिया। अनेक वार अनशन कर उन्होंने अपने प्राणोंकी बाजी लगा दी। नोआखाली, बिहार, कलकत्ता, दिल्ली, चाहे जहाँ कहीं भी एक मनुष्यने दूसरे मनुष्यसे घृणा दिखाई, उनकी आत्माको समान पीड़ा हुई। स्वतंत्रता प्राप्त करनेके पश्चात् अपने लक्ष्य और सांप्रदायिक-ऐक्यकी प्राप्तिमें उन्होंने अपनी आहुति दे दी। यह शानदार जीवनका शानदार अंत था। इसलिए हमें पूर्ण विश्वास है कि इस शहीदका खून जिस उद्देश्यकी पूर्तिमें बहा है, वह निरर्थक न जायगा और शांति, मैत्री एवं सहिष्णुतासे पूर्ण एक नये युगका आरम्भ करनेमें सफल होगा।

सर वी० पी० राय

[भूतपूर्व अध्यक्ष: भारतीय नेशनल लिबरल फेडरेशन तथा बंगाल कौंसिल]

महात्माजी शहीदोंके समान मरे। उनका जीवन अहिंसाके यज्ञमें आहुत हो गया। हमें सच्चे हृदयसे प्रार्थना करनी चाहिये कि उनका पावन आदर्श अंततः सफल हो और शीघ्र ही विभक्त भारतको एक करे। उनके चले जानेपर भी उनका जीवन भविष्यत् और वर्तमानके करोड़ों भारतवासियोंको चिर कालतक स्फूर्ति प्रदान करता रहेगा। भारत एक स्वरसे घोषित करेगा—'गांधीजी मर गये, फिर भी वे अमर हैं।'

सैयद नौशेर अली

[अध्यक्ष : जमैयत-उल्-उलेमा-हिन्द, बंगाल]

भारतकी राजनीतिक स्वतंत्रता और आध्यात्मिक उन्नतिकी चेष्टामें महात्मा गांधी जिये और मरे। वे केवल भारतकी ही नहीं समस्त विश्वकी मानवताके लिए एक वरदान थे।

❀

माननीय रोवेन हाज

[अध्यक्ष : यूरोपियन-संघ]

महात्मा गांधीके मर्मस्पर्शी मृत्यु-समाचारसे यूरोपियन समाज स्तब्ध है। आशा है, भविष्यमें सभी जातियाँ मेलसे रहेंगी और गांधीजीकी सत्य-अहिंसाकी सिद्धिके लिए प्रयत्नशील होंगी।

महात्मा गांधीसे बढ़कर मानवताका कोई दूसरा प्रेमी नहीं था और अहिंसाका उनका सिद्धांत संसारके लिए एक नया आदर्श है।

❀

श्री के. एन. दलाल

[अध्यक्ष : नोआखाली पीड़ित-सहायता-सीमति]

महात्माजीके अपूर्ण कार्योंको पूरा करनेका उत्तरदायित्व आज उन लोगोंका सर्वश्रेष्ठ कर्त्तव्य हो गया है जो उनके बाद बचे हुए हैं। गांधीजी वर्तमान युगके सर्वश्रेष्ठ उद्धारक थे। उनके आदर्शोंपर चलना ही उस दिवंगत आत्माके प्रति सबसे बड़ी श्रद्धाञ्जलि होगी।

❀

"सत्य असत्यपर विजय प्राप्त करता है, प्रेम द्वेषको परास्त करता है और ईश्वर निरंतर शैतान के दाँत खट्टे करता है।" —गांधीजी

❀

श्री रामानन्द दास

[मंत्री : अखिल भारतीय दलितजाति-संघ]

महात्मा गांधीका यह अप्रत्याशित निधन सामान्यतः समस्त विश्वकी और विशेषतः भारत तथा पाकिस्तानकी अपूर्णीय क्षति है। भारतके आठ करोड़ हरिजन आज बापूके इस दुःखद और असामयिक महाप्रयाणसे अनाथ हो गये हैं। महात्माजी निश्चय ही इस युगके सर्वश्रेष्ठ महापुरुष थे।

❀

श्रीमती रेणुका राय

[विधान-परिषद्‌की सदस्या तथा प्रसिद्ध नेत्री]

यद्यपि बापू अब शारीरिक रूपसे हमारे बीच नहीं हैं, तथापि उनकी अमर आत्मा हमारे साथ रहेगी। वह अंधकारपूर्ण संकट-कालमें भी हमारा मार्ग प्रकाशित करती रहेगी, हमें सांत्वना देगी तथा सामयिक विपत्तियोंसे हमें मुक्त करेगी। भारत आदि कालसे बड़े-बड़े ऋषियों, महात्माओं और दार्शनिकोंकी भूमि रहा है। आध्यात्मिक विकास ही इसके गौरवका कारण रहा है, किंतु महात्मा गांधी ही एक ऐसे व्यक्ति हुए जिन्होंने समस्त संसारको बतलाया कि राज-कार्य और राजनीतिमें भी सत्य और नैतिकताके आधारका त्याग नहीं होना चाहिये।

अब महात्माजीके अभावमें हमारा यह सर्वप्रथम कर्त्तव्य हो जाता है कि हम अपना हृदय टटोलें, साहस और निष्ठासे अपने मतभेदोंको दूर कर ऐक्य स्थापित करें और बापूके मार्गका अनुसरण कर उनका जीवन-लक्ष्य सांप्रदायिक मैत्री प्राप्त करें। नारी होनेके नाते भारतकी समस्त देवियोंसे मेरा अनुरोध है कि जिस महात्माका संदेश शताब्दियोंके रूढ़िगत बंधनों और अंध-परम्पराओंकी कठोर दीवारको भी भेदकर उनतक पहुँचा है, उस महात्माकी पुकारको वे अनसुनी न करें। उनके कार्योंको पूरा करनेके प्रयासमें ही लगकर हम उनकी स्मृतिका उचित सम्मान कर सकेंगे।

❀

सुश्री लीला राय

[प्रसिद्ध क्रान्तिकारिणी तथा मजदूर नेत्री]

समस्त विश्वकी दृष्टिमें महात्माजी शांति और बंधुत्वके साकार प्रतीक थे। अपने अहिंसा-सिद्धांतमें बल और साहसका संचार कर महात्माजीने अंग्रेजोंको भारत छोड़नेके लिए विवश कर दिया। राष्ट्रकी जनताका आज यह प्रमुख कर्त्तव्य है कि बापूकी पुण्यस्मृतिमें देशको सांप्रदायिकतासे दूर रखे।

❀

श्री हेमन्त कुमार बोस,

[प्रसिद्ध कांग्रेस नेता]

उन्होंने भू-लुण्ठित राष्ट्रका उत्थान किया। उनकी मृत्युके कारण भारतके धवल कीर्तिपर धब्बा लगा है। विश्व-शांतिके लिए गांधीवादके अतिरिक्त और कोई दूसरा मार्ग नहीं है।

❀

श्रीमती ई. एम. रिकेट्स

[एंग्लो-इन्डियन नेत्री : कलकत्ता]

महात्माजीके हृदयमें सत्यके प्रति निष्ठा एवं विश्वास इतना प्रबल था कि कोई भी उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था। उनका विरोध-पक्ष स्वयं समाप्त हो जाता था। हम लोग, जो उनकी विजयपर विजय देख चुके हैं, विश्वास करते हैं कि वह अजेय ही नहीं थे किंतु अमर भी हैं।

❀

कलकत्ता विश्वविद्यालय

[सिनेटका प्रस्ताव]

विश्वविद्यालयकी यह सिनेट विश्ववन्द्य सर्वश्रेष्ठ मानव-संतानके निधन-पर गंभीर शोक प्रकट करती हुई उनकी स्मृतिमें अपनी विनम्र और सम्मानपूर्ण श्रद्धाञ्जलि अर्पित करती है। महात्माजीने जो अनंत प्रकाश दान किया है वह भारतको अहिंसा, सत्य, शांति और सद्भावनाके पथपर अग्रसर करनेमें, ईश्वर करे, सफल हो।

पश्चिमी बंगाल सरकारका प्रस्ताव

"पश्चिमी बंगालकी सरकार विश्वकी समस्त मानवताके शुभचिंतक महात्मा गांधीकी हत्याकी भर्त्सना करती है। हमारी क्षति महान है, हम असहाय हो गये हैं। हमारी प्रिय मातृ-भूमिको आर्थिक तथा सामाजिक स्वतंत्रता दिलानेवाला, हमारा पथ-प्रदर्शक, हमारा हितैषी, हमारा उपदेष्टा हमसे खो गया। ईश्वर उनकी आत्माको शांति प्रदान करे; भारतको अपने लक्ष्यकी ओर ले जानेमें मार्ग-दर्शक हो। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने दैनिक जीवनमें महात्माजीके सत्य तथा उदारताके संदेशका हम पालन करेंगे।

पश्चिमी बंगालकी सरकार भारत-सरकारके निश्चयसे सहमत है कि हिंसा तथा घृणाको,जो शताब्दियोंसे देशमें सजीव हो रही है, जिनसे देशकी स्वतंत्रता संकटमें है और जो हमारे देशको कलंकित कर रही है, नष्ट करना चाहिये। सरकार पश्चिमी बंगालकी जनतासे प्रार्थना करती है कि इस कार्यमें सरकारकी सहायता करे। सरकारको विश्वास है कि पश्चिमी बंगालके निवासी सरकारसे इस बातमें सहमत होंगे कि इन शक्तियोंका निश्चित रूपसे न्यायपूर्वक दमन किया जाय और उनसे निवेदन करती है कि वह कानूनको अपने हाथोंमें न लेकर सरकारसे सहयोग करें।

भारत-सरकारने निश्चय किया है और पश्चिमी बंगालकी सरकार भी इससे सहमत है कि किसी प्रकारकी निजी सेना इस प्रांतमें नहीं संघटित की जा सकती। सरकार जनतासे, विशेषतः सरकारी कर्मचारियोंसे, निवेदन करती है कि वे इस नीतिको कार्यान्वित करनेमें सरकारका साथ दें।"

अनुक्रमणिका

भ

य